

গোলাল-বাক্সৰ বা ক্ষ্তিভাষ্ট্ৰ

"THE INDIAN DAIRYMAN'S GUIDE."

প্রকাশচন্দ্র সরকার, এ-বি, এল-এল-বি,
(উকাল হাইকোর্ট, সহ:-সম্পাদক "বঙ্গীর বাহিষ্য সমিতি,"
সহ: সং British Association for the Protection
of Indian Cattle," আনেরিকার যুক্ত-রাজ্যের
কর্পেন, ওহিও, উইস্কসিন্ ও মিশোরী বিশ্ববিদ্যালয়ের ক্রমি-সদস্য, M.B.D.F.A. (Lond.),
কোপেন্হেগেনের বর্মান ডেনিল্ এপ্রিকল্
চারেল্ সোসাইটার সদ্যক্ত, লগুন ডেরারি
ই ডেণ্টন্ ইউনিয়ানেয় এবং রশ্বাল
প্রিকাল চুরাল সোসাইটার সদস্যের)
দ্বারা লিখিত এবং সংকলিত।

প্রথম ভাগ।

কলিকাতা, ১৮ নং রসারোড নর্থ, ভবানীপুর হইতে গ্রন্থকার কর্তৃক প্রকাশিত। ১৯১৩।

(সর্কার্য সংরক্ষিত)

[Price Re. L.



উৎসর্প পত্ত।

মহামহোপাধ্যায়

জ্ঞীল শ্রীযুক্ত ডাক্তার দার্ আশুতোষ মুখোপাধ্যায়

এম্-আর্-এ-এস, এল্-এল্-ডি,

এম-এ, এফ ্-মার্-এস্-ই;

সরস্বতী, বিদ্যাবিনোদ,

कलिकां विश्वविनानरम् जाहेम्-गान्रमनात,

মহামাক্ত কলিকাতা হাইকোর্টের জভ্ত.

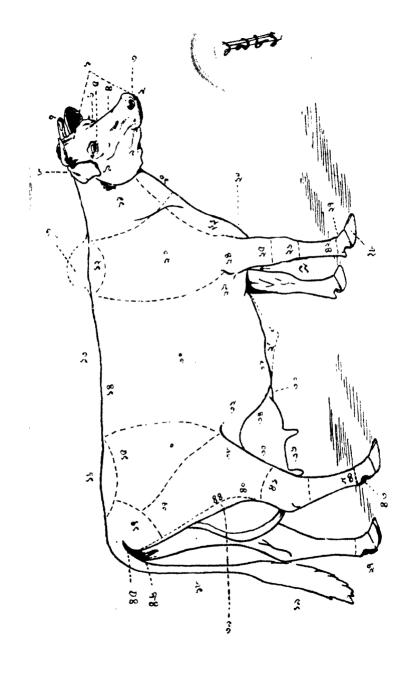
रेजानि, रेजानि,

মহাশ্রের করকমলে

দীন গ্রন্থকার কর্তৃক ভক্তিসহকারে

উৎস্গীকৃত হইল।

প্রীপ্রকাশচন্দ্র সরকার।



উপক্রমণিকা।

আমাদের দেশ ক্ষিপ্রধান দেশ। এই দেশে গোশক্তির সাহাঁদ্যানিনা কোনজপে কৃষিকার্য্য সম্পাদিত হইতে পারে না। গো-জাত সামগ্রীও আমাদের দৈনিক জীবনে অশেষ প্রকার হিত্যাধন করিতেছে। গোলাতির সম্বন্ধে আমাদের দেশে গোজনন, গো-চিকিৎসা, গো-বাবসার, ছন্ধ-বাবসার ও ভেয়ারি ফার্ম্মিং সম্বন্ধে কোন পৃস্তকই অদ্যাবিধি প্রচারিত হর নাই। কাজেই আমাদিগের দেশের কি গ্রহণ্থ, কি কৃষক সম্প্রদার, সকলেই বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে গো-বাবসার এই কৃষিপ্রধান প্রদেশে প্রবর্তিত করিতে একেই।রেই অনভিক্ত। সেই জাতীয় আবশুক বিবেচনা করিয়া আমি গোপাল-বান্ধব নামক পৃত্তক প্রণয়ন করিয়া আমার দেশীয় কৃষকসম্প্রদায়ের উপকারার্থ তাঁহাদের নিকট ইহা প্রেরণ করিলাম। ইহাতে ভেয়ারি ফার্মিং, গো-চিকিৎসা, গো-উৎপাদন, গোখাদ্য, ইত্যাদি অনেক জ্ঞাতব্য বিষয় লেখা আছে। দেশের লোক ইহার ঘারা সামান্তরূপ উপকৃত হইলেও আমার প্রমের সার্থক জ্ঞান করিব।

এই পৃশুকের অভ্যন্ত প্রায়েজন বর্তুনানকালে আমাদের দেশে পরিদৃষ্ট হইতেছে। সেই জন্ত ভারত ও অপরাপর বছদেশে পর্যায়ন করিয়া স্বদেশবাসী পোয়ালা ও ক্লয়ক-সম্প্রদারের হিতার্থ এই পৃশুক প্রাণরন করিয়াছি।

এই প্তক লিখিবার সময় আমাকে বহু ইংরাজি, জার্মেণ, করাসী, আমেরিকান্ ও দিনামার প্তকের মতের সহিত মিলাইরা কাজ করিতে হইরাছে। ওহিও, কর্নেল্, শিকাগো, নিউইয়কু, মিলোরী, মিচিগান্ প্রভুতি বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যক্ষগণের কুপায় তত্তদেশের বুর্লেটীন্ বারা বিশেষ উপকৃত হইরাছি। সেই জল্প অধ্যাপক ইক্লীপ্ত

আলভোর্ড, পিয়াসন্, বেইনী, ববাটস্, মেয়ো, টাাফ্ট, নিউশ্হাম্, পেয়াব, জর্ডান, টুয়ার্ট প্রান্ত মহোদয়গণকে আন্তরিক ধন্তবাদ না দিয়া থাকিতে পারিলাম না। তাঁহাদের অনেক প্রবন্ধের সার ও পুস্তকের অংশ মদ্প্রণীত এই কুদ্র পুস্তকে সংগ্রহ করিতে সমর্থ হইয়াছি। অধ্যাপক ষ্টিফেন, পাক্স্লি, শেল্ডন, ইকলীশ্ উইস্ প্রভৃতির পুস্তক হইতে এবং কান্টি-জেন্টেলমান্, 'এমেরিকান্ ফার্মার' প্রভৃতি হইতে চিকিৎসা, গো-সেবা, থাদ্য-বিচার, চারণ-প্রস্তুত, ছগ্ধ-বিচার, ইত্যাদি সম্বন্ধে বিশেষ সাহায্য পাইয়ছি। দৈনিক্চন্দ্রিকা, বন্ধবাসী, হিত্রাদী, বন্ধমতী, ক্রি-সম্পদ, বন্ধা, ক্রমক প্রভৃতি সংবাদপত্রে প্রকাশিত প্রবন্ধসমূহ হইতেও যে আমি বিশেষ উপকৃত হইয়াছি, তাহা স্বীকাব না করিয়া থাকিতে পারিলাম না। মাহিষ্য-সমাজের সম্পাদক শ্রীষুক্ত বাবু বাবুরাম কয়াল (সেবানন্দ ভারতী) ও মহল্প মিঃ হেমস্তকুমার ঘোষ, বার-এট্-ল, মহাশয়্বয়ের হায়া এই পুস্তক প্রথমনকালে বিশেষ সাহায্য প্রাপ্ত ইয়াছি, তাহার জন্ত তাহারা বিশেষ ধন্যবাদার্হ।

উপসংহারে আমার বক্তব্য যে, লীলা প্রিণিটং ওয়ার্কের স্বস্থাবিকারী, মর্বন্ধ বাবু হরিদাস দত্ত মহাশ্র এই পুস্তকের মূদ্রনকালে প্রক দেখিয়া এবং স্থানে স্থানে সংশোধন করিয়া বিশেষ উপকৃত করিয়াছেন। সেই জনা তিনি সর্বাপেকা অধিক ধন্যবাদার্হ। তিনি এইরূপ সাহায্য না করিলে এই পুস্তক প্রকাশিত হইত কি না সন্দেহ। সেই জন্য আমি তাঁহার নিকট অধিকত্য ক্রতক্ষ।

ভবানীপুর, কলিকাজা, ১৮ নং রসারোড নর্থ। বিনীত

প্রিপ্রকাশচন্ত সরকার।

স্চীপত্র।

বিষয়।		•	পৃষ্ঠা
ভারতে গোজাতিব অবনতি		•••	` \$
ভাৰতীয় গোজাতিব অবনতিৰ কারণ বি	5 *	€ ₩ ●	ত
গোহতায় দেশেব ক্লবিব হানি	•••	***	8
গোজাতিৰ উপকাৰিতা	•••	•••	¢
দেশী ও বিলাতি গোব ভুলনা	•••	***	Ŀ
গোজাতীৰ প্ৰাচীনতা		***	9
দেশী ও বিলাতি গোজাতিব মধ্যে শ্রেষ্ঠ বে	ক •	***	۶
দেশী ও বিলাতি গোদধেব তাবতমা	••	•••	>>
গোজাত সামগ্ৰীৰ হিতকাৰিতা	•••	•••	११
উৎপত্তি, কৰ্ণ, ইতিবৃদ্ধ	• • • •	•••	>6
শরীর, গঠন, প্রকৃতি এবং অঙ্গব্যবচ্ছেদ	•••	***	46
আকার, গঠন ইত্যাদি	•••	***	٠,
দৈহিক নামকরণ তালিকা,			ર્
ভারতীয় গোজাতির শ্রেণী-বিভাগ	•	w • •	२७
मही मृददः नाम	•••	•••	२३
नाश्नाना	***	***	٥.
দাহদানা •••	•••	•••	৩১
অমৃত্যহাল	***	***	93
निकाधाडी		•••	9
গোলু বা সিরাটাগোম্ব	***	***	96
শ্বালকর •••		***	109

বিষয়।	•			পৃষ্ঠা।
হাগল বাদী	•••	•••	•••	৩৮
নেলোব বা অক্ষোল	•••	•••	•••	8•
क्षक्राह्या देशांना	गन	•••	•••	80
क्रक	•••	•••	•••	84
সিকু-বংশীক	•••	•••	•••	86
অবাধ গোহত্যার ক	ৰির অপকারিতা	***	•••	89
মণ্ট ্গোমেরী	•••	***	89,	9.
কাফরেঞ্জি	•••	•••	***	8 >
কাথিয়াবাড় গির্ব	: ग ीव	•••	•••	88
হরিয়ানা বা হিসারব	ংশীয়	•••	***	¢ •
ভারতীয় গোঞ্চাভি য	া ষদ্ধে ডাঃ ও য়ালেদের	অভিয3	•••	¢ •
रतियानात अङ्गित,	শ্লা, প্ৰাধিয়ান ইতা	ा नि	• • •	40
वाबीयान-वःनीय	•••		•••	69
ত্ৰিচিনাপৰী	***	••		€¢
কান্গাম্	•••	•••	***	ee.
ৰা <i>লো</i> য়া	•••	•••	***	<i>e</i> :3
দক্ষিণবংশায়	***	• 4.0	***	47
পাটনাই বা টেলর	* * *	•••	***	47
ৰহারাষ্ট্র বা জোরারি	व िश्व	•••	***	43
নাগোর বা ওয়াগান	বংশীয়	•••		
माजाम-नानवःनीर	•	***	***	\$ >
কন্ধনৰংশীয়	***	•••	•••	42
কান্ত্রীয়-বংশীয়	•••	***	***	**
শোরাণীয়া-বংশীয়	•••	***	***	45

বিষয়।		0	9	कि।
বগোধা-বংশীয়	***	•••	•••	ଓଡ଼ି
এডেন-বংশীয়	***	***	•••	હ .છ
পালামু-বংশীয়	•••	• • •	•••	68
পাৰ্ক্কতা-বংশীয়	•••	•••	•••	5.8
সিকিম-বংশীয়	***	•••	•••	96
নেপাল-বংশীয়	•••	***	•••	46
আদাম-বংশীর	• • •		•••	63
ভূটিয়া ও সিরি-বংশী	•	•••	•••	P C
বিশাতি-বংশীয়	***	• • •	•••	99
শট -হর্পরিবার	•••	•••	•••	49
विक्रमन् नाम भहे इर्	রি উপকারিতা		•••	97
হেরিফোড্ পরিবার		• • •	***	49
উত্তর ডিত্র্	•••	• •		40
আর্শিয়ার-বংশীয়		•••	***	W
আফ্রিকাণ্ডা র	•••	• • •		45
डेक् नी	***	***	***	93
বিবাতি গোন্ধাতি স	াৰন্ধে পাঠাপুতা	কর তালিকা	***	93
শট্হণ্ পরিবাবের	ইতিহাস	***		92
नहें इ र्ग् गाजी डेरन	াদকগণের তার্নি	নকা · · ·	•••	4:0
ভেক্সিটার শট্হর্ণ		'	***	48
কেরী-ডেক্সিটার	> v 4	***	#41	* **
নাদেক্ দ্	***	•••	***	16
পোৰু হেৰীকোৰ্ড্	14. ***	***	• • •	9.0
च्छिन	***	•••	***	70

विषय ।			शृष्टी।
উত্তর-ডিভন-বংশের উৎপাদকগণের তা	লিকা	•••	99
দক্ষিণ-ডিভন-বংশের উৎপাদকগণের তা	विका		99
দক্ষিণ-ডিভনের ইতিহাস ও উৎপত্তি	•••		99
সাসেক্স্ পরিবার	***	•••	96
পশ্চিম হাইলও পরিবার	•••	***	৬৮
রেড্পোল্ পরিবার	•••	•••	97
রড্পোল্গাভীর উংপাদকগণের তা	লিকা	•••	b.
এবার্ডীন-এঙ্গাদ্ পরিবার	•••	•••	b. •
এবার্ডীন-এঙ্গাদ্ উংপাদকগণের নামের	তালিকা	***	۲3
গেলোয়ে পরিবার	•••	***	४ २
গেলোয়ে উৎপাদকগণের নামের তালিক	ন …	***	b ₹.
मामार्थि (गरनाम डेश्थानकभरणत नार	মর তালিকা		78
আরশিয়ার পরিবার ···	•••	4.,	₽8
আরশিয়ার-উৎপাদকের তালিকা	• • •	***	b9
কেরী-পরিবার ···	***	*** ,	bb
কেরী-উৎপাদকগণের নামের তালিকা	*** {	***	49
ইউরোপীর গো-পরিবার	***	***	44
<u>बार्डन् स्टॅ</u> म्-दःनीत ···	•••	***	۶۰
হলাওদেশীৰ গো-ছাত্তি	***	***	22
व्ल्डीन्- क्रिकीवान् ···	***	***	22
চাানেল্-দীপপৃঞ্জ-পরিবার	• • •	***	28
গার্ণেদি-পরিবার •••	•••	***	at
वानि-পরিবার	***	***	76
জার্সি-উৎপাদকগণের ভাবিকা	***	***	>40 %

বিষয়।				शृष्टी।
জাসি যাঁড় কিরুপ	হওয়া কর্ত্তব্য	•••	•••	¿0;
আমেরিকা দেশস্থ	গোরকণী সমিতিস	भृङ् …	***	२०२
গোজাতির উন্নতি	-বিধায়িনী বিলাতী	-সমিতিচর	• • •	>00
<u>রাজপুতানাবংশীয়</u>	•••	* *.*	•••	>•€
क्या युनवः नीव	•••	•••	•••	>0@
বাঙ্গলাবংশীয়	•••	•••	•••	>0.9
ছাগল	***	•••	***	>0F
ছাগলসম্বন্ধীয় বিল	াতি প্স্তকাবলী	•••	• • •	245
মহিষ	•••	•••	•••	१११
ভারতীয় গোজারি	ত্র রক্ষ	•••	***	>>8
মিঃ জাসাওয়ালা	এবং হাসানন্দ বর্মার	ৰ কীৰ্ত্তি	•••	>>0
গোজনন	• • •	•••	***	\$28
গৰ্ভস্ৰাৰের প্ৰতিব	দার ,	***	***	ऽ२¢
महद्रजनन महत्क	গাাশ্টনের অভিম	5	•••	११८
গোজনন সম্বন্ধে ट	বজ্ঞানিক নীতি	•••	•••	> 23
সৰ্মীতি	••• a	•••	• • •	>5%
পুনরাগমন	•••	***	***	25%
অধিকার-নীতি	***	9,4 •	***	ンミラ
পরিবর্তনশীলতা	***	***	***	` > ©0
প্রত্যাবর্ত্তন	***	•••	***	>२२
আংশিক প্রত্যাক	র্তনশীলভা	***		১৩৩
পালিতাবস্থা	*** #	***	s. • •	১৩৬
আন্তৰ্গণিক উৎপ	पिन	***	•••	>04
"উৎপাদিকা শক্তি	त ड्रांग वा वस्ताप	***	***	>8>

विसन्न ।			शृंधा ।
নিৰ্ম্বাচন-বিধি · · ·	•••	***	>88
ব্যবস্থিত নির্ম্বাচন	• • •	•••	>84
অজ্ঞাত নিৰ্কাচন · · ·	•••	***	>8€
প্ং-শোণিতের প্রাহর্ভাব		***	>8>
গোন্ধাতির গর্ভধারণের কাল	***	• • •	>00
গোউৎপাদন সম্বন্ধে পাঠা পৃস্তকের ত	ালিকা		386
সৰুর গাভী উৎপাদন	•••	***	>89
গোশুক	•••	• • •	ンもン
গোচারণ	` • • •	•••	>66
গোচারণ প্রস্তুতের নিয়ম	•••	• • *	764
ভাল ঘাদের বীজ পাইবার স্থান	•••	• • •	245
महिला	•••	***	296
গোৰাতির খাদাবিচার	***	•••	ንግ৮
वल्म-भागतनत्र नित्रम	•••	***	242
হয়বতী গাভীর ভাবের নিয়ম	•••	•••	2800
ননীভোলা ভূমের এবং ছানার জলের	উ शागान	***	>>e
ত্থবতী গাভীকে কিরপ খাদা দেওয়া	প্রয়েজন	***	746
গোধাদ্যের উপকরণ-বিচার তালিকা	•••	***	GG C
গো-থাদো দারকের প্রয়োজনীয়তা	***	***	૨••
শীতের সময় ভাবের নিয়ম	***	***	२०२
অধ্যাপক ইুরার্টের মতে গো-খান্তের বি	नेवम -	***	\$ • 9 ·
मिः मत्त्रत भटि नी ठकाल कार्यत्र निव	™ ,	•••	े२०8
খাজেৰ সহিত শ্রীরের সম্বন্ধ	***	***	₹•€
ভিন্ন গো-খাত্তে উপাদান-বিচার	4**	***	2.5

বিষয়।				शृंधा ।
সিদ্ধ গো-খাত্যের ও	প্ৰয়োজনীয়তা	***	***	२ >•
নার	• • •	•••	***	२०७
গোহাড়ের উপাদা	न	•••	•••	२>8
বৎস-শালন		***	•••	२ऽ≱ः
গোশালা এবং গো	শোলা নিৰ্মাণ	•••	•••	२ ७२
হিন্দুশান্ত্রমতে গোণ	ণালার উপকারিতা		***	२७१
গোশালার প্ল্যান্	•••	***	▼, ∜,	গ, ৰ
ৰ ড	***	* * #	***	২৩৯
ষাঁড়ের জাবের প	রিমাণ	4.4.1	***	₹8•
বাঁড়ের জনন-কার	1 · · ·	• 4.4	***	₹8₹
म्रंगा थ्वीत छेभर	न ण	***	***	₹8₺
অধ্যাপক মাাক্ডে	ানাল্ডের পরামর্শ	•••	•••	289
याँ जिस्ताहरनत	निग्रम		***	₹8€
নিস্তেজ বাঁড়কে	উত্তেজক করিবার ^হ	डेशाब	• • • •	₹8₩
যাঁড়ের ওভাওভ	वाक्रम	* ***	*	₹8₹
शूः, वीरवत्र आशा		• •/•	***	₹8≥
रेमथूनाट्ड शाजीत	পরিচর্য্যা	***	***	₹#\$
পালে কিরূপ যাঁত	ş রাখা কর্তব্য [়]	***	***	265
গোনেবা	***	***	***	₹€9
হিন্দুৰান্ত্ৰমতে গো	-সেবার উচ্চাসন	• • • · · · · · · · · · · · · · · · · ·	, ***	₹49
व्याद्दर्शन गाउ ।	গাৰাত সামগ্ৰীর ৫	ায়েকনীয়তা	* ***	260
औद्धे ଓ मर्मनीय ।	ধৰ্মে গোৰাতির উচ	ज ान-	4.0	2 this
হিশুর নিতা নৈটি	ইত্তিক কর্মে গো মা	তার উচ্চাসন	* ***	₹ % ₹
প্ৰাজীৱ ক্ষমান্ত	汽车 等		***	2 91 <u>9</u>

বিষয়।			शृंका ।
মোড় ধারা ওভাওত নির্বাচন	* * #1	***	२,१७
গাভীক্রয়ে নিয়ম	•••	•••	১৭৬
গোনেবা সম্বন্ধে গোমালার কি করা কর্ত	ব	•••	२११
কি উপায়ে পাল সংগ্রহ করিতে হয়	•••	••,•	२१৮
গৰ্ভবতী গাভীর সেবা	***	***	₹ 95
প্রস্বান্তে গাভীর সেবার নিয়ম	•••	44+	₹₩*
পর্ভিণীর শক্ষণ · · ·	* * *	***	२५७
প্রসবের কালনির্ণয়	er erid	•••	२५७
গোজাতি সম্বন্ধীয় পুত্তকের তালিকা	***	***	२४७
ক্বকের কর্তব্য 🚥 🦠	•••		244
ক্ষ্ম ফোলাৰ চিকিৎসা	***	***	₹3•
কৃষির অবনতির কাশ্বণ	•••	•••	८६५
গর্ভিণী না হইলে তাহার প্রতিকার	41+	***	२२५
শীতকালে গাভীর সেবা ও পরিচর্যা।	****	4#+	२२१
কিত্ৰপ গোবধে প্রায়শ্চিতার্হ হইতে হয়	***	***	865
ভারতীয় গোজাতির তিরূপে উন্নতি সাহি	ৰত হইতে পাৰে ?	+ +4	220
গো-লোহন ···	14+		O•#
ভিন্ন প্রকারের ছগ্মদোহন	***	,	***
অধ্যাপক হেলিগতের লোহন-প্রণালী	4 \$10	•••	Ø•₩
इध-वावमात्र	•••	***	45.
হ্ম ও ছানার হাটের তালিকা	***	• • •	47.
চ্থ-বাবদায়ে কিন্নপ গাভী রাখা কর্তব্য		. * * *	978
ভেরারি ফার্মিংএ কলের প্রয়োজনী রতা	, ****	***	450
इश्चरक्षक छेरव	***	***	७२२

		शृंश ।
***	***	७२४
•••	•••	99 ,
•••		৯৯>
39	•••	৩৩২
***	***	లల
	***	999
***	***	৩৪১
• • *	***	9 82
war and and a	***	989
***	**4	986
***	474	৩৫৬
*** .	•••	૭૮૬
м + ф	***	430
r-	***	96F
চাই	•••	QCA
4 is	•••	09F
***	***	090
***	***	994 .
		### ##################################



(গাপাল-বান্ধব।

প্রথম ভাগ।

প্রথম পরিচ্ছেদ।

ভারতে গোজাতির অবনতি।

আমাদের দেশে কৃষিকার্থ্যে গোজাতির বিশেষ আবশুক্তার কথা কাহাকেও নৃতন করিয়া বলিতে হইবে না। কেবল কৃষিকার্থ্যের নিমিন্ত বে গোজাতির আবশুক্ তাহা নহে, গাজীর হগ্ধ হইতে আমাদের জীবন-রক্ষার উপার হয়। বাঙ্গালাদেশে গোজাতির যে অতি অবনতি ঘটিয়াছে, তাহা চিস্তাশীল ব্যক্তিমাত্রেই অমুভব করিতেছেন; প্রত্যেক চকুমান্ তাহা সমর্শন করিতেছেন। বলিষ্ঠ বলদ আমাদের দেশে নাই বলিলেই হয়। সোন্পুরের হরিহরছত্রের মেলা, গরার চৈত্রসংক্রান্তির মেলা, বহরমপুরের মেলা, চিৎপুরের হাউই বলদপ্রাপ্তির প্রধানস্থান। কিন্তু শক্লা স্থান বঙ্গদেশ হইতে বহুদ্রে অবস্থিত বলিয়া বাঙ্গালী ক্রবকেরা সহক্ষে উহা সংগ্রহ করিতে পারে না। বলিষ্ঠ বলদের অভাবে আমাদের চারের অবনতি প্রিয়াছে, সন্দেহ নাই।

🎍 জামাদের দেশের প্রাচীনকালের সে দধি জীর মাথন আর দেখিতে

পাওয়া যার না। ঘাটালের দে মাথন ঘতের আর আমদানী নাই। সহদয় প্রাঠক ইহার কারণ অনুসন্ধান করিয়াছেন কি ৮ কেন চারি আনা সের দাম বিয়াও জলমিশিত চন্দ্ৰ পান কবিতেছেন, একবারও তাহা ভাবিয়া দেখিয়াছেন কি

শ আজ যে বাজারের মত দেখিতেছেন, উহার সহিত বাদানের তৈল, আলু বা কশার কাথ,ুমূত জন্তুর চর্বি প্রভৃতি মিলিত ক্রিল পশ্চিমাঞ্চল হইতে বাবসালীরা এদেশে আনাইলা প্রচার লাভবান হইতেছে। এমব কেন্স বঙ্গে গাভার অভাব নিবন্ধন হুগ্ধের অল্লভা-বশতঃ ঘুত কম পরিমাণে উংপন্ন হয়। স্কুজনা স্ফলা শস্ত্রামলা বঙ্গে আজ গোজতির এ অবনতি কেন হইল ১ বাঙ্গালী হিন্দুগণের গোয়ালে আজ ত্ব্ববতা গাভার অভাব পরিলক্ষিত হইতেছে কেন ৮ ইহা কি কেহ চিম্বা করিয়া দেখিতেছেন ? ভেজাল হ্রম, মৃত, হ্রমজাত থাদাসামগ্রী পানাহাব করিয়া বাঙ্গালী দিন দিন ক্র ক্লিষ্ট শার্ণ হইয়া, মাালেরিয়া প্রভৃতি সংক্রামক রোগে আক্রান্ত হুইয়া পড়িতেছে। পূর্বে বাঙ্গালায় দেখিতে প্রেরা গ্রিছে, গুহুত্ব গ্রভার চারিটা গাটের মধ্যে ছুইটা বাঁট পো-বজনের জন্ম পুথক রাখিয়া, নাত্র চুইটার চুগ্ধ দেহন করিত; তাহাই গৃহস্কের সমস্ত পৰিবাৰের জন্ম ব্যবসূত হইত। গাভীও প্রচুর পরিমাণে হয়ে দান করিত। এগন বঙ্গে দে নিয়মের কথা গল্পমতে প্র্যাব্দিত চুইয়াছে। উত্তর-পশ্চিম প্রদেশ, লাহোর, কান্সার, রাজপুতনায় এখনও কিয়ৎ পরিমাণে দে বাবস্থা मार्ड।

সামরা এখন লেখা পড়া শিখিরা কেবল চাকুরীর জন্ত লালায়িত হই।
আমবা সে পরাশর-বাকা ভ্লিরা পরসেবার আত্মহারা ইইরাছি; চাবের
উইতির দিকে লক্ষা রাখি না; কাজেই বলিও বলদেব আবগ্রকতা উপলব্ধি
করিতে পাবি না। আমরা এখন এমন অকর্মণা হইরা পড়িতেছি যে,
উৎক্ট ত্ম ঘত গ্রন্থতির জন্ত আমরা কিছু মাত্র উপায় উদ্ভাবন করিতে
পাবিতেছি না

ভারতীয় গো-জাতির অবনতির কারণ কি ?

আমাদের দেশের গোজাতির অবনতির কারণ—(১) পৃষ্টিকব খাদোর অভাব, (২) গো-জাতির স্বাস্থ্যরক্ষায় অমনোযোগিতা, (৩) অবাধ গোহতাা, (৪) সাধারণের মধ্যে কৃষককুলের অজ্ঞতা ও জাতীয় নিঃস্বতা এবং (৫) কৃষির অবনতি।

আমাদের দেশে পুর্বে গোচারণভূমি স্বতন্ত্র থাকিত। এখন আর তাহা নাই। জনিশারগণ সেই গোচবণভূমি আর রাখেন না; প্রজা-বিশি করিয়া দেওয়ায় গোচারণ ভূমিতে চাষ করা হইতেছে। কাজেই গোজাতির প্রচুব কাঁচা যাস খাওয়ার পক্ষে অম্বরায় উপস্থিত হইয়াছে। আমেরিকা মহাদেশে ঘাদের চাব করা হয়, সেই ঘাদ খাইয়া গ্রু বিশেষ উন্নতি লাভ করে। আমানের দেশের সাধারণ লোকে গরুর তেমন ষত্র করে না। গুরুর কোনও রূপে স্বাস্তাহানি ঘটিলে তাহার প্রতীকারের ব্যবস্থা হয় না। নফ:স্বলে উপযুক্ত পশু-চিকিৎসক নাই। আজকাল যাহার। গন্ধব চিকিৎসা করে, ভাহাদের উপর বিশ্বাস স্তত্ত করা যায় না। তথন আনাদের দেশে ধর্মের খাড় অবাবে চরিয়া বেড়াইত; কিন্তু এখন আর ঘাঁড দেরপ যথেছ-বিচরণ করিতে পারে না। নিউনিদিপালিটা প্রভৃতিতে কতকগুলি যাঁড়ে ধরিয়া বলদের স্থায় গাড়া টানা কার্যো নিযুক্ত করা হইবাছে ও হইতে: হ। বলিষ্ঠ বাঁড়ের অভাবে গাভা আর বলিষ্ঠ বংদ প্রদান করিতেছে না। বিভিন্ন দেশ হইতে ঘাঁড় সংগ্রহ করিয়া ইংলও আনেরিকা প্রভৃতি পাশ্চাতা বেশে গোজাতির অনাধারণ উনতি সাধিত হইতেছে, কিন্তু বান ভারতে তাহা স্বপ্নবং বলিয়া বোধ হয়।

বৰ্তুমানে এনেশে বেরূপ অবাধে গোছতা। সাধিত হইতেছে, তাহা আর কাহারও অবিদিত নাই। গতপূর্ব বংসর বকরিদের সময় গোহতা। লইয়া কলিকাতার কি ভাষণ হাঙ্গানাই হইরা গেল।!! এদেশে কদাই-হত্তে বেরূপ গোহতা। হইতেছে, তাহার প্রতিবিধান-করে কি কোন উপায় করা যায় না? চিন্তাশীল পাঠক, ভাবিয়া দেখুন, এই ভীষণ প্রথার গতিরোধ করা যায় কি না। পাশ্চাত্য দেশে হর্ষবতী গাভী অথবা গোবৎদ কথনও হত্যা করা হয় না। দেখানে স্বতন্ত্র ব্যবস্থা আছে। বঙ্গের স্থানবনে হরিণ শীকার করিতে গিয়া হরিণী হত্যা করিলে ৫০, টাকা অর্থাণণ্ড করিবার নিয়ন আছে। গাভীহত্যা করিলে কি কোন অপরাধ হয় না? আমাদের দেশে সকল প্রকাব গরুই কসাই-হত্তের ছুরিকা রঞ্জিত করিয়া দেশের প্রভৃত অমঙ্গলের সহিত আমাদিগের ভবিষাৎ খোরতিনিরার্ত করিবার উপক্রম করিয়াছে। দয়ালু গ্রণ্মেণ্ট এ বিষয়ে দৃষ্টিনিক্ষেপ করিবেন কি ?

কৃষিকার্য্যের অবনতি ও গোজাতির অবনতি একই হতে এথিত। ক্ষবিকার্যোর অবনতি ঘটলে দেশের শুভ সম্পাদিত হইতে পাবে না। গাভীর অবনতিতে চুগ্ধের অভাবে খাদালুবোর অভাব হুইতেছে। ছুগ্ধের অভাবে ঘুত উৎপন্ন হইতেছে না। ঘুতের অভাবে এদেশে জনসাধারণের যে ভয়াবহ চুৰ্গতি হইতেছে, তাহা প্ৰগাঢ় চঃথের অবদাদে কেহ উপলব্ধি করিতে পারিবেন কি'না জানি না। যাঁহাবা পাশ্চাত্য শিক্ষায় শিক্ষিত, তাঁহারা ক্লবকুলের প্রতি সহামুভূতিস্থাক দৃষ্টিপাত করেন না, বরং ''চাবা" ইত্যানি অবজ্ঞাপুর্ণ ভাষায় তাহানিগকে সম্বোধন করিয়া থাকেন। কৃষক-কুলের নিঃস্বতা বা অভাব-অভিযোগ শিক্ষিত ব্যক্তিগণ দেখেন না; তাঁহাদের এই অমনোযোগিতাই কৃষির, কৃষককুলের এবং সঙ্গে সঙ্গে গোজাতির অবনতির সহায়তা করিয়া আদিয়াছে। সম্প্রতি কতিপয় যুবক আমেরিকা, জাপান, প্রভৃতি দৈশ হুইতে ক্রবিবয়ক শিক্ষালাভ করিয়া আফিয়াছেন। আমার সনিক্ষন্ধ অনুবোধ, তাঁহারা যেন গোজাতির উন্নতিদাধনার্থ বিশেষ আগ্রহ-সহকারে চেষ্টা করেন। গো-জাতির অবনতি ও ভাহার কারণগুলি চিম্ভা করিলেই উন্নতির উপায় করিতে সাধারণের आश्रह स्विद्य ।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

গোজাতির উপকারিতা।

গোজাতির উল্লেখ আমরা বেদে দেখিতে পাই। অক্মত্তে গো-কুলের আরাধনা দেখিতে পাওরা যায়। গোজাতির রক্ষণকুশলতা হইতে পুরা-কালে খবিগণের গোত্রের স্ষ্টি হইয়াছে। পর্বতের আসর তুণবছন প্রদেশে ঋষিগণের গোচারণ রক্ষিত হইত বলিরা "গোর্তের" সৃষ্টি হয়। হিন্দুর গৃহস্থজীবনে পোজাতির অচ্ছেনা সম্বন্ধ হেতু আমাদিগের সর্বতো-ভাবে গোজাতির উন্তিমাধন, রক্ষণ ও পরিপালন কর্ত্ত্য। জনক রাজা স্বহস্তে গো-যুগনের সাহায়ে ভূমিকর্ষণ করিতেন। স্মৃতিতেও গোদানের ভृत्रिष्ठं कल मुद्दे रहेवा थात्क: आमामिराग्द गृष्ट्यानीर्ड गांकाङ मामश्रीत দারা অনেক প্রকারে "উপকার সাধিত হইয়া থাকে। চাবে বলিষ্ঠ বলদের বিশেষ প্রয়েজন। অতি পুরাকাল হইতেই কি পার্মতা, কি সম্ভল, সকল প্রদেশেই গোষানের ব্যবহার প্রচলিত আছে। যুদ্ধবিপ্রহে গোষানের প্রচলন পরিদৃষ্ট হয়। সুসীলমানগণ যুদ্ধে গো-শকটের এবং কামান টানিতে গো-চতুষ্টমের ব্যবহার করিতেন। গোময় ও গোমূত্র হইতে অত্যান্তম সার হয়। আমাদিগেব দেশের চাষারা মুগ, কলাই, কোপী, বিটু ইত্যাদি গাছের পরিবর্জন জন্তু সোমূত্র আমে বাবহার করে না। ইহাতে একটি প্রধান "সাবের" পদার্থ রুথা নষ্ট হইতেছে, তাহা আমাদিগের দেশের অজ্ঞ অশিক্ষিত চাধীরা দেখে না। ছয়ের জন্তও গোপালন আমাদের দেশে বহুন দৃষ্ট হয়। বঙ্গের প্রায় প্রত্যেক গৃছে ২।১টি কুরিয়া গাভী ছয়ের জন্ম পালিত হইরা থাকে। বলদেশের শিশু ও বালকগণ গোছগ্ধ পান ব্যভিরকে জীবনদংগ্রামে অবস্থিতি-লাভে একান্ত অসমর্থ। কলিকান্তা ও বড় বড় সহরে ছগ্ধ দিন দিন বড়ই ছম্মাপা হইয়া উঠিতেছে। এ বিষয়ে আমাদিগের কর্ত্তপক্ষীয়গণের আশুদৃষ্টি আকর্ষণ করা কর্ত্ব্য।

ইউবোপদেশীয় গো অপেকা আমাদিগের দেশীয় গো সকলপ্রকারে হীন। পূর্ব্বোক্তগুলি "ট্রাদ" জাতীয়। ইহার মধ্যে হল দীন, আব্লায়ার, ভাষী, গার্ণদী, ডিভনশায়র, চেশায়ার, হাইল্যাও, অপ্শায়ার প্রভৃতি জাতীয় চন্ধবতী গাভীগুলিই প্রধান। ইউরোপ-পণ্ডের মধ্যে ফরাসী, ডেনমার্ক ও স্কুট্শ গাভীগুলিই অতাধিক ভূমবতী এবং ঐ দেশগুলি হইতেই ঐ থণ্ডের যাবতীয় গোজাত সামগ্রী উৎপাদিত হট্যা থাকে। ইংলগু দেশের মধ্যে চেশায়ার ও ডিভন্শায়ার, জারী ও গার্ণদী গাভীই সর্বপ্রধান। বিলাতের গাভী বহুশতাকীর বৈজ্ঞানিক কল। ইহাদের "বুঁট" (hump) নাই। কোন কোন বিলাতী গাভীর শিংও নাই। শুস-বিহীন কবিতে হইলে শৈশবাবস্থায় বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়ায় "কষ্টক" প্রয়োগ করিলে সহজেই শুক্তের উল্গম রহিত হয়। বিলাতী গাভীগুলি ফ্লোম্বার সাইজ (Square size) তাই তাহারা দেখিতে এত স্থানর। আমাদের দেশের গোজাতির শক্টবহন, লাঙ্গলাকর্ষণ প্রস্তৃতি কার্য্যের জন্ম ঝুঁটের প্রয়োজন আছে। তাই তাহাদের মধ্যে ঝুঁট দেখা যায়। আমাদের দেশের গাভীগুলি যাহাতে বিলাতী গাভীর ক্যায় স্কোরার পাইছ হইতে পারে, তাহার েষ্টা করা কর্ত্তব্য। তাহা হইলে. এ বিষয়ে বৈজ্ঞানিক শিক্ষা প্রয়োজন। ডারউইনের 'Origin of Species' (অরিভিন অব শিশাল), ওয়ালেদের "Animals & Plants under domestication" (আানিমালন এও প্লাণ্টদ আপ্তার ডোমেষ্টিকেশন), প্রভৃতি পুস্তক পাঠে পদ্ধতি সকল আরম্ভ করিয়া তাহা আমাদের দেশের গোজাতির উন্নতিসাধনে প্ররোগ করিলে, ফুফল কলিতে পারে। আমাদিগের দেশে অনেক গৰু রোগে মারা যায়। গো-চিকিৎসকের একাস্ক অভাব। অভাব-মোচনও আও কর্তব্য। গভর্ণনেন্টের নিকট আবেদন করিয়া প্রত্যেক জেলায় ক্ষুদ্র ক্রুল গো-চিকিৎসালয় স্থাপনে যত্ন করাপ্ত চাবীদিগের একান্ত কর্ত্তর। আমাদের দেশে গোজাতির প্রতি খুবই অনাদর প্রদর্শন করা হয়; কিন্তু তাহাদের দ্বারা কাজ লইতে আমরা খুবই অগ্রসর। তাহাদিগকে আমরা তাল গোয়ালে রাথি না, পুষ্টিকর আহার দিই না, অত্যক্ত থাটাই, গুরুতর বোঝা বহাই, না বহিতে পারিলে অথথা নিষ্ঠুর ব্যবহার করিয়া থাকি। পশ্চিমের বড় বড় নগরে প্রত্যেক চৌ-রান্তায় গোজাতির লেহন জন্ম বড় চাঁই-লবণ বা দৈরুর পাথর থাকে, এবং জলপানের জন্ম ইনারার মঙ্গে চৌরাচ্চাপূর্ণ জল রাথা হইরা থাকে। বঙ্গে এসব প্রথা আদৌ নাই। বোধ হয়, পূর্বের পুন্ধরিণীর হাল্লা ছিল বলিয়া পশ্চিমদেশীর প্রথা এদেশে প্রচলিত ছিল না। কিন্তু বর্তমানকালে বাঙ্গলাদেশে পানীয় জলের অভাব যে কি পরিমাণে হইয়াছে, তাহা সকলেই জানেন। গ্রীয়কালে মন্ধ্রোর পানীয় জলের অভাবের সহিত গোজাতির পানীয় জলের সমধিক অভাব হইয়া থাকে।

কোন কোন পা•ুচাতা পশুত নিশরদেশীর পিরামিডের উপরিস্থিত
যাড়ের প্রতিমৃত্তি দেখিয়া বলিয়া থাকেন যে, ভারতবর্ধে গোজাতি অতি
প্রাচীনকালে মিশর দেশ হইতে আর্যাজাতির উপনিবেশ স্থাপনের সহিত
আনীত হইয়াছিল। এই মতটি আমি সমীচীন বলিয়া গ্রহণ করিতে
পারিলাম না। ঝক্ ৪ অগর্মবেদে, রামায়শের বশিষ্ঠস্থমস্ক-সংবাদে ও
অপরাপর স্থলে, নহাভারতে, স্থতিগ্রন্থে, পুরাণে ও তল্পাদিতে গোজাতির
বহল উল্লেখ দেখা যায়। খুইজন্মের তিন শতালী পূর্বের মহাবীর
আলেক্জন্মর কর্ত্বক ভারত-বিজ্ঞার অবাবহিত পরেই ভারতীয় গোজাতির উৎকর্ষতা দর্শনে প্রীত হইয়া, তিনি ভারত হইতে ছই লক্ষ
গাতী, বলদ ও বাঁড় উমহার ম্যাদিডোনিয়া প্রদেশে তদ্দেশীয় গোলাতির
উরতি সাধনের জন্ম লইয়া যান। প্রীক্ প্রতিহাদিক এরিয়ান্ হইডে

• মেট্লের্ড্রি সাহেব ভাহার প্রীনের ইতিহাসে এই কথা উদ্ধৃত করিয়া-

एक। এतियान - টলেমী হইতে ইহা প্রাপ্ত হইরাছেন। গোজাতি ছারা আমাদিগের প্রাত্যহিক সংসারিক জীবনে অশেষ্বিধ উপকার সাধিত হইয়া শ্বাকে বলিয়া হিন্দুর ধর্মগ্রন্তে গোজাতির নাশ বা হানিদাধন অধর্ম বলিয়া উক্ত হইয়াছে। এমন কি, মোগল-সমাট আকবর জাইন দারা অবাধ-গোবধ নিষিদ্ধ করিয়া গিলাছিলেন। ১৮০২ সালে মহারাষ্ট্র-কুলগৌরব দৌলংরাও সিদ্ধিয়া যাহাতে ইংরাজবাজা মধ্যে গোহতা৷ সাধিত না হয়, তজ্জ্ঞ ইংরাজ-সমাটকে বরং কতক দেশ ছাড়িয়া দিতে প্রতিশ্রুত হইয়াছিলেন। নেপাল ও অক্সার অনেকগুলি স্বাধীন দেশীয়রাজ্যের মধ্যে গোবধ নিষিত্র। এই জন্ম ভরতপুরের মহারাজ বৃদ্ধ ও হীনবল গরু ক্রম করিয়া জন্মলে ছাডিয়া দিতেন। এইব্রপে স্বাধীনতাপ্রাপ্ত গোজাতির বংশাবলীর বিক্রয় সম্বন্ধে বোধ হয় পাওনিয়ার পত্রিকায় "এগ্রিকোলা" নামধের কোন পত্র-প্ৰেরক লিখেন। ইন্ডিয়ান ডেলিনিউছ পত্রিকার "বস্তু গোজাতি" শার্ষক এক বৃহৎ প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়। দামো, হোশেলাবাদ, বাবাই প্রভৃতি মধ্যভারতের জন্দনমূহে এইরূপ বস্তু গো, পালে পালে, বিচরণ করিয়া থাকে। একপাল এইরপ বস্তু গোছাতি রুষকগণের স্থামল শস্তক্ষেত্র অবাধে নষ্ট ক্রিভ বলিয়া সন্তদম সরকার বাহাত্রর অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হন এবং অনুসন্ধানান্তে অবগত হইলেন যে, অন্যুন ২৫ বর্গনাইলের শশু এইরপে নষ্ট হইরা থাকে। নিঃম্ব প্রভাবর্গকে আশেষ ক্ষতিগ্রন্ত করে ৰলিয়া এইব্ৰপ ২৪ পাল বস্তু গাড়ীকে ধরিবার জন্তু বিগত ১৯০৯ দালের মে মাদে মধ্যপ্রদেশের ডেপুটা কমিলনার, ডেঃ ডাইরেক্টার-ব্দব-এগ্রিকল চার এবং তহনীলদার কৃতসংকর হন। সামান্ত চেষ্টার পর বাবাই-পাল গ্রেপ্তার হয় এবং কিছুকাল পরে সেই যুত গরুগুলি প্রকাশ্র নিলামে বিক্রীত হয়। এইগুলির মধ্যে অধিকাংশই চারের 🖏 এবং জল-তেলার কার্ণ্যে ব্যবস্তুত হইতেছে।

্ ইরোরোপ থণ্ডে গৃহপ।শিত অখের দারায় চাবের যে সাহায্য হয়,

অশ্বদেশে বলদবৃন্দ দ্বারা সেই কার্য্য সাধিত হইয়া থাকে। আমাদের দেশে চাবের যাবতীয় কার্য্য—হলবহন, ভূমিকর্বণ, শকটবহন, মোটবহন, ফোজের ট্রান্স পোর্ট বহন—বলদের দ্বারা সাধিত হইয়া থাকে। এই কারণে ইংরাজ গবর্ণমেণ্ট সামর্থ্যবান বলদ উৎপাদনে এত বছবান। পাঞ্জাব প্রদেশের মধ্যে হিসাবের এবং মহীশ্রের মধ্যে হাল্ম্রের breeding farms বা "গো-জনন-শালা" ইহার চাক্ষ্য প্রমাণস্থল। বিখ্যাত চীন পরিব্রাজক হিউএন্ সাঙ্গ্র ক্রমণবৃত্তান্ত এবং আইন-ই-আকবরী গ্রন্থ প্রামরা অবগত হই যে, অতি প্রাচীনকাল হইতে যুদ্ধ-বিগ্রহের অভিযানে গোজাতির সাহাব্যে বহুতর কার্য্য অবাধে সাধিত হইত।

আমরা পূর্বেই বলিয়ছি যে, চাষের জন্ত বলদের ব্যবহার সমগ্র ভারতবর্ষে দৃষ্ট হইয়া থাকে। ইহার কয়েকটি কারণ আছে; (১) অর্থ (labour) শক্তি অপেকা "গা-শক্তি" আমাদের দেশে স্থলত। (২) আমাদের দেশের মাটী বাম্পশক্তির সাহায্যে কর্মণোপযোগী নহে, এবং (৩) বলদের মৃল্য অ্রেনেশে অর্থ অপেকা অনেক কম ও উহা অনায়্যস্পত্য।

থি, মাখন, ননী, ছানা, থোৱা, ক্ষীর, ও ছানা আমাদিগের প্রধান থাদাসামগ্রীমধ্যে গণ্ট বলিয়া, গোপালন আমাদিগের একটি প্রদান ধর্ম। প্রাকাল হইতে অর্থাৎ রামায়ণ ও মহাভারতের যুগ হইতে, হিউএন্ সাঙ্কের সময় ও আইন-ই-আক্বরীর সময় হইতে বর্তমানকাল পর্যান্ত ভারতবর্ষ গোপালনের জন্ম প্রসিদ্ধ ছিল। কিন্তু বর্তমান সময়ে আমাদিগের অনাস্থাপ্তক গোজাতির সমধিক অবনতি ঘটিরাছে। গোপালনের দিকে আমাদিগের সমধিক দৃষ্টি রাধা কর্তব্য, যেহেতু ভারত ক্ষবিপ্রধান দেশ।

এখন একটা জিল্ঞান্য হইতেছে বে, ভারতীয় গাভীর ছব্ব বিলাজী গাভীয় হব্ব অপেকা ভাল না মন্দ এবং কোন জাতীয় গাভী অধিক

হয়বতী প সমাক আলোচনা করিয়া এই প্রশ্নন্থয়ের উত্তর দেওয়া কর্ত্তব্য। অবশ্ব, ভারতবর্ষের অনেক স্থানের কুন্রজাতীয় গাভীকুল স্বন্নত্বরতী হইলেও এই বিশাল প্রদেশে অধিক ছগ্ধবতী গাভীও অনেক আছে। এদেশে এখনও স্থরভি-নন্দিনীর বংশজাগণ আছে যাহারা জার্ষি. ডিভন্শায়ার, গার্ণ সি, হোল ষ্টিন বা স্কইশ গাভীকুলের ছ্থানানের সহিত সমকক্ষতা করিতে পারে। নেলোর, কাথিয়াবাড়, ক্লঞা, মণ্ট গোমেরী, হিসার, ও ঝান্সি অঞ্চলের পগেয়া গাভী যত্নে লালিত পালিত হইলে পাশ্চাতা গাভীকুলের দর্প চূর্ণ করিতে সমর্থ। কেহ কেহ বলেন বে,— "The milk of the Indian cow is too poor in quality to be of any use for large dairy purposes." ইহা সম্পূৰ্ণ ভূল। গাভীব চন্ধের হাসবৃদ্ধি নয়ই, পাওয়ান এবং উত্তম ঘাঁডের উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করে। শেখোক্ত বিষয়ে ছুই এক কথা এই স্থানে বলা আবগুক। একটি কন-ছগ্ধবতী ক্ষুদ্রভাতীয় এবং আর একটা অধিক ত্তমবতী ভারতীয় গাভীর কথা ধরুন। প্রথমটাকে একটি মন্তপুষ্ট যাড় দারা ও দিতীয়টীকে অপেক্ষাকৃত কুশ বাঁড় দারা পাল ধরাইলে (breed) কি ফল হইবে, তাহা বত্র করিয়া দেখুন। গ্রণমেণ্ট ফারমে এবং আমেরিকার কর্ণেল বিশ্ববিদ্যালয়ের পরীক্ষাক্ষেত্রে একরূপই, ফল প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে। প্রথমটার বংদ মাতা অপেকা বলিষ্ঠ, বড় এবং দ্রষ্টপুষ্ঠ হইরাছে; ্যহেতৃ বড় জ্রণ বা foctus (ফিটস্)টি ধরাইবার জন্ম জরার্টিকে অপেকাকৃত বড় আকার ধারণ করিতে হটয়াছে, এবং ফলে বথাকালে সে বলিষ্ঠ বংস প্রসব করিয়াছে। বিত্তীয়তীর বংস যদিও বাঁডের মত বড হয় নাই. কৈন্তু মাতা অপেকা বড় হইলেও হীনবল হইয়াছে। বড় ভরায়ুর ডিমকোরে (Ovary) ভাসিয়া থাকায় ত্রণ (feetus) সর্বাদীন পৃষ্টিলাভ করে নাই বলিয়া বংস্টা হীনবল হইছাছে। সেইজভা তেজস্বর উত্তমজাতীয়, লকণাপর ও বলিষ্ঠ দেখিয়া যাঁড় যারা সংক্রম করান উচিত। যে গাভী গরম হয় না, বা জল-বায়ুর প্রভাবে ঋতুমতী হয় না, তাহাকে মাঠে দেওয়া কর্তব্য এবং জমাবস্থা ও পূর্ণিমার সমরে খেত কুঁচ ও কুকুট-অণ্ডের কুস্ম বা হরিদ্রা অংশ ২০ বার ১৫ দিবদ বাতিক্রমে থাওয়ান কর্ত্ব্য। গাভী ঋতুমতী হইলে তাহার নিম্বর্ণিত কয়েকটি লক্ষণ পরিদর্শিত হয়। বাঁটগুলি লালবর্ণ ধারণ করে, গাভী মৃত্যুত্ত ডাকিতে থাকে, ছট-ফট্ করিতে থাকে, ঘন ঘন মলমূত্র ত্যাগ করিতে থাকে, লেজটি সোজা অবস্থায় পড়িয়া থাকে না। এইরূপ আরও অনেক লক্ষণ আছে; তংসমুদায় যথাস্থানে বিবৃত হটবে।

ভারত গ্রণ্নেন্টের Agricultural Chemist বা ক্লাব-রাসায়নিক ভারতীর গাভার ত্ম সম্বন্ধে ১৯০৫—৬ সালের রিপোর্টে কি বলিরাছেন, তারা দেখুন:—''The Indian cow's milk is not poorer than—but is as rich as that of—the European cow's milk in butter fat." অর্থাৎ ভারতীর গাভীর ত্মে নবনীত সার-ইউরোপীর গাভীর ত্ম অপেকা ক্মনহে, বহুং সমান। Dr. Walter Leather তাঁহার রিপোর্টে ১৯ নং Agricultural Ledgera (এগ্রিকল্চারাল্ লেকার) ১৯০০ সালে নিম্নলিখিত ফল দেখাইরাছেন:—

	তারিণ•	প্রোচীড্	লাকোত	ধাতৰ পদাৰ্থ
১। পুনা	4-2-22	१.७०	8.89	٩ ٤.٥
٦١ "	24-2-22	8.৬২৫	5.9 5	>. • > ¢
७। मार्यना	পেট্ ২৯-৩-০০	8,93	७. >२ €	3.08@
81 ,	8-8-00	930.8	७.७२ ৫	۵. •২
() ,,	9-8-00	8.99	9.966	€.59€

ভারতজাত গাভীগ্নে বিলাতী গাভীর চন্দের মত শতকরা ৪ হইতে ৬ ভাগ মাখন বা মৃত (butter fat), ০.১ চইতে ৬.৫ ভাগ প্রোটীড (কেশান ও এল্ব্যেন), ৪.৪—৫ ভাগ শক্রা এবং

•.৭ হইতে ০.৪ ভাগ ধাতৰ পদার্থ থাকে। গোছুগ্নের উপর আমাদিগের জীবন-ধারণ নির্ভর করে। সেইজন্ত ইহা যতই টাটকা (fresh) धवः विश्वक व्यवशाः वावक्ठ रत्न, उठरे मसूराकीवत्नत भक्त रिठकत। পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ সেইজন্ম বলিয়াছেন. "The cow is a chemical laboratory in which continued chemical changes are going on." গোমর ও গোমুত্রের বিশ্লেষণ দারা ডাঃ लगात >> • माल यांग পाहेग्राइन. जांश निथिल ममाक उपनिक इटेंटर एर. आभारमंत्र रमर्गत्र क्रयक वा ठावागंग किक्र मार्च महे क्रिया থাকে। সারের জন্ত গোমুরের ব্যবহার আমাদের দেশে প্রায়ই দৃষ্টি হর না। গোছাড়েও অত্যতম দার হয়। কিন্তু ইহার বাবহার আমাদের দেৰে চা-বাগান ছাড়া অপর কোন স্থানে দৃষ্ট হয় না। গোজাতি-কি জীবিত, কি মৃত, —উভয় অবস্থাতেই আমাদিগের অশেববিধ হিতদাধন এবং উপকার করে। ছুরির বাঁট ইত্যাদি কুদ্র কুদ্র কার্য্যে হস্তিদন্তের পরিবর্ত্তে গরুর হাড় ব্যবহৃত হুইয়া থাকে। গরুর হাড় পোড়াইয়া তন্ধারা ক্রপা পরিষ্কৃত করা হয়, এবং গুঁড়াইয়া, পোড়াইয়া ও পচাইয়া সারের ম্বায় বাবস্বত হইতে পারে। গুঁড়া হাড় সল ফিউরিক এসিডে কিব। কট্টক প্টানে গলাইরা সারার্থে অবাধে বাবছত হইতে পারে। হাড়ে শতকরা ৫৫ ভাগ কদ্ফেট্-অব-লাইম্ এবং মেগ্নিসিয়া আছে। বৃদ্ধ গরুর হাড় অধিক তর উপকারী।

গো-চর্ম আমাদের দেশে জ্তা, গাড়ীর সাজ, ব্যাগ ও পোর্টমেণ্টো
নির্মাণে, মৃদক্ষ ঢোলকাদি বাদ্যযন্ত ছাওয়াইতে, এবং অন্ত শত শত আবশ্তকীর কার্যো ব্যবস্থ ইইরা থাকে। ভারতবর্ষে যত গোবধ হর, আর কোন
দেশেই বোধ হয় তত হয় না। সেইজন্ত ভারতবর্ষ চামড়ার জন্ত বিখ্যাত।
অল্পনিনের মধ্যে এদেশে কত শত মুসলমান গো-চর্মের ব্যবসায় করিয়া
ধ্যকুবের ইইরা দাঁড়াইয়াছেন। হিন্দুগণ এ ব্যবসায় করেন না; ইই

হিন্দুর ধর্মবিরুদ্ধ বলিয়া ভাজা। কিন্তু আজকাল মুথুযো, চাটুযো ও কভ বল্যঘাটী—ফুলের-মুখুটীর সস্তানও জুভার দোকান করিয়া স্বীয় পদমর্যাদা এক্ষণকার মন্তকহীন হিন্দুসমাজে অক্ষা রাখিতে পারিয়াছেন !!!

গরুর লোম হইতে গদী, জিন, কুশান ইত্যাদি প্রস্তুত হয়; শিঙ্ হইতে ছুরীর বাঁট, চিরুণী ইত্যাদি তৈয়ারি হয়; গো-পদ হইতে নীটদ্ ফুট্-অয়েল্ চোলাই হয়; ইহাতে চর্ম্ম নরম এবং মহণ থাকে। গরুর খুর, হাড়, ও চুর্ম্ম হইতে শিরীশ প্রস্তুত হয়। গোরক্তে চিনি পরিষ্কৃত হয় ও সার প্রস্তুত হয়; এবং শিং, রক্ত ও খুরে রঙ্ তৈয়ার হয়; গো-চর্বিতে সাবান এবং বাতি প্রস্তুত হইয়া থাকে। অতএব দেখা যাইতেছে য়ে, গোজাতি জন্ম হইতে মরণ পর্যান্ত অশেষপ্রকারে মানবের হিত্যাধন করিয়া থাকে।

জামি পূর্ন্ধেই বলিরাছি যে, সমগ্র ভারতে কৃষিকার্য্য বলদের সাহায্যে সম্পাদিত হইনা থাকে। অশ্বশক্তিদ্বারা কৃষিকার্য্য জামাদের দেশের মাটার উপযোগী নহে, এবং পাশ্চাত্য প্রদেশের মন্ত জামাদের দেশে অশ্বও বহল উৎপাদিত হয় না। অশ্বতঃ, বলদ-শক্তি আমাদের দেশে হলত ও জনায়াসলভা। অশ্বশক্তির দারা বা বহুব্যয়সাধ্য বিলাজী কলকারধানার দারা আমাদের মত দীনদেশে কৃষিবৃত্তির প্রবর্ত্তন ও পরিচালন-চেষ্টা মূর্যতা ব্যত্তীত আর কিছুই নাই। উত্তর-গশ্চিম প্রদেশ, পাঞ্জাব, লাহোর, দিল্লী, কুমামূন, অযোধ্যা, গয়া, পাটনা, ছাপরা প্রভৃতি জেলার কৃষির উপযোগী বৃষ্টিপাত শ্বর হয় বলিয়া লোশক্তির সাহায্যে ইন্দারা বা কুয়া হইতে "মোট"-গহাযো জল উত্তোলন করার ব্যবস্থা হইয়া থাকে। ময়দা ভালা, তেল নিম্পেষিত করা, লাঞ্চল বহন করা, শক্ট টানা, স্থরকী মাড়া প্রভৃতি বহুকাজ বলদ-শক্তি-সাহার্যে আমাদের দেশে সম্পন্ন হইয়া থাকে।

, ছক্ষেৰ জন্ম সমন্দেশে গোপালন প্ৰাচীনকালে একটি প্ৰধান ক্লাৰ

ছিল; কিন্তু এথন আমানের দোবেই এই বাবদার ভারত হইতে প্রার লোপপ্রাপ্ত হইতে চলিয়াছে।

আমি পূর্বেই বলিয়াছি গোমুত্র বা গোমরে অভ্যুত্তম দাব হইয়া থাকে। এখন বৈজ্ঞানিক অনুস্কান মতে ডাঃ ওয়াল্টার লেদার সাহেব বলেন যে, গোময়ে যথেষ্ট নাইটোজেন্মিশ্রিত পলার্থ আছে। ডাঃ স্কট্ এবং মিঃ লেদার্ উভয়ের মতে ভিয়নেশ হইতে আনাত গোময়ে কি কি ধাতবপদার্থ আছে, তাহা নিয়লিখিত তালিকা নেখিলে দবিশেষ জানা যাইবে। এই দকল তত্ত্ব বৈজ্ঞানিক বিশ্লেবণ দ্বারা পাওয়া গিয়াছে।

	জলীয় পদার্থ	আদে নিক পদার্থ	ধাত্তব পদার্থ।
শকটের বল্দ	>9.85	८५.८ ८	₹∘.₹8
কাণপুৰ "	१०.२७	8 D. o ¢	٥ ج. ه د
পুন "	98.09	১৩ ৬৭	27 22
কাণকায় বলং	55.65	e5.88	>>.>€

উপবোক্ত তালিক। হইতে বেশ প্রতায়নান হইতেছে, গোন্ত্র এবং গোনরে কিরূপ উদ্নবেব সার প্রস্তুত হইতে পারে, এবং সানাদের দেশের অঞ্চ ক্ষককুল মনভিক্ষত। বশতঃ সুমগ্র দেশে তাহা অবাবে নই হইতে নিতেছেন। সার সম্বন্ধ আনি "দাব"-পর্যাত্রে সামান্তরূপ মালোচন। করিয়াছি। গোরকে "প্রশীয়-ব্ল" নামক বঙ্ এবং অক্তের সংযোগে সোনার তবক প্রস্তুত হইয় থাকে। ফলতঃ গোক্তাতির দ্বারা সশেষ প্রকার উপকার সাধিত হইয়া থাকে।

তৃতীয় পরিক্রেদ।

উৎপত্তি, বর্ণ, ইভিব্নত, ইত্যাদি।

প্রাণীতত্ববিদগণের মতে ভারতীয় গোঙ্গাতি মেদেশিয়া (mammalia) ধা স্তন্ত পান্নী পরিবারের অন্তর্গত রোমত্বারী (ruminentiae) গণের মধো বেভাইডী (bovidæ tribe) জাতির অন্তর্ভুক্ত (bos) জিনদের (genus) subgenus বা শাথা বদ-ইণ্ডিকাদ (bos indicus) নামক শাথাভুক্ত। গৃহপাণিত ভারতীয় গোজাতি অতি প্রাচীনকালে, এমন কি ২১৫০ খঃ-পূ: সালে বন্ত বন্ (bos) জাত্তি হইতে জন্মিয়াছে বলিয়া মহাত্মা ডাক্সইন্ প্রকাশ করেন। ভারতবর্ষের কয়েকটি পার্বত্য স্থান. মণাভারত, তিব্বত, ও মধা-এসিয়া প্রভৃতি কয়েকটি স্থানে বস্তু গোজাতি প্রাকৃতিক অবস্থায় বিচরণশাল পরিদৃষ্ট হয়। পাশ্চাতা প্রধান প্রাণীতস্থবিদ্ महाद्या एक्टिन तत्तम (य, अनुम २२०० मेठ त्रमत्र शृद्ध এই त्र গোজাতিকে আদিম মহুষাজাতি পালিতাবস্থায় আনিয়া খীয় অশেষকার্য্যে নিযুক্ত করেন। মেষ ও ছাগুল ইছাদের বছকাল পরে মনুষ্যজাতির বখাতা স্বীকার করে। ইহারা স্কলেই একপরিবারভুক্ত এবং সেই জন্ম ইহাদের তিনটি জাতিরই রোগাদি একপ্রকার। বস্তহরিণ ও পালিত মহিষও এই বৃহৎ পরিবারভুক্ত। গোজাতির স্থায় মেষ, ছাগল ও মহিষও ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে আছে। সাদেক্ষ্, মেরিনো, সারে (Surrey), প্রপ্সায়ার, ডিভন্, প্রভৃতি ভিন্ন ভারার মেষজাতি পাশ্চাত্যদেশে দৃষ্ট হয়। সেইরূপ মাৰায়া, টগেন্বৰ্গ, স্থইদ, ইংলিশ, মিশরীয় প্রভৃতি করেক প্রকার ছাগলও দেখিতে পাওয়া যায়; ভাহাদের বিষর পরে শীরনের বিবৃত হইরাছে। গো এবং মেব বা ছাগলের চিকিৎসাও একর্মী।

গোজাতি মহীশূর, নেলোর, চরসিদ্ধি, মেঘনা-নদের উর্বার চরসমূহে, কুমায়ুন ও রোহিলথন্দ প্রদেশে, এবং হিমালয়-প্রদেশে দৃষ্ট হইয়া থাকে।

গোমাংসের জন্ম আমেরিকা অঞ্চলে রহং ঘেরার মধ্যে পালিত গোজাতিকে ছাড়িয়া দেওয়া হয়। ইহাকে বেঞিং (ranching) বলে। অত্রতা গোগণ করেক বংদর পরে অবাধে বাডিলে তাহাদিগকে হনন করিয়া "মীট-উটের" (Meat Trust) নিকট তাহাদিগের মাংদ বিক্রয় করিয়া আমেরিকার বহুরুষক অর্থবান হইয়া পাকেন। আমাদের দেশে গো-হনন শাস্ত্রের অফুশাসন-মতে একবারেই নিষিদ্ধ। কিন্তু তথাপি এক্ষণে ভারতে প্রত্যহ যে পরিমাণে গোবধ হইতেছে, তাহাতে দিন দিন কৃষির অবস্থা শোচনীয় হইয়া আসিতেছে। আমাদের দেশের বিস্তীর্ণ অমুর্ব্বর ভূভাগে মুদলমানগণ বা অস্তাক্ত জাতিগণ যদি আমেরিকার मठ "त्याकिः" कतिया थाएगत क्रम भा डिश्लामन करवन, जाहा इहेटन এই শোচনীয় অবস্থার বরং কতকটা প্রতীকার হইতে পারে। ১৮৫৮ मार्लत ইণ্ডিয়ান फिल्फ मि: वि, এচ, (Mr. B. H.) निश्चिमाছिलन যে, আকবরপুর ও দোন্তপুর জেলায় জার টি, প্রোবি ক্যাণ্টল (Sir T. Proby Cantle) ১৮২॰ সালে বভা গো-পাল দেবিয়াছিলেন। পুনন্দ, ডা: বটুলার তাঁহার "Topography of Oudh" (টপোগ্রাফি অব আউড) নামক পুস্তকে স্পষ্টই লিখিয়া গিয়াছেন বে, বঙ্গবংশীয় বস্তু গো-জ্বাত্তি প্রায়ই কালবর্ণের হইরা থাকে এবং হরিপুরের নিকটস্থ वरम वरुष पृष्टे द्य ।

গোজাতির উৎপত্তিসথয়ে প্রাণীতত্বিদগণের মধ্যে মতভেদ দৃষ্ট হয়। মি: ব্লাইদ বলেন বে, ক্ষতি প্রাচীনকালে আফ্রিকা প্রদেশ হইতে ভারতে গোজাতি আনীত হইরাছিল। আফ্রিকা প্রদেশ প্রান্তীন কুক্তরাজ্যের অংশবিশেষ ছিল। কিন্তু এই মতটি আমার সমীচীন রালিয়া বোধ হয় না। মিশরদেশের পিরামিডের উপরে অন্ধিত গোমুন্তি দেশিরা মি: ব্লাইদ্ এই কথা বলেন; কিন্তু হিমালর প্রদেশন্থ ভূগর্ভ হইতে যে গো-কন্ধাল পাওয়া গিরাছে, তাহা পর্যাবেক্ষণ করিলে বেশ বোধ হয় যে, পিরামিড্ নিশ্মাণের বহু বহু শতাব্দী পূর্ব্বে ভারতবর্ষে কুকুদ বা ঝুঁটযুক্ত গোজাতি বর্তমান ছিল।

ভারতীয় গোজাতির বৈজ্ঞানিক নাম 'জেবু' (Zebu) অর্থাৎ ঝুঁট বা কুকুদযুক্ত গোক্ষাতি। বিলাতি গোক্ষাতি কুকুদ্বীন এবং ইহাদের শিঙ্ গোল (cylindrical); ভারতীয় গোজাতির শিঙ্ চাপ্টা (flattened)। বন্ত গরাল, বাইদন্, ইয়াক্ প্রভৃতি জাতিগণ ভারতীয় গো-ফ্রাতির সহিত বিশেষ সম্পর্কিত বলিয়া আমার মনে হয়। বিলাতি গোজাতি 'বদ্-টরাদ্' (bos-taurus) পরিবারের অন্তর্ক। এই ছই পরিবার এখন ভিন্ন বলিয়া প্রতিপত্ন হইলেও, ইহাদের মধ্যে সংযোগকালে সঙ্কর শাবক উংপাদিত হইয়া থাকে। মহিষজাতির মধ্যে যেমন একপালের অন্তভুক্তি স্ত্ৰী এবং পুক্ৰমধ্যে জননক্ৰিয়া বহিত হয়, গোজাতির মধ্যে শোণিতের দেরপ অমিশ্রণ-ভাব আনুদৌ দৃষ্ট হয় না। এখন বিজ্ঞান-বলে 'জেবু' এবং 'টরাইন্'গণ ছঁই বিভিন্ন পরিবার বলিয়া পরিগণিত হইয়ছে। (১) 'জেবুর' কুকুদ্ আছে, 'বদ্-টরাদের' (bos-taurus) অর্থাৎ পাশ্চাতা গোজাতির তাহা নাই। ·(২) 'জেব্র' জণপিও, 'টরাদ'দিপের অপেকা কৃত্রতর হর। (৩) ^বটরাদে'র শাবকের গর্ভ হইতেই দস্তোদগর হর কিন্তু 'ক্রেবু'র তাহা হর না। (৪) ক্রেবুর শাবক কুল্লভর হয় (rounder and shorter) এবং পশ্চান্তাগ গড়ানে "(hind quarters slope abruptly instead of being continued straight to form a right angle as in the case of taurines) 1" বিশাতি গোলাতির কাণগুলি ইবং গোল বা বাদানী; কিন্ত কেবুর কাণভলি কিছু তীক্ষাগ্র-বিশিষ্ট। ভারতীয় গোজাতি এক নময় চীন, ৰাণান, ভূকীয়ান, ছাক্ৰিকা, ভাস্বানিয়া, ৰট্ৰেলিয়া প্ৰভৃতি হানে বছল দৃষ্ট হইলেও এখন ভাবতবৰ্ষ ভিন্ন অপবস্থানে বড় একটা দেখা বানুনা। পশ্চিম-ভাবতীয় দ্বীপপুঞ্জ, বুটিশ গায়েনা, অষ্ট্রেলিয়া, উত্তর আমেরিকা, কেপ্কলোনি প্রভৃতি ছানে এই জাতীয় গোজাতি দৃষ্ট হয়: ইহাবা সন্ধরোংপাদনেব জন্ম এ সকল দেশে নীত হইয়াছে। প্রবন্ধতাদেশেও ভারতীয় গোজাতিব বংশধবংগ দৃষ্ট হয়। ইহাবা পুর পবিশ্রমী এবং ক্ট্রস্থিত্ব, সন্ধেত্মাতে পদিয়া পড়ে এবং দড়াইয়া উঠে। চেন্ট্রইক্ এবং ভিনী এই ভারতীয় বৃবুদ্যুক্ত গোজাতির বিষয় জ্যালোচনা ক্রিয়া গিয়াছেন।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

গোজাতির শরীর, গঠন, প্রকৃতি ও অঙ্গ-ব্যবচ্ছেদ। (Anatomy)

ভাৰতীয় গোন্ধাতিৰ বৈহিক গঠন প্ৰভৃতি অথ এবং কুকুরজাতির দিশবের্ত্তী। ইহাদের পায়ে চইটি কবিয়া চেবা থব আছে এবং সক্ষেদ্ধ প্রত্যেক পারে ১৯ বা ২০টা করিয়া অন্তিও বিদ্যোম। অধ্যাপক छिडे:यहे, (हमडेटेक, ब्रा.७ काछ, असन विहाड, टेडेबाहे, अबल अबी, लिएडकाর मिलिहात मनमन এवः अन्नानामन भएड "The ox (like the dog) has the ulna and radius united into what is practically one bone and fibula a mere rudiment." হজ্পনের (Hodgson) মতে অম্মদেশের গোজাতির প্রত্যেক দিকে ১৪টি ক্রিয়া পঞ্জরান্থি আছে। বিলাতি বা ট্রাইনদের ১৩টির অধিক कनाठ इत्र ना। मि: (छमी (Vasey) वर्णन (ए. छेत्राञ्चनट्रम्य 8৮6 ভাটিরি (vertebrae): কিন্তু জেবুজাতির ৫২টির কম হয় না৷ উচ্চাব নতে জেবুর শাভিক্যাল ভাটিরি (Cervical vertebræ) ৭টা, ডশাল (dorsal) ১৩, লম্বার (lumber) ৬, সারাল ভাটিরি (Saral vertebræ) ৪টা বলদগুলির ৫টি, এবং কার্ডাল ভাটিরি (cardal vertebra:), ১৮টি না হইয়া ২১টি হইয়া থাকে। অধ্যাপক চেন্টইক এবং ভেশী বলেন, "They have no true dorsal ridge; but ometimes a floshy hump. Muffle very large and are." ঝুল (dewlap) দোছালমান হইয়া থাকে।

দেশী গোজাতির মন্তকে ২৮টি এবং বাড়ে (neck) ৭টি অন্থি

ভ্য়। "Cranium moderate, compressed, proportionate or without excess in cerebral or facial region. Frontal bones shorter than the face, if not broader than the length. Occipital plane of the skull square, never arched along the ridge line, nor indented by the temporal pits, smaller than the frontal plane forming an acute angle therewith." গোজাতির শিঙ্ গুলি মস্তকের সর্কোচ ভান দিয়া নির্গত হয়। এ সম্বন্ধে কর্ণেল বিশ্ব-বিদ্যালয়ের ডিরেক্টার মিঃ বেলা, আই, পি, রবাট স্, ও অধ্যাপক ব্লাও কোর্ড, মন্মন্ এবং ডলার বলেন বে, "The horns of the bovidæ are attached to the highest line of the forehead, rounded, curved up and down or forward ascendantly; the orbits are not salient."

পোজাতি বোনছনকারী জন্ত। ইহাদের পরিপাকের যন্ত্রট অভিশর
আটল। ইহাদের পরিপাক-বছে চারিটি থলি আছে। প্রত্যেক থলি
বতন্ত্রভাবে আপন আপন ক্রিয়া করিয়া থাকে। ইহাদের দৈহিক গঠন
দলকে ডাঃ পিয়ারদন, ব্যাঙ্গ, রক্ত্রদ এবং কর্ণেলের অধ্যাপক মিঃ এল,
এইচ, বেলী, বাবি কক্ প্রভৃত্তি মহোদয়গণ বলেন—"But on the
limbs intermediate character of the muscles, corresponding with the intermediate number of toes is very
obvious. On the outer side of the forearm the same
muscles as the dog, vis. six extensors on the outer side
and the forepart of the limb, seven flexors on the hind
part of the limb and inner side; supinators two, and
two pronotors. But they are more united than in the

dog and have less independent action. The extensor communis is however peculiar in being split in two parts. On the thigh the ox has vastus longus and on the leg peronus longus."

পাশ্চাতা বৈজ্ঞানিকগণ নির্ণন্ধ করিয়াছেন যে, ভারতীয় গোজাতি বাঁড়-সন্তোগের পব হইতে ২৭০ দিনে এবং টরাইন্গণ ৩০০ দিনে সন্তান প্রস্ব করিয়া থাকে। এই বিষয়ে পরেও উদ্ধিপিত হইয়ছে। অধ্যাপক ব্লাইন্ (Blyth) বলেন যে, পাশ্চাতাদেশের গাভী বা টরাইন্গণ বৌদ্রের সমর গাছের ছাওরার বা অপর কোনরূপ আন্তরণযুক্ত স্থানে থাকিতে এবং হাঁটু পর্যন্ত জলে নামিয়া জলীর ঘাস থাইতে ভাল বামে। ভারতীয় গোগণ ইহার বিপরীত স্বভাব-বিশিষ্ট হইয়া থাকে। তাহারা কচিং ছায়ায় যায়, কিংবা টরাইন্দের স্তায় জলের থারে শীতল স্থান বিশ্রামেব জন্ত অনুসন্ধান করে। ভারতীয় গোজাতি খুবই পরিশ্রমী এবং কষ্ট-সহিষ্ণু হইয়া থাকে, এবং সেই জ্বন্ত ভারতের স্তায় প্রীয়প্রধান দেশের জন্ত তাহারা খুবই উপযোগী বলিয়া মনে হয়।

গোজাতির ব্রাণেক্রির এবং প্রবণেক্রির খুব তীক্ষ হইলেও ইহালের দর্শনেক্রিয় অপেকাক্রত ঐগুলি অপেকা হীনশক্তিসম্পন্ন। সাধারণতঃ ভারতীয় গোজাতি খুব শাস্ত এবং ধীরস্বভাববিশিষ্ট হয়; কিন্তু অপরিচিত লোক দেখিলেই তাহারা বড়ই অশাস্ত হইরা উঠে। এমন কি, গুঁতাইতে অগ্রসর হয়, লাখি ছোড়ে, লাকালাকি করে ও শিঙ্ক দেখার। দেশী গাভী বা বাঁড়ের হাখা-বব এবং বিলাতী গোজাতির ভাক জোর বেলো ("bellow, in which the lungs and the throat play an important part") হইরা থাকে। গোজাতির সকল শরীরাংশের মধ্যে দন্তটি কম উপকারী নহে। দন্তের ঘারা এবং শিঙের গোল চিক্লের খারা বক্ষর বয়স এবং অসব-কাল নির্বর করা

গিয়া থাকে। জেবুদের দন্তোদগম হইতে বিলম্ব হয়। বিলাভি গোজাতির মাতৃগর্ভ হইতে দন্তোদগম হইয়া থাকে। কিন্তু জেবু বা কুকুদ্যুক্ত ভারতীয় গোজাতিব তাহা হয় না; বরং তাহার বহুকাল পবে গ্রা-দন্ত পড়িয়া যাইলে আদল বা স্থায়ী দন্ত উঠিয়া থাকে। জেবুর সন্মুখে ৮টী দাঁত আছে; ইহাদিগকে গো-চিকিৎসকগণ (veterinary surgeons) 'ইনলিজদ্' (incisors) বলেন। এই গুলি নিম্নদিকের হয় বা প্রচদেশের হয়ুতে (Jaw) উঠে; উপরে কোনরূপ incisorএর উলগম্হর না। ইহার পরিবর্তে উপরের হয়ুতে এক কঠিন চন্মের মাচি আছে। এ সম্বন্ধে অধ্যাপক ব্ল্যাণ্ড ফোর্ড এবং ওয়ালেশ বলেন:—

"They are situated just within the lips and are used for biting the food. The two in the middle are central incisors: the next two i.e. one on each side of the central are internal laterals; the next two, one on each side of these internal laterals are external laterals, more properly called the outer laterals, the remaining two are called corners. The Indian humpless cattle have no tusks, no canine teeth, a fact shewing that they are herbivorous and not carnivorous.

গোজাতির কুরুরীয় দন্ত নাই বলিয়া ইহারা মাংসাশী নহে বরঃ
ত্রণ-ভক্ষণ-কারী জন্ত। জন্মিবার ছয় নাসের নধ্যেই ইহাদের ছয়-দন্ত
নির্গত হইয়া থাকে এবং এক বংসরের হইলেই সকলগুলিই উথিত হয়।
ছয়্ম-দন্ত দেড় বংসর হইতে পড়িয়া তাহার স্থানে স্থায়ীদন্ত (permanent incisors) উঠে। ছই বংসর হইতে মাঝের দাত (central incisors)
উঠে এবং সাড়ে চার বংসরের মধ্যেই সন্মুখের উপরোক্ত আটটী দন্ত
বাহর্মনত হইয়া মুখটী পূর্ণ আকার ধারণ করে।

ইহাদের কদের দাঁতকে ('molars") মোলার বলে। মোলার তুই পার্টিতেই উনগত হইয়া থাকে। এইগুলি "hypsodont" হিপ্দোড় ক্রথাং গোড়া সরু এবং উপরভাগটি লম্বা ও চৌড়া হইয়া থাকে। সর্বশুদ্ধ ছই পার্টিতে ইহাদের ২৪টি মোলাব দক্ষোপ্রম হয়।

আকার গঠন ইত্যাদি।

ভারতীয় গো-ফাতির পাগুলি লম্বালম্বা হয় এবং উরুদেশ পাশ্চাভা-জাতির ভার মাংসল না হইরা মাংসহীন হইরা থাকে বলিরা পাওলি লমা দেখায়। ইহাদের পঞ্জর-অন্থি ১৪টি করিয়া প্রত্যেক পার্বে থাকে: কিন্দ বিলাতি গাভীর পঞ্চরান্থি ১৩টি করিয়া থাকে। ভারতীয় গো-স্থাতিব বক্ষঃস্থল খুব বিশাল এবং চৌড়া হইয়া থাকে। পঞ্জরান্থি মোটা, গোল এবং বলবাঞ্জক হয়। ভারতীয় গোজাতির বংশও পরিবার-ভেদে ভিন্ন ভিন্ন আঁকারের হইরা থাকে: অর্থাৎ কোন কোন জাতি ক্ষুদ্র এবং কোন কোন জাতি দেশ, কাল, পাত্র গু জন-বায়ু ভেদে বৃহং হইয়া থাকে। এই আকার ও গঠন **দেশতে**কে খাদা, দেশ ও জল বায়ুৰ উপর নির্ভব করে। বিলাক্তি গো-জাতির পশ্চান্তাগটি পুঠের সহিত্তে সমরেবার সোঞ্জা থাকার গাভীগুলির চতুকোন (square) আকৃতি হইয়া থাকে। কিন্তু কেবুর পশ্চাদৃপদগুলি সম্মুখের পদ্ধর অপেকা ছোট হয় বলিয়া ইহাদের পিছনগুলি "হঠাৎ ঢাৰু" চইরা খাকে (invariably short and abruptly drooping backwards.) ঘাড়ের বা স্কন্ধের উপর ইহাদের মাংসপিও दुषि भारेश "कुकून्"क्राम लां वर्षन करिया थारक। त्मरे बना देशता মন্তক অপেকা ঘাড় হেঁট করিয়া সচরাচর চলিতে বাধ্য হয়। এই কুকুদ ধারাই ভারতীয় গো-জাতি সর্বতে পরিচিত হইরা থাকে। গাভী

অপেকা ঘাঁড়ের মধ্যে এই "কুকুদ" পরিবর্দ্ধিত ভাবে পরিদৃষ্ট হয়। কুকুদ বভ হইলেই এই মাংস্পিও এক পার্মে কুলিয়া পড়ে। ইহার ছারা পশুর বলবাঞ্চক ক্ষমভাটীর পরিমাণ করা হইর। থাকে। স্থবাটের নিকটবর্ত্তী স্থানে একবংশীয় গোজাতিব তুইটা করিয়া কুকুদ দেখা যায়। সাহেবগণ লবণাক্ত কুকুদ-মাংস অত্যন্ত উপাদের সামগ্রী বলিয়া বসনার ভৃত্তিসাধন করিয়া থাকেন। পাশ্চাত্রনেশে রসনার তৃত্তিসাধন জন্য গো-হনন করা হইয়া থাকে। আমেরিকার পশ্চিম প্রদেশগুলিতে, বিশেষতঃ কালিফ্রিলার, মিচিগান, ওহিও, কেন্টকি প্রভৃতি দেশে বিস্তীর্ণ প্রেরী (prarie) বা তুণক্ষেত্র পড়িয়া আছে। চাষীগণ এই গুলিকে ঘিরিয়া नीयावक कतिया जनजास्वत्व त्राक्ष्टि (Ranching) धात्र रूनन कना গোচাষ करत। এই গোমাংস ভাহার জামেরিকা প্রদেশের "মিট-ब्राट्डेव" श्ट्ड व्यक्षिक मृत्मा विक्रम कतिया थात्क। जावक मस्दर्भ কিন্তু কথাটি স্বভয়। এ দেশে মাংসের জন্য গোচায করা হয় না। এই বিশাল প্রদেশে যে যে খণ্ডে ক্লবির উন্নতি-সাধনের কোনরূপ অন্তরায় দৃষ্ট হয়, সেই সেই স্থানের অধিবাদিগণ গো-জননের প্রতি অধিক মন:-দরিবিষ্ট করার কালে আমরা ২।৪টা অতি বুহং আকারের চগ্মবতী এবং অক্তাৎস্কৃত্ত গোঞাতি পাইতে সমর্থ হইয়াছি। অশ্বন্দেশের গোজাতির ললাট-পট্টটা কৃৰ্মণুষ্ঠবং স্থান্ত এবং বিলাতি জাতিব ন্যায় লোমার্ভ (shaggy) नरह।

ইহাদের বুল (dewlap) টু টির বা গলার নিয়ভাগ হইতে আরম্ভ হইয়া
পিধান-পুট—(sheaths) পর্যান্ত লোহলামান অবস্থার থাকে। বিলাতে
টরাইনদের চক্স্পুলি বড়, গোল এবং জ্যোতি:বাঞ্চক বলিয়া হোমার তাঁহার
কাষিথ্যাত ইলিয়ড পুস্তকে জ্নোর বর্ণনাস্থলে র্যন্তননা "(ox-eyed)"
জ্নো বলিয়া উলেথ করিতে জনী করেন নাই। ইহাদের লিঙ্ দল্পবিকে প্রান্ত বাঁকা হয়। কেবল মহীশ্র এবং অপরাপর হই এক

রহং জাতির শিঙ্ উর্জগামী এবং শিলিপ্রিক্যাল (cylindrical) হইতে দেখা যায়। ভারতীয় জেব্র শৃঙ্কের গঠন প্রার ইহার শিঙের মত হইয়া থাকে।

বঙ্গদেশের গোজাতি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র আকারের হয় এবং ইহাদের শিঙ্গ
সন্মুপদিকে ঝুঁ কিয়া থাকে এবং সময়ে সময়ে বর্দ্ধিত হইরা চক্ষুর কোণে
লাগিবার আশ্বাহয়। রুষকগণ এই গুলি বিশেষ বর্দ্ধিত হইলে চক্ষ্
নাই হইবার ভয়ে কয়াত-সাহায়ো ছেদন করিয়া থাকে। বিলাতি
গোজাতির, বিশেষতঃ চ্যানেল্-বংশীয়গণের শিঙ্ বড়ই ক্ষুন্দর এবং
আর্দ্ধগোলাক্তিভাবে মস্তকের শোভা অধিকতর বর্দ্ধন রুক্রিয়া থাকে।
কোন কোন ভারতীয় গোজাতির, বিশেষতঃ বোঘাই প্রদেশের গোবংশের মস্তকের মধাস্থানের হাড় হইতে একটা অন্থিওও বর্দ্ধিত হইয়া
মস্তকের অধিক শোভাবর্দ্ধন করিয়া থাকে। ইহাকে চলিত ভাষায়
'নিশ্বরি' বলে।

গোজাতির চারিটা বাঁট আছে আরও ইহাদের লেজ সোজা এবং শেবভাগে একটা গুছে পরিণত হয়। দেশী গোরুর মুখড় (muzzle) বড় লখা চৌড়া হইরা থাকে। গোজাতির খুর চেরা (cloven). ভারতীর গোজাতি অপেকা টরাইনদের অঙ্গ-প্রতারগুলি খুব মানান-সই (neatly formed) এবং লখা হয়। গায়ের লোম রেশমের মত চক্চকে এবং বড় ইইরা থাকে। ভারতীর গোজাতির চর্মের বর্ণ প্রায়ই কাল হয় এবং ইহাদের গাত্রে বিরশ লোম হয়; কিন্তু ভারতবর্ষের মধ্যে পার্কত্য জাতিগণের গায়ের লোম বিলাতি টরাইন্গণের মত অর্থাৎ বেশী ও মোটা বা খনলোমযুক্ত ইইরা থাকে। বিলাতি গাভীদের মুখড় প্রচরাচর কৃষ্ণবর্ণের হয়। দেশী গাভীর সাদা মুখড় স্টরাচর কৃষ্ণবর্ণের হয়। দেশী গাভীর সাদা মুখড় স্করিখান সম্পূর্ণ ভারতিবিক হয়। দেশী গাভীর সাদা মুখড় স্করিখান সম্পূর্ণ ভারতিবিক হয়। দেশী গাভীর সাদা মুখড় স্করিখান সম্পূর্ণ আরি-

মূলক। বিলাতি গাভীগণের বর্ণ একরঙ্গা কদাচ হর না। ইহারা প্রায়ই গাঢ়গুসর বাঘাটে, কালান্দি চিক্রিত, বছবর্ণাভ হইয়া থাকে। গুলবসান বর্ণবিশিষ্ট গাভীগুলিকে সন্ধর বলিয়া জানিবে। কিন্তু যাহাদের শিরায় অমিশ্রিত শোণিত প্রবহ্নান, তাহাবা খাঁটি ("pure bred are usually whole coloured.") বিবেচনা করিবে।

গোন্ধাতির অকপ্রতালগুলি ভিন্ন ভিন্ন নামে 'ফভিছিত ইইরা থাকে।
তাহা ক্ষকমাত্রেরই জানা কর্ত্তবা। নিম্নলিখিত 'ক'' প্রতিকৃতি ইইতে
প্রতাকে তাহা অবগত ইইবেন। গাভীর "points" এবং ষাঁড়ের
"points" এ কিঞ্চিং বিভিন্নতা আছে। গাভীও ষাঁড়ের স্বতম্ব অংশশুলিব ভালিকা নিম্নে প্রদত্ত ইইল :---

>। মুক (Serotum.) २। 'পিধান (Sheath.) ৩। কুকুদ্ (hump.)

গাভীর "points" নিমে প্রদত্ত হইল :—

(১) মন্তক (Head), (২), মুপোড় (Muzzle), (৩) নাকের ছিন্ত (Nostril), (৪) মুথ (Face), (৫) চকু (Eye), (৬) ললাট (Forehead) ভাল, কপাল, (৭) শিং (Horn), (৮) কান (Ear), (৯) গাল (Cheek), কপোল, (১০) কণ্ঠ, গলা (Throat, (১১) গীবা, গলা (Neck), (১২) কর্মদেশ Wither), (১৩) পৃষ্ঠ (Back), (১৪) কটি, নিতম, ক্ষবন (Loins), (১৫) কটিভট (Hip Bone) প্রোণ, (১৬) বন্তিদেশ (Pelvis arch), (১৭) নিয়-কোমর (Rump), নিতম, (১৮) বেজ (Tail), (১৯) পল্লব, পোবা (Switch), (২০) বন্ধ (Chest), (২১) বন্ধ-পঞ্জর (Brisket), (২২) ঝুল (Dewlap), (২৩) ক্লম্ম (Shoulder), (২৪) বর্গল (Elbow), কুর্পর, (২৫) প্রকোষ্ঠ, বাছ (Forearm), (২৬) ক্লান্ত (Knee), (২৭) গুল্ক, ঘুটীকা (Ankle), (২৮) ক্লুর (Hoof), (২৯) বাছমূল, ভুজকোটর (Heart-girth Armpit), (৩০) পার্থ

side or varral), (৩১) পেট (Belly), (৩২) পার্ষাঙ্গ, কুক্ষি (Flank), (৩৩) ছগ্ধশিরা বা নাড়ী (Milk vein), (৩৪) সমূপ্রের পালাম (Fore udder), (৩৫) পিছনের পালাম (Hind udder), (৩৬) বাঁট (Teats), (৩৭) উদ্ধৃতিক (Upper thigh), (৩৮) ভজ্যাকনর (Stifle, (৩৯) পাছা (Twist), (৪০) পা (Leg or Gaskin), (৪১) পশ্চাং কমুন্ট (Hock), (৪২) পদের অন্থি (Shank), (৪৩) পিছনের নথ গলুই (Dew claw), (৪৪) (Escutcheon) লোমরাজী, (৪৫) গুহা (anus), (৪৬) যোনি (Vagina).

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

ভারতীয় গোলাতির শ্রেণীবিভাগ।

পাশ্চাভাদেশের স্থসভা অধিবাসীগুল বাহা করেন, তাহাই জভাস্ক মনোহর এবং স্থব্দর হইরা থাকে। বিলাতে বা ইউরোপীয় মহাদেশে বা আমেরিকার দেশভেদে ভিন্ন ভিন্ন জাতীয় গো উৎপাদিত চুটুয়া থাকে। তাহাদের ক্রমিক ইতিহাস ও বিবরণ আমি এই পুস্তকে পরে দিয়াছি। গার্ণশী, জাসী, ভোল ষ্টন-ফ্রিকীয়ান, এবার্ডীন-আক্সন, কেরী, রটনী, সারশিয়ার, ডিভন, ডচ্বেন্টেড প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন জাতীয় গোজাতির উন্নতি ও সমীকরণ জন্ম ভিন্ন ভিন্ন সমিতি আছে। এই সমিতিতে এক এক প্রকার গোঙ্গাতির উন্নতি বিধান-করে শিকা দেওয়া হয়; পুস্তক ও প্রবন্ধাদি রচিত হইয়া পঠিত হইবার পর কৃষকগণের জ্ঞানবিস্তার জন্ত বিনামূল্যে বিতরিত হইয়া পাকে। ইহাদের ইড বুক এবং রেজিট্টা আছে। কিন্তু আমাদের হতভাগা দেশে —বেখানে গোকাতি চিরপ্রসিদ্ধ ছিল—আমাদিগের নিকেদের অধংপাতে বাইবার কারণের সঙ্গে সঙ্গে স্বই লোপ পাইরাছে। অন্যাবধি কেইই প্ৰতা ভারতের গোজাতির বর্গ বিস্তাস করেন নাই। কাজেই আমাদের পক্ষে ইচা নির্দেশ করা অতীব গুরুতর কার্য্য হইয়া উঠিয়াছে। মিঃ পীজ , কৃষ্ণমঙ্গার, কুক, ওরানেশ , রিচার্ড ব্লাপ্ত কোড , শেল্ডন , নেটার, ইউয়াটু, মনসন, মেলো, এবং জয়দত্ত হুরী প্রভৃতি গো-তত্তবিদ্যুণ ভারতীয় ভিন্ন ভিন্ন ইঞ্চাতীয় গোলাভিব স্ববেদ আলোচনা করিয়াছেন : কিন্তু কেইট তাহাদের গণীকরণ করেন নাই। সেইজয় ৰাছ যত্ন ও কট স্বীকার করিয়া আমি ভারতীয় সমুদর গো-ভাতি শিরিদর্শন করিয়া উপবোক্ত মহাত্মাদিগের পুরুকের সহিত মিলাইরা

গনীকরণ বা বর্গ-বিস্তাদ করিতে চেষ্টা করিয়াছি। পাঠকগণ ইহা পাঠে সম্ভ্রুট হইলে শ্রম সার্থক বিবেচনা করিব।

আমাদের দেশের গোজাতির অদ্যাবধি শ্রেণীবিভাগ (classification) কেহ কথনও করেন নাই। আমাদের দেশে হার্ড-বুক (Herd Book) নাই। কাজেই এই নুতন কাজে হস্তক্ষেপ করা কিছু কঠিন।

১। মহীশূরবংশীয়।

ভারতবর্ষের মধ্যে বতপ্রকার বিভিন্নজাতীয় গো-বংশ দৃষ্ট হয়, ভাহার মধ্যে মাইশোর-পরিবারই সর্কেৎকৃষ্ট, বলিষ্ঠ, আকারে বৃহৎ এবং সকলের শার্বস্থানীয়। শকট-বহনে, কামান টানিতে, এবং মোটে জল টানিতে ইহারা খুবই উপযোগী। ক্রতগতি, বল, চঞ্চলতা, ও শক্তিৰ জন্ত ইহারা সমগ্র ভারতে প্রসিদ্ধ হইলেও এই জাতীর গাভিগণ আদৌ চ্ত্রবতী নতে: ইহারা দিনে দেড় বা চুই সেরের অধিক চুগ্ধ কদাচ त्तर मा। इल-वहरम हेहाता विराध जेनरवाशी मा इहेरल ६ मन कार्याक्य বলিয়া বোধ হর না। এই জ্বাতীয় গো-জ্বাতি অতি প্রাচীন কাল হটতে ভারতে পালিত এবং উৎপাদিত হট্যা আদিতেছে। এই জাতীয় वनम् थूद कष्टे महिक्कू, काभनवाना , मिथिता समात, ठकन वदः मक्छोति যানবহনে বিশেষ পটু। অতি প্রাচীনকালে গোলা এবং অগরাপর जनगर्नीम कार्जिंग ग्रवामि भागित १७ महेग्रा धरे विकीर्ग अस्तरमञ् ক্টর্বর চারণ-ভূমি দেখিয়া উপনিবেশ স্থাপন করিলে, সময়ে তাহারা স্থানীর গো-জাতির সহিত জানীত গ্রাদির সংযোগে নির্বাচন-বিধির দারা এট উৎকট গো-জাতির উৎপাদনে সমর্থ হইয়াছে।

মহীশ্র প্রনেশে প্রধানতঃ হই জাতীয় গো-জাতি দেখিতে পাওবা বার; (১) নাহদানা বা মহীশ্রের স্থানীয় বা আন্য গো-পরিবার, এবং (২) দাহদানা বা মহীশ্রের বৃহৎ গোরংশ।

১। প্রাচীন অসভা বা বন্ধ আদিম-নিবাসীগণের পালিত গো-জাতি **হইতে** এই নাহনানা বা প্রামা **অপেকার**ত ক্ষুদ্র মাতীশর গো জাতিব উৎপত্তি হইয়াছে বলিয়া অনুমিত হয়। যদিও এই জাতীয় গাভীগুলি আদৌ নন্দিনী বা স্থবভির মত দ্রোণগুলা নহে, তত্রাপি স্থানীয় ছগ্ধ সৰবৰাহ এই জাতীয় গাঁভা হইতেই প্ৰধানত: হইয়া থাকে। ইহারা মহীশ্র দেশায় অপব গো-ভাতিব মত আদে) উত্তন ছগ্ধবতী নচে বলিয়া ছন্ধ-বাবসায়েব জন্ম (dairy purposes) ইহাবা কনাচ উপযোগী নহে। এইদেশে এটছ। তার বলদ গুলি হলবহনে ও ক্ষি-কার্যো বল্ল বাবন্ত হইয় থাকে। বাজালা, আদাম, পালামৌ প্রভৃতি ভানের জানীয় গো-জাতিব যেমন শোণিত অমিশ্রিত বাধিবার চেটা করা হয় না, বা ঐ সকল বংশের উন্নতির দিকে গেমন কোন দৃষ্টিপাত করা হয় না এবং হাঁড় ও গাভী বাবমান্ত এক সঙ্গে পাকাৰ জ্ঞ বেমন ঐ সকল জাতাঁর গো-জাতিব ক্রমাবনতি ঘটিয়াছে, দেইরূপ এই জাতাঁর গো-জাতিব প্ৰতি স্থানীয় অধিবাদীগৰ দাচদানা হাৰীয়েৰ বিপ্ৰাপ্ত বাবহাৰ করিয়া পাকে ৷ এই জাতীয় গো-ছাতির প্রতি (৮৪) কবিলে বিশেষ উন্নতি সাধিত হউতে পাবে। মাদ্রাজ প্রদেশে কাভেরী নদেব উভয়-পার্যন্ত উপার চাবণ-ভূমিতে তথাকার অধিবাসীগণ বিষেশতঃ কম্বন্দী ভালুকের অধিবাদীগণ নাছ-গাভীগণ ও মাধাবেশ্বর বেটা বা চিত্তলছকণ-জাতীয় ঘাঁডের সংযোগে উত্তম দাছদানাবংশীয় গাভীব উৎপাদন ক্রিয়া থাকে। স্বীচীন নির্বাচনের গুণে কুদ্রকায় নাতদানা গাভী BIC शुक्रव मक्कत छेरशामान तुरुरकाग भाग्नमानाएग প्रतिगढ गरेएक एनथा গিয়াছে। গভর্ণমেন্টের বিভাগে অমৃত-মহালবংশীয় বলদের প্রয়োজন হওয়ার স্থানীয় চাষীগণের প্রীত অতি উত্তম বলিষ্ঠকাতীয় গো-উৎপাদনের ভকুম প্রচারিত ক্টরাছে বলিয়া, এই জাতীর গো-জাতির দর্মধক উন্নতি সাধিত হইতেছে এবং গাভীগুলিকে ক্রম এবং বিধিবিগছিতরূপে

একসক্তে চরিতে এবং এথাকিতে দেওয়া হয় না। এইরূপ অবিধিতে থাকা প্রযক্ত এই জাতীয় গো-জাতির বর্তমান অবনতি ঘটিয়াছে। এই গো-জাতিব পরিচয় নিমে প্রবন্ত হইল: —মস্তক দেই হইতে অপেক্ষাক্সত ক্ষদ্র (short) কিন্তু ঘাড়ের সহিত মানান-সইরূপে অবস্থিত। কপালটা বিশাল এবং লম্বা (lean long type), চকুমুর্ম ছোট হইলেও চঞ্চল এবং জ্যোতিঃবাঞ্জক, গলা মানিক-সই ও পাতলা: কানগুলি ছোট ও দাড়ান বা দোজা (erect), পাণ্ডলি ছোট এবং খ্রের ফাঁকণ্ডলি সন্ধাণ, পৃষ্ঠবংশ সক অর্থাৎ বেশী ছোড়া হয় না: পঞ্চরগুলি মোটা এবং গোল 'এবং কোন কোনটাৰ চ্যাপ্টাও (flat) ইইয়া থাকে: इक अवर करण मानान-मझे अवर विनष्ठ-गठनदिनिष्ठ, यून बाँछ। या दिना লোগুলামান নহে, দেহ গঠন বেশ বলিষ্ঠ, উচ্চতায় কম (small), স্বভাব নম এবং সুশীল (docile). পুচছ ছোট এবং থোবাযুক্ত হইয় থাকে। ইহাদের গাত্রের বন্ধ সচবাচর কৃষ্ণবর্ণ হইলেও অপর বংও বিবল नरह: हेशानब लामखनि, नान, कान, धुनत, नाना भाइ वा झेर९ नान-वर्णत उडेश थारक।

কং প্রতীয় গোজাতি। অমৃতমহাল এবং তাহার সম্পাকিত বৃহৎ বংশগুলি এই পরিবারের অন্তর্গত। মাধেশর বেটা এবং তাহাদের সংশিষ্ট জাতিগুলি অমৃতমহাল-পরিবারের অন্তর্গত। মিঃ পিশ্ এবং ক্ষমন্তর স্বামী এই জাতীয় গোকুল সম্বন্ধে বিস্তৃত আলোচনা করিয়াছেন। গভর্ণমেন্টের কমিসেরিরেট্ বিভাগে গাড়িটানা, কামানটানা, জলতোলা, জালাপোট্ বহন করা প্রভৃতি কাজের জন্ম অমৃতমহালবংশীয় বলদের সমধিক প্রয়োজন বিধার ঐ জাতির চাবের জন্ম সরকার বাহাছর সমর্বভাগে ইহার জন্ম স্কতম্ব নির্ম জারি করিয়াছেন বলিয়া সম্ধিক ধত্তে, মুনীটীন নির্মাচন সহকারে শোণিত অক্ষ্ম বাধিয়া এই জাতীয় গাভীর

চাষ করা হইরা থাকে। এইজন্ত এই জাতীর আপকৃষ্ট বাড়গুলিকে বৃক্ষ্ করা হইরা থাকে।

যাঁড় নির্বাচনের সময় চাষীগণ আকার, প্রকৃতি, বল, স্থডোল অলপপ্রভাঙ্গ, মনোহারী রঙের প্রতি বিশেষ দৃষ্ট রাখিরা থাকেন। দোদাদানা গাভীগণ বর্ষকান্দি (বংসর-বিয়ানী), ইকান্দি দ্বিংসরাস্তর-বিয়ানী), প্রবং মুকান্দি (তিন বংসর অস্তর বিয়ানী) হইয়া থাকে। কেহ দিনস্তোলগমের পর গর্ভ ধারণ করে, এবং কেহ কেহ বা ইহার বহুপরেও মাঁড় প্রহণ করিয়া থাকে; অচেনা লোক দেখিলে ইহারা খুবই অশাস্ত হয় এবং তাইতে অগ্রসব হয়। ইহা শৈশব-শিক্ষার দোষ বলিয়া বোধ হয়। পাঁচ বংসর বয়য় হইলেই ইহাদের কাজের জন্ম বিক্রয় করা হয়; এবং ২২ বা ১০ বংসর পর্যান্ত তাহারা বেশ কাজ দিয়া পাঁকে। গাভীগণ প্রারই সাদা বর্ণের হয় এবং বলদগুলি অয়মাত্র ভাজনে অনেক পথ অবলীলায় ইটিতে পারে।

আনি প্রেই বলিয়ছি বে, মৃঠীপুর প্রদেশের যাবতীয় গোজাতির মধ্যে অমৃতমহাল-পরিবার শীর্ষস্থানীয়। ইহারা থুবই যত্ন ও মনোবাগের সন্ধিত লালিভ-পালিত হইলা থাকে। গভর্ণমেণ্টের হন্ত্র কারম ও তলাসর প্রদেশেই ইহাদের প্রধান জন্মভূমি। গাজীগুলি বড় বেশী গুয়বতী হর লা। কুড়িটি পাভির জন্ত একটি বলিষ্ঠ বাঁড় ছাড়িলা দেওয়া হইরা থাকে। গাভীগুলি আ

ইইতে ৪ বংসরের মধ্যেই বাঁড় সভ্যোগ করে এবং ৬, ৭ বা ৮টি মাত্র গর্ভধারণে বংস প্রস্কব করে। বাঁড় ও বক্নাকে ৪ বংসরের পরে পৃথক রাখা হয়। ভারতীয় সকল গাভীগণ হইতে ইহাদিগকে ইহাদের দেহ সৌর্ভর ও সংগতাবয়ববিশিষ্ট মন্তরক এবং শিক্ষের স্থারা বাছিলা লওয়া ছছর নহে। ইহাদের দেহগঠন জাল্কা এবং বলীয়ান। ইহারা সচরাচন ৪৮ হইতে ৫০ ইক উচ্চ ছইলা থাকে। ইহাদের বক্ত্রেল গভীর এবং চৌড়া বা প্রশক্ত, পূর্চ

লখা এবং চৌড়া, পঞ্চরগুলি খুব পুরুষ্ট, অলপ্রত্যক্ষগুলি শব্দ ও
সামর্থাযুক্ত, স্বরূপে মাংসল এবং সবল হয়। ইহারা সমরবিভাগের
কাজের বিশেষ উপযোগী, বেহেতু ইহারা বলিষ্ঠ ও শক্তিসম্পর বিধার ভারি
ভারি কামান টানিতে বিশেষ পটু, অলপ্রভাকগুলি হাল্কা বিধার খ্ব
ক্রতগামী, চঞ্চল এবং ভেজী। এই গোজাতির সাহায্যেই টাপুরুলতান
এবং হারদার আলি উনবিংশ শতান্দীর প্রথমে এবং ক্লান্তাদশ শতান্দীর
শেষভাগে ইংরাজের সহিত যুদ্ধে এত অধিক ক্লিপ্রভাসহকারে অভাবিক
দূর দূর কুচ্ করিয়া শিবির সরিবিষ্ট করিয়া ইংরাজ সৈন্যাধ্যক্ষের
আক্রমণ এড়াইয়া তাঁহাকে সদলে বিপর্যান্ত করিতে পারিয়াছিলেন।
এই জাতীর গাভীগুলি প্রারই সাদাবর্ণের এবং বাঁড়গুলি ধুসরবর্ণের ও
সামনে ও পিশ্বনে নীলাভ পীত (bluish gray) বর্ণের হইয়া থাকে।
অমৃতমন্ধাল পরিবার চিত্তলক্র্যা, হালিকর, হেগেল্ওয়াদী, আজমপুর
এবং মাল্ভালী পরিবার লইয়া পঠিত।

বর্তমান অমৃতমহাল পরিবার গোলাগণের এবং ভ্রমণশীল (nomad) হালিকরগণের গোজাতির সংযোগে উৎপর হইরাছে। বোড়শ শতালী কইতে এই জাতির উৎপাদনের চাষ আরম্ভ করা হইরাছে। বিজয়নগর রাজের প্রধান অমাতা টিক্লা দেবরাজ ওরাদাইরার এই গো-পরিবারের উৎপাদন মহীশ্র প্রদেশে প্রবর্তন করেন এবং ''বেনীচাবাদী'' নাম দেন। এই নাম বর্তমান ইংরাজরাজের আমলে ''অমৃতমহালে'' পরিবর্তিত হইরাছে। এই জাতীর বলদের সাহায়ে হায়দর আলি ও টাপু স্ফলতান উনবিংশ শতালীর প্রথমভাগে এবং অষ্টাদশ শতালীর শেবভাগে মহীশ্র প্রদেশে ইংরাজরাজের সহিত অসমসাহসিক যুদ্ধবিপ্রহ করিতে পারিয়াভিলেন। ভারতের মধ্যে এই জাতীর বলদের সমর্বিভাগে বিশেষ আদর বলিয়া এই গোজাতির উৎপাদন এবং সংজনন বিশেষ বত্তের সহিত সম্পাদিত হইরা থাকে। এই জাতির শোণিতের বিশুদ্ধভারকণ জন্ত

बिट्ग एष्टि वाथा इस। श्रामिकत, शान वामी (द्रिशन उन्नामी) এবং চিত্তকজ্রগ — এই তিন বংশ লইয়া এই বৃহৎ পরিবার গঠিত। কাজেই ইহাদের মধ্যে প্রকৃতই এত শোণিতের সংগিশ্রণ বটিয়াছে যে. তাহানের এক জাতি হইতে অপর জাতিকে নির্ণয় করা কঠিন। এই পরিবারের অন্তর্গত অপর কর্মী আন্তর্গণিক ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পরিবার আছে। তাহাদের এইথানে উল্লেখ প্রয়োজন। ইহারা হালিকর, হাগল ওয়াদী, চিত্তলক্রণ, আজমপুর এবং মাল ভালী বলিয়া প্রসিদ। এই গুলির মধ্যে প্রথম তিনটিই সর্কোৎকৃষ্ট। উপরোক্ত প্রথম তিন পরিবারের शर्फन किलानि नित्म अनु इहेन। इहारनत निक्ष खीन युनहे सुन्नत अवः প্রায় স্কলগুলিরই এক প্রকার অর্থাৎ নাথার মধান্তানে মানান সইরূপে প্রতিষ্ঠিত এবং খানিকটা সোজা উঠিয়া বিপরীতদিকে নমিত হইয়া পশ্চাদ্দিকে হেলিয়া পড়িয়াছে। শিঙের অগ্রভাগটি গলা নমিত করিলে कुकुरन्त निक्छे পर्याष्ठ म्मन करत, এवः ममस्य २ वा २॥० इन्छ प्रिमान লমা হইয়া থাকে। অপরিচিত লোক দেথিলেই ইতারা বড়ই অস্থির হয় এবং শিঙ নমিত করিয়া আত্মরকায় উদ্যোগী হয়। কেবল ভয়ের জন্মই তাহার। এইরূপ করে বলিয়া বোধ হয়। চক্ষণ্ডলি বৃহৎ না হইলেও চঞ্চল, তেজঃবাঞ্জক এবং চতুরতা-প্রকাশক। অধিকাংশই কাল এবং কোন কোনটি ঈবং রক্তবর্ণেব হইয়া থাকে। বৃহৎ শিঙ নাথার মধো থাকার মাথাট অপেকারুত বৃহত্তর দেখায়। মুথগুলি নিয়ের দিকে সকু চইয়া মুখোডের (muzzle) কাছে কাল হইয়া থাকে। ইহাদের কপাল উচ্চ, এবং গোল কানগুলি কুদ্র হইলেও শেষভাগের দিকে ছুঁচের মত হইবা থাকে (tapering rapidly from good breadth to a sharp point). কাণের পাতার ভিতরের রঙ উমৎ হরিদ্রাবর্ণ (vellowish), গলা লম্বা, পাত্লা (thin) এবং পেশাবৃক্ত, কুকুদ পুৰ ্ট্রত, এমন কি, কোন কোনটির ৮ ইঞ্চি পর্যান্ত উচ্চ, বুল (dewlap) স্থাঠন এবং দোহলামান, স্বন্ধ চৌড়া, স্থাঠিত এবং স্থন্দর, পুঠদেশ মাংসল ও চৌড়া, কুকুদের নিম্ন হইতে কোমৰ পর্যান্ত সোজা এবং বিস্তৃত, পাৰ্ষ্বর স্থাঠনযুক্ত, মাফিক-দই এবং গোল (well-rounded and deep), কোনর চৌড়া, শক্ত, পেশীযুক্ত এবং কঠিন পরিশ্রমবাঞ্জক ब्बेंग थारक। बेबादन भाश्वनि कोक निर्द्धाय, माध्मन, वनिष्ठ এवः পেশীযুক্ত হইলেও দেখিলেই বোধ হয় যেন ভগবান ইহাদিগের পদচতুষ্টয় ক্রত ও পরিশ্রমসাধা কার্যোর উপযোগী কবিয়াই নির্মাণ করিয়াছেন। ক্ষরগুলি দেই এবং অবয়ব গঠনের পরিমাণে ক্ষদ্র, কাল, কঠিন, এবং ্চরার মধ্যে অল্ল ফাকবিশিষ্ট, লেজটি সক এবং ছাচের মত হুইয়া অল্লাম্যুক্ত থোবায় শেব হইরা থাকে ৷ এই জাতির চামড়ার বর্ণ কাল এবং পাতলা (thin) ও সুন্দর লোমাবলীযুক্ত (with clean glossy hair) হট্যা গাকে। ইহাদের গায়ের বর্ণ একরকম রঙ্গের হয় (uniform, due perhaps to mixture of gray with a darker shade over the shoulders & hind quarters). ইম্বের আক্ষৃতি বড় হয় না, গঠন খুব বলিষ্ঠ ও অঙ্গ-প্রত্যঙ্গগুলি সুগঠিত (neat); গাভীগুলির বুষের ক্রায় পুং আকৃতি ও প্রকৃতি বিশিষ্ট হইয়া থাকে; ইহারা মহাশূরদেশের অপরজাতীয় গাভীর মত অধিক তথ্বতী হয় না।

ইহাদের লেজ পুক্ষগণের অপেক্ষা কৈছু মোটা হয়; চিত্তল জ্ঞান্ত পরিরাবের মত খুব কঠিন নহে এবং তাহাদের অপেক্ষা অধিকতর দোহলামান ঝুল এবং কোষ বা পিধান (sheath) বহন করে। তুমকুর হাসন এবং কাছর জেলার অমৃতমহাল-পরিবাবের গাভীগণ অপেক্ষাকৃত ঈথং কৃদ্র হইয়া খাকে। চিত্তগুল্লগ্ জেলার পূর্বাংশজাত এই জাতীয় গাভী বা বলদ্গণ ঈথং কৃদ্র হইয়া খাকে। মহীশ্র জেলার শুর্বাংশলার শুর্বাং

অন্তব বঁড়ে সন্তোগ কবিরা থাকে। হাসন, তমকুর এবং কাছর জেলায় ছই বংসরান্তর গর্ভধারিণী বা ইকাকান্দীগণ পাঁচ বংসর বয়সা হইলেই সন্তোগক্ষম এবং চিত্তল্যানীয় বর্ধপ্রস্থাতিগণ চারি বংসরের হইলেই গর্ভধারণক্ষম হইরা থাকে। বাঁড়গণ ৫ হইতে ১০ বংসর বর্ষ পর্যান্ত জননক্রিরাক্ষম থাকে, এবং গাভীগণ আগষ্ট হইতে কেব্রেরারী মাসেব মধ্যেই বংস প্রস্থান করিয়া থাকে। বলদ না বাঁড়গুলিকে প্রায়ন্ত প্রত্বহন বা জল-উত্তোলন কার্য্যে নিযুক্ত করা হইরা থাকে। মাড়গুলিকে প্রায়ন্ত প্রায়ন্ত জননকার্য্যে ব্যবহার করা হয়।

লিদাবালাগণ এক প্রকার প্রাম্য গোজাতি এবং তারিকেরী তালুকে অমৃত্রহালের সংবোগে উংপাদিত ছওয়ায় আকার এবং গঠনে অপেকারত বৃহং এই বলিষ্ঠ হইলা থাকে। ইহাদের দেহ-গঠন পেনীপূর্ল, হাড়যুক্ত ও আটি নীটি। চক্ষুণ্ডলি চক্ষণ এবং তেজ ও চতুবতাবাল্লক (quick and intelligent eyes), চুল বা গায়ের লোম পাত্লা, লেজ সক ও চারুকের মত এবং সামাল্ল থোবাযুক্ত; ক্ষুর কঠিন, পাঞ্চলি বলিষ্ঠ এবং পেনী-সংযুক্ত হইলা থাকে। এই জাতীয় গাভীদের ছগ্ধ অল হইগেও বেটুকু ছগ্ধ পাওয়া যায়, তাহাতে ননীর (butterfat) মাল্লা যুবই অধিক (rich)। "মেটাকুল্লী" পরিবারও লিল্লালালীর লায় মেটাকুণ্ডী তালুকের গ্রামাগাভীর গতে অমৃত্রহাল মাঁড়ের সংবোগে উংপানিত সহরজাতি। ইহারাগ্রেশ কইস্টিকু, তেজী এবং মোটবহন ও লক্ষ্টানিতে বহল বাব্জত হইলা থাকে।

(ক) সোজু বা সিরাণ্টা সোজু-পরিবার ঃ—ইহারা প্রায়ই অনুভ্রহণের তুলা জাতি এবং ভাহানের সকল গুণগুলি এই উপ-পরিবাবে নেরা গিরা থাকে। নির্বাচিত উত্তম নাজ্যানা গাভীর গর্ভে অনুভ্রহাণ বাঁড়-সংযোগে এই উত্তম উপ-পরিবারের উৎপত্তি হইরাছে বলিয়া প্রাণীতত্তবিদ্যুগ নির্পত্ত করেন। (ধ) হালিকার-পরিবার একট বিশিষ্টজাতি বলিয়া কেবল মহীপুরদেশে নহে, সমগ্র মাজ্রাজ এবং বোঘাই প্রদেশে প্রসিদ্ধ। এই জাতীর গাভী বহল উৎপাদিত হর না; সেই জন্ম ইহাদের সংখ্যা খুবই কম। ইহাদের উৎপাদনে বিশেষ যত্ন এবং নির্মাচন-বিধি অবলম্বিত হইয়া থাকে বলিয়া ইহারা অমৃত্যমহাল-পরিবারের সকল গুণগুলি কালে অধিকার করিয়াছে। মাইশোর জেলার অন্তর্গত নাগামকল, কুঞ্জাগাল এবং গুবী তালুকেই ইহাদের জন্মভূমি। এইজাতীর গোজাতি তমকুর এবং হাসন তালুকের মধ্যেও পাওয়া যার।

এই জাতীয় গাভীগুলি প্রায়ই (gray) ধূসরবর্ণের হইয়া থাকে। ইহাদের পালানু কুদ্র কুদ্র এবং বাঁটগুলিও ছোট ছোট। ইহারা তেমন इहेत्रा थाक् । এই क्वाठीव्र साँएवत्र नाम ००, इहेर्ड १०, ; छेडम बाठीयमिश्रत ४०, हरेटठ ১२०, जाडीत मृना ४०, रहेटठ ७०,, উত্তম গাভী ৬০, হইতে ১০০, ; এবং এক বংসরের বুবের মুল্য ২০, **इहेर** छ । भर्गा छ हहेवा थारक। हानिकत कांजित मर्सा गक्रमाना জাতীয় এক প্রকার গো-বংশ দেখিতে পাওয়া যায়। অমৃত-মহালের मकन खनखनिष्टे এই জাতির মধ্যে বিদামান। ইহাদের কপাল প্রশন্ত. विभाग এবং উচ্চ, মুখগুলি ছুঁচ্মত হইরা আসিয়াছে, শিঙ্গুলি नमा रहेशा **छ**र्द्ध छे. छेशाह्य । **फैँ**क्क हेराझी "अमुख्यशालात मछ ४० हेरेक. ৫০ বা ৫৯ ইঞ্চি পর্যান্ত হয়। এই জাতীয় বাঁড়গুলি জনন বা উৎপাদন-ক্রিয়ার জনাই সচরাচর ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ইহাদের উংপত্তি হালিকার গাভী এবং মুগ (buck) হইতে হইরাছে; সেই अना हेशता विश्वित्क चाठीव छन्तता हेशत वक विशास, विकासन পেশাযুক্ত ও মানান-সই ; পশ্চাভাগ sinewy (সিহুদি) এবং muscular

(মাস্কুলার): পশ্চাংদিকের পদন্য দেখিলেই সহজে প্রতীয়মান হইবে যে ইহারা কিরূপ জতগামী, বলিট, এবং দার ও সহিষ্ণু। গাভীগুলির গড়ন পুংবং (masculine) এবং অমৃতনহালজাতীয় গাভীর মত সকল গুণ ও দোববিশিষ্ট। ইহারা স্বল্লগ্রতী।

মহীশূর দেশে হাগল্বাদীবংশীয় গোজাতি আর একটী অত্যুৎক্লষ্ট জাতি বলিয়া প্রসিদ্ধ: কিন্তু ইহাবা হালিকাবের সহিত এমন মিশ্রিত ছইয়া গিয়াছে যে, উভয়ের মধ্যে প্রভেদ নির্ণর করা চঃসাধা। বেটাদ। পুরী নামীয় আর এক জাতীয় অমৃতমহালের নিকট-সম্পর্কিত জাতি ্বাছে। গ্রামা নাছ ও হালিকারের সংযোগে এই জ্বাতীয় গোজাতির উৎপত্তি হইয়াছে, কিন্তু ইতারা হালিকাব অপেকা দেহের গঠনে, বলে, কাঁহাকারিতায় এবং চন্দ্রের বঙে সর্বতোভাবে হীন। সধুনা এই জাতীয় গোজাতির মধ্যে তর্মল ও হীনজাতীয়ের রক্তের সংমিশ্রণ হওয়ায় এই জাতীয় গোরুর ক্রমাবনতি পরিবৃষ্ট হইতেছে। অমৃতমালবংশায়ের মধো চিত্তল জ্বা একটি বিশিষ্ট জাতি। ইহাদের জাতি হালিকারের সহিত থুব রনিষ্ট সম্বন্ধে সম্বন্ধ এবং অমৃত্যসাঁলের গাভীর মত এই জাতীয় গাভীগুলি ছগ্ধ-ব্যবদায়ীর উপযোগা গাভী নহে: কারণ ইহারা স্বর্জ্মবর্তী। যাঁড়গুলির মূল্য প্রত্যেকের ৫০, হইতে ৭০, এবং উত্তমজাতির ৭০, হইতে ১০০, টাকা। গাভী ৩০, হইতে ৫০, এবং উত্তম ৫০, ছইতে ৭০, টাকা পর্যান্ত। অমৃতমহাল বংশীরের দতিত "পাভা-গালা" এবং ''মিলিখেবী'' জাতির উল্লেখ করিয়া আমরা বলিতে পারি যে, ইহারা সম্পর্কিত জাতি (allied breeds)। চিত্তলক্রগ এবং নাচর 'সংমিশ্রণে (cross) এই ছই জাতীয় গোজাতির উৎপত্তি হইরাছে। ইহার। পিতৃ-মাতৃ গুণ ও দোষ পাইয়াছে এবং ছইটির মধাবতী (intermediate breed) জাতি। তাহাদের অল-গঠন খুব মজবুত, বলিষ্ঠ (very compact) এবং ক্রন্তলি থুব কঠিন; এমন কি নাল

বাঁধাইবার আবশুক হয় না। পাভা-গাদা এবং মাদাগিরি তালুকে ইহা বছল পাওয়া যায়। যাঁড়ের মূল্য ৫০, হইতে ৬০, টাকা পর্যন্ত হইয়া গাকে।

কাবেরীনদের উভয় পার্শ্ববর্ত্তী বিস্তৃত দেশসমূহের বিস্তৃতি শম্পাদিভক্ষণে এক উত্তমজাতীয় মহীশ্রী গোজাতি পরিবর্দ্ধিত হুইলা থাকে।
এই জাতীয় গোজাতি কাবেরীবংশীয় এবং নহাবেশ্বর বেট্টা নামে প্রশিষ্ধ।
এই জাতীয় গোরুগুলি মোটা নোটা হাড়বিশিষ্ট এবং আরুতিতে খুব
বড় হয়, অর্থাং অমৃত্যহালজাতীয় অপেকা বড় হইয়া থাকে। ইহারা
একবণ: কাল বঙ্গের প্রায় দেখিতে পাওয়া যায় না।

ইহাদের গারের বং প্রায়ই যোর শ্যামল-ধুসর (dark gray,) किस light greyish ब्हेंग शांक। याँफ्छिन आग्रहे darkgray রঙ্গের চইয়া থাকে। দকলজাতীয় মহীশুরী গাভীর মধ্যে ইহারা মধিক চুগ্ধবতী এবং ইহাদের পালান গুলি অপেক্ষাকৃত বড় হইয়া পাকে। ইহাদের হৃত্ধশিরাগুলি (lactovenis) বেশ দৃশামান (prominent)। মহীশূর দেশের সকল গোজাতির মধ্যে ইহারা সংখ্যায় সর্কাপেকা বেশী, কারণ ইহারা পরিশ্রমী, অল্পভোজী, মূলা কম এবং সহজেই বশীভূত হয়। মাদ্রাজ ও বছাই প্রেসিডেন্সিতে ইহাদের কাটুতি (demand) সেইজন্ম বড় বেশী। একবৎসরের যাঁড়ের মূল্য ২০ হইতে ২৫ টাকা; বলদের মূল্য ৪০ হইতে ১০০ টাকা এবং গাড়ির বলদের মূল্য ৩০ হইতে ৭০ টাকা—breed বা জাতিবিশেষে হইয়া থাকে। মান্তি (কোলার) বংশীয় আর এক জাতি মহীশুরী গোজাতি সালেম জেলার চতুম্পার্বে দৃষ্ট হয়। তাহা ছাড়া স্থানীয় জাতির মধ্যে " निक्रशानी " এবং " मिनेकुशी " जांजियत्त्रत्र नारमास्त्रचं कतिहां এই বংশের ইতিহাস শেষ করিব।

२। तिलांत वा चरकाल-वःम।

অতঃপর আমরা নেলোর-বংশের (breedএর) আলোচনা করিব। সমগ্র ভারতবর্ষে এই জাতীয় বলদের সর্ব্বাপেক্ষা স্থগাতি। জননের (Breeding) জন্ত কেবল মাত্ৰ এই জাতীয় যাঁড় ভারতবর্ষ হইতে উত্তর এবং দক্ষিণ আমেরিকা, কেপ-কলোনী, ও পশ্চিম ভারতীর দীপপুরে প্রেরিত হইয়া থাকে। এই জাতীয় গোলাতির বছল উৎপাদন নেলোর জেলার উত্তর তালুক সমূহে হইয়া থাকে। এই বংশের মধ্যে পাঁচটি পৃথক পৃথক (sub-breed) শাখাবংশ আছে। গাভীগুলির সিঙ্ ৰাঁড়ের সিঙ্ অপেক্ষা কিছু বড় হইয়া থাকে এবং সন্মুখ ও পশ্চম্ভাগে हिनिया समाय: कानश्रमि नवा ध्वरः बुनिया थाक. काथश्रमि वानास्य (elliptical), মন্তক স্থনর, কপাল চৌড়া, মুখগুলি লম্বা এবং স্থনর. চোখের চতুদ্দিকের চামড়া কাল, গলা মোটা এবং ছোট, ঝুটটি বেশ বড এবং সবিশেষ পরিবন্ধিত (well-developed). ভাল স্বাভীয় গুলির দেহের ঘেরা প্রায় ৮৪ ইঞ্চি হইয়া পার্কে: লেজ লম্বা, দরু এবং ভূমিম্পূৰ্নী, পদগুলি বলিষ্ঠ এবং ধর্মাক্ততি: পেটের নিচে মুল্টি দোচুলামান গাভীর ঐ সানটিতেও একটি চর্মের খাঁজ দেখিতে পাওয়া बाब : शृष्ठं भाषाति नदा এवः काँधित काह्य कि छेक : गार्वात तड সচরাচর কাল এবং সাদা হইয়া থাকে, কিন্তু কাল ও সাদার সহিত হরিদ্রাবর্ণের গাভী অবিরণ নহে। সোরণম, মন্ধ্রা, জোয়ার ইহাদের बार्वत कार्या करन धवः क्रका ७ कारवनी नामन वहन विखीर्ग मन्नामि-ৰহল তণৰেত্ৰপ্ৰলি এই জাতির বৰ্তমান শ্ৰেষ্ঠতা সম্পায়ন করিয়াছে। **म्हिन्स** स्थान क्षान क শাস থাইবার জন্ত পাঠাইরা থাকেন। বলদ দেখাইবার সময় অভ্যংক্ত গ্রামা মাঁড়টিকে সংগ্রহ করা হয়। এই মাঁড়গুলি "ব্রাক্ষী বল"

Brahmani bull) নামে খ্যাত। ইহারা মুহীশ্রজাতীয়ের মত তত ক্টস্টিকু বা পরিশ্রমী নহে। ভাল বাঁড়ের দান ৮০ হইতে ২৫০, এবং ভাগ হুর্ঘবতী পাভী (৫ হইতে ১০ সের দৈনিক হুগ্ধন।ত্রী) ৮০, হইতে ১৫০, টাকার পাওয়া যায়। তিন মাস পর্যান্ত বাছুরগুলি সমুদর মাতৃত্থই পান করিয়া থাকে বলিয়া প্রায়ই যথেষ্ট বলিষ্ঠ হইয়া থাকে। ইহারা মহীশুরজাতীয় অপেকা উত্তম হগ্নদাত্রী বলিয়া প্রসিদ্ধ। ইছাদের ৬টি মাত্র দক্ত উপাম হইয়া থাকে। ছয়টির বেশী হইলে ভত শুভ বলিয়া বিবেচিত হয় না। এই জাতির মধ্যে পুনশ্চ ছুই শাখা-জাতি আছে : (১) नम् निष्ठ .(२) कम निष्ठ (short horns). Longhorns শুলি ১০৫ হইতে ১৪০ ইঞ্চি উচ্চ হইয়া থাকে। গো-শকট-বহনাদি কার্য্যে ইহাবা মহীশূর-বংশ অপেক্ষা মাটো এবং ধীর। ছোট জাতীর গুলি অপেক্ষাকৃত কুদ্র এবং পার্বতা দেশেই প্রায় জন্মিরা থাকে। ইহাদের পা ছোট ছোট কিন্তু আঁটি-সাঁট্ (compact), মজবুত (muscular), এবং ছই জাতির মুখ্য ইহারাই অধিক হ্য়দাত্রী। ক্রান্সের বুটানি দেশীয় খাঁড়ের সহিত এই দেশে এই গাভী জাতির cross করিলে বেশ লাভজনক ছইতে পারে। চারি বংসরের ছইলে ইছারা গর্ভধারণক্ষ হইয়া থাকে।

ভারতীর গোন্ধাতির প্রতি মোগল সম্রাট আকবরের সময় বিশেষ
বন্ধ করা হইত এবং গো-চাঁবের সবিশেষ ব্যবস্থা আইন-ই-আকবরীর
৬৬ আইনে দৃষ্ট হয়। সেই সমরে ডেকান ও বলীর গো জাতির ছগ্ধবতী
বলিরা অসামান্ত প্রমিদ্ধি ছিল। তির্বাং ও কান্দীর দেশের স্থানীর
গোন্ধাতির (indigenous) সহিত পার্বাত্য প্রদেশীর ইয়াক্টের সংমিশ্রণে
এক উৎক্রপ্ট লাভির গো-চাষ হইরা থাকে। নেলোর জাতীরের মধ্যে
অলোল একটি প্রধান শাখা-পরিবার। এই ছই জাতীর গাভী সক্ষে
অধ্যাপক বেন সুন্ (Benson) Agricultural Journal of India

নামক পত্রিকার ভূতীয় ভলুমের ৮ম পৃষ্ঠায় সবিশেষ ইতিহাসাদিসহ আলোচনা করিয়াছেন। ইহা সকল পাঠকেরই বতু-সহকারে দৃষ্টিপাত করা করেয়।

মাইন-মাকবরী Bk. 1. Ain 7. ও আইন ৬৬, ৬৭, ৮১, ৮৪ প্রভৃতিতে সমাট আকবরের সময় গোরু ও বলদের কিরুপ যত্ন করা হইত, প্রাত্যহিক কি আহার বিত্রিত হইত, তৎকালে গোচাষ রাজকীয় studio কিরুপ হইত, তাহা বিশ্বভাবে উল্লিখিত আছে।

এইখানে আফ্রিকাব গোজাতির নিষয়ে কিছু বলা অপ্রাসঙ্গিক চইবে না। ঐদেশের গোজাতি "জেব" জাতীয় বলিয়া অনুমিত হয়। ডচ বা ক্রীজ্বাণ্ডীয় গোজাতি ভাবতীয় জেববংশীয় ভিন্ন অপর জাতির ছইতে পারে না, বেছেতু তাহাদের ঝুঁট (stump) বিশেষ prominent ৷ বুটিশ পূর্ব-আফ্রিকার (British East Africa) উক্তীব গোজাতি অধ্যাপক ওয়ালেশ সাহেবের মতে ''জেব্"-জাতীয়, তাহার আর কোন সন্দেহ নাই। অঙ্গোল-জাতীয় গাভীও এই নেলোরবংশের সহিত বিশেষরূপ সংশ্লিষ্ট। এই ভারতের এক ছতি উত্তম জাতীয় গাড়ী পিলের এবং মদী মদীর ভীরবর্ত্তী দেশ হইতে ক্ষাজেলার অন্তর্গত ও বিশু নদীর তীরদেশ পর্যান্ত বিশ্বত ভূথতে জন্মিয়া থাকে। কাপ্তেন পিয়ার্শ সাহেব এই জাতীয় গাভী সম্বন্ধে ১৮৯৫ সালের ক্লষি-লেজাবে বিস্তুত বিবরণ লিখিয়া গ্রিয়াছেন। এই জাতীয় যাঁড়গণ প্রায়ই হয়ের কাছে কাল রঙ বিশিষ্ট হয়, কিন্তু গাভীগণ দেখিতে স্তব্দর এবং উহাদের গায়ের রঙ্ প্রায়ই সাদার উপর কাল ছাপ্তক হট্যা থাকে ৷ আকারে ইহারা গুজরাট বা নাগোর বংশীয়ের অপেক: কুনু চইয়া থাকে। আঙ্গাকানী নামক ভানে কিখা অঙ্গোলে এই গাভার প্রতোক বংসর প্রদর্শনী (নেলা) ইইয়া থাকে । এই জাতীয় बॅनएएड मृना १० इटेएठ ७०० हाका, এवः छान इंग्रवरी शांकी ६०, इटेएठ

২০০ টাকা মলো পাওয়া যায়। নেলোর জেলার অন্তর্গত গন্তর, সতনপল্লী, নরস্করোপেট প্রভৃতি তালুকে ইহারা বহুল জন্মিয়া থাকে। ভাল গাভী দিনে ১৮ হইতে ২৪ কোয়াট তথ্য দিয়া থাকে। ডাচাপল্লী জাতীয় গোক এই জাতির এক শাথা-জাতি বলিয়া নেলোর এবং ক্লঞা জজেলার প্রসিদ্ধ। ইহাবা ডাচাপল্লী ভালুক হইতে পালবাদ তালুক পর্যান্ত বিস্তৃত দেশে জন্মিয়া থাকে। ইহাদের রঙ মাজাটে বা পাশুটে খেতবর্ণ হইয়া পাকে। বেজ ওয়ানা-বংশীয় গাভাও এই নেলোর বংশের সহিত বিশেষ সংশ্রম্ভ কিন্তু ইহাদের নাভি নেলোরের মত সমধিক দোচলামান থাকে না। তথ্ধ-ব্যবসায়ের জন্ম নেলোর এবং গুজরাটবংশীয় গাভী বিশেষ উপযোগী এবং সমগ্র ভাবতবর্ষে বিশেষ, প্রাসিদ। নেলোরবংশীয় গোজাতির **সম্বন্ধে** নাক্রাজ প্রদেশের Civil Veterinary (শিবিল ভেটারিনারি) বিভাগের কর্তা মেজর W. D. Gun (ভব্লু, ডি, গণ মহোদয় Agricultural Journal of India (এগ্ৰিকণ্চরাল্ জণাল অব্ইভিয়া) নামক পত্রিকার প্রথম ভলুমের ২০৮ পৃষ্ঠায় স্বিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। এই জাতীয় ভাল গাভার মূলা ৮০২ হইতে ১৫০২ টাকা পর্যান্ত হইয়া থাকে। इंहाता जालम्तान्तो तःनीव्रशंग इट्रेंड कम कष्ठेमिट्स इट्रेबा थाएक এवः কোরুমাঞ্চি, নীদাখামুর, পোঙুর, জয়রণভায়া, তুঙ্গতুর এবং কারাবাদী প্রভৃতি গ্রামে বছল জন্মিয়া থাকে। এই গ্রামগুলি মঙ্গোল তালুকের अन्तर्गत हेशात्रा हेनाभागाभागान, निमुत्रभाग, এवः मुनीनमीत ठीवष्टिक আমসমূহে, কান্দাকুর তালুকে, কৃষ্ণা জেলান্তর্গত বিহুকোণ্ডা এবং नवमावा ७८१६ आरम् ।

৩। গুৰুৱাট্ বা ইয়ালাবাদা জাতীয়।

এই গোবংশ প্রায় ছই জাতির সচরাচর দৃষ্ট হয়:—(১) বড়, (২) ছোট। বড় জাতীরগুলি উত্তর-পশ্চিম প্রবেশের গোজাতির মধ্যে मर्स्कारकृष्टे रनियां अनिह अरः नारियानिक हेजानि एल छैरनम हहेबा থাকে। ছোটজাতীয় গোগণ ভালি এবং মারিদার চতুস্পার্বস্থ দেশ ममुट्ट वहन मुद्दे हम । (नारवाकिश्वनि मशाविश (medium) बाक्नुजित । দেহগঠনে এবং বলিষ্ঠ আতে ইহারা ক্লফাবংশীর অপেকা কিছু হীন। গাভাগুলির রঙ সাদা এবং কাল গুল বা দাগবিশিষ্ট হয়: কিন্তু যাঁড-স্থলি প্রায়ই হরিদ্রা (gray) বর্ণের হইরা থাকে। কোন কোন ভালন্ধাতীয় যাঁড়ের সন্মধ এবং পশ্চাদভাগে খোরহরিতা বর্ণের ডোরাযুক্তও দেখিতে পাওয়া যায়। শিংগুলি মন্তক হঠতে উঠিয়া বহির্ভাগে বাঁকিয়া পরে পিছনদিকে সোজা উঠিয়া পাকে এবং এইগুলি বেশ মোটা গোল মাঝারি সাইজের হইয়া থাকে। ছই শিঙের মণাভাগের উক্ত হাডটিও (নিমুবী) দৃষ্টিগোচর হয় এবং কুঁট বেশ উচ্চ (well developed) হইয়া থাকে। কাণগুলি বড় এবং কুলিতে থাকে। দেহটি মাংসল এবং আঁটিসাঁট (compact), বেশ গভীর, এবং অঙ্গপ্রতাঙ্গগুলি বলিষ্ঠ ও পেশীযুক্ত, পা-**গুলি काल** রঙ্গের, ইহাদের মেজাজ ধীর এবং নম্র হয়। বলদগুলি कामान ग्रेनिट्ड ध्व भट्टे। हेहात्रा हिमात अत्मत्महे तभी छैरभन्न इत्रः খুৰ ছগ্ধৰতী বলিয়া প্ৰসিদ্ধ এবং দিনে ৬ হুইতে ৮ সের প্ৰ্যান্ত ছগ্ধ मियां थारक।

ধানী-পরিবার গুজরাট-বংশের অন্তর্গত। ইছারা খুব ছাইপুই ছইরা থাকে। তাহার কারণ, ইছারা প্রারই সাম্ভর হ্রনের চতুলার্বহ প্রদেশে বহুল উংপাদিত হইরা থাকে এবং নির্মিত লবণাক্ত জলপানে শরীর বাাধিনুক্ত হওরার উত্তম স্বাস্থাযুক্ত হইরা জন্মগ্রহণ করিয়া থাকে। ইহারা খুব পরিশ্রমী এবং শক্ট-বহনে কোনরূপ জনিজ্ঞাপ্রকাশ করে না। ইহারা গুজরাট্-বংশীরের সকল গুণবিশিষ্ট এবং প্রারই সালা রঙ্গের উপর কাল বা লাল গুল বসান হইরা থাকে।

Agricultural Journal of India নামৰ পুত্তকের ভূতীয়

ভর্মের (volume) ২৬৬ পৃষ্ঠার আমরা "কাঠি"-বংশের বিস্তারিত বিবরণ পাইরা থাকি। ইহারা শুজরাট্-পরিবারের অঙ্গীভূত হইলেও উত্তম পালনের শুণে "মন্টগোমেরী" পরিবারের অন্তর্ভুক্ত হইরাছে। পাজাব দেশের জঙ্গলী জাতিগণ এবং চেনাব জেলার গোয়ালাগণ ইহাদিগকে উংপানন করিরা থাকে। চেনাব ননীর পার্বস্থিত উর্বর ক্ষেত্রবহুল নেশে ইহারা জনিয়া থাকে। গঠন, আফুতি ইত্যাদিতে ইহারা মন্টগোমেরি-বংশের অন্তর্জ্ব হইলেও তাহাদের অপেক্ষা অধিক ভারি হইয়া থাকে।

৪। কুফাজাভীয়।

কেছ কেছ বলেন বে, এই জাতীয় গোজাতি নেলোরবংশীরের অক্তন এবং সমজাতীয় (regarded as a variety of the Nellore type); কিন্তু সচরাচর তাহারা পৃথক বংশ বলিয়াই উৎপাদক (breeder) সমাজে পরিচিত। "For size, massiveness and general symmetry of the form they are one of the foremost breeds in India." ইহাদের শিঙ্ ছোট, মোটা (thick) চেপ্টা (flattish) অর্থাং বিসাতী short-hornal কুল শৃঙ্গনিগের শিঙের মত কিন্তু মজরুত (stout) এবং কাল ডগাযুক্ত (blacktipped); এবং মজক হইতে উঠিয়া পিছন নিকে হেলিয়াছে। চকুষয় বড়, কাল এবং পুরুত্ত (full); কর্ণ লখা এবং ঝুলা বা লোছলামান (drooping); রঙ্গাধারণতঃ সাদা, কিন্তু হরিদ্রাবর্ণমিন্তিত (brown) সাদা ও বিরল নহে। ঝুল এবং পেটা বা পিধান (sheath) বেশ পরিবৃদ্ধিত (well-developed); এবং উভয়টি একটি পাতলা চর্ম্বণ্ডের বারা সংবাজিত। এই চর্ম্বণ্ডটি সমূধ্যের প্রকৃষ্টের মধ্যতাগ দিয়া উঠিয়া মুলের সহিত্ত

(dewlap) মিশিয়াছে। এই জাতীয় গোজাতির কুকুদ (hump) বেশ উচ্চ ও বড (well-developed); গলা (neck) ছোট (short) এবং रुक्ष विशाल (grand), शृष्टे माञ्चा, करण विनष्टे এवर (श्रमीयकः। নিয়েব পা অর্থাৎ হাঁট হইতে নিমনেশ ছোট (short), কিন্তু ভাছার উক্তাগ অপেকাকত নমা; হাড়গুলি মোটা চৌড়া এবং বলিষ্ঠ; ক্তরগুলি কাল এবং মানান-দট (well-proportioned); মুখটি সাধারণতঃ বড় এবং কাল হইয়া থাকে। যাস চরিতে ইহারা খব পট। ইহাদের পদতল বেশ মস্থ, এবং কোমল (soft) হয়। ইহারা শক্ট-বহন মপেকা কৃষিকাথোবই অধিক উপযোগী বুলিয়া পরিলক্ষিত হয়। চिঞ্চিল নামক স্থানে ইহারা বছল উৎপর হইয়া পাকে। এই জাতিব স্থিত স্বিশেষ সম্পর্কিত (allied) পঞ্জাবের দক্ষিণ-পশ্চিম ভাগে এক স্বাতীর গাভী স্বাছে। ইহানিগকে উৎপাৰকগৰ (bree lers) "হরিয়ানা" বংশীয় বলিয়া থাকে। ইহার। সূব গুরুবতী বলিয়া প্রসিদ্ধ। तनमञ्जीन পাঞ্জ (यानटम कृषिक (र्या वङ्ग नावस् ठ सहैया थातक । "रमाउ" টানা কাৰ্যো ইছার। স্বিশেষ উপ্যোগী। হবিয়ানা গাভী প্রভূত গুগ্নতী (profuse milkers.)। নগ বাও স্থানীয় চগ্ধবতী গাভীর জন্ম প্রসিদ্ধ। क्लिकाछा, हिरश्रुव अङ्डि छात्न देशता आग्रहे ১৫० इटेंटड ১৭৫ छोक। भूरता विक्रोड इत्र। देशवा रेमिनक ১०।১२ स्वत छ्छ स्त्र।

৫। मिकूदः नीय।

এই বংশীয় গোজাতি সিদ্ধনেশেই অধিক পাওয়া যায়। এই জাতীয় গোজাতি দেখিতে খুব স্থন্মর এবং ত্থবতী। আজীদেব,দেশে মাংসেব জ্ঞা গোহত্যা অধিকমাত্রায় প্রচলিত হইলেও "বুচারের" জ্ঞা গো-চাম এদেশে আলৌ প্রচলিত ছিল না। মাংসের জ্ঞা অবাধ গোক, বাছুর,

ও বলদ হত্যা আমাদের দেশে প্রচলিত আছে। সেই কারণে অবাধ গো-हजा विधिनक रुप्ता डिंडिंड; नर्टिंश हार्यंत छूर्यंश निम निम डिंख्य वनना-ভাবে দেশে বৃদ্ধিত হইতেছে। সিন্ধুদেশীয় গোজাতি দেখিতে যেমন স্থলর তেমনি বলিষ্ঠ এবং আঁটেশ্টি গড়নের (compact.)। ইহারা গুজরাট এবং অঙ্গেলজাতীয় অপেকা কুদ্রতর। বলদগুলি অলস কিন্তু শক্তিশালা জন্তু, (powerful animals) শিঙ ছোট. মানান-সই, মোটা, এবং ভগা ভোঁতা; ইছার মাঝে মাঝে কাল ডোরা যুক্ত, ঝুট তেমন বড় নহে (not well-developed.), ঝুল মাঝারি, 'मह्हेव बंड माना खनः भागमनवर्णव इहेशा थाकि। कांग वंड खनः দোহলামান, চকু মাঝারি, মুখ লম্বা এবং শিক্ষের ডগা প্যান্ত যেন সিধা উঠিয়াছে। স্বন্ধটি বেশ স্থলর (neat) ও উচ্চে বেশ পরিবন্ধিত হয়। ভাল জাতীয় গাভীগুলি ৫ ফুট ২ ইঞ্চি উচ্চ হয়। গবর্ণমেণ্টের হিসার কারমে ইহার। বহুল উৎপাদিত হইয়া থাকে। 'এই জাতির সহিত বিলাতি ডিভন জাতীয়ের সমধিক নিক্ট-সম্পক দৃষ্ট হয়; সেই হেড় ডিভন্ ৰাঁড়ের সহিত এই জাতায় গাভীর " ক্রণ্" (cross) করিলে বোধ হয় মন্দ হয় না। সিন্ধুজাতীয় গাভীর সহিত মণ্টগোমেরা বংশীয়-গণের বিশেষ সাদৃশ্য আছে। মন্টগোমেরীগণ প্রভূত হ্রপ্পবতী বলিলা খাতি এবং ইহারা ভারতের সকল প্রদেশেই বিক্রয়ের জক্ত প্রেরিভ म्हेबा थाटक । এই वश्मीब्राम मिलालपूर्व, खरावा अवर मन्टेलारमबी-তহশীলের অন্তর্গত 'গাঙ্গিবার' নামক দেশে অধিক উৎপন্ন হইয়া থাকে।। ইহারা 'তেলিয়ার' বা 'শীবাল' নামে খ্যাত। ইহারা উচ্চে কম, স্থানী, ছোট পদযুক্ত এবং অনুভা মন্তক বিশিষ্ট ; ইহাদের শিঙ্ছোট ছোট, বিশাতি ষট্হৰ্ বা কুদ্ৰ 🌠 জাতীর মত, ছোট গোল কাণ, লেজগুলি नवा এবং অত্তে থোধা-पूक्त इश्री हेशता शाह नान, माना ও बुनत वर्त्त्र रहेमा शांदक । अन-वमान गाइँ उ वफ़ कम इत्र मा । এই आजीत साफ़ জননকার্যো অন্ধনেশে অধিক বাবস্কৃত হওয়া উচিত। ইহাদের শিরার বিলাতি রক্ত আছে বলিয়া বোধ হয়।

হারদ্রাবাদ এবং করাচির মধাবর্ত্তী প্রদেশে সিন্ধুজাতীর গোজাতির জনস্থান। এই উভর জাতার গোকুলের আদি উৎপত্তি এক বলিরা অমুমিত হয়। উত্তম বলদের দারা এই উভর জাতির চাষ বা উৎপাদন করা হয় বলিরা ভারতবর্বের সকল স্থানেই এই গাভীর প্রসিদ্ধি এত অধিক। শুক্ষ হে (hay) ঘাস এবং মাঠের উত্তম পৃষ্টিকর তুল ইহাদিগকে খাইতে দেওরা হইরা থাকে। ছগ্মবতীগণকে এই থাদা ভিন্ন কাপাস্বীজের খইল, ভূষী, ভূষা, মটর ও অপর তৈলাক্ত দ্রবার খইল সচরাচর দেওরা হইরা থাকে। ইহাদের কাল ছোট এবং দোহলামান হইরা থাকে। গাভীগুলি ৬০ টাকার পাওরা: যায়। ইহারা প্রারই ধীর-প্রকৃতির হইরা থাকে।

Agricultural Journal of India নামক পত্রিকার বিতীয় ছলুমের ২৫২ পূর্ভায় মি: মোলিসন (Mollison) এবং মি: ফ্রেঞ্ছ্ (French) রুণ্টগোমেরী ও দিছুবংশীর গোজাতির বিষয় বিস্তারিত বর্ণনাজনে বিদ্যাহিন বে, মণ্ট্গোমেরি এবং হাজি পরিবারহরের উৎপত্তি এক। ''গালিবার'' নামক পাঞ্জাব প্রদেশান্তর্গত মণ্ট্গোমেরী উপনিবেশ ভংশালে ইহাদিগের জন্মজ্বান বলিয়া প্রসিদ্ধ। জন্মদেশে ইহাদিগকে ''গাহিওরাল্" বা ''তিলি'' নামে অভিনিত করা হইয়া থাকে।

७। काकदाक्षिवःनीय।

এই পরিবারের গোজাতি সিদ্ধ প্রদেশের জীওরন্থিত উর্বরদেশে প্র জনার। ইহারা গাড়ীর বলদ বলিলেও অত্যুক্তি হর না। ইহারা বেষন বলিষ্ঠু, দেখিতে তেমন স্থান ও ক্রতগামী। ইহারা উক্তে বেঁশ বড় ইইয়া থাকে। উত্তর গুজরাট্ এবং রাজপুতানা ষ্টেট্ রেলওরের বারা কর্তিত প্রদেশে ইহারা বহুল উৎপর হয়। ইহাদের ঝুঁট্ছোট, ঝুল মানান-মুই (moderate in size), পেটের নিমের ঝোলা চামড়াটি খুব কম, মাথার পঠনটি উত্তম (well-shaped), শিঙ্গুলি বহিন্দিকে বাকা (inclined outwards); ইহাদের রঙ্ঘন লালবর্ণের ("creamy brown, though sometimes dark gray or brown with silver gray on the ribs"), চক্ষুগুলি পুরুষ্ঠ ও বড় এবং ইহাদের পা কোমল (tender and soft) হইয়া থাকে। ইহাদের প্রারই ওয়াদিরাল (Wadhial) জাতির সহিত সংমিশ্রণে "cross" করা হয়।

৭। কাথিয়াবাড়, জুনাগড বা গির্বংশীয়।

এই জাতীয় গোজাতি ভাবতেব সকল গোজাতি হইতে স্বতন্ত্র।
ইহাবা কথন কথন বোচ, স্থাট্ এবং শুজবাট্ নামেও অতিহিত ইইরা
থাকে। ইহাবা প্রায়ই কাথিয়াবাড় জেলায় উৎপন্ন হয় এবং বিশেষতঃ
গীরনামীয় জঙ্গলেব আসন্নপ্রদেশে এই জাতিব বছল চায় পবিদৃষ্ট হয়।
ইহাবা আকাবে অপেকাক্তত ছোট, কিন্তু বলদ্গুলি শক্তিবান বিধায় শক্ট
টানিতে সমধিক উপযোগী। গাভীগুলি প্রচুব চন্ধবতী এবং সেই কাবণে
পশ্চিম-ভাবতেব সর্ব্বেই নেলোব-বংশের পবে ইহাদেব খুব স্থ্যাতি
আছে।

এই ক্ষাতির শিঙ্ছোট, বক্ত, কাল, এবং পশ্চাদিকে বক্তাৰে কো হইরা থাকে। গাভীগুলিব শিঙ্সক হইরা থাকে এবং গাভীব বঙ্পার ফিকে জালবর্ণ (light brown) হয়; কিন্তু বাঁড়গুলি গাড় লাল (dark brown). এ বঙ্জাল-প্রত্যকের শেবভাগে গভীর হইরা থাকে। কোন কোনটি সাদা হয় এবং broken with patches

of brown অর্থাৎ সাদার উপর লালের গুল বসান থাকে।
কাণ লবা ও ঝোলা এবং ধারগুলি মোড়া (coiling round), মাথা—
অপেকায়ত কুল কিন্তু স্থাঠিত (neat well formed though
somewhat short), কপাল চৌড়া ও বিশাল (prominent),
চকু কাল এবং উপরের পাভাটি বড় এবং মোটা হয়। মুল (dewlap)
এবং পেটা বা পিধান (sheath) খুব পরিবর্জিত (extraordinarily
developed), পারের পাতাগুলি বড়, বলিষ্ঠ, এবং শক্ত হাড়বিনিষ্ট,
লা (legs) ছোট, (strong-boned, powerful, thickest) মোটা
লক্ত হাড়ে জড়িত এবং (muscular); লেজ লম্বা (is thinnish
and terminated by a bushy black brush of hair) এবং
খোবাবৃক্ত চুলে শেষ হইরাছে।

৮। इतियाना वा हिमातवः नीय।

হরিরানা নামক দক্ষিণ পঞ্জাবের একটা স্থানের নামে এই আতীর পো-পরিবারের নাম এরপ হইরাছে। ইহাদিগকেই বোধ হর "হিসার" নামে অভিহিত করা হইরা থাকে। ইহারা খুব বলির্চ্চ এবং মোটা (thick), গাত্তের বঙ প্রারই সালা কিম্বা স্থামল (gray) অর্থাৎ ধুসর বা ধোঁরাটে বর্ণবিশিষ্ট, ঝুঁট (hump) এবং ঝুল (dewlap) অর্থাৎ গুলার নিমন্ত দোছলামান চর্ম মানান-সই (moderate), পা ছোট, এবং গঠন আট্সাঁট (compact)। বলদ্ভলি বেশ ক্রতগামী, এবং গাভীগণ খুব হয়বতী অর্থাৎ সিম্বংশীর গাভীর স্থার হয়বতী হইরা থাকে। বোধ হর সিম্বদেশীর গাভী হইতে অধ্যাপক ওল্পালেশের মতে এই জাতির উৎপত্তি হইরাছে। আমার বোধ হর বে, নাগোর ও গুজরাটীর লোণিত ইহাদের শিরার প্রবাহিত আটে

এইস্থানে গোহতা৷ সম্বন্ধে চুই একটি অত্যাবশুক কথা বলা আবশুক। ইউরোপীয় প্রদেশ ও বিলাতে অবাধ-গোহতাার বিরুদ্ধে আইন বিধিবদ্ধ আছে। এ সকল দেশের যে গাভীগুলি "ঘাঁড়" লয় না. যাহাদের বংস কিম্বা জ্রণ অপরিণতাবস্থায় খদিরা যায়, কিম্বা যাহাদের গর্ভ-ধারণের শক্তি হীন হয়, তাহাদেরই মোটা "(Fatten) করা হয়। এইগুলিই হত্যার জন্ত "ক্লারের ছরীর" বিশেষ উপযোগী। আমানের দেশে পোয়ালাদের কুপায় গোবংশ একেবারে নির্বংশ হইতে চলিয়াছে। আমাদের **र्नाटन** रनाहजा ज्यवारं ममाहिज हहेग्रा थारक। अत्मरन वक्ता वा इक्क्वजी (barren or milch cow) গাভীর হত্যা সম্বন্ধে কোন তারতমা নাই। আমাদের দেশের হিতৈষীগণের এবিষয়ে আন্ত দৃষ্টিপাত আবশ্যক। যদি ভারতীয় গোজাতির বন্ধার জন্ম কোন আইন শীঘ্র বিধিবদ্ধ না করা হয়, তাহা হইলে অচিরাৎ ভারতভূমি হইতে গোবংশ নির্বাংশ হইবে। যে ভাবতে উংক্লপ্ত গোজাতির এত সাদর ও প্রাসন্ধি ্ছিল, তাহা নির্বংশ হইতে চলিয়াছে। সঙ্গে সঙ্গে অনুর ভবিষ্যতে আমাদের দেশের ক্লবিকার্য্য কি করিয়া চলিবে, তাহাও একটা বিষম সমস্থার বিষয় হুইয়া দাড়াইতেছে। আমাদের দেশে ঘোড়ার দ্বারা ক্র্যিকার্য্য নির্মাহিত হয় না. এবং হওয়াও হছর, বেহেতু ইহা অধিক ব্যয়সাধা। ম্বারাও ক্রষিকার্য্য সমধিক ব্যয়সাধ্য (costly) বিধায় এই নিঃস্ব ভারতে ভাষার প্রবর্তন (introduction) বা প্রচলন অসম্ভব। ভাই গোজাতির উন্নতিসাধন ও রক্ষণের প্রতি আমাদিগের দেশের মান্ত-গণ্য, বদানা মহোদয়গণের আও দৃষ্টিপাত করা কর্ত্তবা।

বিলাত প্রভৃতি দেশে গোন্ধাতির উন্নতি ছইটা কারণের জন্ত হইরা।
থাকে:—(>) মাংস অর্থাৎ কসারের ছুনীর জন্ত; (২) ছথের জন্ত।
আমাদের দেশের গোন্ধাতির উন্নতি চাই—(>) লালণ টানার জন্ত এবং (২)
ছথের জন্ত। সেই জন্ত আমাদের দেশের কেছ কেছ বলেন যে, শক্ট-বহুন,

লাকলাকর্ষণাদির জন্ত বিলাতি যাঁড়ের সাহায়ে ক্রেস্ ব্রীড বা সংকর বংশ উर्পानन करा मगीठीन नरह। इक्षनायिका मुक्ति वर्षन जन्नहे अहे खिक्या সমীচীন বলিয়া বোধ হয়। এই সম্বন্ধে ডাঃ রবার্ট ওয়ালেশু সাহেব কি বলেন, তাহা সকলেরই পাঠ করা কর্ত্তবা। তিনি বলেন যে, "ভারতীয় গাভীর মধ্যে কয়েক প্রকার ভাল গরুর জাতি যাহা নেথিয়াছি, সেগুলি প্রক্ত-প্রস্তাবেই বড় চমৎকার, এবং সেগুলি দেখিলে, গোজাতির উপর শতীত ও প্রাচীনকালে ভারতবর্ষের লোকেব যে বিশেষ যত্ন ও তদবির ছিল, তাহা নিশক্ষণ প্রতীত হয়। ভারতের গোজাতির উন্নতিকটে বিলাতি ঘাঁড়ের সহিত যোগ দিয়া ক্রন বা সন্ধব উৎপাদনের অনেক তানে চেষ্টা করিয়া দেখা হইয়াছে : কিন্তু এ-চেষ্টা সর্বাত্রই নিম্বল হইয়াছে। এরপ চেষ্টা নিক্ষল হইবারই কথা। এই ছই দেশের গড়র প্রাকৃতিক অবস্থা এতদূর বিভিন্ন যে, ইহাদের মধ্যে কোনরূপ যৌন-সংযোগ আশান্তরূপ ফলপ্রদ হইতেই পাবে না। ভারতের গরুকে বলের কার্য্যে নিযুক্ত করা হয়: এজন্ম বাহাতে গুরুর সামর্থাবৃদ্ধি হয়, সেই প্রণালীতেই সেদেশে গরু লালিত পালিত হট্যা আসিতেছে। পক্ষাস্তরে, আমাদের বিলাতে, বাহাতে গরুর শরীরে মাংস এবং চর্বি বৃদ্ধি হয়, কেবল পুরুষাত্মক্রমে এই দিকেই দৃষ্টি বাথিয়া গরু পালন করা হইতেছে। এই কারণে এই ছুই দেশে গুৰুর প্রাকৃতিক অবস্থার সম্পূর্ণ বিভিন্ন ভাব হুইয়াছে। বাহাতে ভারতের প্রতিগ্রামে বলবান যাঁড়ের সংখ্যা বৃদ্ধি হয়. এমত ব্যবস্থা করা কর্ত্তবা। বীতিমত আহার ও নির্মিত পরিপ্রমাদি করিতে দিয়া হাঁড়কে স্বল ও স্বস্থ রাখিতে হইবে। গাড়ী ও হাঁড উভয়ে নীরোগ হইলে, ভাহাদের বংসও যে ভাহাদের স্থায় বলশালী হইবে, ইহা সহজেই অন্তমান করা বাইতে পারে।

শৃষ্ঠ-বংসা গাভী অর্থাৎ বাহারা মৃত বংস প্রেসর করে, অথবা বাহা-বিসের বাছুর মরিয়া বার, ভাহারিগকে হুই এক বার গর্জ হুইবার সময় শীতিবাহিত করিয়া গভিণী হইতে দিলে তাহাদের বাছুর প্রায় নষ্ট হর না।
হিন্দুরা গর্ভের সময় অতীত করিতে দেওয়া পাপজনক মনে করেন; কিছ
সমস্ত বাছুরগুলি মরিয়া যাওয়া অপেক্ষা অগত্যাসস্তুত এ পাপ-গ্রহণেও
ক্ষতি নাই। কানে জল দিয়া পূর্বস্থিত জল বাহির করা উচিত। সেবা
ভ্রম্মা সকল বিষয়েই বিপয়্য় ঘটয়াছে; এখন যে কোন উপারে গরুর
ভর্মতি করিতে হইবে।

"বে সকল গাভী শীঘ্র গাভিণী হয় না, তাহাদের আহারের বিষরে
নিম্নলিখিত বন্দোবস্ত করিতে হইবে। যদি প্রতাহ পরিমাণ-মত আহার
দেওয়া যায়, তবে কয়েক দিবস কিছু কম কম দিতে হইবে। আর যদি
খাইতে কম পায়, তবে রীতিমত পেট ভরিয়া তেজয়র খাদ্যাদি খাইতে
দিবে। কিছুদিন শুক্না থইল খাওয়াইবে। অনেক গরু উহাতেই গভিণী
হয়। ফাস্কন চৈত্র মাসে মাতে চরিতে দিলে গাভী আপনি গভিণী হয়,
কারণ যাঁড়ের সহিত সর্বাদা বিচরণ ব্যানাম প্রভৃতি কতকগুলি কারণে
উহাদের কামোদ্রব হইয়া থাকে। উপযুক্ত রৌজ, বৃষ্টি ও বায়ুসেবন এবং
ব্যায়ামের অভাবেই উহাদের জনন-শক্তির হাস হইয়া থাকে।"

এই জাতীর গাতীর পৃষ্ঠ চৌড়া এবং বিস্তৃত, কোমর বা মাজা দৃদ্, জঙ্বা পেশীযুক্ত ও মাংসল, পারের হাড়গুলি সোজা ও চেপ্টা, ক্ষুর-গুলি কাল, শিঙ্ বেশ স্থলররপে বসান ও অগ্রভাগ ঈবং বাঁকা, কপাল চৌড়া, এবং মুখগুলি কাল ও স্থলর, এবং কাণ বড় হইরা থাকে। বাঁড়গুলি প্রায়ই ধীর এবং নম্র-প্রকৃতির হইরা থাকে। ইহারা অত্যন্ত চঞ্চল এবং ক্ষিপ্রগতিবিশিষ্ট হয়। গাতীগণ দৈনিক ৬ ইইতে ১২ সের হগ্য দিরা থাকে। এই জাতীর বাঁড়গুলি উচ্চে ৬০ ইইতে ৬২ ইঞ্চি এবং গাড়ীগণ ৫৪ ইইতে ৫৬ ইঞ্চি হইরা থাকে। ইহানের পালাম বড়, কোমল, এবং বাটগুলি মোটা, রড় ও ধারাল হয়।

এই সাতীয় গাড়ী হিদার এবং তরিকটবর্তী জেলার বহল উৎপন্ন

হইয়া থাকে। পাঞ্চাব প্রদেশের হান্সি, রোহটাক, ঝাঝার, এবং মহাম জেলায় ইহারা থব ভালরূপ উৎপন্ন হইরা থাকে: কারণ এদেশের জল-वाय हेशामत समन वा जासत शास विलय जिलागी। हेशात ध्व ধীর-প্রকৃতির হইয়া থাকে। ভাল যাঁড় ২৫, হইতে ৮৫, এবং গাভী <u> इक्ष्मात्रिकाश्वनाञ्चमादः २६, इरेट</u> ४०, होका भर्गन्त मृत्मा এक জाङ्ग পাওয়া বাষ। বোধপুরের নাগৌরী-বংশের সহিত ইহাদের সংমিশ্রণ হইরা স্বাতীয় শোণিত বিশেষ উন্নতি লাভ করিরাছে। হিসার জেলার হান্দি তহনীলে এই জাতীয় খুব বড় গাভী উৎপন্ন হইয়া থাকে। हेशामत्र म्बलान निधा এवः माझाति नषा हहेन्ना थारक। वनमञ्चन ১২০, হইতে ১৪০, বা ১৫০, টাকার জোড়া এবং ভাল গাভী ৪০, ্হইতে ৮০, টাকার পাওয়া যায়। ভারতীয় ক্লবি-পত্রিকার দিতীয় ভাগের (Agricultural Journal of India, vol. II, p. 264) ২৬৪ পৃষ্ঠান ভারতীয় শিভিগ ভেটিরিনারী বিভাগের ইনম্পেট্টর ख्नातिन अधानक, मनीन (.Prof. Morgan, M. R. C. V. S.) হিদারগাভী সম্বন্ধে বিস্তারিত আলোচনা করিয়াছেন। ভাহা সকলের পাঠ করা কর্মবা।

৯। वांनीयान-वःनीय।

এই জাতীর গাতী কাথিরাবাড় বা গীর-জাতীরের সহিত বিশেব সংলিষ্ট (বা allied)। ইহারা কাথিরাবাড় জেলার পূর্ববর্তী জেলাসমূহে বহল উৎপর (বা raised) হইরা থাকে। গীর-বংশীরের সহিত ইহাদের বিশেব লৌসাল্ভ আছে এবং বহুসংখ্যার নারিয়াদের চতুংপার্বে পাওরা বার। ইহাদের শিঙ্ ছোট, বক্র, বিড়ার মত পোলাক্ষতি এবং ঘোর কৃষ্ণবর্ণ; গারের রঙ গীরের মত ধুসর লালবর্ণ (brown),

কপাল বিশাল; ইহারা গীর্জাতির স্তার প্রচুর ছগ্পবতী; বলদ্ওলি গীর্বংশীয় বলদ্ অপেক। অধিক পরিপ্রমী, ক্টস্হিচ্ এবং ধীর ও বলিষ্ঠ হইরা থাকে।

১০। ত্রিচিনাপল্লী-বংশীয়।

ইহারা দক্ষিণ-মান্ত্রান্ধ দেশের প্রধান গো-জাতি বলিরা উলিথিত হয়।
আকারে ছোট হইবেও ইহার। খুব পরিপ্রমী এবং শকট টানার পক্ষে
বিশেষ উপযোগী। ইহারা ত্রিশিরপুরী (ত্রিচিনপরী), কারেমবেটোর
এবং ভাহার দক্ষিণ প্রদেশের স্থানীর (indigenous গোজাতি।
ইহাদের রঙ্কাল : শিঙ্ভলি ১০০৫ ইঞ্চি, উর্জগামী এবং লখা
ইইরা থাকে। প্রথম ছই বংসর পর্যন্ত ইহা বড় দৃষ্টিগোচর হয় না। কিন্তু
মুচই বয়্ল বুলি পার, তত্তই এইওলি বাড়িতে থাকে। এদেশের লোকে
কোন কোন গরুর শৃঙ্গ উলগ্রের পূর্বেই দাগ্রিয়া ডক্করা
ভাহাদের শিঙ্এর উলগন আদৌ হয় না বলিরা ভাহারা বিলাভি পোক্ত্
(polled) গো-জাতির স্থায় শিঙ্-বিহীন আকার ধারণ করে।

১১। कान्गांग-वःनीय।

ইহারা ত্রিচিনপরী-জাতীরের সহিত বিশেষ সংশিষ্ট (allied)।
কারেষবেটোর এবং তাহার চতু:পার্যন্তিত হানসমূহেই ইহাদের বাসন্থান।
ইহারা উচ্চে ৪ কিটের বেশী হর না, কিন্তু প্রচুর হয়বতী হইরা থাকে।
কোন কোন ভাল জাতীর গাভা দৈনিক >০ সের হয় দিরা থাকে।
ইহাদের চন্দু, নাক, এবং পারের রঙ্ প্রার্হ কাল হর, জার সমস্ত
চর্দের বর্ণ ধবল (Chocolate); পালাম এবং বাটের রঙ্ (tan), এবং
কর স্থান (neat) হইরা থাকে। ইহাদের পালামগুলি পুর বড়, এমন

কি পার্ব বা বংবাশ্পর্নী; ইহার আগাগুলি যতই দোহলাদান ততই সক হইরা থাকে (It tapers as it descends)। অধ্যাপক গুরাবেশ্ তাঁহার পুত্তকে এই জাতির সম্বন্ধে সবিশেষ লিখিয়া গিয়াছেন।

১२। मालाया-वःनीय।

ইহারা একটা ক্ষুদ্র জাতি। সাতপুরা পাহাড়ের উপরেই ইহাদের तिनी हात इटेबा थारक। इंटाएमत वर्ग मामा এवः इंटाबा मानवरमरमञ्ज স্থানীয় গোজাতি বলিয়া কথিত হটয়া থাকে। ডেকান প্রদেশের প্রায় সর্ব্বেই ইহাদিগকে দেখিতে পাওয়া যায়। ইহাদের গঠন বলিষ্ঠ, হাড়গুলি বেশ মোটা, এবং দেখিতে স্থন্তর। দেশীয় ভ্রমণণাল বাঞ্জারিগণ ইহাদিগকে পালন করিয়া থাকে এবং ভাহাদিগের দারাই দেশ-বিদেশে নীত হয়। বিগত ৮৮৬ সালের গণনায় প্রায় ত্রিশ হাজার এই জাতীয় গো নিণীত হইরাছিল। ইহারা ক্রমিকার্যোর জন্ত বিখ্যাত এবং গাভীগুলি বেশ হয়বতী (fair milkers)। ইহাদের "নিষ্কি" নাই এবং কুকুদ্ পূর্ণবিষ্ক নহে moderately developed : কাণ মাঝারি, এবং দোহণামান নাই : बूगे व व नरह। हाति वश्मदत्र ना श्रेश हेशामत मूक एक्तुन कता हम ना ; এই कांत्रल ইहाता थुवर পति अभी हरेना शास्त्र । हेशास्त्र भिड् छनि মন্তকের উপরে গোলাকারভার ধারণ করে। বঙ্গদেশের অনুসতি ভাগলপুরে একপ্রকার স্থানীয় গোজাতি দেখিতে পা ওয়া বার: তাহারা এই জাতির বিশেষ সম্পর্কীয় (allied); বোধ হয় ভাগলপুরের স্থানীয় গোবংশ এই জাতি হইতে উংপন্ন হইরাছে। আমাদের দেশে "ভগলপুরে গাই" বলে যে বছকালের প্রবাদ বচনটি আছে, তাহা বদদেশের সমর্গত 'ভাগনপুর' নহে,—ইহা পাঞ্জাব প্রদেশান্তর্গত 'বহাবলপুর'া আমানেত্র ঞ্লে আনিয়া ভগলপুর অপত্রংলে পরিণত হইয়াছ।

১৩। দক্ষিণবংশ (Deccan breed).

ইহারা বেশ বলিষ্ঠ, গোশকট লইয়া অবলীলায় ক্রতগমনশীল। ইহাদের মন্তকের মধ্যে নিম্বী বর্তমান; ইহারা থুব পরিশ্রমশীল। বেরার প্রদেশে এই জাতির অন্তর্গত এক প্রকার স্থানীয় গোজাতি জন্মায়; তাহারাও ইহাদের সমুদ্য গুণগুলি অধিকার কবিয়াছে। ইহাদের মুখগুলি কাল এবং গাত্র ব্রাউন বা ধূসর রঙের হইয়া থাকে।

১৪। পাটনাই বা টেলর-বংশীয়।

পাটনা, বাঁকীপুর, বাকরগঞ্জ, চৌহাট্রা, দানাপুর প্রভৃতি স্থানে এক প্রকার নো-আঁশ লা কুকুদ্হীন ও প্রচুর হ্রেবতী গোজাতি দেখিতে পাওয়া বায়। প্রত্যেকে ১৫০ ইইতে ২৫০ টাকা পর্যন্ত মূলো এইজাতীয় গর্ম বিক্রম হয়। ইহাদের পালাম খুব বড়, বাট লঘা, ইস্কুচন (escutcheon) পরিবন্ধিত, দেখিতে স্থান্দর, শিঙ্ বিলাতির মত অর্ধ-গোলাকাব, বর্ণ লাল, সালা, কাল এবং বাঘাটে রঙের হয় বা এই সকল বর্ণের মিল্লিভ বর্ণের দৃষ্ট হয়। হরিহরের মেলায় স্থানীয় চাষীগণ ইহাদিগকে প্রত্যেক বংসর বিক্রমের জন্ত জানিয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে ৬ ইইতে ২৫ সের দৈনিক হয়বতী গাভী প্রায়ই দেখিতে পাওয়া য়ায়। এই জাতির উৎপত্তি সম্বন্ধে এক স্বতন্ত ইতিহাস আছে।

দিপাহি-বিজ্ঞাহের সময় হইতে পরবর্তী করেক বংসর পর্যন্ত পাটনার টেলর নামক এক হুদান্ত কমিশনার ছিলেন। ইনি পূর্বে গয়ার ডিব্রীষ্ট-অন্ধৃ ছিলেন। তিনি তথাকার উকীল সরকার, মাহিয়-কুলযুরদ্ধর ৺উমেশচক্র সরকার চৌধুরী মহালয়কে সবিশেষ হুপা ও অন্ধ্রহ করিতেন। যে সময় টেলর বাহাছর পাটনার কমিশনার, সেই সময় উত্তর-পশ্চিম প্রদেশের মধ্যে মথুরা জেলা স্বতন্ত্র গোজাতির কার্চ্চ বছকালাবিধি প্রসিদ্ধ আছে! কোনাঁ এবং ছাতার গাভীগণ প্রায়ই প্রচ্ব হয়বতী হইয়া থাকে। ঐ স্থানের বলপও খুব পরিশ্রমী হয়। মথুরার গোজাতির মধ্যে দেনা এবং কোনা বংশীয় হইটা শাখা-বংশীয় গাভী দেখিতে পাওরা বায়। ইহাদের মধ্যে কোনী-বংশীয়গণই উৎকৃষ্টতর। কোনীয় মধ্যে প্রনশ্চ মেওয়াই-জাতিগণ সমধিক দামী এবং প্রসিদ্ধ। ইহারা আড়াই হইতে তিন বৎসরের মধ্যে গর্ভধারণোপযোগী হয়। কেহ কছর-বিয়ানী, কোনটি বা হুই বংসর অস্তর এবং কোন কোনটি তিন বৎসর অস্তর প্রসব করিয়া থাকে। কোনীগণ প্রত্যহ ৭ বা ৮ সের, এবং দেশীগণ প্রায় সচরাচর ৪ বা ৫ সের হুয় দিয়া থাকে।

১৫। नारगात वा ७ शांगान-वश्नीय।

উত্তর-পশ্চিম ভারতের ইহারাই শক্ট-বহনকারী প্রধান গোজাতি।
মাইশোর-বংশের পরেই ইহারাই প্রধান। ("They come second
only to Mysore breed for trotting.") ইহানের কাণ লখা এবং
দোহলামান, রঙ্ সাদা এবং শ্লামন (mostly white or light gray
though a number are of the light brown and white with
a tinge of brown about the head generally, in and about
the horns)," ইহারা খুব বড় (they are large and heavy in
all the parts) এবং লখা শিঙ্ বিশিষ্ট হইয়া খাকে। ইহানের শিঙ্ভালি ২, ৩ বা ৪ ফুট পর্যান্ত লখা ও উর্জানী হইয়া খাকে। তালের শিঙ্ভালি ২, ৩ বা ৪ ফুট পর্যান্ত লখা ও উর্জানী হইয়া খাকে। তিলি grows
up to a tremendous size, strong and pointed, often terminated by an elongated spiral twist and inclination backwards,)" ইউরাট সাহেব এই লাভীর গ্রুক সম্বন্ধে বিশ্বত বিশ্বরণ

লিথিয়াছেন। বিলাভের ১৮৩২ সালের বড়দিনের গো-প্রদর্শনীর (X'mas Cattle Show) বিররণীতে "নাগোর" জাতির বিস্তৃত বিবরণ দৃষ্টিগোচর হয়। বিকানীবের সন্নিকটেই ইহানের উৎপত্তির প্রধানস্থান। ইহারা গোশকটবহনে সবিশেষ উপযোগী, কিন্তু কৃষিকার্য্যে তত পটু নছে। ইহারা হগ্ধবতী নহে (they are not good milkers); খুবই ক্রতগামী এবং এই বিষয়ে ও শক্তিতে সকল বিলাভী গাভীজাতি অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ।

३७। याजाक-नाननः नीय।

এই জাতীয় গোজাতি অধিকাংশই চিংগলপট্ ও আরকট্ প্রদেশে দৃষ্ট হয়। ইহাদের গায়ের বর্ণ লাল (brick red); ইহাদের মধ্যে অরই হরিদ্রা (gray) এবং দাদা বা ধূদব (brown) বর্ণের হয়। আকারে কুদ্র হইলেও ইহারা থুব পরিশ্রমী ও কট্টসহিষ্ণু হইরা থাকে। ইহাদের কুকুল্ কুদ্র হয়। একজাতীয় মহারাষ্ট্র-বংশীয়ের স্তায় ইহাদের শিঙ্গুলি সন্মুখভাগে বাঁকা। এই বংশের অন্তর্গত ত্রিচিবংশ বলিয়া আর এক জাতীয় শাখা গো-পরিবার আছে। ভাহাদের বাঁট ও পালাম ট্যান্ (tan) বর্ণের এবং উহারা কানগাম্-বংশের সহিত বিশেষ সংমিশ্রিত ও সম্পর্কিত (allied)।

১৭। कडन-दश्नीय।

ইহার। বন্ধ আদিন গোবংশের বংশধর বলিয়া বোধ হয়। ইহাদের
বঙ্জ অধিকাংশই সানা এবং কাল হইয়া থাকে (mostly black
and white dun, red or brown shading off to dark brown
or black near to the points)." শিঙ্গুলি বেশ বড় হয় কিছ
বাকা-হোৱা (irregular)। ইহারা পো-শুকট টানিবার করা বেশ

উপযোগী এবং ঘণ্টার ৩।৪ জোশ বোঝাপূর্ণ শকট অবলীলার টানির। লইরা ঘাইতে পারে। ভাল বলদের জোড়ার দাম ২৫০, টাকা হইরা থাকে।

১৮। কান্ত্রীয় বংশীয়।

ইহারা বান্দা জেলার স্থানীয় গোজাতি। "কেন" নদীর তীরদেশে ইহাদের বছল চাধ (bred) হয় বলিয়া ইহাদের নাম "কেন্ত্রীয়" বা কান্বীয় হইয়াছে। ইহারা পরিশ্রমী হইলেও তত চঞ্চল (active) নহে। ইহাদের গায়ের রঙ্লাল (brick red), এবং মুথ সাদা, কোন কোনটির পেটের উপর সাদা গুলযুক্তও দেখা যায়। কাণগুলি ঈয়ং ঝোলা ("modrate size, slightly inclined downwards)। ইহারা দেখিতে খুব স্থলর (handsome), কিন্তু গোরানীয়াজাতীয়দিগের অপেক্ষা বেশী আট্র্সাট্ গড়ন-বিশিষ্ট (more compact than the Goraneas) হইয়া থাকে।

১৯। গোরানীয়া-বংশীয়।

ইহারা বুন্দেলথন্দ দেশের স্থানীর গোজাতি। উত্তর ভারতবর্ধের
মধ্যে ইহাদের মত পরিশ্রনী গো-জাতি আর দিতীর দেখিতে পাওয়া
মার না। "এগ্রিকল্চারাল লেজার" নামক সরকারী পৃস্তকে ইহাদের
নিম্নলিখিত বিবরণ দৃষ্টিগোচর হয় :—

Bones:—fine and clean; Neck:—deep rather short;
Tail:—remarkably thin and whiplike, terminating with
a luxuriant tuft of black hair; Hoofs':—neat and
hard; Color:—generally white, dark gray, a ridge al-

most white passes along the crest of the backbone, with rings of light shade round the muzzle. This cattle is of a medium size and of a moderate height. The horns are widely set apart being long, pointed, of a medium thickness at the base and thinning gradually towards the tip, which is black.

२०। वरगोधा-वः नीय।

আবোধ্যা প্রদেশে এই জাতীয় গোবংশ প্রসিদ্ধ। ইহারা বিলাতি "পোল্ড্" (polled) বা শৃঙ্গহীন গোজাতির সমতুল্য। ইহারা "শকটের বলদ্" বলিয়া ভারতে চিরপ্রসিদ্ধ। ইহাদের রঙ্ শ্রামন (gray ranging from dark gray to white) হইয়া থাকে।

এই জাতীর গোজাতি অধিকাংশই আরবদেশান্তর্গত এডেন হইতে পশ্চিম-ভারতে আনীত হইরাছে। বোষাইদেশে এই গোজাতিকে সমধিক দেখিতে পাওরা ধার। ইহাদের অক্সপ্রতালসকল বেটে, শক্তিসম্পর ("Well formed and compact limbs, more symmetrical in form than most Indian cattle"). এই জাতীর বলদ্পুলি ছোট কিন্তু শক্তিসম্পার হর; ইহারা দেশার (indigenous) বা ভারতীয় বলদের ভার বলিষ্ঠ ও কইসহিষ্ঠ হয় না। ইহাদের শিঙ্গুলি খুব ক্ষুম্ব এবং মোটা। ("The colours usually in the male are light brown or dun with a 'mealy' nose and dark points.) মুধ এবং গারের রঙ প্রারহ সাদা হইয়া থাকে। ঝুঁটগুলি বড় এবং পরিবর্দ্ধিত, এবং কাশভীলি । ছোট হয়। ইহায়া বেশ ছগ্ধদাত্রী হয়।

२२। পালামু-वः नीय।

ছোটনাগপুর বিভাগের পার্র্নতা তৃণবিহীন দেশে, এবং গরা, জেলার দক্ষিণস্থ অন্থর্বর পর্ব্বভন্নর দেশসমূহে একপ্রকার স্থানীর নির্বার্ণ নার্নার দক্ষিণস্থ অনুধ্বর পর্ব্বভন্নর দেশসমূহে একপ্রকার স্থানীর নির্বার্ণ নার্নার করেন থ্ব পটু, এবং বোঝা বহিতে থ্ব উপযোগী। ইহারা আকারে ছোট হয় এবং তেমন গ্রুবতী হয় না। উত্তম শোণিত ইহাদের নিধা প্রবেশ করাইরা এই জাতির সমধিক উর্নাত বিধান করা ঘাইতে পারে। ইহারা প্রায়ই সাদা, লাল (dun) এবং শ্রাম বা কালবর্শের হইরা থাকে। ইহা ছাড়া যশোরবংশ, এলাহাবাদের সন্নিকটস্থ মোজফ্রন্থর প্রাগত পুরবী-বংশ, ঘাটাল বা মেদিনীপুর-বংশ, বাঙ্গালার বংশ নামক আবঙ্ক কয়েকটা ক্ষুদ্র এদেশীর (indigenous) গোজাতি আছে; তাহাদের বিস্তারিত উল্লেখ নিশ্রেজন।

২৩। পাৰ্কত্যবংশীয়।

এই জাতি হিমানরের পার্কতা গোজতি। ইহানের মধ্যে কোন কোনটা বেল হয়বজী। ইহারা কাল ও লাল (dun এবং brown) রঙের হইরা থাকে। ইহারা জাকারে ছোট হয়। ইহানের মধ্যে কুট প্রায় নাই। ("Those seen on the Himalayas are mostly black in colour and are small in size. But a few are gray or dun with dark mouse coloured points.") খুব শক্ত। এই জাতির মধ্যে ছইটা সাম্প্রদারিক (sub-types) লাখাজাতি দৃষ্ট হয়। দার্জিলিং, কানিশাল্প প্রভৃতি পার্মতাদেশে ছই জাতীয়
পার্মতা-গো দৃষ্ট হয়:—(১) সিকিম-বংশীয়। ইহারা খুব ছয়বতী,
গায়ের লোম বিলাতির মত মোটা, এবং য়ৄ৾ট্-বিহীন। (২) নেপালবংলীয়। ইহারা উপরোক্ত জাতি হইতে অপেকারত কুদ্র। আবার
লিমলা শৈলের আসরপ্রদেশে একপ্রকার কুদ্র পার্মতা গোজাতি
দৃষ্ট হয়। কেরীজাতীয় বিলাতি য়াঁড়ের সহিত এই জাতীয় গাতীর
মিশ্রণে সক্ষর (cross) উৎপাদনের চেষ্টা করা যাইতে পারে। পুনশ্চ
"ডালী" নামক এক প্রকার পার্মতা গোজাতি জলপাইশুড়ির আসরপ্রদেশে দৃষ্ট হয়। ইহারা অত্যক্ত (hardy) পরিশ্রমী।

আসাম দেশে ও তত্ততা পার্মত্য প্রদেশে এক প্রকার ছোট জাতির গোবংশ দেখা যায়। ইহারা বেশ পরিশ্রমী, কুদ্র এবং চঞ্চল-প্রস্কৃতিবিশিষ্ট , লাঙ্গণবহনে ইহারা প্রায় বেশী ব্যবহৃত হইরা থাকে। মিঠান বা আসাম দেশীয় বস্তু গো-জাতি প্রায়ই মোটা ও গোলগাল হইরা থাকে। মোটা ঘাস্থক এবং জলার বাসবহল দেশেই ইহারা সমধিক রুদ্ধি প্রাপ্ত হইরা থাকে। আসাম ও শ্রীহুট্ট দেশে এই কুম্রজাতীর গোগণকে বেশী খাটান হর বলিরা তাহারা এত অপরুষ্ট হইরা থাকে। এই প্রদেশে গোগণের বড় বছ্ন করা হর না এবং রাজে এইলো নিবারণার্ধে এবং পোকার কামড় হইতে রক্ষার জন্ত গোজাতিকে নদীর পাড়ে জনের ধারে বাধা হইরা থাকে। ইহাতে অনেক গাতী রোগগ্রুত হইরা অকালে কালকবলে পতিত হইরা থাকে। দক্ষিণ-আফ্রিকাতে টাজ্টীক্ নামক পোকা ঘারা বহুগাতী আফ্রান্ত হইরা থাকে। এ রোগ আমাদের দেশে নাই; কিছ্ক আনাম প্রদেশের উপরোক্ত পোকাগ্রিক নকবংশীর। ভাছাদের উৎপাত বছ্ক করে।

शार्वकाणांकित मत्या त्वती, कृषावृत, त्वशायी, स्ट्रीहरू, ध्वरः निवि-

পরিবারই বিশেষ প্রাসিদ্ধ। সিরিজাতির সম্বন্ধে বাঙ্গালা গভণ্মেন্টের পশু-চিকিৎসা বিভাগের অধ্যক্ষ অধ্যাপক ডি, কুইনলেন (D. Quinlain M.R.C.V.S.), Agricultural Journal of India নামক পত্রিকার তিন বালুমে বিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। পার্বতা পরিবারের মধ্যে সিরিগণ মন্দ্র ছগ্ধবতী নহে।

২৪। বিলাতি-বংশীয়।

অতঃপর আমি ইয়োরোপীয় বিলাতি, ফরাসী, আমেরিকা প্রভৃতি স্থানের প্রধান প্রধান গোজাতির বিষয় উল্লেখ করিয়া এই প্রসঙ্গ শেষ করিব। তহাের পর গো-চাষের বিষয় সমাগালােচনা করিব। বিলাভে কয়েক প্রকার উত্তম শ্রেণীর দ্রোণত্বঘা গোজাতি দৃষ্ট হয়। তন্মধ্যে নিম্নলিখিতগুলি বিশেষ উল্লেখযােগাঃ—

>। শট্হৰ্ (Short-horn)। ২। লিজ্বন-শায়ার লাল শট্ হৰ্ (Lincoln-shire Red Short-horn)। ৩। হেরি-ফোর্ড (Hereford)। ৪। নর্থ ডিভন্ (North Devon)। ৫। সাউথ্ ডিভন্ (South Devon)। ৬। সাসের (Sussex)। ৭। ওরেল স্ দেশীয় (Welsh)। ৮। লঙ্গ-হর্ (Long-horn)। ৯। রেড-পোল্ড (Red-polled)। ১০। এবার্ডিন-এজস্ (Aberdeen-Angus)। ১১। গোলারে (Galloway)। ১২। পশ্চিম-হাই-ল্যাণ্ড (West Highland)। ১৫। আর্লিয়ার (Ayr-shire)। ১৪। আর্সি (Jersey)। ১৫। গার্ল্সি (Guernsey)। ১৬। কেরী (Kerry)। ১৭। ডেক্সিটার (Dexeter)।

এইগুলির মধ্যে > হইতে > পর্যান্ত ইংলগুরাসী, ১০ হইতে >০ পর্যান্ত ক্ষুত্রপুরাসী, কেমী ও ভিক্সিটার আমুরলগুরাসী, এবং জাসি ও শাংশী

জাতিবর অনামপ্রসিদ্ধ বীপপুর্ববাসী। ইহাদের শিরায় " বুটানির " শোণিত প্রবাহিত আছে বলিয়া ফরাসী-প্রাণী-তম্ব-বিদর্গণ ইহাদিগতে নরমাণ্ডি-পরিবার বলিয়া উল্লেখ করিয়া থাকেন। ইহা ছাড়া ইউরোপীয় ৰহা প্রদেশে কয়েক প্রকার প্রচর হয়ব তী গোপরিবার আছে। আমেরিকা প্রদেশে হোল ষ্টন নামক এক প্রসিদ্ধ চগ্ধবতী গোজাতি দুই इस। हेश्रा काकारत वकु रत्र धवर भारत वह मान धवर कान वा দান। ও কাল মিশ্রিত হয়। তাহার পর ডাচবেলটেড জাতির (Dutch-Belted-breed) ঐ দেশে প্রসিদ্ধিও কম নহে। ইছারা কম দপ্পবতী নছে। শর্ট-হর্ণ জাতীয় গোজাতি বিলাতের দর্বতেই পাওয়া যায়। এই জাতির প্রথম জনম্বিতা রবার্ট কলিং ও চার্লদ কলিং প্রাতান্তর। ইহারা টিজ ওয়াটার জেলার ও ভারহামবংশীয় গাভার সংবোগে নির্বাচন বারা এই প্রাতীয় গোজাতির অষ্টাদশ শতাব্দীর মধ্যভাগে সবিশেষ উন্নতিসাধন করেন। তাহার পর বুথ ও বেট সাহেব-ছ য় এই জাতির বিশেষ উন্নতিসাধন করেন। ইহারা লাল, সাদা এবং roan (রোন্) রকের হইয়া থাকে। ইহারা ছগ্গাপেকা মাংদের জন্ত অধিক প্রসিদ্ধ। তাহার পর লিফলন্শেয়ার লাল শর্টহর্ণ জাতি উল্লেখ-বোগা। ইহারা যেমন মাংদের জন্ম প্রাসিদ্ধ তেমনি ছগ্ধবতী। ইহারা ভারত-বর্ষ প্রভতি দেশে দেশীয় গাভীর সহিত cross বা সকরোৎপাদনের জন্ম সম্পিক ব্যবহৃত হইয়া থাকে। "Their uniform cherry-red colour has brought them into high favour in tropical climates for crossing with the native breeds." হেরীফোর্ডবংশীর গাভী ति विक्क कम कुनाब नहि । इहारानव शिष्ठे, घाष्ठ 'अ' मुथ माना, धवर भार्ब 'छ পিঠ লালবর্ণের হয়। ইহারা হেরীফোর্ড এবং তাহার আসরদেশেই বহুল জানিয়া থাকে। ইহারা ভাল ছগুবতী (milker) নহে, বরং बारामक अबारे व्यमिक। यह बाजीव वीएकनि (britshing) করিতে খ্ব পটু, এবং বিলাতি সকল জাতীয় গাভীকে হারাইরা দেয়। শট্হর্ণজাতীয় গাভী সম্বন্ধে "A. H. Sanderএর "Shorthorn Cattle" নামক পৃথক এবং J. Sinclair কৃত "History of Short-horn Cattle" (Vinton & Co., London) দ্রুষ্ট্রা।

উত্তর-ডিতনবংশীয়গুলি দেখিতে স্থন্দর এবং মাংসের জন্ম প্রসিদ্ধ। डेडामिशरक विवारलं लाक जामत कतिया 'Rubies of the West' विनेत्रा छाकिया शास्त्र । मिक्न-फिज्न-वःभीव्रशनरक "शाम" दर्ग । शाजी গুলি বড় এবং প্রভূত হগ্ধবতী বলিয়া প্রসিদ্ধ। ইহাদের হুগ্ধে ননী ও মাগমের পরিমাণ বেশী। সাসেক্স্-বংশ সাউথ্-ডিভন্-বংশের সহিত স্বিশেষ সাদৃত্র রাখে। ইহারা মাংসের জন্ত স্বিশেষ প্রসিদ্ধ। ওয়েশ দ্ (Wales) দেশীয় গাভীগুলি বেশ হগ্নবতী বলিয়া প্রসিদ্ধ। লাল পোল্ড वा नान मृत्रहीन दश्मीव्रशंभ कृत्वत क्रम्य चाउर व्यक्ति । हेशासन मस्टाक এক ওচ্ছ ঝুঁটা আছে। ইহারা অনেক দিন পর্যান্ত হগ্ধ দেয়। সাকোক্ ও নরফোক্ দেশই ইহাদের বাসস্থান। এবার্ডীন-এক্স-বংশীরগণের শিঙ নাই। এবার্ডীনশেরারে ইহাদের বাস। স্কট লও দেশে এই জাতীয় গোভাতির স্বিশেষ সমাদর আছে। ইহারা অধিকাংশই কালবর্ণের হটল থাকে। দক্ষিণ ফটুলও প্রদেশে গেলোরে বংশের খুব প্রাসিদ্ধি আছে। ইহারা এবার্ডীন-এলাদ্-বংশের তার কালবর্ণের এবং শৃলহীন কটলা থাকে। সালা শট্ছৰ্ণ ঘাঁড় ও গোলোরে (Galloway) গাভীর সামিত্রণে যে 'ব্রুগ্রে' নামক এক প্রকার গোজাতি জন্মিরাছে, ভাষারা 'প্রচুর ছ**ন্ধবতী এবং মাংলের জন্মও** প্রাদিদ্ধ। বিলাতী লো**লাতি**র মধ্যে পশ্চিম ছাইল্যাও্দেশীয় কাইলো গাড়ীর ছায় আৰু কোন লোকাতি তেমন স্থন্য ও স্থী নহে। ইহাদের রঙ্নিমরশ হর 🐃 The colour of their thick shaggy hair varies from white and light dun to tawny yellow of many shades and black."

কট্লণ্ড দেশের আররশেরার বংশীর গোজাতি যুক্তরাজ্ঞানথ্য প্রধান চথ্যবতী গাভী বলিয়া প্রসিদ্ধ। ইহারা আরুতিতে মাঝারি এবং সাদা এবং বাদানে (brown) রঙ্গবিশিষ্ট হয়। ইহাদের সম্বন্ধে বিশেষ বিবরণ শরে শেখা হইরাছে। "The females display the wedge shape typical of dairy cows. They are a hardy breed and even from poor pastures give good yields of milk especially for cheese making purposes."

উত্তর আমেরিকা প্রদেশে হোলস্টান এবং ক্যানেডাবংশীর ছই প্রকার প্রচুর ছগ্ধবতী পাভী দৃষ্ট হয়। হোল্টান্জাতীর গো ইউরোপীর বহাদেশ (Continent) হইতে আমেরিকার আদিম (orignial settlers) উপনিবেশিকগণনারা ঐ দেশে তিনশত বৎসর পূর্ব্বে আনীত হুইয়াছিল।

ক্যানেভাবংশীরগণ ফরালী দেশের অন্তর্গত বুট্ নিবংশের গোজাতি হইতে উৎপন্ন; এবং দেইজন্ত ইহারা গার্ণমী, জার্লী, জাল্ ভার্ণি, নার্ক প্রভৃতি চ্যানেল দ্বীপপুঞ্জের গোজাতির সহিত বিশেষ ঘনিষ্ঠতাবে সংশ্লিপ্ত (allied এবং related.)। ইহারা দেখিতে যেমন স্থলন, জরভোজী একং প্রচুর নলীযুক্ত ছয়বতী, অপর কোন বিলাতি জাতি তেমন করে। কেরীবংশীর গোজাতি কাল ক্রজাতীয় দক্ষিণ-পশ্চিম জাররলগুলেলনিবালী প্রচুর ছয়বতী গোজাতি বলিয়া সমগ্র বুটিশক্রীশে প্রসিদ্ধ। ডেক্টার নানীয় প্রানিদ্ধ আর্রলগুলের গোজাতি এই কেরীবংশ হইতে উল্ভৃত হইরাছে। ইহারা প্রচুর ছয়বতী, বলিষ্ঠ, সম্প্রশৃক্ষ। উত্তর পার্মজ্য কেরী হইতে ডেক্টার নামক এক ব্যক্তির নির্মাচন এবং বন্ধপুর্বক উৎপাদনের ঘারা (breeding) এই আতির

গো সৃষ্টি করিয়া সবিশেষ স্থগাতি লাভ করিয়াছেন। বিলাতি গাভীর মধ্যে জার্সি এবং গার্ণসীবংশীয় বিশেষ উল্লেখযোগ্য। Lincolnshire Red short-horn, South Devon, Long-horn, Red-polled, Ayrshire, Jersey, Guernsey, Kerry, Dexeter, Holstein, Canadian, Brittany বংশীয় গোজাতি প্রচুর ছন্ধবতী বলিয়া প্রসিদ্ধ। নির্বাচন পূর্বক এইগুলির সহিত সংমিলন (cross) করিয়া ভারতের ছন্দশাগ্রস্ত, প্রার লোপপ্রাপ্ত (deteriorated) গোজাতির সমবিক উন্নতিসাধন করা যাইতে পারে।

এই প্রদঙ্গ শেষ করিবার পূর্বে ভারতের এক গোবংশের কথা উল্লেখ করা বিশেষ প্রয়োজন। পাঞ্জাব দেশের পার্ববতা এবং বন্ধপ্রাদেশে বিচরণশীল মণ্ট গোমেরী জেলার গোজাতির উল্লেখ বোধ হয় এইখানে অপ্রাদঙ্গিক হঠবে না। ভারতে গোজাতিব চাব হালবহন, শক্ট-আকর্যন, জন-উত্তোলন, চন্দ্রদান প্রভৃতির উপর লক্ষ্য রাধিয়া উৎপাদন করা কর। মাংসের জন্ত গরুর উৎপাদন ভারতে অজানিত। গোজাতির দারা এত প্রকারে আমন্ত্র উপকৃত হই যে, তাহাদের হত্যার বিরুদ্ধে অত্তদেশে শারীয় নিবেধ অতি প্রাচীন কাল হইতে প্রচলিত আছে। মণ্ট্গোমেরী কেলাতেই মণ্ট গোমেরী গাভীর জন্মতান। ইহাদের শিরায় বিলাভি শোণিত প্রবাহিত আছে বলিয়া বোধ হয়। ইহাদিগকে দেখিতে অতীব স্থানৰ এবং ইছালের দোছৰামান বৃহৎ পালাম এবং বৃহৎ বাট-চত্ঠাৰ তাৰ-হরে প্রচার করে যে, ইহারা প্রক্লতই প্রচুর হ্রম্বতী। সিদ্ধুবংশের মধ্যে ও ইতাদের সভ্যন্ত কথঞিৎ বলা তইবাতে। ভারতের আৰু কাল এমনই চৰ্দ্দলা উপস্থিত হইয়াছে বে. এই সকল উত্তম গোলাভিয় অবাধ উচ্চের হইতেছে অবচ মানসা ভাহার কোন প্রতিকার করিছে বেশের স্বাভগণ্য মহোমসগণের এদিকে স্বাভ স্বাটিশাক প্রার্থনীয়, নচেৎ অচিয়ে ভারতের ক্রমিয় সবিবের হানি সংঘটত হইবে। \cdots

বিলাতি ক্লাতির সম্পর্কিত পরিবারের মধ্যে দক্ষিণ আফ্রিকা বা কেণ্-কলোনীর আদ্রিকাগুরু Africander) বা ফ্রীক্ল্যাণ্ড্ বা গুলনাক্ দেশীয় এক প্রকার প্রভূত চ্পাবতী গাভী আছে। অধ্যাপক গুলালেশ্ ওাঁহার সাউন্ অফ্রিকা '(South-Africa)' নামক পুস্তকের ২৫৪ পৃষ্ঠায় ইহাদের সম্বন্ধে বিস্তৃত আলোচনা করিয়াছেন। বন্ধ এবং অধ্যবসায়ের গুলে আমেরিকাবাসীগণ এই ক্লাতীর গাভীর সম্বিক উর্জি বিধান করিয়াছেন। তাঁহারা এই ক্লাতীয় গোজাতির উন্নতির ক্লা একটা স্মিতি স্থাণিত করিয়াছেন। ইহাদের ঠিকানা 'ইল্প্টান্-ফ্রি-জিয়ান-এলোপিরেসান' বন্ধ নং ১০২. ব্রেটেল্-বোরো, ভাবমট্, U. S. A.

এই জাতীয় পাতীগণের ঘাডের কাছে কুকুদের স্তায় উচ্চ মাংস-পেৰী আছে। ইহা ভারতীয় গোজাতির বুঁট বা কুকুদ নহে বরং (muscular enlargement)। ইহারা টরাইন জাতীয়; জিবু নছে। বুটিশ পূর্ব-মাক্রিকা এবং উরুন্দী প্রদেশে ছই জাতীয় গোবংশ দৃষ্ট হয়। ইহারা ভারতীয় গোজাতি না হইলেও ইহাদের শিরায় যে ছেবর শোণিত প্রবাহিত হইতেছে, তাহাতে কোন সন্দেহই নাই। বিলাজী গাভী সম্বন্ধে নিম্লিখিত পুত্তকগুলি পাঠ করিলে বিশেষ জ্ঞান ৰাভ ভইবে:—C. S. Pumb. কৃত "Types and Breeds of Farm Animals," (N. York, Ginn & Co.); C. L. Peck 'Profitable Dairying' (Orange Judd & Co., N. York); "American Jersey Cattle Club" जना निनाटका "British Dairy Farmers' Association"এর বারা অকানিত কুল কুল भूकिकाश्रमि विराग राष्ट्रमहकारत गर्रमीय। जाहा हाजा निम्नीयिश्र-করেকবানি পুত্তক পাঠ করাও বিশেষ প্রয়োজনীয় বলিয়া বোধ Fifty Years among Short-horns" by Robert Bruce (Loridon, Vinton & Co. 7-6.d); "Principles"

of Breeding" by E. Davenport (London, Ginn & (Co.); "Business of Dairying" by C. B. Lane (New York, Orange, Judd & Co.) "Dairy Short-horn Association" Bulletins, Journals and Pamphlets: "Cattle Breeds and Management" by W. Housman (London, Vinton and Co., 3s. 6d.): 'The Polled Herd-Book' by "The Polled Cattle Society" (Banff, Scotland); I. Macdonald and J. Sinclair's "History of Aberdeens Angus Cattle" (Vinton and Co.); A. Pulling's "Aberdeen-Angus Cattle" (Simpkin and Marshall); I. Macdonald and J. Sinclair's "History of Hereford Cattle": Chandra Shekhar's "Notes on the Management of Cattle in India and Ceylon" (Navalar Press, Jaffina, Ceylon); Henry Stephen's "Book of the Farm" Vols. i to iii.; Mac Combie's "Cattle and Cattle Breeders" (Blackwood and Sons, Edinburgh, 3s. 6d.)

ি বিশাতি বংশের মধ্যে করেকটি উপ-পরিবার আছে। জাহাদের মধ্যে মে করটি প্রসিদ্ধ হগ্নদাত্রী বলিয়া খ্যান্ড, চাহাদের আরও বিস্তৃত উল্লেখ করিয়া এই পরিচ্ছেদ শেষ করিব।

১। শর্টহর্ণ পরিবার:—ইহাদের মধ্যে শর্ট হর্ণ (Short-horn)
ভাতীর গাভীগুলি থ্ব স্থানর, হগ্ধবতী এবং প্রসিদ্ধ চিলিংহ্যান্ ও
থূল-পার্কের প্রাচীন গোজাতির শোণিত হইতে বৃধ্যু কোট কালিল,
ডিশ্লী প্রভৃতি উৎপাদকগণ বৈজ্ঞানিক নির্মাচন-বিধির কলে বর্তমান
বিবাতি শটহর্ণ গাভী অন্যন শতবংসরের ক্ষবিক কালের চেই। ও
ক্ষেত্রবারের গুণে উৎপাদিত করিয়াছেন। ডিশ্লী প্রভৃতি উৎপাদকশালে

हेश श्रमानिक कतिशाहन त्य खराटन (वनी महत केश्लामन कतिता (inbreeding) বংসগণের ভ্রমায়িকা শক্তিকে ক্রমশঃ হাস করিয়া থাকে। অধ্যাপক ওয়ালেশ বলেম যে, সট[্]হর্ণ পরিবার ছুই উপজাতির মধ্যে বিভক: (১) বুথ (Booth), (২) বেট স (Bates)! ইংলুডের মধ্যে অন্যন পাঁচণত শট হর্ণ-উৎপাদক আছেন। তাঁহাদের সকলের তালিকা ষত্র কুত্র পুস্তকে দেওরা অসম্ভব। স্থতরাং নিম্নলিখিত প্রসিদ্ধ উৎপাদক-গণের নাম ও তালিকা দিলেই বোধ হয় যথেষ্ট হইবে:--- प्रशः ভারত-नशां (नां कि शांम कात्म), C. R. W. Adeane, Babraham, Cambridge (F. N. Webb, Agent); Lord Henry Bentinck, near Kirkby, Lonsdale (F. Panchard, Agent); Henry Abbot, Thuxton, Norfolk; Albert Agricultural College. Glasnevin Co., Dublin; Alfred Ashworth Horsley Hall. Gresford; E Baillie Filleigh, Devon; Lawrence J. Baker, Ottershaw Park, Chertsey, Surrey; Arthur Britten, Great Billing, Northampton; F. E. C. Dobson, Dromonby House, Stocksley, Yorkshire; Lord Carew, Castleboor, Enniscorthy Co., Wexford: Earl of Dartrey, Dartrey Co., Monaghan: Richard Davidson Swinnie, Jedburgh; John Henry Dean, Health House, Norton; Lincoln Alex Crombie, Woodend, New Machar, Aberdeenshire; Earl of Crewe, Crewe Hall, Crewe; Duke of Northemberland, Alnwick Castle; Earl of Northbrook, Stratton Park, Micheldever Station; Dr Vaughan Harley, Walton Hall, Bletchley, Bucks; Goorge Gerrard Offerton, Hindlip, Worcester; Sidney

Hill, Langford House, Langford, Somerset; C. A. Scott Murray. The Manor House, Hambleden, Henley-on-Thames; Sanders Spencer, Holywell Manor, St. Ives, Hunts: J. D. Willis Bampton Manor, Cordford, St. Mary, Wilts; F. J. Stewart, White Hall Farm, Brigstock, Tharpston; Jeremiah Colman, Gatton Park, Reigate, Surrey; John Cooper, East Haddon, Northampton; Richard Barter, St. Ann's Hill, Cork; Albert Brassey M. P., Heythrop Park, Chipping, Norton.

- কে ডেক্সিটার শটহর্ণ পরিবার:—এই পরিবারের মধ্যে ডেক্সিটার শটহর্ণ নামক আর একটি উপ-পরিবার আছে। এই জাতীর গোজাতি প্রচুর হুম্মবতী: এবং প্রথমে মেজব বাটন ডেক্সিটার বক্নার গত্তে শটহর্ণ যাঁড় সংযোগে বহুকালবাাপী নির্বাচনবিধির শারা এই নব-পরিবার উংপাদন করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। এই উপ-পরিবার এখন একটি স্বতম্ম শটহর্ণ গাভীর বংশ বলিয়া প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। শটহর্ণ জাতির মধ্যে (প) লিন্কন্-বেট শটহর্ণ পরিবার:—লিন্কন্ বেট শটহর্ণ জাতীয় সঙ্কর উপপরিবাবটাও ডেক্সিটার-শটহর্ণ উপ-পরিবারের মন্ত প্রসিদ্ধ। Honorable L. W. Rothschild, Tring Park, Herts, এই জাতির একজন প্রধান উৎপাদক। প্রত্যেক বংসর April মাদে লিন্কনের মেলাফা ইহারা বছল পরিমাণে প্রদর্শন ও বিক্রের জন্ত আসিয়া থাকে।
- ং কেরি-ভেক্সিটার শরিবার :—কেরি ও ভেক্সিটার গাভীমা
 ক্রেনেগে এক প্রকার কেরি-ভেক্সিটার নামক সভর গোজাতি উৎপাদিত
 ক্রিরাছে। ইহারা প্রচুর স্থাবতী হইয়া বাকে। Mr. James

Robertson of: Lamancha, Malahide Co., Dublin এবং Mr. Martin John Sutton, Kidmore-Grange, Reading England এই জাতীয় গোবংশের প্রসিদ্ধ উৎপাদক।

- ত। শাদের পরিবাব:—বিলাতী জাতির মধ্যে Sussex বংশীর দক্ষিণদেশনিবাদী একপ্রকার গোবংশ দৃষ্ট হয়। ইহারা ছ্গাবতী নয়। Mr. W. S. Forster of Gore Court, Maidstone এই বংশের প্রাদিক উৎপাদক। ইনি উত্তর-ডিভনবংশীয় গোজাতির একজন খ্যাতনামা উৎপাদক।
- 8। পোল্ড হেরিকোর্ড পরিবার:—ইংলণ্ডের মধাদেশে (counties) এক জাতীয় শিঙ বিহান গোবংশ দেখিতে পাওয়া যায়। ইহাদিগকে পোন্ডাহেরিফোর্ড (Polled Hereford) বলিয়া থাকে। ইহারা তেমন ছগ্ধবতী নহে. किन्तु कमात्रित ছবিকার জন্ম ইহাদিগকে বছল उर्भावन कता हरेबा थारक। जिन्ती, छेडेनियम अब (हाउँकार्र्डब সমারদেট কোর্ট নিবাসী), বেনজামিন টমকিন্স (Benjamin Tomkins) এই জাতীয় পোবংশের প্রধান উন্নতিসাধক এবং উৎপাদক ছিলেন। এই জাতীয় গোবংশের উৎপত্তি সম্বন্ধে বহুবিধ মতভেদ দৃষ্ট হয় : কিন্ধ ঐতিহাসিক গবেষণা এবং অমুসদ্ধানের দারা ইহা প্রতিষ্ঠিত হইরাছে যে, এই গোবংশ অপ্তাদশ শতাব্দীর শেষভাগে এবং উনবিংশ শতাব্যার প্রারম্ভকালে ডিভন্বংশীয় ঘাঁড়ের ঔরসে ওয়েলস্ দেশের : বন্য কেতৰাভার সংযোগে উৎপাধিত হুইয়াছে। এই জাতীয় বহুসংখ্যক ला अखन-जारमित्रका आजल मीछ हदेश थूबरे वर्षिछ हरेस्छह अवः जाहारमञ्ज मध्यक्षम ४०० ১৯०२ सारम देनियनी श्रामनासर्वेखः শিকাৰো নগৰে "National Polled Hereford Breeder's Association" নীমক এক সমিতি প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।
 - ় 🕬 ডিজন্ : পরিবার :---শন্দোক্ : এবং: হারকোর্ড**্রাউন্টিরনের**

ষধ্যবর্তী ডিভন প্রদেশে এক অতি স্থন্য লালরভের মধ্যবিৎ আক্রতির পো-পরিবার দৃষ্ট হর। ইংলগুবাদীগণ ইহাদিগকে ডিভন বা "Rubies of the West" নামে আদর করিয়া ডাকিয়া থাকে। ইহারা অভ্যন্ত শান্ত এবং শীরকভাববিশিষ্ট এবং গাভীগণ প্রচুর চন্দ্রবতী হুইয়া থাকে। ডিভন গোবংশ চুই পরিবারে বিজক্ত:-->। উত্তর, এবং २। मिन्ना वार्गाहेशन (Barnstaple), हेर्ड नीम (Totnes) खङ्खि द्यातम रुक्षिकद अर्मण डेस्टर-फिल्न-वर्ग्य व्यक्ति गरकतन वा ৰুমান্থাৰ বাৰিয়া খ্যাত। উইলিয়ম ভেতী (William Davy of Flitton), ত্ৰিছাৰ (Holkham in Norfolk), क्य हेर्नाइ (George Turner of Barton), है, अन्, मर्गान (T. S. Morgan of Whimple. Exeter) এই खाठीय शा-वश्यत প্রধান উৎপাদক এবং উন্নতি বিধাতা বলিরা ডিভনদেশের ইতিহাসে বিখ্যাত আছেন। নিয়লিখিত ক্লবৰগণ বৰ্ত্তমানকালে এই গোবংলের প্রাদিদ্ধ উৎপাদক বলিয়া ক্লবক-সমাকে পরিচিত আছেন: —সম্রাট বরং: A. C. Skinner Pound Bishop's Lydeard, Taunton; J Wood Bouton, Totner, Devon: I. S. Wroth, Aveton, Gifford, King's Bridge; W. S. Forster, Gore Court, Maidstone, John Lawrence, Rev Richard Polwheber, Richard Parkinson, Francis Quartly T. S. Morgan, Whimple House Exeter, Devon প্রভতিগণ এই জাতীয় গোবংশের প্রাচীন উৎপাদক বলিয়া পরিচিত ছিলেন এবং নির্বাচন বিধির ছারা ইছারা এই বংশের অলেববিধ উন্নতি সামন করিয়াছেন: তন্মধ্যে প্রেট চ্যাম্সন (Great Champson in Molland in north Devon) निरामी Francis Quartly: और ৰংশ সৰুত্ৰে সেইস্কুপ উন্নতি সাধিত করেন, যাহা Cullingগণ শটহর্ণ কলে ্সৰকে এবং হেরিফোর্ড-বংশ সম্বনে টমকিন্স গণ ইতিপূর্বে সাধিত করিছা-

ছিলেন। এই বংশের স্মাদিম উৎপত্তি এই চ্যামসন-পাল (herd) চ্ছতে হইয়াছে। তিনি স্বংশে সংক্রোৎপাদন (in breeding) দ্বারা এই জাতির উন্নতিগাধন করিয়াছেন অর্থাৎ নিজ পালের যাঁড়ের এবং স্থানীর উद्यम (नानिष्क्रत (strain) व्यर्थार छग्नवजीत मानक वकनात मःराम স্থানায় হীনাবন্থাপ্রাপ্ত ডিভনগণের বিশেষ উন্নতিসাধন করিতে সমর্থ হুইয়াছিলেন। এই উন্নতিসাধন করিতে তাঁহার তিল বংসর কাল অর্থাৎ ১৭৯৩ হইতে ১৮২৩ সাল পর্যান্ত সময় অভিবাহিত হয়। ইহারা সাধারণতঃ তত বেশী ১৯ঘবতী না হইলেও কোন কোন খোঁয়াডের গাড়ী প্রচর হয়বতী হইয়া থাকে। বর্তমান শতান্দীতে উপরোক্ত উত্তর-ডিভন পরিবারের উৎপাদক ভিন্ন নিম্নলিখিত দক্ষিণ-ডিভন পরিবারের উংপাদকগুলির নামোল্লেখ বিশেষ প্রয়োজন:- সমাট প্রুম কর্জ (Royal Farms, Windsor); W. M. Brent, Clampit, Callington, Cornwall; B. J. Bucknell, Holcombe, Barton, Wellington, Somorset: Earl Cawdor, Stackpole Courts Pembroke; W. J. Chick, Stratton, Dorchester: Lord Clinton, Heanton, Satch-ville, Beaford, North Dovon; William Kidner, Kingston, Taunton; W. M. Lethbridge, Wood, Okehampton, Devon; H. C. Hancock, Milverton Court, Taunton; George Ridson, Dunster, Somerset; E. C. Norrish, Gays Copplestone, Prixford, Barnstaple, N. Devon; B. C. Shepherd, Knowle Hall, Bridgwater; Hon'ble Mrs. Tremayne, Sydemham, Lew Devon.

ইউরাই বলেন যে দক্ষিণ-ডিজন পরিবারটি ইংলজের দক্ষিণ উপ-কুলোবর্তী প্রদেশসমূহজাত এবং ওরাইট্ বীপজাত গাজীর পর্জে রহানি বাজের সংবোগে এই জাজি উৎপন্ন হইরাছে। কিছ পানার বিবেচনা হয় যে, এই মতটি সমীচীন নহে; যেহেতু ঐতিশাসিক অন্ধুসন্ধানে অবগত হত্ত্ব্যা গিয়াছে যে এই পরিবারটি বহু শতাব্দীর প্রাচীন। এই গোবংশ অত্রদেশে বহুকাল ইহতে উৎপাদিত হত্ত্ব্যা থাকে এবং ইহাদের গুল্পদায়িকা শক্তি ও মাংসর্ভ্রন্তিণ একসঙ্গে মিলিত থাকায় বিলাতী গোয়াল। এবং কসাইগণ উভয়েই ইহাদিগকে বহুলসংখ্যায় দক্ষিণ আফ্রিকা, আমেবিকা, ব্রেজিল, উত্তব্ব আমেবিকা, এবং আফ্রেলিয়া দেশে চালান দিয়া থাকেন। ১৯০০ সালে Mr. Alfred Michelmore তাঁহার প্রকাশিত "Live Stock Journal Almanac" নামক পৃস্তকে ইহাদেব বিষয়ে সবিশেষ আলোচনা করিরাছেন। নিম্নালিখিত ক্রবকগণ দক্ষিণ-ডিভনবংশের প্রসিদ্ধ উৎপাদক বলিয়া প্রিতিত:—

Butland Bros., Leigham, Plympton; R. E. Cocks, Ranleigh, Plymouth; Edward Cornish, Charleton, Kingsbridge; W. Merry, Great Woodford, Plympton; John Wood, Burton, Totnes; John Sparrow Worth, Chembe, Kingsbridge; J. M. Peeke Hernaford, Totnes.

ভ। সাসেক্ত্ পরিবার :— 'Sussex Breed) এই জাতি বিশেষ উল্লেখন যোগা, বেহেতু মিং লোব মতে (Mr. Low 1845.) ইহাদেব হাতেই প্রেন্স্ (Wales) এবং পশ্চিম-হাইলাাও (West-Highland) গোজাতি উত্ত হইয়াছে। ইহারা কসায়ের ছুরিকাব বিশেষ উপযোগী। Edward Cane of Berwick-Court এই জাতিব বিশেষ উর্লিভিবিধান করেন। এই জাতির উর্লিভিবিধানকয়ে একটি সমিতি আছে এবং Sussex-Herd Book নামক পৃত্তকে এই জাতির প্রাসিদ্ধ বাঁড় এবং গাতীর তালিকা দেখিতে পাওলা যায়।

ি ৭ ৷ পশ্চিম হাইলাাও পরিবার: --এই জাতীয় গোজাতি আদিম

ব্দ্র এবং পার্মজ্য স্কট লগু দেশীয় গোলাতির বংশাবলী। ভারতেও এইরূপ গোবংশ দেখিতে পাওয়া যায়। ওয়েল স (Wales) দেশেও এইরাপ উনাহরণ বিরল নহে। স্কট্লও দেশের পাশ্চাত্য দ্বীপপ্তম. আর্গাইলশিয়ার অস্তঃ এবং বহিঃ হেব্রিডিছ (Inner and Outer Hebrides) এবং পার্থবর্ত্তী জেলা (counties) সমূহে এই গোলাতির ক্ষাভ্ৰমি এবং লালার স্থান। ইহাদিগকে "কাইলো" নামেও অভিহিত করা হইয়া থাকে। Donald Steward of Lus Centire near Perthshire Mackinnon of Corry, Duke of Sutherland. Earl of Seafield. Duke of Atholl in Perth এই জাতির দ্বিশেষ উন্নতি বিধান করেন। এই জাতীয় গো-পরিবার মতান্ত कट्टेम्डिक (hardiest of all British breeds, and from an artistic point the most picturesque) এবং সুন্তা (John Robertson Colman) কোৰ ম্যান "Cattle of Great Britain" নামক পুস্তকে এই জাতি সম্বন্ধে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। ইহার। বেশ দ্বপ্পবতা এবং South Wales Black Cattle জাতির সহিত বিশেষ সাদৃত্য রক্ষা করে। উত্তর ওয়েণ স্ দেশীয় কাল গোপরিবার পেছে কি পরিবারের অপেকা নিরুষ্ট হইলেও তাহাদিগের অপেকা স্বর ত্র্যবতী নহে। গ্লামরগান (Glamorgan) নামক এক প্রকার Black-Welsh এবং Red Devons ও Hereford পরিবারকরের मधावर्डी आत्र এक উপ-পরিবার मृष्टे হর। ইহারা বেশ হন্মবতী। কিন্ত চাবে অমনোযোগিতা প্রযুক্ত ইহারা ক্রমশই অন্তহিত (extinct) হুইডেছে। ইহা ছাড়া শেট্লাও এবং অর্কনি দ্বীপপুঞ্জে স্বতন্ত্র স্থানীর গোৰাতি আছে।

৮। রেড পোল্ড পরিবার:—শিঙ্বিহীন গাভীর মধ্যে "Red-Polled" পরিবারের কথা উল্লেখ করা বিশেষ আয়োজন। ইহাদের

मरथा अधिकारमहे त्यापद्या विनन्न अभिक्ष। हेराना आवर्ड माना तरहन হট্যা থাকে। কিন্তু কয়েক বংসর হটন বসন্তরোগে সমরকোর্ড পার্ক চিক্লিংহল এবং উড ব্যাস্ট-উইকের (নরফোক) পাল সমূহ অনেক নষ্ট হইলে শটহর্ণ-শোণিত এই পরিবার মধ্যে প্রবাহিত করিয়া বংশটিকে অন্তর্গান হইতে বারিত করা হইয়াছে। ইহানের দেহের বর্ণ কাল, ৰাণ এবং নাদা হইয়া থাকে। Robert Soft of Throston Hall; Hon'ble W. T. D. Smith M. P. Great. Thurlow, Suffolk: I. M. Webb, 7 Prince's Street, Hanover Square W., London; Thomas Brown and Sons, Marparall, Norfolk: G. H. Parsons, Alsager, Cheshire: John Hammond Bale; Alfred J. Smith, Rendlesham, Suffolk; East Dorham, Norfolk; Lionel W. Rothschild. Tring Park, Herts; Henry Rt. Hon. Earl of Radnor Lonford Castle, Salisbury and Euren, as for বাক্রিগণ এই জ্বাতির প্রসিদ্ধ উৎপাদক বলিয়া পরিচিত। এই কাতির উন্নতিবিকাশকরে ১৮৮৮ নাবে "The Red Polled Society of Great Britain and Ireland" প্রতিষ্ঠিত হয়। এই সমিতি সম্বন্ধে পরবর্ত্তী ভালিক। দেখিলেট সকল নিদর্শন পাওৱা বাউবে।

ন। এবার্ডীন্-একাদ পরিবার:—ইহারা প্রারই লিঙ্ বিহীন হইরা থাকে এবং কট ল্যাঞ্চ প্রদেশের মধ্যে একটি প্রদিদ্ধ ছবলাজী পোবংশ বলিয়া বছকালাবিধি পরিচিত। এবার্ডীন, কোরকার এবং নিকটক কাউন্টি দন্তে এই জাতির জন্মজান। বহুকালের নির্কাচন এবং স্বগণ উংপাদনের (in-and-in breeding) ফলে আজ কাল আম্বা এই অত্যংক্ত ছব্বতী গোবংশ পাইতে সমর্থ হইরাছি। "Banff Journal," "Spalding Club Antiquities of the Shires of

Aberdeen and Banff," Transactions of the Highland Society, Vol. XVIII, প্রভৃতি পুরুক পাঠে আমরা এই কাভির विषय সমাক অবগত इहेट अपर्ध इट्रेग्नाहि। हेरामिश्राक जानव করিয়া কট ল্যাপ্রবাসীগণ হাম্লিদ (humlies) এবং ডড়ী (doddies) বলিয়া থাকে। রেড-পোল্ড নবজাক বা পোল্ড-সাফোকের শোণিড ইহাদিগের শরীরে প্রবাহিত আছে বণিয়া অনেক প্রাচীন অধ্যাপক এবং-ঐতিহাসিকগণ অনুমান করেন। কিন্তু বর্তমান পোল্ড-এবার্ডীন-একস ্য বক্তকালের অধ্যবসারের ফল, তাহা স্বীকার করিতেই হইবে। ইহাদের গাত্রের রঙ কাল, লাল এবং হরিদ্রাভ (yellow) হইরা থাকে। बहामन এবং উনবিংশ শতাব্দীতে Hugh Watson of Keillor (Forfarshire) এবং উনবিংশ শতাশীতে W. M'Combie (Tillyfour) এবং বৰ্তমান কালে Clement Stephenson, (Newcastle); George Wilken, (Waterside of Forbes); Sir W. G. Gordon Cumming, Bart, of Altyre, and Earl of Strathmore. (Glamis Castle) এই স্বাতির বিশেষ উন্নতিদাধন করিয়াছেন এবং খানেক প্রাসিদ্ধ প্রাসিদ্ধ বিশাতী প্রদর্শনীতে উপহার পাইরাছেন। ওয়াট্যন এবং মাাক-কুমী এই বংশের কুলীং অথবা र्थ वा (वर्षे म हिर्मिन विमित्मिक व्यक्तारिक इन्न ना। Clement Stephenson, Balliol College Farm, Long Benton, Vorthumberland, এই ৰাজীৰ গাভীৰ এক ৰন প্ৰধান উৎপাদক। এই গোজাতির উন্নতি-বিধারিনী একটা স্বিতিও আছে ৷ তাহার विवयं शाबः नविरमयः वना इहेरवः। इधनाविकाः धनिः हेरारमय जानम जीक ना रहेरान सम नाह ; किन्न हेरात्रा कमायत क्रुतिका-त्रश्चानत जन ममश्रिक छेशायां ये विवाहे हेहारात थठ जानत ।

W. K. Macdonald, Windmill House, Abroath,

Scotland at Ballintinne, near Blairgorie; James Beddie Banks, Strichen, Aberdeenshire: Garden A. Duff, Hatton Castle, Hatton, Turriff, Aberdeenshire, Sir George Macpherson Grant, Bart, of Ballindalloch, Banffshire: Patrick Chalmers of Aldbar, Aldbar Castle, Brechin, Forfarshire; Col. George Smith Grant. Minmore, Glenlivet, Ballindalloch, Branffshire: Earl of Strathmore, Glamis Castle, Forfarshire, George J. Walker, Portlethen, Aberdeen, William Wilson Covnachie Gartly, Aberbeenshire; Charles Calder, Woodhill, Newcastle-on-Tyne, Sir George A. Cooper Bart, Hursley Park, Hursley, Hants, George Druinmond, Swaylands, Penshurst, Kent; W. B. Greenfield, Havnes Park, Bedford, T. Fielding Johnson, Goscote Hall, Leicester, Col. W. Neville, Tufnell, Langleys Great Waltham Chelmsford, Essex; Thomas Wotton, Tile Lodge, Sturry, Canterbury; Captain F. Cookson, Stondon, Andover, প্রভৃতি এই গোবংশের প্রাদিদ্ধ উৎপাদক ব্যালয়া বিলাতি যুক্তরাজ্যে বিশেষ প্রসিদ্ধ।

১০। গোলোরে পরিবার:—এবার্ডান-এঞ্চাদের দমজাতি না গইলেও গেলোরে (Galloway) এবং পশ্চিম হাইলাও পরিবারণৰ হহাদের বিশেষ দম্পকিত পরিবার বলিয়া দকল উৎপাদকের রিছাদ। দকলেই মনে করেন যে, এই জাতিক্রের উৎপত্তি এক পিতা নাতা হইতে হইয়াছে (descended from the same original stock)। গ্যালোরের স্থানীয় ভদ্লোকগ্র

বিগত অষ্টাদল এবং উনবিংশ শতান্ধীতে এই জাতির স্বিশেষ উন্নতি माधन करतन। তাহাদের মধ্যে Earl of Selkirk, Lord Daer, Earl of Galloway, Murgays, Herons, Gordons, Metlands, Maxwells, Cathcarts, Hawthorns, Stewarts, 93. Macdowalls (तन नाम वित्नव উল্লেখযোগ্য। ইছাবা বছ জন্মদারিকা নতে সেই জন্ম diary farmerগণ এই জাতীয় গাভীগণকে বড পদল করেন না। এই জাতির উন্নতি-বিধায়িনী এক স্মিতি আছে। The Very Rev. Dr. John Gillespie Monswald Manse, Dumfries shire ঐ সমিতির সম্পাদক। তাঁহার নামে প্র লিখিলে এই গোজাতি সম্বন্ধে যাবতীয় জ্ঞাতবা বিষয় অবগত হুইতে পাৰা যাইবে। এই সকল বিলাতী সমিতিসমূহ বিদেশী লোকেব পতাদি পাইলেই লেপককে উত্তর দেন এবং সকল জ্ঞাতব্য বিষয় ও প্রস্তকাদি দানে জ্ঞানবিস্থাব কবিতে ত্রুটী কবেন না। দেশেব ক্লয়ি-বিভাগের বুলেটান আদি আমাদের ক্লয়ক সম্প্রদায়ের মধ্যে এইরূপ অবৈত্রনিক বিত্রিত ছওয়া কর্ত্তবা। উপরোক্ত সম্পাদক মহাশয় "গালোয়ে "-বংশ সম্বন্ধে এক গবেষণাপূৰ্ণ প্ৰবন্ধ বিগত ১৮৭৮ সালে 'Transactions of the Highland and Agricultural Society র' পত্রিকার লিথিয়াছেন; ঐতিহাসিক জ্ঞান-লিন্দু পাঠকেব উচা পাঠ করা কর্ত্তরা। ঐ সমিতি একটা Herd-Book সময়ে সময়ে প্রকাশ করিয়া থাকেন: তাহাতে স্থানীয় ক্রযক এবং উৎপাদকগণের বিশেষ লাভ চইয়া থাকে।

Earl of Antrim, Antrim; Sir R. Jardine, Bart, Castle-milk, Lockerbie; J. Murray, Kennedy of Knocknalling Dairy, Galloway; Wm. M. Macconnell, (Glasnick) Kirkcowan; R. J. Shennan Balig, Kirkudbright; James

Wilson, Tundergarth Mains, Lockerbie প্রভৃত্তি এই স্থাতির প্রসিদ্ধ উংপাদক।

এই বংশের মধ্যে "সাদা-পেটা" (belted) গুলি দেখিতে বড়ই স্থানন এবং নির্মাচন-বিধির ঘারার ইহাদের এমন উরতি সাধিত চইরাছে, বে ইহাদের মধ্যে অনেকেই দ্রোণছ্বা হওয়ার এই জাতির আনর ক্রমণঃ বিলাতি প্রদর্শনী সমূহে বাড়িতেছে। The Hon'ble Francis Bowes, Lyon Ridley Hall, Bardon Mill, R.S.O., Northumberland; Percy O. Laidlaw, Stonecroft, Fourstones, S. O., Northumberland; George G. B. Sproat, Boreland of Anworth, Gatehouse of Fleet; Wm. Hyslop Knockycoid, Barrhill, S. Ayrshire; Charles A. Phillips, Dildawn Castle, Douglas; R. Graham, Anchengassel, Twynholm, R. S. O.; Alexander Gardiner Kilbron, Gatehouse প্রভৃতি এই পরিবারের অন্তর্গত "সাদাপেটা"গণের প্রদিদ্ধ উৎপাদক বলিয়া পরিচিত।

১)। আর্শিরার গান্তী-পরিবার:—এই গোবংশ কানিংহাাম্
প্রদেশ বা ক্যারিক্, কাইল্ এবং ক্যানিংহাাম্ জেলা সমূহে অভি
প্রাচীন কাল হইতে অতি বন্ধের সহিত উংপাদিত হইরা থাকে অর্থাৎ
আর্তিন্ (Irvine) নদীর উত্তরহিত প্রদেশ সমূহে বহুল জ্বিরার
থাকে। বিলাতী গো-পরিবারের মধ্যে ইহারা বস্তুতই জ্যোণছ্বা এবং
নন্দিনী ও প্রতির সমকক্ষতা করিতে সক্ষম; কেবল জ্বাসির চ্যানেল্
খ্বীপপ্ত পরিবার এবং আয়রল্যান্ডের কেরীগণ ইহাদের পাশাপার্থি
প্রাড়াইতে সমর্থ। বট্ল্যান্ডের ভদ্রলোক এবং গৃহস্থ পরিবারে ইহারাই
প্রস্তুত আদরের "গোয়ালার গাই"। ইহাদের দেশে এই জ্বাতির বে
ক্রান, তাহার অন্থরণ "কেরীগণ" আরহল্যান্ডে নিঃশ্ব ক্র্যক্র-গৃত্তে

"গরিবের গাই " বলিরা সেই সন্মান রক্ষা করিতেছে। স্কট্ল্যাও দেশে বিগত ৫০ বংশরের মধ্যে ইহাদের সমধিক ছন্ধদারিকা প্রকৃতিটি ক্রিড হওরার আদর এত বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইরাছে। কোল্ম্যানের "Cattle of Great Britain নামক পৃস্তকে (Vol I of The Canadian Ayrshire Herd Book); Transactions of the Highland Society of Great Britain, 1876, Low's Domesticated Animals, প্রভৃতি পৃস্তকে এই গো-পরিবারের সম্বন্ধে সবিশেষ গবেষণাপূর্ণ আলোচনা দৃষ্ট হর। বর্জমান " আর্লিয়ার" পরিবারটি বিধিবদ্ধ বৈজ্ঞানিক নির্বাচনে বে গঠিত হইরাছে, তাহা উৎপাদকমাত্রই স্বীকার করিতে বাব্য হইবেন। স্কচ্কবি উইল্কিন্সন্ এই গো-বংশ শব্দ্ধে এক মনোহর ও স্কর্মর কবিতা লিখিরা এই বংশকে অমরত্ব প্রদান করিয়া গিলাছেন। ভাহা এই:—

"She's long in the face, she's fine in her horn, She'll quickly get fat without cake or corn, She's clear in her jaws, and full in her chine, She's heavy in flank, and wide in her loin.

She's light in her neck, and small in her tail, She's wide in her breast and good at the pail, She's fine in her bone, and silky of skin, She's a grazier without, and a butcher's within."

ইহাদের প্রকৃতি ধীর ও নম্র, এবং আকার ও গঠন মেরেলী হইরা থাকে। পূর্ণবয়কা গাভী ৮০০ হইতে ১০০০ পাউও ওজনে হয়। তৃণবিহীন দেশেও ইহারা সামাজ খাস থাইরা বেশ হাইপুই হইতে দেখা গিয়াছে। ইহাদের কপান চৌড়া (broad and clearly defined), শিঙ্ উর্জগানী

(wide set on and inclined upward), মুথ মাঝারি (of medium length, slightly dished, clean cut, shewing veins), নাসারন্ধ বড় (large), মুখড় বা muzzle broad and strong, চোয়াল বা jaws wide at the base and strong, চকু (eyes) পূৰ্ণ এবং জ্যোতিঃবাঞ্চক (full and bright), বক বা chest low, deep and full between and back of forelegs, M An এবং ছোট (legs straight and short, well apart, shanks fine and smooth, joints firm: feet medium size, round, solid and deep), লোমরাজি বা Escutcheon distinctly defined. spreading over thighs and extending well upward, 5মনাড়ী (mammary veins, large, long, tortuous, branching and entering large orifice) বক্ত, লম্বা ও বড় : বাট ধারাণ, নৰ্তমান কলার স্থায় মোটা এবং দোছলামান (teats, evenly placed distance apart from side to side equal to half the breadth of under thickness in keeping with length, hanging perpendicular and slightly tapering and free flow of milk when pressed), পালাম বছ এবং প্রশাস (udder wide, deep, but not pendulous nor fleshy, firmly attached to the body, extending well up behind and far forward, quarters even; sole nearly level and not excessively indented between teats; udder veins well developed and plainly visible), চুল কোমল এবং চক্চকে (hair, soft and fine), রঙ লাল (colour, red of any shade. brown or those with white mahoghany and white, black and white) হইয়া থাকে। এই জাতীয় যাঁড়গুলি ১২০০ হইতে

১৫০০ বা ১৮০০ পাউও ওজনের হইরা থাকে। ইহারা কম খাইরা त्वभी उद्म (Fal (She yields a greater return of dairy produce on poor land and inferior food than any other cow. In this respect she comes very close to the Kerry. She is unmistakably the most typical example of a milking cow in the British Isles. She is essentially a cheese dairy cow on account of the comparatively small-sized butter globules of the milk. The Channel Islands breeds supply, on the other hand, the true butter dairy cows owing to the large-sized globules which the specially rich and highly-coloured cream contains. In the same way the milking Short-horn is the typical cow for town dairying, for the supply of large quantities of milk of moderate quality for immediate domestic use.")

Thomas C. Lindsay, Aitkenbrae, Monkton; John Drennan, Hillhouse, Galston; John Cochrane, Nethercraig, Kilmarnock; Alex Cross of Knockdon, Maybone. William Murray, Arrowmoss, Wigtown; R. Mckinlay, Hillhouse, Lanark; Andrew Mitchell Barcheskie, Kirkcudbright; J. R. W. Wallace, Auchenbrack, Thornhill, Dumfries shire; R. Osborne, Morton Mains, Thornhill, Dumfries shire, প্রভৃতিগণ এই গোজাতির বিশিষ্ট উৎপাদক বলিয়া ইউ লাখিও দেশে পরিচিত এবং প্রশিষ্ক।

व्यामि शृर्वहे विवाहि व এই পৰিবাৰের अवस्थान क्राइड मनी

এবং আইরিল্ সম্ত্রের কথাবর্তী তুভাগে এবং স্থানীর গাভীর সভিড় ইংলও, চ্যানেল্যীপ পুঞ্চ এবং হল্যাও দেশের বাঁড়ের সংবাগে এই গোলাভি উৎপাদিত হইরাছে। অধ্যাপক্ আনতোর্ ইহাদের সম্বন্ধ অতি স্থান প্রবন্ধ নিধিরাছেন। ইহারা সামাল চারণ-ভূমি হইছে বাছ সংগ্রহ করিরা অধিক পরিমাণ হৃত্ত দের এবং এক কেরী-পরিবারই ইহাদের সমকক হইতে পারে; তাহা পুর্বের বিলিরাছি।

"This is a characteristic of the Ayshire that she carries weight only, and lives only to serve dairy interests with the utmost economy in the utilization of food. They are of medium size among dairy cattle." এই গো-পরিবারের রক্ষণশীল ও উন্নতিবৰ্দ্ধিনী এক সমিতি আছে; তাহার সবিশেষ উল্লেখ পরে করা হইবে।

১২। কেরী-পরিবার:—ইহারা আররল্যাণ্ড দেশের গরিব রুষকের গাভী। এই পরিবারের মধ্যে পুনন্চ ছই উপ-পরিবার আছে। (১) কেরী; (২) ভেক্সিটাব। আমাদিগের সম্রাট কেরী ভেক্সিটার গাভীর বড়ই পক্ষপাতী। এই জাতীর গাই গুরুত নি:ম্ব "গোরালার গাই;" যেমন "দেশী গাই" আমাদের বুজুতে নি:ম্ব "গোরালার গাই;" যেমন "দেশী গাই" আমাদের আররল্যাণ্ড্ দেশে বড়ুই অধিক। নি:ম্ব আইরিশগণের ইহারা "কপিলা" বলিলেও অত্যুক্তি হর না। ইহারা ক্ম থার, আকাদের কুজ, বর্ণ কাল এবং প্রচুর ছগ্ধ দের। কেরীবংশীরগণ হাঝা, মুন্দর, লখা লখা অকপ্রেক্তাক্রিলিই প্ত হইরা থাকে। প্রস্তুক্ত ইইতে অংশ উদ্ধৃত করিলে বেশ জ্ঞান হয়:—"The true "Kerry" thorough-bred of Irish cattle is a light, neat, active animal with fine and rather long limbs, narrow rump,

fine small head, lively projecting eyes, full of fire and animation with a fine (waxy vellow) or whitecocked horn tipped with black, and in colour either black or red." His Majesty the King, B. D. Bertonado, Cowbridge House, Malmsbury, Wilts; Martin J. Sutton, Holme Park, Sonning, Berks; William Vickary. The Knoll, Newton Abbot, S. Devon; G. I. Boyle Chetwynd, Wyndthorpe, Doncaster, Yorks; Counetess de la Warr, Old Lodge, Melley, Sussex; H. M. Gibbs, Barrow Court, Bristol, Somerset; H. Meuric Lloyd, Delfryn, Llanwrda S. Wales; James Robertson (Robertson and sons) La mancha, Malahide, Dublin: W. Stallard St. John House. St. John, Worcester; Col. Victor, W. B. Van de Wever, New Lodge, Windsor Forest এई জাতীর গো-উৎপাদক বলিরা প্রসিদ্ধ। আমাদের দেশের কোন লোক ইচ্ছা করিলে তাঁহাদের পত্র লিখিয়া এদেশে কেরী গাভী বা ৰাঁড জানাইবার বাবস্থা করিতে পারেন। এই জাতীর বাঁড়গুলি ১০০০ এবং গাড়ীগুলি ৯০০ পাউন্ত ওজনে হইয়া থাকে।

১০। ইউরোপীর গো-পরিবার:—ইউরোপীর মহাপ্রদেশে (European Continent) করেক প্রকার প্রচুর হয়বতী গোজাতি লৃষ্ট হয়। তয়বো (Brown Swiss), ডচ্-বেন্টেড্ (Dutchbelted), রেড্ ড্যানিশ্ (Red-Danish), ও হল্ ইান্-ফ্রিজিয়ান্ (Holstein-Friesian) বংশীরগণ বিশেষ উল্লেখের যোগ্য। ফ্রানী প্রদেশ তেমন কোন উত্তম হয়বতী পরিবারের গোজাতির জল্প প্রসিদ্ধানা হইলেও, ঐ প্রদেশের উত্তর-পশ্চিমান্সলের পার্কতা

প্রদেশে এক প্রকার ক্ষুদ্র স্থানর ছগ্ধবতী গো-পরিবার দৃষ্ট হয়। ইহারা নম্র, ধীর, দেখিতে স্থানর, এবং ইহাদের শিরার চ্যানেল্ এবং নরম্যাণ্ডির গোজাতির শোণিত যে প্রবাহিত আছে, সে বিষয়ে অণুমাত্র সন্দেহ নাই। ইহারাই এই পুত্তকের অপরস্থানে কথিত '' রুটু নি '' পরিবার।

নীনামার প্রদেশে "ওল্ডেন্বর্গ" ও রেড্-ডানিশ্ প্রভৃতি নামক ২০ প্রকাবের অতি উত্তম দ্রোণ্ডাথা গো-পরিবার দৃষ্ট হয়। ইহাদের শিরার বিলাতি ও করাসী-শোণিত প্রবাহিত আছে বলিয়া পাশ্চাতা পণ্ডিতগণ উল্লেখ করিয়া থাকেন। দিনামার দেশ ইউরোপণণ্ডেব মধ্যে প্রকৃতই পাশ্চাতা প্রদেশেব "গো-গৃহ"। বিলাত, স্কট্লাণ্ড, ফ্রান্স প্রভৃতি দেশে এইখান হইতেই মাধ্যম, ডিম্ব, পনীর, মাংস আদি মন্তুব্যেব খাদ্যোপ্যোগী সামগ্রী প্রভাহ রপ্তানি হইয়া থাকে।

মুইজারলাও দেশেব পার্কারাভূমি প্রচুর থাকার সেথানে বিভ্ত চাবণ-ক্ষেত্রও আছে। এই জনা এইথানে কয়েকপ্রকার চয়দারী গোপরিবার দৃষ্ট হয়। "ব্রাউন স্কুইস্," পরিবার ইহানের মধ্যে বিশিষ্ট একটি ছোণ্ডবা গোজাতি। সুইজরলাত্তের অন্তর্গত "স্কুইজ" (Schwy) নামক কাণ্টন্ বা জেলার নামে এই জাতির নাম প্রদত্ত ইয়ছে। এই জেলাই ইহানের জন্মভূমি। ইহানের দেহ বেশ মাংসল, পৃষ্ঠদেশ চৌড়া, পাশুলি মোটা মোটা (heavy), and neck, giving a general appearance to coarsenees, fine silky coat, and rich elastic skin. They are of various shades and often run into a mouse colour, and sometimes a brownish due especially for the saddle or body." গাভীগুলি এত মোটা এবং জ্বইপুই হয় যে, তাহানের ক্ষুদ্র দেখায়। বাট ও পালাম বেশ পূর্ব, পরিষর-যুক্ত এবং ধারাল হইয়া থাকে এবং লোমরাজি বেশ পরিক্ষাই হয়। (The udder and teats are

large, well-formed, and white with milk-veins very prominent. The cows often carry remarkably well shaped escutcheons. Bulls and cows are alike docile and easily managed. The bulls weigh up to 1800 pounds and the cows are not more than 1200 to 1400 pounds. These cattle are extremely hardy and very active for their size being good mountain-climbers in their native country.)

ওলনাজ বা হলাও দেশ এক প্রকার অতি স্থনর ও গ্রাবতী গাভীর জন্মভূমি বলিয়া প্রসিদ্ধ। এই দেশে লেকেন্ফেল্ড্ (Lakenfeld) বলিয়া এক প্রকার গো-পবিবার আছে; তাহারা দেখিতে খুব্ট স্থনার এবং গ্রাধারী হয়। গ্রন্থ খুব বেশী ননীযুক্ত না হইলেও মন্দ নহে। এই গোজাতিকে স্থানেশ ছাড়া ইউরোপের অন্যান্ত দেশবাসীগণ "ডচ্বেল্টেড্ (Dutch-belted) নামে অভিহিত করিয়া থাকেন। ইহাদের গাত্রের রঙ্ সর্ব্বত ঘোরকাল, কেবল পেটে একটি সাদা "পেটা" আছে বলিয়া ইহাদিগকে এত স্থনার দেখায়। এই গোজাতির সংখ্যা খুবুক্ম।

১৪। হলষ্টান্-ফ্রিজিয়ান্ পরিবার:—এই পরিবাবের গাভী সমগ্র ইউরোপে প্রচুর হগ্ধবতী বলিয়া থাতে। ইহারা প্রকৃত ওললাজনেশীয় রুহৎ হগ্ধবতী গাভী। আনাদের দেশের হান্দী বা মন্টগোমেরী বা গুজরাট্ বা গীর্পরিবার ইহাদের সাল্প্রে খুবই কাছাকাছি আসিয়া থাকে। কিন্ত হ্র্যায়িকা গুণে ইহারা পৃথিবীর সকল গো-পরিবার অপেকা শ্রেষ্ঠ। স্বদেশে ইহারা ভিন্ন ভিন্ন নামে পরিচিত হইয়া থাকে; মধা:—"হল্যাগ্রেম গাভী" "মর্থ হল্যাগ্রার" (North Hollanders), "ডেচ্ গান্তী" (Dutch cattle) হল্যান ডচ্-ফ্রীজিয়ান্ (DutchFriesian), "নেদারল্যাও গাভী" (Netherland Cattle), এবং ছোলইন-ক্রিজিয়ান্ (Holstein Friesian)। ইহারা সাদা এবং কাল রঙ্ মিল্রিড উত্তর হল্যাও এবং ফ্রিজল্যাও দেশের স্থানীর গোজাতি। ইহারা আকারে প্র বড় এবং প্রচুর ছগ্পবতী হয়। এই গোপরিবার সম্বন্ধে হাউটন্ (Houghton) যাহা বলিয়াছেন, তাহা নিম্নে প্রভ হটন:—

"The strongly marked black and white cattle of North Holland and Friesland constitute one of the verv oldest and most notable of the dairy breeds. Its origin can be traced back to two thousand years and has always been famous for dairy purposes.

The large frame, strong bone, abundance of flesh, silken coat, extreme docility, and enormous milk yield of the Holstein-Friesians result from the rich and luxuriant herbage of the very fertile and moist reclaimed lands upon which the breed has been perfected, the uncommonly good care received from their owners and the close association of people and cattle. In size the Holsteins are the largest of all the dairy breeds. The big, long frames are usually well filled out, and the chest, abdomen and pelvic regions are fully developed. These great black and white cows yield milk in proportion to their size. In temperament these animals are quiet and docile, bulls as well as cows, the bulls exceptionally so. They

have great constitutional vigour. The calves are large at birth, almost always strong and thrifty, and they grow fast and fatten easily. They mature early, heifers reaching their full height at two and a half years and shewing no growth after four or five years except the addition of flesh and fat. Teats are sometimes cone-shaped and uncomfortably large and puffy, where attached to the udder. The milk veins are usually prominent and sometimes remarkably developed. The cows range in weight from 1000 to 1500 pounds and the bulls are 2500 pounds in weight. The head is long, rather narrow and bony, with bright yet quiet eyes and large mouth and nostrils. The horns are small and fine, often in-curving, and frequently white with black tips. The ears are large, thin and quick in movement. The neck is long, slender and tapered in the cows, its upper line yet quite concave. The back line is usually level. particularly with the males and the hips broad and prominent; some have well-rounded buttocks, but a drooping rump is not uncommon. The legs appear small for the weight carried and are quite long; the tail is long and fine and a white brush is required, The udder is often of extraordinary in size, filling the pace between legs set well apart, extending high

behind and fairly well-formed, with teats of large size and well placed."

''কেড়ে-ভরা'' ছক্ষ দিতে এই গোজাতির মত পৃথিবীৰ অপর কোন গো-পরিবার প্রদিদ্ধ নহে; কিন্তু ''ননীর কেড়ে-ভরা'' ছপ্তের জন্ম চ্যানেল্ পরিবাবই সমগ্র পৃথিবীর মধ্যে বিখ্যাত। এই জাতির শোণিত হইতেই বিলাতি শট্হণ্ পরিবার যে উদ্ধৃত হইয়াছে, সে বিষয়ে কিছুনাত্র সন্দেহ নাই। উত্তব হল্যাগুলেশের গোবংশ অধিক ছগ্প দিবার জন্ম প্রদিদ্ধ হইলেও গ্রাহিশ (Groninger) উপ-পরিবার ছগ্প এবং মাংস উভয়ের জন্মই প্রদিদ্ধ। বিলাতে এই জাতীয় গাভীর উংপাদক বেশা না হইলেও কতকগুলি বেশ প্রসিদ্ধ উৎপাদক আছেন। তন্মধ্যে নিম্নলিথিত কয়েকজন উল্লেখের যে,গ্যঃ——

N. Boxendale, Allington Farm, Eastleigh; John Brown, Marden farm, Hertford; T. Case, North Elmham, East Durham, Norfolk; Rumbal and sons, Dairy farmers, Upper Clapton, London E; Earl Egerton, Tatton Park, Kuntsford.

১৫। চ্যানেল দীপপঞ্জ পবিবার (Channel Islands Breed):—
ইংলিশ্ চ্যানেলের যে দীপপঞ্জ ইংরাজ সমাটের অধিকৃত আছে.
তাহাদের মধ্যে জানি, গার্ণ দি, অল্ডানি ও সার্ক ট প্রধান। ভর্মধ্যে
জানি এবং গার্ণ দি দীপর্যে চট প্রকার অতি উত্তম গোজাতি উৎপশ্প
হইরা থাকে। এই চই পরিবারের মধ্যে পার্থকা খুব স্বর হইলেও
ইহারা এখন চই বিভিন্ন পরিবার বলিয়া সভ্য-জগতে পরিগণিত হইয়াছে।
এই চই গোজাতির রক্ষা, পরিবর্জন এবং উন্নতি-বিধায়িনী সমিতি
বিলাত এবং আমেরিকা এই উত্য দেশে আছে। প্রায় শতবর্ষ পূর্কে
এই চুই জাতীয় গাভী "মল্ডাণি" নামে সভিহিত হইত; কিন্তু এখন

বিভিন্ন-পরিবার বলিয়া পরিগণিত হওয়ায় পৃথক্ পৃথক্ নামে পরিচিত চইয়া থাকে। গার্ণ সিগণ জার্দি অপেক্ষা আকারে কিছু বড় হয়, কিন্তু কোন্ জাতির হয়নায়িকা শক্তি বেনা, তাহা ঠিক করিয়া বলা যাইতে পাবে না; যেহেতু এবিষয়ে খ্বই মতভেদ আছে। কিন্তু ইহা ছিয় যে, হয়নাআ দ্রোণহ্বা বিলাতি সকল গো-পরিবারের মধ্যে ইহারা 'বাণা"। ইহারা যেমন কম থায়, অল্ল-পরিবারের মধ্যে ইহারা 'বাণা"। ইহারা যেমন কম থায়, অল্ল-পরিবার বেঁথায়াড়ে থাকে, আকারে যেমন ছোট, তেমনি প্রচুর হয়বতী, এবং ইহাদের হয় ও ননীভরা (richest in fat) হইয়া থাকে। এই হই জাতি সম্বন্ধে অধ্যাপক এল্ভোর্ড্ বাহা বলিয়ছেন, তাহা পাঠকেব অবগতির জন্ত নিম্নে উদ্ধৃত করিয়া দিলাম ঃ—

(ক) গার্ণ দি-পরিবার:—"The Guernsev possesses a nervous temperament, and yet the cows are extremely quiet and gentle when properly handled and less trouble is reported in the management of aged bulls than with Jerseys of like age. The cows of this breed produce liberal quantities of milk, and it is of uncommon richness in butter fat and in natural colour. They are to be especially recommended for butter cows, as well as for market milk where quantity secures a relatively high price, and they are noted for rich production combined with special economy in feeding. They possess great power of assimilating tood and converting it into milk, yet are delicate feeders rather than gross, and will not generally bear much forcing. Guernsey cows average 1000 pounds in weight or a little more, and thus, being heavier than Jerseys, they are expected to give more milk."

প্রফুতপকে গার্ণ সি-পরিবার নর্মান্তিদেশীয় গো-পরিবারের অন্তত্ম হইতে এবং নির্মাচন-বিধিপ্রয়োগে বিলাতি ঘাঁডের সংযোগে উষ্কত হইরাছে। ইহারা জাসি হইতে অধিক ভারী এবং মোটা (coarser) হইয়া থাকে। অধ্যাপক এলভোর্ড, ওরালেস ইত্যাদি খাতনামা গোতৰবিং পণ্ডিতগণের মতে "It is a larger, stronger boned, and coarser animal in appearance than the Jersey. It has not been bred with such care, and its outlines are not so regular or symmetrical. Cows are docile but bulls are treacherous and dangerous even to their attendants. They are usually so massive in the neck that it is nusafe to tie them in the usual way." ইহাদের রঙ ভাঙ্গা (broken) অর্থাৎ গুলুব্যান ছ্যাব্কা ছ্যাব কা হইরা থাকে (patches of white appearing on the predominating light yellow, brown or reddish fawn), নাশার্ম বড় বেশী গোল (the nostrils are more rounded and not so dilated as those of the Jersey) | *| | শ্বলবদান গুলিই বেশী হয়বতী এবং কট্টসহিকু হটয়া খাকে (Black and brindled specimens, though few, having been bred out, are said to be the hardiest and the best milkers.) নিয়লিখিত পার্ণ নি মীপবাসীগণ প্রাসিদ্ধ গার্ণ নি গো-উৎপাদক বলিয়া পরিচিত। আমাদের দেশের ভদ্রমহোদরণণ তাঁহাদের নিকট হইতে জনন-জন্ত বাঁড় আনাইয়া দেশীয় গোলাতির সম্বিক উন্নতি করিছে পারেন বলিয়া পর পূঠার তাঁহালের নাম ধাম ও তালিকা দিলাম।

- J. G. Browning, Rose Farm, St. Martins; Gen de Vic Carey, Le Vallon, St Martins; T. R. Gallienne, Ponchez Castel; A. Le Patourel, La Ramee', St. Peter Port, T. le Provost, L'Etiennerie, Castel; T. Lucas, Mont Marche, Forest; H. M. Ozanne, Lilyvale, Castel; J. W. Martel, Jun, Hunguet, St Andrews; T. M. Simon, Les Câches, St. Saviours; F. Jehan, Le Chêne Farm, Forest.
- ১৩। জাৰ্সি (Tersey) পরিবাৰ: --কেরীর মন্ত এই পরিবারের গাতী দ্বাপেকা ছোট, শক্ত (hardy) এব চ্যাদাতী। ইহাদের হয় ননী ভবা, এবং ইছারা যেমন অল্ল থায়, ভেম্নি 'কেড়ে-পোরা," ননী-ভরা ভগ্ন দিয়া থাকে। ইহারা জাসিবীপবাসী। ইহাদের শিঙ আছ-গোলাকাব, – সম্মুথদিকে বৃত্তাকৃতি হইয়া মন্তকের সহিত সমানভাবে গ্মশিতে থাকে: সেইজন্ম ইহাদিগেব মুখটা দেখিতে অত্যন্ত স্থানর, क्षरः दौलतामीनन देशानिनात्क श्रुव जानत्र ଓ राष्ट्र श्रविभानन करत्। আইন হারা এই জাতির শোণিত্রের বিশুদ্ধতা বক্ষিত হইয়াছে। "Jerseys are the smallest in average size of the noted dairy breeds, cows ranging from 700 to 1000 pounds and the bulls from 1,200 to 1800 pounds. Yet the highest weights stated are often exceeded, and where effort has been made to build up a herd of larger size an average of over 1000 pounds for mature cows has been easily attained. The average weight of Jerseys in America. is capsiderably more than the average on native island. In colour this breed varies more than any other. Bulls

range much darker in colour than cows. The head of the Jersey is small short, broad, lean and generally dished. The muzzles, including underlip, is black or a dark lead color, surrounded by a mealy fillet of light skin and hair. The eyes are wide apart, large, bright and very prominent; the horns, small, waxy with thin shells, often black-tipped and often much crumpled; ears small and delicate: neck small, clean and fine: legs the same and rather short, body well rounded, with capacity for food and breeding; tail long and with a full brush often reaching to the ground The skin is mellow and loose, with fine silky hair. The udder is of good size, more pendulent than in the Ayrshire and with quartes more distinctly defined: teats sometimes small and conically inclined, but udder and teats seem to be easily improved by judicious breeding. The square, close, "Ayrshire udder" is frequently wellnigh perfect; milk veins highly developed. sometimes tortuous and knotty. This breed is second only to the Guernseys in the abundant secretion of colouring matter, which shows itself on the skin on various parts of the body, makes the fat of the body a deep orange, gives a rich tint to milk and cream, and a strong golden hue to the butter. Jersey cattle are of the nervous order of temperament highly developed.

They are excitable for slight cause, but the females, when properly treated, are exceedingly placid and docile. The bulls have the reputation of being fractious and difficult to handle after attaining maturity. This is largely a matter of early training and judicious management. Although naturally active and disposed to self-assertiveness, good managers find no trouble in keeping Jersey bulls under perfect control throughout long lives. Jerseys are heavy feeders and have great capacity for assimilating and turning to profit all kinds of cattle forage. As a rule, they will bear rich feeding and forcing for long periods uncommonly well. In the good animals all the extra food is converted into milk. They do not fatten readily. The Jersey cow is essentially a machine for producing milk-butter making milk and may be considered worthless when she ceases to give milk. The owner should depend for profit solely upon the produce of the cow while she is alive.

কাউলারগণ (The Fowlers) চ্যানেল দ্বীপপুঞ্জীয় গাভীগণের সর্বপ্রথমে উন্নতিবিধান করেন। এই গোজাতি সম্বন্ধে যুক্তরাজ্যের কবিবিভাগের ১৮৮০ সালের বিপোর্ট, ১৮৮০ সালের যুক্তরাজ্যের কন্-বলের ক্রবিস্মন্ধীয় রিপোর্ট, বিলাতি ক্রবি-সমিতির পত্রিকা (Journal of the Royal Agricultural Society of England, 2nd Series, vols. xiv, xvii & xxi) পাঠ করিলে সবিশেষ অবস্থত হওয়া যাইবে। বিভিন্নজাতীয় গক্তর অবাধ-মিশ্রণে পাছে সম্ভর জাতি

फेरभव रम, এই छत्न देशांत्र विकृत्य बाहेन विधिवक वाकांत्र, सानि अरू পার্ণ দি-পরিবারের গাভী অবিমিশ্রিত শোণিতে বহুকাল যাবৎ উৎপাদিত হইতেছিল। তথাপি উনবিংশ শতান্দীর প্রথনে অমনোযোগিতা হেড় এই গো-পরিবারের অত্যন্ত অবনতি ঘটে: কিন্তু কর্ণেল কোটুর এবং কর্ণেল লি কর্ণ এই জ্বাতির সমধিক উন্নতি সাধিত করেন এবং প্রক্রত নির্বাচনের দ্বারা এই পরিবারকে পৃথিবীর মধ্যে "ননীপোরা" ভ্ৰমাতী পাভী বলিয়া প্ৰসিদ্ধি দিয়া ঘাইতে সমৰ্থ হইয়াছিলেন। এই জাতীয় গাভী বা ঘাঁড যন্মাহীন হইয়া থাকে। P. J. Ahier "La Ferme", St. Martins; T. le Brocq, Leoville, St. Owens; Ph. Duval, Somer leigh, St. Peters; M. Fancis Le Brocq, St. Peters; T. P. Hacquoil, L. Etacq, St. Owens; C. Manger, Herupe, St. Johns; I. A. Perree, Oaklands, St. Saviours; Sir W. H. V. Vernon, St. Peters; Frs. le Masurien "Les Niemes," St. Peters, এই গোৰাশের স্ক্রের এবং প্রাসিদ্ধ উৎপাদক বলিয়া পরিচিত। এই সমূদ্ধে 'The Versey Cattle, their Feeding and Management' नामक शृहक (Vinton & Co., Ltd., London), পাঠ করিলে বিশেষ অভিকর্তা ৰাত করা যাইতে পারিবে। এই ছাতি সম্বন্ধে একটি "Herd-Book" প্ৰকাশিত হয়; ভাহার নাম "Jersey Herd-Book "। ভাহার John A. Perree, 8 Church Street, St. Helier, lersey. बान हेरनाख धारे बाखित जानक छैरनामक धार धानरमक আছেন: তন্মধ্যে নিয়লিখিতগুলি উল্লেখনোগ্য:--

C. W. Armitage, Woodlands, Northaw, Hests; Mrs. Charlotte M. Mac. Intosh, Havering Park, Romford, Essex; Alex Miller-Hallett, Goddington, Chelsfield,

Kent; Herbert Padwick, Manor House, West Thorney, Emsworth; Lady de Rothschild, Aston Clinton, Thring, Hertford-shire; George Murrray Smith, Gumley Hall, Market Harborough; Richard James Streatfield, The Rocks, Uckfield, Sussex; R. Bruce Ward, Westwood Park, Droitwich, Worcestershire; Dr. Herbert Watney, Buckhold, Paugbourne, Reading; Lord Braybrooke, Audley End, Saffron Walden; R. Hugh C. Smith, Mount Clare, Rochampton Hall, Bawtry, Yorks; Augustus Fred Perkins, Oak Dene, Holmswood, Surrey; Vicount Enfield, Dancer's Hill; South Myms, Middlesex; Herbert Padwick, Manor House, West Thorney, Emsworth.

এই জাতীয় যাঁড় নিয়লিখিতরপ হওয়া উচিত। অব্যাপক ভ্রানেশ বলেন, ইহাদের "Head broad; Eye full and lively; muzzle broad; neck arched, powerful and clean at the throat; withers fine; shoulders flat and sloping; loins broad and strong; legs rather short; teats squarely placed and widely apart. গাতী সম্বন্ধ এইরপ লেখা আছে:— শক্তক ক্লার (fine), মূথ খাব ড়া (dished), নালী পাতলা (throat thin), নাসারন্ধ উচ্চ এবং বিভ্ত (high and open), মুখত্বের চতুলার্থে নামান্ত রঙ্ বিশিষ্ট (muzzle encircled by a light colour), শিশ্প তুরি ক্লার (eyes full and placid), গলা পাতলা, নোলা এবং ল্বাৰ (neck straight thin, and long, and

lightly placed on the shoulders), পেট (borrel) কৰা, চৌড়া, এবং মোটা (deep, broad and long, denoting large capacity; ribs rounding in shape), পুঠ বুট (withers) হইতে বেৰের গোড়া পর্যন্ত সোজা (back straight from withers to setting of tail), নেজ সোজা এবং থোবাযুক্ত, পিছনের পাছা পৃথক (hips wide apart). পিছনের পা (hind legs squarely placed), দামনের বাঁট (full and running well forward) পূর্ব, পালান বড় কিন্ত মাংসল নহে (large not fleshy, and well balanced), পিছনের বঁটি পূর্ব এবং সোজা (well up, protruding behind and not rounding abruptly at the top); ছথ-শিরা পরিবর্ত্তিক अवः পূर्न (large and prominent); वाष्ठ-हजूडेम मनान, माछा এবং ধারাল (of good uniform length and size, wide apart and squarely placed); চৰ্ম, পাতলা, চিলা (thin, loose and mellow). এই জাতীয় গাভাগণ নমু, শাস্ত ও ধীর হুইয়া থাকে, তাহা আমি পূর্বেই বলিয়াছি; কিন্তু যাঁড়গুলি কিছু क्षांस क्या

বিণাতে ও আমেরিকার ভিন্ন ভিন্ন জাতীর গো-জাতির সংরক্ষণী, পরিপালনী ও সংবর্জনী সমিতি বা সভা আছে। তাহাদিগের তালিকা ব্যাসাধা নিম্নে প্রদন্ত হইল। ইহাদিগকে পত্র দিলে ঐ জাতি সম্বন্ধীয় সকল জ্ঞাতব্য বিষয় অবগত হওরা যায়। আমেরিকার নিম্নলিবিক সমিতিগুলি আছে:—

Ayrshire Breeders' Association; Secretary—C. M.: Winslow, Brandon, Vermont, U. S. A.

Brown Swiss Breeders' Association; N. S. Fish, Groton, Conn. U. S. A.

American Devon Cattle Club; L. P. Sisson, Wheeling, W. Va, U. S. A.

Dutch Belted Cattle Association of America; H. B. Richards, Easton, Pa., U. S. A.

American Guernsey Cattle Club; W. H. Caldwell, Peterboro N. H., U. S. A.

H in Friesian Association of America; F. L. Houghton, Brattleboro, Vermout, U. S. A.

American Jersey Cattle Club; J. J. Hemingway, No. 8, West Seventeenth Street, N. Y., U. S. A.

American Polled Durham Breeders' Association; J. H. Miller, Mexico, Ind.

Red Polled Cattle Club of America; J. MacLain Smith, Dayton, Ohio, U. S. A.

American Short-horn Breeders' Association; J. H. Pickrell, Sping field, I. M., U. S. A.

গোজাতির উহ্নতিবিধারিনী বিলাতি সমিতি।

- Royal Agricultural, Society of England; Thomas McRow, 16, Bedford Square, London.
- 2. British Dairy Farmers' Association, 12, Hanover Square, London, W.
- 3. Smithfield Club; E. J. Powell, 12, Hanover, Square, London, W.
- 4. Short Horn Society of Great Britain & Ireland, E. J. Powell. Do Do

- 5. Sussex Herd Book Society W. C. Young, 12, Hanover Square, London, W.
- 6. Kerry & Dexeter Society -F. A. Hordern, Do.
- 8. Jersey Cattle Society—John Thornton Do:
- 7. Guernsey Cattle Society -E. H. Young Do.
- Aberdeen Angus Cattle Association Albert Pulling, Beddington, near Croydon, Surrey.
- 10. Aberdeen Angus Polled Cattle Society -- Alexander Ramsay L.L. D., 9 Old Market Place, Banff N. B., Scotland.
- 11. Dairy Shorthorn Association—F. N. Webb_i Babraham, Cambridge.
- 12. Ayrshire Cattle Herd-Book Society of Great Britain, -John Howie, 58, Alloway Street, Ayr, Scotland.
- 13. Kerry-Dexeter Herd Book Registrar,—Richard J. Moss, Supdt. of Royal Dublin Society, Leinster House, Dublin.
- 14. Red Polled Society of Great Britain & Ireland,
 —Albert D. Euren, Mercury Office, Norwich.
- 15. Devon Cattle Breeders' Society,—John Risdon, Jun., Wiveliscombe, Somerset.
- 16. South Devon Herd Book Society—Alfred Michela more, Gate House, Totnes, Devon.

- 17. Highland Cattle Society of Scotland,—Duncant Shaw, W. S., 15, High Street, Inverness.
- 18. Lincolnshire Red Shorthorn Society, William Frankish, St. Benedicts Square, Lincoln.

২৫। রাজপুতানা-বংশ।

রাজপুতানায় অন্যুন ছয় প্রকারের ভিন্ন ভিন্ন জাতীয় গো-বংশ দুট্ট হয়। ইহারা নাগোর-পরিবারের সহিত সম্থিক সংশিষ্ট এবং মিশ্রিত হইলেও নাগোর হইতে পুথক। >। নাগোর ও পি**গু**। জাতীয় গো রাজপুতানার প্রধান গো-পরিবার, ২। সাঞ্চোর, ৩। विकानीत, (8) मारतांह, (e) माउत्रान, (e) कांही, (७) अवभूती, (৭) আলোরারী, (৮) মালোরা, এই আট পরিবারের গো-জাডি রাজপুতানা প্রদেশে দেখিতে পাওয়া যায়। ইহারা গাড়ি টানিতে বাঁ শাৰুণ-বহনে খুব পটু, কিন্তু কদাচ ছগ্ধবতী নহে। নিজামরাজ্যে **टिनिकाना. मारा**ष्ट्रावाना, निकक्छत्र এवः हेनाशाखान পরিবারই বিশেষ **প্রাসিদ্ধ বলিয়া খ্যাত। মধ্য-ভারত প্রদেশে পারশরানি এবং জাইৎপুর-**বংশীয় গোটভাতি বিশেষ প্রসিদ্ধ। থেরী এবং পার্ব্বত্য প্রাদেশে খেরী 🕏 নেপালী পরিবার বিশেষ প্রসিদ্ধ। ইহারা রুটনি-যাঁড়ের সংযোগে সংকর-উৎপাদনে বিশেষ উপযোগী বলিয়া বোধ হয়। মধা-ভারতীয় वर्रां मर्या निमान-वर्ण कष्ट-महिक्कान क्वा विराध था। हेहाना मैंडेबाडबे बेबाविंद शर्रदमंत्र इंडेबा शांदक।

२७। क्मायून-वरनीय।

্ ইহারা পার্বত্য পরিণারের অন্তর্গত। পণ্ড-চিকিৎসক লে: ওয়াকার বলেন বে, ইহারা নাইনীভাল ও আনসোড়া অঞ্চলের সোধাতির সঁহিত मक्ष्मत्र-छेर्पामत्म वित्नय छेपर्यागी। देशता ना दानी पतिलमी क्षेत्र. সাকুগ্রবতী হয়। ইহাদের মধ্যে ভাল গাভীগণ দৈনিক ৪।৫ সের **প্রশ্ব** मित्रा थाकि। এই एक्टिन मस्या ननीत পরিমাণ অধিক দেখা याक। ছম্বতী গাভীর মলা ে হইতে ২৫ টাকা পর্যান্ত হইয়া থাকে। বুটনি-বাঁড়ের সহিত ইহাদের সংযোগ করিয়া ভাল সংকর গাভী পা**ওরা** গিয়াছে। তিন বংদর বয়স্ক হইলেই ইহারা গর্ভধারণক্ষম হইয়া থাকে। ইহাদের পা ছোট, গঠন আঁটগাঁট, আকার কুদ্র, চঞ্চল কিন্তু রাগী এবং বন্তপ্রকৃতিবিশিষ্ট, মস্তকটি বেশ স্থাডোল, চক্ষুর্যারে মধ্যের স্থাটী চৌড়া, মুখড়টিও বেশ চৌড়া এবং কাল কাণগুলি সোজা মন্তকের উপর ৰাঁড় করান; কপালটি ঈষৎ গোলাকার, গলাটি মোটা ও ছোট, কুল 🖫 শাক্তিক-সই, কোমর সরু, পিঠ সোজা এবং ঝুঁটের নিকট ঈষং উচ্চ; মন্বপ্রত্যন্তপুলি হাড়যুক্ত নহে. এবং গায়ের রং প্রায়ই লাল বা কাল হইয়া খাকে। এই জাতীয় গাভিগণ ওক-গাছের কচি কচি পাতা খাইডে খুবই ভাল বাসে। ইহাদের গারের লোমগুলি ঘন এবং রেশমের ষক্ত চক্চকে এবং বক্ষ:হল চৌড়া ও গভীর হইয়া থাকে। বুটৰি-ৰাঁডের সহিত ইহাদের সংযোগ করিলে ভাল এবং বলিষ্ঠ সম্ভর উৎপার্থন করা বাইতে পারে।

२१। वाक्रला-वःनीय।

বন্ধদেশে প্রাচীনকালের স্থার উত্তমকাতীর গরু আৰু কাল প্রার দেখিতে পাওরা বার না। মহাতারতীর যুগের মণ্ডরাজের গোগৃহ অর্থাৎ হয়বতী গাভীর পাল দেশপ্রসিদ্ধ ছিল। দক্ষিণ-গোগৃহের ভয়াবশের অস্থাবধি মেদিনীপুর জেলার দাতন ষ্টেসনের সরিকটে পরিদৃষ্ট হয়ে প্রার ১৫০ বা ২০০ শত বংসর পূর্কে ঘাটালন্থ রাণীচক্, প্রতাপপুর, ক্ষান্ত প্রভৃতি রূপনারারণ নদের তীর-দরিকটাই স্থানগুলি জোপছবা গালীর জন্ম বিখাত ছিল। কাজেই ২০।৪০ বংসর পূর্বে ঐ সকল গানের ছয়, দধি, ছানা, মাখন, ক্ষীর কলিকাতার বাজারে প্রচুর ক্ষান্দানী হইত। এখন সে সব রহিত হইরাছে। গোমাংসের ক্রা ক্ষাক্ষ কাল এত অধিক পরিমাণে গোহতা করা হর যে, বঙ্গের কোন ক্যোন গ্রাদি ছল ভ হইরাছে। জলপাইগুড়ীর সন্নিকটে ও শিলিগুড়ির আসরপ্রদেশে, চাষের জন্ম বলদাদি ক্ষবিবল স্থলভ পশু পাওরা ছ্বিট হইরাছে। বাঁকুড়া জেলার এক জাতীর ক্লুকার গো পাওরা যার। ইহারা অধিক ছগ্ধবতী না হইলেও খুব পরিশ্রমী, কষ্টসহিক্ এবং সামর্থ্যক্ত। হল-বহনে ইহারা বছল ব্যবহৃত হইরা থাকে।

বিহার প্রদেশেও কয়েক জাতীয় বেশ ভাল গরু পাওরা যায়।
মোজক করপুর জেলার অন্তর্গত "বছৌর" পরগণা শভবর্ধ পূর্বের হল ও
কট-বহনকম বলিট গোজাতির জন্য প্রসিদ্ধ ছিল। এখন এই সকল
স্থানের গোজাতির, বঙ্গীয় গোজাতির ন্যায়, অবনতি ঘটয়াছে। ইহার
প্রধান কারণ থাদাভাব, অয়ত্ব, এবং মাঁড় ও গাভীকে একত্রে চারণকৃমিতে অবস্থান করিতে দেওয়া। এ বিষয়ে যে সমস্ত নীতিগুলি পরে
উল্লিখিত হয়াছে, ত হার বিপরীত জাচরণ করাই আমাদের কেশে
পাজাতির অধাগতির মূল কারণ হইয়াছে। নির্বাচন বিধির ঘারা বঙ্গীর
বা বিহার প্রদেশের গোজাতির উন্নতিসাধন করা কর্তব্য, নচেং ক্রির
বড়ই হানি হইবার সম্ভাবনা দেখিতে পাওয়া ঘাইতেছে। হলবহনক্র
ক্রেনের মূল্য বিগত ৫০ বংসরে চতুগুল বৃদ্ধি পাইরাছে। ভারতের মন্ত
ক্রিপ্রধান ক্রেশে এইরূপ মূল্যবৃদ্ধি কন্তন্ত্র ভয়ের কারণ, তাহা বশাই
বাছলা।

ষষ্ঠ পরিক্ষেদ।

ছাগল।

গৃহপালিত পত্তর মধ্যে ছাগল একটি প্রধান জন্ত। ইহারা ভারতের সকল দেশেই জন্মিরা থাকে এবং সকল প্রকার জলবায়ুতে উন্নতি লাভ (thrive) করিতে বা পরিবন্ধিত ছইতে পারে। ইহারা ভেডা, হরিণ ৰা গোজাতির ক্লার রোমন্তনকাবী জন্ধ। ইহাদের শরীর গঠন ও আজ-ব্যবচ্ছেদাদির বিষয় এই কুদ্র পরিচ্ছেদে নিথিয়া সময় অতিবাহিত করিব না। ইহাদের সম্বন্ধে চুই চারি কথা বলিয়াই এই পরিচ্ছেদ শেষ করিব। ভারতবর্ষে ছাগল রক্ষা করিবার বা বৈজ্ঞানিক উপায়ে উহাদের উৎকর্ষ সাধন করিবার কোন সভা বা কোন সমিতি নাই; বরং কোন পূজা भार्काण, वा व्यानत्नारमत्व कृष्णण वा भौठाविनव वावज्ञा शुवह तमश्री यात्र। পাঁঠার জাতি কিনে ভাল হইবে তাহার বাবস্থা নাই, কিন্তু বলির ব্যবস্থা পুবই আছে। দেবীপূজায় পাঁঠাবলির বিস্তুত বিধান তন্ত্রে ও পুরাণে দৃষ্ট হয়। দেবী মহাবৈষ্ণবী: পাঁঠার রক্তে তাঁহার এত লোভের কারণ কি, ভাহাত বুঝিতে পারিলাম না। বলির প্রকৃত অর্থ বুঝিয়া আমাদিগের হিন্দু ভাষারা যদি সব ধর্ম-কর্মের অনুষ্ঠান করিতেন, তাহা হইলে ভারত এত অধ:পাতে যাইত না। গুরুদেবের কাছে গুনিয়াছিলাম যে. লোভী লোকগণ নিজেদের রদনাবৃত্তির পরিতৃত্তির জন্ত পাঁঠাবলির সৃষ্টি করিয়াছে। বাহাই হউক, পাঠার মাংস একটি উপাদের বাছসামগ্রী। ইহাতে মুখ-ব্লোচক পোলাও, কালিয়া, কোপ্তা, কাটুলেটু, কোর্ম্মা, গ্রেভি, মার্মানেড প্রভৃতি হুখাদা প্রস্তুত হুইয়া থাকে, তাহা কেহই অধীকার করিছে পারিবেন না। কচি পাঠার ভূম্ রোগীর পক্ষে খ্ব হিতকর, এবং পাঠার মুদ্ধীর বোল হর্কলের পক্ষে অত্যন্ত বলকারক থান্ত বলিয়া আজি-কালিকার

ভাজার এবং বৈছগণ বছল বাবস্থা দিয়া থাকেন। ভারতবর্ধের মধ্যে পার্ব্বতা, রামছাগল, দেশীছাগল, মধ্য-ভারতের ছাগল এবং মান্ত্রাজদেশীর ছাগল, এই করপ্রকার ছাগলের জ্বাতি দেখিতে পাওয়া শার। গোজাতি এবং মেষের যে সমস্ত রোগাদি হয়, ছাগলদেরও ভাহাই হইয়া থাকে, এবং ঐ সকল রোগের চিকিৎসাও গো-চিকিৎসার নার কেবল ওবধের মাত্রা মেষের মাত্রাছ্যারী।

আমি পূর্কেই বলিয়াছি যে, পাশ্চাতা জাতিগণ যে কাজ করেন, তাং।
সম্পূর্ণ ও সুচারুরূপ এবং বৈজ্ঞানিক। তাঁহাদের দেশে ছার্গ-জাতির
উন্নতি-বিবায়িনী দভা আছে, পত্রিকা আছে, ঐ বিষয়ে শত শত পৃস্তক
আছে, এবং ভিন্ন ভাগল জাতি তাঁহারা বিজ্ঞানের সাহায্যে উৎপাদন
করিতে সমর্থ হইয়াছেন।

রোগী এবং শিশুদের পক্ষে ছাগলের হুন্ধ থুবই হিতকর। কাশীরের ছাগলের লোমে শাল আলোয়ান দস্তানা মোজা আদি পরিধের ব্যাধ্যত হইরা থাকে। নিম্নলিখিত প্তকগুলি পাঠ করিলে ছাগল পালন ও উৎপাদন সম্বন্ধে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করা যাইছে পারিবে:—>। Goat-keeping for Amateurs by H. S. Pegler Holmes (Upcott Gill, London,); Mendel's Principles of Heredity by W. Bateson (Camb, University Press); P. MacConnell's Livestock Breeding and Management of Goats (Cassell & Co., London; rs.); J. T. Bird & T. W. Sanders—The Goat, its Use and Management (London, W. H. & L. Colling ridge, 15-6d); Goat-keeping for all, by Gerard, J. G. Jensen (Cable Printing & Publishing Co., Ld., Halton House), Great Queen Street, London; W. C. Goats

by H. S. Holmes Pegler (Upcott Gill. 4s.-6d.); Milch Goats by Bryan Hook (Vinton & Co., London, 3s-6d); The Case for the Goat (Routledge, 3s-6d) প্রভৃতি পুত্রক বিশেষ যত্নসহকারে পাঠ করা কর্তব্য। বিলাতে British Govt. Society নামক এক সমিতি আছে। এই সমিতি হইছে ছাগজাতির উন্নতি-বিষয়ক প্রবন্ধ পুত্রকাদি নিয়মিত প্রকাশিত হইনা বাকে। H. S. Holmes Pegler সাহেব of Allerton House, Kingston-on-Thames ইহার সম্পাদক।

আমেরিকারও ছাগলের উন্নতি ও সংরক্ষণ-বিধায়িনী সভাসমিতি আছে। "The American Angora Goat Association" ইহার প্রধান পরিচয়। স্থামাদের ভারতে যেমন ভিন্ন ভিন্ন ছাগলের জাতি আছে এবং যাহার বিষয় আমি উপরে উল্লেখ করিয়াছি, সেইরূপ ইউরোপীয় ৰহাপ্রদেশেও করেক প্রকার অত্যতম <u>চ্গ্নবতী ছাগল আছে।</u> তন্মধ্যে স্থাইজরলও দেশত টগেনবর্গ (Toggenburg), আলপাইন (Alpine), এবং স্থানেন (Saanen) জাতিই প্রধান। বিশাভিম ৰধ্যে এংলো-মুবিয়ান (Anglo-Nubian) ও কেপ-কলোনী, এবং আমেরিকার মধ্যে ইহাদিগের সঙ্কর-জাতিগণ এবং একোরা (Angora)-वरभीयगण्डे ध्वमान । এवर विलय উল্লেখযোগ্য। ছাগী ১৫ • मिन अ**र्ड** ধারণ করিয়া ২।৩টি শাবক এক সঙ্গে প্রসব করিয়া থাকে। প্রায়ই আমাদের ভারতবর্ষের ছাগী বৎসরের মধ্যে চুইবার সম্ভান প্রসব করে। ইহারা খড়মতী (, their œstrum last only three days) হইলে তিন দিবসমাত্র গ্রম থাকে। সেই সময় সহবাদ করান প্রয়োজন। ছাগী গ্রম হইলে নাদে, চোনায়, ডাকে, অন্থির হয়, ছগ্ধ কমিয়া যায় . **ध**वः रामि ब्रक्कवर्व ७ जेवर कृतिया **উঠে। ই**शामिशक **এই** मसब বিশেষ যত্ন করা কর্মবা।

ছাগ-পালন বেশ লাভজনক ব্যবসায় এবং স্বল্প পুঁজিতেই হইছে পারে। এ সম্বন্ধে আর অধিক বলা আবশ্যক নাই। পাঠক উপরোক্ত পুস্তকগুলি আনাইয়া পাঠ করিলেই বিশেষ জ্ঞানলাভ করিতে পারিবেন ঃ

্ছাগল, মহিষ, গো প্রভৃতি গুহুপালিত পশুর স্তায় মেষজাতিরও বিলাভি Farm সহয়ে অনেক সভাসনিতি ও পুত্তকাদি আছে। এই পুত্তকে ৰে সমন্ত পুত্তক গুলির নামোল্লেখ করিয়াছি, এবং বার্ণ, ম্যাকডোনাক, ম্যাকেঞ্জি, ইউরাট, ওয়ালেন প্রভৃতিরও অনেক পুত্তক মেবজাতির সম্বন্ধ আছে। এই পুত্তক কেবল মাত্র মেবজাতি সম্বন্ধে নহে বলিয়া তাহাৰ বিষয়ে বিশ্বত আলোচনায় বিরত হইলাম। মেঘজাতির সম্বন্ধে লকউড. ডেমারি ওয়ার্ল ড, ম্যাক্মিলান, কট্লেছ, ব্লাক্, জাড্জীন প্রভৃতিম ৰাবা প্ৰকাশিত বছ পুত্তক আছে। জ্ঞানাত্মসন্ধিংম্ন পাঠক তাহা আনাইরা পাঠ করিতে পারেন। তাহার মধ্যে নিম্নবিধিত পুত্তকগুলি বিশেষ প্রাঞ্জনীয়:—Agricultural Facts and Figures by P. MacConnel; Dairy Pigs and Poultry by R. S. Burn; Dairying by I. Oliver; Outlines of Modern Farming by R. S. Burn: Farm Management by R. S. Burn; The Complete Grazier by W. Youtt; Milk and Cream Testing by G. Sutherland Thompson; Cattle Sheep and Horses by R. Scott Burn (Crosby and Lockwood, London); Modern Sheep, Breeds and Management (by Chicago Sheep Breeder Co.); Journal of Board of Agriculture, Vol. XIV., p. 713.

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

মহিষ।

আমাদিগের দেশে করেকজাতীয় মহিব দেখিতে পাওরা বার। ইহাদিগেব শরীর গঠন আরুতি প্রকৃতি আদি "বদ্-ইণ্ডিকাসের" অতুরপ। ইহাদেব মধো পার্ক্তীয়, মান্তারী, মধাতারত, আড়না, চটুগ্রান, ব্রহ্ম, বিহার, রিওয়া, গুজ্বাটী ও পাঞ্জাব জাতীয়গণই উল্লেখের যোগা। ইহাদের রোগাদিও গোজাতিব রোগো অনুরূপ; কিছ ঔবধের মাত্রা তাহাদিগাপেকা অধিক পরিনাণে প্রযোজা। ইহারা প্রায় in-breeding এর বিরোধী। স্বৰ্লমধ্যে ইহারা সম্ভানোংপাদন প্রায় কবে না। ইহানের মধ্যে শোণিতেব স্বাভন্তা রক্ষা করিবার চেষ্টা খ্ব বেৰীমাত্ৰার দৃষ্টিগোচর হয়। সহিবীয় ছথে ননীর মাত্রা খুবট বেশী। এ সৰক্ষে এই পুস্তকে " ভূগ্ধ"-পর্যায়ে ষথাছানে কবিত হইয়াছে। মহিষের ছফোর ছানা, মাথম, গুড, খোয়া, ননী, রাবড়ী ইত্যাদি সুখাল দ্রব্য কলিকাতা ও ভারতের অপরাপর বড় বড় নগরের বাজারে বত্ল পরিমাণে বিক্রীত হইরা থাকে। বেলোচিস্থান, পাঞ্জাব ও ওজরাটী বা মধ্বা-পারী মহিষের দাম ধ্ব বেশী, তাহা কাহারও জানিতে বাকী নাই। পূর্ববেদ্ন পরানদের চরদমূহে আড়্না প্রস্তি জাতীর করেকপ্রকার ৰ্ব হ্যবতী মহিব পাওয়া যায়। পালামু, গয়া, ছোটনাগপুর, রিওরা, व्य इंडि दिर्ग्य छान छान महित मजानदि शास्त्र शास्त्र शास्त्र । इच्चरेडी মহিষের মধ্যে মুড়াজাতীয়গণই প্রধান; তাহা ছাড়া রোহতাক্, মিলী, ক্রাট্, জাফ্রাবাদ প্রভৃতি গুলিই ভারতে ধ্ব প্রসিদ্ধ। মৃত্যা-ৰংশীয় মহিবকে সর্বশ্রেষ্ঠ বলিয়া বোধ হয়। ইহালের শিঙ্ বিজার ৰত পাকান ও গোলাকার (curved)। ইহাদের অন্মহান হান্দিহিনার জিলা এবং রোটাক্, ঝিদ্ধ ও নাভা পর্যান্ত ভূভাগের মধ্যেই ইহাদের বছল পরিমাণে পাওয়া গিদ্ধা থাকে। মহিষীর ছগ্ধ এত গুরু যে, বংস তাহা অধিক পরিমাণে পান করিলেই রোগগ্রন্থ হয়, এবং পেটের অস্কুথ বা বক্ত-আমাশা রোগগ্রন্থ হইয়া অকালে মৃত্যুমুথে পতিত হইয়া থাকে। সেইজন্ম এই অবস্থান্ন অর্থাৎ লোমে আঁচুলি উৎপন্ন হইবার সময় নিমপাতা-সিদ্ধ জল কিয়া নিমের তেল প্রত্যেককে ০ হইতে ৫ আউন্প্র ওজনে তিনদিন অন্তর একবার করিয়া খাওয়াইবে। মহিষদিগকে প্রচুর থান্ম ও চারল-মাঠে চরিতে দেওয়া প্রয়োজন, এবং প্রত্যহ ঠাওা জলে সকাল ও বৈকালে বা ছিপ্রহ্ব ও সদ্ধার সময় গ্রীত্মের দিন ধৌত করা আবশাক। তাহা না করিলে তাহাদের স্বান্থা ঠিক থাকে না।

নহিষের চিকিৎসা সম্বন্ধে এই খানেই গুইচারি কথা বলা আবশ্যক বিবেচিত হইতেছে। গো, মহিব, ছাগল, মেষ ও হরিণের রোগ প্রায় একই প্রকারের হইয়া থাকে; যেহেতু ইহারা সকলেই রোমহনকারী দ্বস্থা। মহিষ এবং গবাদি গৃহপালিত পশুর রোগ প্রায়ই একপ্রকার। কিন্তায় ভাগের যথাস্থানে—মহিষ-চিকিৎসাধ্যায়ে ইহা কথিত হইয়াছে।



অস্টম পরিচ্ছেদ।

ভারতীয় গোরকার উপায়।

সাধারণতঃ দেখিতে পাই যে, এদেশে গক্র সংখ্যা স্থাস পাইতেছে।
পুর্বের্ব পলীপ্রামের প্রান্তবে ধেরপে শত শত গরুর পাল দেখিতে পাওয়া
মাইত, এখন আব সেরপে দৃষ্টগোচ্ব হয় ন।। যে গ্রাম হইতে
পূর্বের ডই হাজার ব্য ও গাভা বাহিব হইত, এখন সেই গ্রাম হইতে
ছইশত বাহির হয় কি ন। সন্দেহ।

माना कारत अत्तरम श्रीकां जित्र अत्नि अत्र मरशाहाम करें उठक । इसमिनिश्च वर्ध-शिशामात करन व्यानक द्यानके शानावरनत माठे ক্ষিক্ষেত্রে প্রিণত চট্যাছে। পূর্বে প্রত্যেক গ্রামেব নিকটে শত শত বিধা ভূমি অক্নষ্ট অবস্থায় পতিত থাকিত। স্বাজ্ঞ কাল সেঠ সকল ভূমিৰ পরিমাণ মতান্ত সমূচিত হুহয়াছে: এমন কি, মনেক গ্রামে গোচাবণেব ভূমি নাই বলিলেও বোপ হর অত্যান্তি হর না। উন্মৃত্ত প্রায়বে স্বচ্ছনেশ্ বিচরণের অভাবে গোজাতিব স্বাস্থাহানি ঘট্টয়াছে; তাহারা নানাপ্রকাব দংক্রামক পীড়ার মাক্রাম্ব হইরা হানস্বাস্তা ও কল্পাল্যার হইরা পড়িতেছে। গোচাবণ-ক্ষেত্রের মভার হওয়াতে গুহস্তকে গভী-পালনের জন্ম অধিক ব্যয়ভাব বহন করিতে হইতেছে। নুমস্ত দিন গ্রু গোশালায় বাঁধা থাকিলে গোনেবার জন্ম অধিকতর পরিশ্রম করিতে হয়; নেরূপ পবিশ্রম করিবাব সময় ও প্রবৃত্তি অনেক গৃহত্তের নাই। কাজেই চথ্নের জঞ গাভী পালন করিবাব প্রথা গৃহত্ত্বে মধ্যে হ্রাস পাইতেছে। পূর্বে সকল গৃহস্থেব বাটীতেই গাভী ছিল; এমন কি, মনেকে গাভীশুন্ত বাড়ী শ্বশানতুলা বলিয়া মনে করিতেন। কিন্তু এখন অধিকাংশ গৃহজের বাটীতেই গাভী নাই ; দেশ যেন সত্য সত্যই শ্মশান হইয়াছে।

ভানাদের পূর্বপ্রথপ গো-পালন ও গো-দেবার নানাপ্রকাব উপায় অবগত ছিলেন। আমরা দেই সকল উপায় জানি না অথবা জানিলেও অনেক সমর ভাহা পালন করি না। সেকালে প্রায় সকল পদ্লীতেই ব্যায়সী মহিলা বা প্রাচীন পূরুবগণ গো-পাড়ার নানাপ্রকার উষধ এবং মুষ্টবোগ জানিখেন। কাহাবও বাটীতে গাভীর পীড়া হইয়াছে শুনিলে, তাহাবা তংক্ষণাং দেই বাটীতে গমন কবিতেন, এবং পীড়িত গাভাব চিকিংসায় প্রবৃত্ত হংতেন। একাণে সেরুপ অভিজ্ঞ বন্ধ-বৃদ্ধা আর নাই। যদি কথনও গ্রাদির পীড়া হয়, তাহা হইলে গো-বৈত্যেব শরণ লইতে হয়। গো-বৈত্যও সকল প্রামে নাই; স্থাতবাং গাভীর পীড়া হয়ল গৃহস্তকে বড়ই বিপায় হইতে হয়। দেই জন্ত অনেকেই গাভা পালন কবিতে অভিলাধী নহেন।

ইদানীং গো-ছতার সংখ্যাও পুরুষাপেক্ষা অনেক বাড়িয়াছে। পুরুষ কলাচিং উংস্বাদি উপলক্ষে মুসলমানগণ গোব্ধ করিতেন। হিন্দুস্থানে আগ্যানের প্র হইতে অধিকাংশ মুসলমানই গোনাংস-ভক্ষণে বিব্ত কইনা ছিলেন। যে স্কল হিন্দুস্থান মুসলমান-ধল্ম গ্রহণ করিয়া ছিলেন, ভাঁছাবাও গোমাংস ভোজন করিতেন না। স্ক্রবাং মুসলমানগণ গোমাংসাহাবী হইলেও পুরেষ ভাবতে অধিক গোহ্ত্যা হইত বলিক্ষা বোধ হয় না।

আমরা পূর্বেই বলিরাছি যে, দেশের ক্ষিকার্যের উন্নতিনাবন ক্ষিত্রে হইলে, গরুর সংখ্যা বৃদ্ধি কবিতে হইনে। এই ব্যাপালে যিনি কিছুমাত্র সাহার্য করিতে পারিবেন, তিনিই ভারতবাদীর ধস্তবাদের পাত্র। গোমাংসাহারী হইলেও দূরদর্শী বহু মুসনমান, গোমাংস-ভোজনের বিক্লফে অভিনত প্রকাশ করিয়া থাকেন। সংখ্যার অন্তপাতে হিন্দ্ অপেক্ষা মুসলমানের মধ্যেই ক্ষরিজীনী অধিক। স্ক্তরাং গোজাভির উন্নতি ও সংখ্যাবৃদ্ধির প্রতি মুসলমানমাত্রেরই দৃষ্টিপাত করা কর্ত্বা। ভারতীয় গোজাতির রক্ষার জন্ম আমাদের এই বিশাল দেশের ভিন্ন ভিন্ন জেলার স্বদেশহিতৈথী ব্যক্তিগণ কি করিতেছেন, তাহা পরবন্তী করেক পংক্তি পাঠ করিলেই ব্যক্তিত পারা যাইবে।

পঠিকগণের মধ্যে অনেকেই শ্রীণুক্ত হাসানন্দ বর্দার নাম অবগত আছেন। ইহার নিবাস বেলুচিছানে। ইনি গোরক্ষার জন্ত সর্বস্থ উংসর্গ করিয়ছেন বলিলেও অত্যক্তি হয় না। কলিকাতার গোপগণ জতি সন্ধান্তিনে বহলংথাক গদ্ধ রাশিতে বাবা হয় দেখিয়া, হাসানন্দ বহুং কাঁচড়াপাড়ার নিকটে অতি বিস্তীর্ণ একথণ্ড ভূমি সংগ্রহ করিয়া শ্রীক্ষণ্ণ গোশালা' নামে একটি স্থারহং গোশালা প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন, এবং হাওড়ার অনুববর্ত্তী লিবুলা নামক স্থানেও আর একটে গোশালা প্রতিষ্ঠার চেইটা করিতেছেন। ভূমি সংগৃহীত হইয়াছে, কিন্তু অর্থাভাবে উহার কাজ একরূপ বন্ধ আছে। যে জাতি গাড়াকে দেবতা বলিয়া মনে করে, সেই হেনুর দেশে গাভীর স্বাস্থ্য ও উয়তিকরে আরব্ধ কার্য্য অর্থাভাবে যদি নম্পূর্ণ না হয়, তাহা হইলে আমাদের পক্ষে অধিকতর লক্ষার বিষয় আর

পশ্চিম-ভারতে অন্ত একজন সন্তদ্য ব্যক্তি ভারতীয় গোজাতির রক্ষার জন্ত বন্ধপরিকর হইয়াছেন। ইহাব নাম মিঃ কে, এদ. জনাওয়ালা। ইনি হিন্দু নহেন, লগারদীক। পাঠকগণের বোধ হয় য়য়ণ থাকিতে পারে য়ে, গত বংসর ইনি ভারতে গোহত্যা-নিবারণের উদ্দেশ্যে মহিমময় ভারত-মন্তাটের নিকটে একটি আবেদনপত্র প্রেরণের জন্য বহুলক্ষ ভারতবাসীর স্বাক্ষরসংগ্রহে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন। সংপ্রতি মিঃ জসা-ওয়ালা ইংলতে গনন পূর্বক তথার ভারতীর্য গোরক্ষার জন্ত আন্দোলন এবং জনসাধারণের সহায়ভালাভের চেষ্টা করিতেছেন। এজন্য লগুনে একটি স্নিতিও গঠিত হইয়াছে। ঐ স্মিতি হইতে সংপ্রতি মহামান্ত বর্ড হাঙিংজ বাহাছরের নিকটে একখানি আবেদনপত্র প্রেরিত হইয়াছে।

বন্ধীয় গবর্ণরের নিকটেও কলিকাতার মাহিষ্য-সমিতি এক আবেদন-পত্র পাঠाইग्राष्ट्रन । উত্তর-পশ্চিম প্রদেশে লক্ষ্ণোনিবাসী বাবু আনন্দবিহারি লাল মহালয়ও ভারতীয় গোরকা এবং তাহাদের উন্নতিবিধান জন্য বিশেষ চেষ্টা কারতেছেন। উল্লিখিত বিলাতি সমিতির সভাপতিরূপে মি: জ্বা ওয়ালা বড়লাট বাহাত্বকে জানাইয়াছেন যে, ভারতবর্ষের ন্যায় ক্লযি-প্রধান দেশে পোরক্ষার উপকারিতা সম্বন্ধে গ্রণমেণ্ট অজ্ঞ নতেন। গবর্ণমেন্ট যথন ক্রয়ককুলকে রক্ষা করিবার জন্য নানাপ্রকার রাজবিধান প্রণয়ন এবং ক্ষবিবাক প্রভৃতির প্রতিষ্ঠা করিতেছেন, তথন ক্রফের প্রধান महाष्ट्र भाषाज्ञित तका ७ छैश्कर्ष माध्यात क्रमा १ भवर्गस्य महाह হওয়া উচিত। তিনি হিদাবপত্র করিয়া দেখাইয়ছেন যে, অষ্টেলিয়া ও নাডাগান্তর প্রভৃতি দেশ হইতে বরফে ঢাকিয়া যে গোমাংস এদেশে আমদানী করা হয়, যদি গোরা দৈনিকদিগের জন্য গ্রণ্মেণ্ট দেই মাংস ব্যবহাৰের ব্যবস্থা করেন, তাহা হইলে ব্যয় অন্ন হইবে, এবং গোরারাও ক্রম ও কৃশ গরুর মাংদের পরিবর্ত্তে অপেক্ষাকৃত ক্রষ্টপুষ্ট ও স্বস্থকায় গরুর মাংস ভোজন কবিতে পাইবে। বিদেশ হইতে মাংস ভারতে আমদানী করিবার জন্য কোম্পানি বা বাবসায়ী সম্প্রদায় গঠিত হইয়াছে। महिलाग भवर्गमणे अवः अनुगाशावन मिः अमानुगाना अहे श्रेष्ठात সমর্থন করিয়াছেন।

মিঃ জদাওয়ালার বিতীয় প্রস্তাব এই যে, প্রতিবংসর ভূমি সংগ্রহ করিয়া উহা গোচারণের জন্য নির্দেশ করিতে হইবে। গোচারণের জন্য পর্যাপ্ত ভূমি সংগ্রহ করিতে না পারিলে, এ দেশে গোজাতির উরতি কিছুতেই সাধিত হইবে না। এই উদ্দেশ্তে তিনি ভারতের জনসাধারণের নিকট প্রার্থনা করিয়াছেন। মিঃ জসাওয়ালা বলেন যে, যদি ভারত-গবর্গমেণ্ট তাঁহার এই প্রস্তাবে সম্মত হয়েন, তাহা হইলেই তিনি জনসাধারণের নিকট হইতে অর্থসংগ্রহে প্রযুক্ত হইবেন, নচেৎ নহে। যে

উপায়ে তিনি অর্থসংগ্রহের সংকল্প কবিয়াছেন, তাহাও তিনি তৃতীর্ম প্রস্তাবরূপে ভারতবাদীক নিকটে বিশেষতঃ ভারতের হিন্দু সম্প্রদায়ের নিকট উপস্থাপিত কবিয়াছেন। সংগৃহীত টাকা তিনি গ্রন্থানেটেব হস্তেই নাস্ত রাখিতে চাহেন, এবং উচাব স্বায়েব ভার আংশিক রূপে বা সম্পর্ণরূপে গ্রন্থান্টকেই প্রদান করিতে ইচ্ছা কবেন।

মিঃ জ্বসাওয়ালা এই তৃতীর প্রস্তাবে হিসাব করিয়া দেশাইয়াছেন যে, ভাবতে যত হিন্দু আছেন, তাঁহাদেব শতকবা পাঁচজন যদি প্রতাহ এক পর্না হিসাবে অথবা বংসরে ছয় টাকা কবিয়া গোৰক্ষার জন্য দান করেন, তাহা হইলে প্রতি বংসবে প্রায় সাত কোটা টাকা সংগৃহীত হইতে পাবে। অবগু গবর্গনেণ্ট সম্মত হইলে এই টাকা রাজপুক্রগণের দার। সংগৃহীত হইবে। ঐ অর্থে গোচারণের ক্ষেত্র ক্রন্ম এবং ছভিক্ষেব সম্বেধ্বাদির জন্য থাদাদ্বা ক্রন্ম কবা হইবে।

ভারতবাদী হিন্দু কেন গোজাতিকে দেবতাজ্ঞানে পূজা করে, গোজাতির অবনতি ও সংখ্যাহাসের সহিত ভাবতবাদীর শারীরিক ও আর্থিক অবনতির সম্বন্ধ, প্রভৃতি বিষয় ইংলণ্ডের জনসাধারণকে বুরাইবার জন্য মি: জ্যাওয়ালা ইংলণ্ডের গমন করিয়াছেন। তাঁহাব চেষ্টা বিক্লাহ্ম নাই। ইংলণ্ডের অনেকেই তাঁহাকে কায়্মনোবাক্যে দাহাম্য করিতে প্রতিশ্রুত হট্যাছেন। গোহত্যা নিবারণের জ্র্ম্ম হিন্দু বে সর্ক্ষেপণ করিতে কুন্তিত হন না, ইহাও তিনি বিলাতের জনসাধারণকে বুঝাইয়া দিয়াছেন। এখন যদি ভারত গ্রেণিকেট তাঁহার প্রভাব গ্রাহ্ম হিন্দু সমাজ গোর্ক্ষার জ্ব্যুত আর্থা করিতে অগ্রেসর হার্মেন, তাহা হটলে এদেশের গোঞ্চাতির উয়তির আশা করা যাইতে পারে। এ বিষয়ে যদি কেহু মি: জ্ব্যান্তর্মালার সহিত পত্র-ব্যবহার করিতে ইচ্ছা করেন, তাহা হটলে তিনি 'Mr. K. S. Jasawalla, ধ্ব্য, Courthope Road, Hampstead, London, N. W.'— এই

ঠিকানায় পত্র লিথিতে পারেন। গবর্গমেন্ট এই কার্য্যে হস্তক্ষেপ না কবিলে তিনি অর্থ-সংগ্রহের চেষ্টা করিবেন না। আমরা আশা কবি, লর্ড হাডিংছ বাহাতর এদেশে পো-জাতির উপকারিতাব বিষয় চিম্তা করিয়া মিঃ জ্বসাওয়ালাব প্রস্তাবে কর্ণপাত করিবেন। সম্প্রতি ভারত গবর্গমেন্ট অবাধ গোহতা৷ আইনদারা নিবিদ্ধ করিবার জন্য মিঃ জ্বসাওয়ালার আবেদন-পত্রটি বিশেষ মন্তব্যসহ আমাদের ভারত-সচিব-সন্দান -বিশাতে পাঠাইয়া দেন। ভারত-সচিব লর্ড ক্রু মহোদয়ও তাহা সমাট-সদনে স্থবিচার জন্য স্থাপিত কবিয়াছেন। এখন আশা হুইতেছে যে, ভারতীয় গোবংশের উচ্ছেদ কতকটা রহিত হুইতে পারে।

এককালে ভারতে পোজাতিব অবস্থা অতিশর উন্নত এবং আশাপ্রদ ছিল; কাজেই প্রাচান হিন্দুগন সেই সকল গাভী হইতে প্রচুর কৃষ্ণ দোহন করিয়া ঘৃত-নবনাত-চগ্ধ-দধি আদি গো-জাত উত্তম সামগ্রীতে দেহ পরিপুষ্ট করিয়া সমাহিত্যনে ভগবানের অর্চনা করিতে পারিতেন। এখন সেই হিন্দুব সন্তানগণ নিঃস্ব, বোপে জীর্ণ-শীর্ণ কলেবর ও পাণে নিমজ্জিত হইরা ভারতভূমি হইতে ক্রমশং লোপ পাইতে বসিয়াছেন। ইহার প্রধান কারণ—পৃষ্টিজনক খালাভাব। এ খালাভাবের কারণ কি দুইহার কারণ—হিন্দুর সনাতনধর্ম হইতে আমাদের চ্যুতি এবং ক্রমিক খালান। গো-বক্ষা, গো-পালন গো-সেবাই আমাদের সনাতন ধর্ম্মের অন্ধর্মত। তাহা হইতেই অধর্মের অর্জন হইতেছে। কাজেই অনাবৃষ্টি, জাহার কলে ঘুর্তিক ও প্রেণ, এবং তাহার প্রকোশে কোটী কোটি লোকের জকালমূত্য়।

বে জাতি গাডীকে দেকতা বলিয়া মনে করে,—গো-মাতা বলিয়া পূঞা করে, সেই হিন্দুর দেশে গাডীর স্বাস্থ্য ও উন্নতিকল্লে আনন কার্য্য অর্থাভাবে যদি সম্পূর্ণ না হয়, তাহা হইলে আমাদের আর অধিকতর লক্ষা ও পরিতাপের বিষয় কি হইতে পারে ? ভারতের ফরিকার্য্যে উয়তি করিতে হইলে গো-সংখ্যা রৃদ্ধি করিতে হইবে। গোরকার উপকারিতা সম্বন্ধে ভারত গবর্ণমেন্ট অন্ধ নহেন। ক্রমককুলকে রক্ষা করিবার জ্বন্থ ক্রিয়োল-বিষয়ক পুস্তক প্রণয়ন ও ক্রমিবাান্ধ আদি ছাপন করিয়া ভারত গবর্ণমেন্ট দেশের উৎকর্ষ সাধন করিভেছেন; কিন্তু ক্রমকের প্রধান সহায় গোকুল-রক্ষার জন্ম বিশেষ চেষ্টা কেন না করেন ? বড় বড় হোমরা-চোমরাদের এদিকে গবর্ণমেন্টের দৃষ্টি আকর্ষণ করা উচুত নহে কি ? ভারতীয় গোজাতির রক্ষার নিমিন্ত মিঃ জাসাওয়ালা লগুন নগরে সমিতি স্থাপন করিয়া, ভাহার নাম দিয়াছেন—"British Association for the Protection of Indian Cattle." যাহা আমরা ভারতে বিয়য়া করিতে পারি না, মিঃ জনাওয়ালা বিলাতে গিয়া ভাহা করিতেছেন।

লর্জ উল্সলি, সার রবার্ট ব্যাল্ফোর, লর্জ রোনাল্ডলে, লর্জ টেন্টারডেন, ভাইকাউন্ট হিল, জর্জ গ্রিন্থড, সার মবিস লেভা, রাইট অন: লর্জ কালথর্প প্রভৃতির ন্যায় বিলাতের মান্ত ও বিলাতা পার্লিয়ামেন্টের নেতাগণ মিঃ জ্সাওয়ালার উল্লিখিত বিলাতা সভার সভাগণের মধ্যে পরিগণিত হইয়া ভারতবাসীর মনে আশার সঞ্চার করিতেছেন। এই সত্দেশ্রে জ্সাওয়ালা মহোদয় বিগত সনের ৪ঠা অক্টোবর তারিথে বে পত্র আমাকে পাঠাইয়াছেন, তাহার কিয়দংশ আমার স্বদেশীর আত্গণের অবগতির জন্ত নিমে প্রকাশ করিলাম। মিঃ জ্সাওয়ালা এই প্রস্তাব স্বয়ং ভারত-সভাটের সমক্ষে নিবেদন করিলে, তাহার আদেশক্রমে একটা আবেদন-পত্র বড়লাটের সভায় প্রেরিত হইয়াছে। মন্তব্যসহ তাহা ভারত-সচিব সমক্ষে যাইলে আমাদের সহাদয় ভারত-স্ক্রাট বাহাছর স্বয়ং তাহা মন্ধ্রি-সভায় আলোচনা করিয়া সমগ্র ভারতীয়

ক্লবকগণের পক্ষে যাহা হিতকর হয়, তাহা করিবেন বলিয়া **আখা**স দিয়াছেন। মি: জসাওয়ালা বলেন,—

"In course of time, I shall be forwarding an appeal to all my countrymen to join and further a scheme by which the slaughter of Indian cattle (specially cows) may be put in a practical form to which I draw your attention and request you to read and circulate it as widely as you can by the help of the Calcutta Vernacular dailies among the masses who are mostly agriculturists. To accomplish our object it is imperative we should show the Government how much the people of India are willing to contribute."

এই সকল কাজের জন্ম অর্পের প্রয়োজন। যাহারা হিন্দু এবং যাহারা এই সদার্ম্ভানে সহায়ভূতি প্রকাশ করেন, তাঁহারা আহ্নন, বদ্ধপরিকর হুইয়া সাহাযাদান করুন। আর বসিয়া থাকিবার সময় নাই,—গোমাতাকে রকা করুন। মিঃ জসাওয়ালা বলেন,—

'I have been doing my utmost for the noble cause but without further help I cannot go on. If charitably disposed persons would come forward and assist me financially, I could take heart to persevere.'

বে কাজ বোদাই আরব্ধ করিয়াছে, তাহা সমগ্র হিন্দুর কাজ।
ভাহাতে কি বঙ্গবাসী সাহায্য করিতে পারেন না ?

আর একটা প্রধান কারণ বশত: আমাদের এই নিঃস্বদেশে শত শত গাভী ও গোবংস প্রতাহ অকালে কালকবলে পতিত হইয়া থাকে। বিগত ৩০ বংসরের মধ্যে ভারতের বহু চর্ম-বাবসায়ী প্রভূত ধনশালী হইয়াছে। তাহাদের এই ধনাগমের প্রধান সহায় দেশী চামার বা মুচীগণ। তাহাবা অনেক সময়ে চারপক্ষেত্রে গরুর পালে বিষমিশ্রিত শালসামগ্রী ছড়াইয়া পালকে পাল বিষপ্রয়োগে হনন করিয়া পাকে। ইহাদের হাত হইতে আমাদেব দেশের গোকুলকে বক্ষা করার কোন উপায় সত্তর উদ্বাবন কবা নিতান্ত প্রয়োজন হইয়া দ্বিভাইয়াছে।

অনেক স্থানের জমীদারগণ চামাবদের নিকট হইতে এইরপে গোমহিষাদি গৃহপালিত মৃতজন্তব জনা নির্দিষ্ট 'ভাগাড়' নীলামে চড়াইয়া
প্রতি বৎসব পাচুর অর্থ সংগ্রহ করিয়া পাকেন। আমি জানি, বিহাবের
বাচ় সব-ডিবিজনে এই অহিন্দুব বাবসায় লইয়া কিছুকাল পূর্বের খুবই
বিবাদ বিসম্বাদ চলিয়াছিল। এই সকল সংকার্যো আমাদেব দেশেরই
লোকগণ প্রধান অস্থবায় হুইয়া দাঁড়ান। ইহাব অপেকা হিন্দুর পক্ষে
আর অধিক পবিতাপের বিষয় কি হইতে পারে
প্রতিষ্ঠান চামারদিগের
হস্ত হইতে ভাবতীয় গোমাতার রক্ষা-বিধানের বাবজা করার বিশেষ
প্রয়োজন হইয়া দাঁড়াইতেছে, এবং দেশীয় জমীদারবর্গেরও উচিত যে, এ
বিষয়ের বিশেষ সাহাযা করেন।

দেশে গোড়গ্ধ যেরূপে ছম্মাপা হইয়া দাঁড়াইতেছে, তেজস্কর বলদ বিনা কৃষির যেরূপ দিন দিন অবনতি হইতেছে. তাহাতে বেশ বুঝা যাইতেছে যে, ভাবতীয় গোজাতির বক্ষার বিশেষ চেপ্তা আশু না করিলে দেশের হানি অতাধিক মাত্রায় সংঘটিত হইবে। ফলতঃ ভারত গ্রথমেণ্ট কর্তৃক গোরকা সম্বন্ধে একটা আইন বিধিবদ্ধ হওয়া আশু প্রয়োজন হইয়াছে।

বঙ্গের মান্তগণ্য জমীদার সম্প্রদারের মধ্যেও এ-বিষয়ে বেশ আলোচনা ও আন্দোলন চলিতেছে। মুর্শিদাবাদের নবাব বাহাতব, মাননীয় মহারাজ মণীক্রচক্র নন্দী, মহারাজাধিরাজ বাহাত্র বর্দ্ধমান, টিকারীর মাননীয় মহারাজ-কুমার, চক্দীঘির খ্যাতনামা ভূসামী রায় ললিতমোহন সিংহ, কারু ভূপেক্রনাথ বস্তু, ডাঃ দেবপ্রসাদ সর্বাধিকারী প্রভৃতি মহোদয়ণণ মহামান্ত গভর্ব-সদনে গিয়া তাঁহার নিকট হইতে যেরপে আখাসবাকা প্রাপ্ত হইয়াছেন, তাহাতে বেশ বুঝা যায় যে, তিনি আয়ল ও
দেশে প্রচলিত আইন অল্পদেশে প্রচলিত করা অসঙ্গত বিবেচনা করেন
না। কলিকাতা কপোরেশানের কমিশনার, নির্ভীক দেশহিতেষী,
গোজাতি-বংসল ও গো-সেবক, চেত্লাব থাাতনামা জমিদার বাবু
অম্লাদন আটা এ বিষয়ে কি কবিয়াছেন ও করিতেছেন, তাহা প্রতাক
দেশহিতেষী হিন্দু এবং রুষিবক্ষক ভাবতবাসীর অবগত হইয়া তাঁহাকে
অশেষ প্রকারে সাহায্য দান করা কর্ত্র্য। বিলাতে মিঃ জাসাওয়ালা
এবং ভাবতে পণ্ডিত হাসানন্দ বর্মা, ও বাবু সম্লাধন আটোর মত
লোককে প্রত্যেক ভাবতবাসীর বিশেষ সাহায্য দান করা একান্ত কর্ত্রা।
মহাত্ম হাসানন্দ বন্মা লিলুয়ায় শ্রীরুষ্ণ গোশালা স্থাপন কবিয়া ভারতীয়
গোজাতির মহাহিতসাধনে ব্রতী হইয়াছেন। তাঁহার উদাহরণ রাজামহারাজগণের সর্বতোভাবে অন্প্রবণীয়।



নবম পরিচ্ছেদ।

গো-জনন।

গোজাতির উন্নতিসাধন করিতে হইলে করেকটি বৈজ্ঞানিক নিয়মের প্রতি বিশেষ লক্ষ্য রাখিতে হয়। এ বিষয় আমি এই পরিচ্ছেদে সমাক্ আলোচনা করিবাব পূর্ব্বে সভ্জদত্য পাঠকগণকে অনুরোধ করিতেছি বে, তাঁহারা যদি এ বিষয়ে সবিশেষ জ্ঞানলাতে ইচ্ছুক হন, তাহা হইলে নিম্নলিখিত পুস্তক বা রিপোর্ট পাঠ করিয়া ক্রতার্থ হইবেন :—(1) Youatt's Cattle and their Breed. (2) Darwin's "Origin of Species."
(3) Government Agricultural Reports. (4, Wallace's "Farm Live Stock in Great Britain." (5) Nelson and Mayo's "Care of animals." (6) "American Guernsey Cattle Club" Reports. (7) American Dairy Farming Reports of Missessippi, Washington, Ohio, New York, Cornell University Agricultural College Bulletins.

বলদ-গ্রহণ।—গাভীজাতি "বাছুর" অবস্থা অতীত হইলে "বক্না" অবস্থা প্রাপ্ত হয়, এবং "বক্না" হইতে পূর্ণবিয়স প্রাপ্ত হয়য় "বাঁড়" লয়, অর্থাং তাহাদের প্রক্ষ-সংসর্গের স্পৃহা বলবতী হয় এবং পু-সংসর্গ করিয়া থাকে। ইহা প্রায় ছই দস্তোলগনের পরে হইয়া থাকে। এই সময়ে, বেমন স্ত্রীজাতি পূর্ণবিয়য়া হইলে পুস্পবতী হয়, সেইরূপ গাভী বা বক্নাও পুস্পবতী হয়। এই সময়ে ইহারা গর্ভধারণে সক্ষম হয়। গোজাতির এই গর্ভধারণের সময় কতকগুলি বাহ্যিক চিহ্ন লক্ষিত হয়। তাহা দেখিয়া গোপালক বা গৃহস্থ ব্ঝিতে পারে য়ে, বক্নার প্ং-গো বা য়াঁড় লইবার বা প্রক্ষ-সংগমের স্পৃহা বলবতী

হইয়াছে। এই সময়ে গাভী অন্থির হয় (restless), লেজ যোনিদ্বারের উপর দোজাভাবে পড়িয়া থাকে না: মলমূত্র অবিশ্রাম্ভ ত্যাগ করে; উঠা-বদা করে, দীর্ঘনিশ্বাদ ত্যাগ করে; যোনি (vulva) ঈষৎ ফুলিয়া উত্তেবা পরিবর্দ্ধিত ও চকচকে হয়। গাভী গ্রম হইলে (যদি ছগ্ধদাত্রী হয়) হ্রশ্ন অতি অন্ন পরিমাণে দেয় বা দেওয়া এককালীন, ঠাণ্ডা না হওয়া প্রয়ন্ত, বন্ধ করে ; লাখি ছড়ে ; আহার একরূপ ত্যাগ করে ; মুখ দিয়া লালা ভাঙ্গে: এবং উহার যোনি হইতে একপ্রকার সাদা তেলা পদার্থ (slimy discharge) নির্গত হইতে থাকে। গাভী এই সময় বজঃস্বলা হয়। এইরূপ তাহার। প্রত্যেক মাদে একাদশী, অমাবস্যা বা প্রণিমার সময় তিনদিনবাপী বজঃস্বলা হইয়া থাকে। কোন কোন গাভী প্রসবের ৫ সপ্তাহ মধ্যে পুনশ্চ ''ধাঁড়'' লয়, কিন্তু ভারতীয় অধিকাংশ গাভী সচরাচর প্রসবের তিন মাস পরে যাঁড় লয়। পুনশ্চ কোন কোনটি বংসর অন্তে বলদ গ্রহণ করে। এই প্রথম রজঃস্বলাকালীন গাভীর বিশেষ যত্ন লওয়া প্রয়োজন, এবং তাহাদিগকে পালের অপরাপর গাভী বা যাঁড় হইতে পুথক রাখা কগুরা। এই সংজনন-ক্রিয়ায় পা**লের** সর্ক্ষোংরুষ্ট বংসকে ঘাঁডে পরিণত করিয়া তাহার দ্বারাই সংজ্ঞান-ক্রিয়া বা পাল ধরাইবে। ক্রমক গ্রুবতী গাভী ক্রয় করা অপেক্ষা স্বীয় পালে ২১৪ বৎসরের মধ্যে নির্বাচন দ্বারা উৎকৃষ্ট চন্ধবতী গাভী উৎপাদন করিয়া লইলে অধিক লাভজনক মনে করিবে। সংজনন-ক্রিয়ায় অত্যন্ত ছগ্ধবতীর শাবককে নির্বাচন করিলেই ২া৫ বৎসরের মধ্যে অতি নিরুষ্ট গরুর পালও অতৃংকৃষ্ট হইয়া থাকে। এ সম্বন্ধে পরে দিতীয় ভাগের গর্ভস্রাব-পর্য্যায়ে আমি সবিশেষ আলোচনা করিয়াছি। অধ্যাপক ভথালেশ সাহেবও তাঁহার "Farm live stock in Great Britain" নামক পুত্তকের- ১৯০৭ সালের সপ্তম সংস্করণের ৩২৯ পৃষ্ঠায় এ কথা শ্বষ্টই বলিয়াছেন। কোন কোন গাভী অকালে গর্ভমোচন করে। এ বিষয়ে চিকিৎসাধ্যায়ের "Abortion"-পর্যায়ে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছি। গর্ভস্রাব হইলে বাই-কার্কনেট অব সোডার (bicarbonate of soda) দ্রাবণ (solution) দ্রারা গাভীর পশ্চাৎভাগ এবং বানিদ্বার ধৌত কাবরা দিবে। বিলাতের বিখ্যাত গো-উৎপাদক এবং গোচিকিৎসক মিঃ Wm. Davis বলেন বে, গভ্সাবে নিম্নলিখিত দ্রব প্রস্তুত করিয়া ধোনিদ্বারে পিচ কারী (inject) দিবে:—

Perchloride of Murcury ... ১০ গ্রোপ ৷
জীবস্তাক্ষ ভল ... ১ কোৱাটি ৷

ইহা মিশ্রিত করিয়া যোনিবারে এবং মাঁড়েব পিধানে (sheath) পিচকাবা দিলে বিশেষ উপকার হুইয়া থাকে।

জলবায়ুর লেবে কোন কোন গাভা সহজে খাঁড লয় না বা 'বিল্ল' লইলেও তাহা অকালে মোচন করে। ইহা একরূপ বাাধি: সেই কার্ড সংগ্ৰেৰ প্ৰই গাভাটিকে এলপভাবে দৌড ক্ৰাইল আনিৰে, বাহাতে সে কিছু ক্লান্ত হয়, এবং কিয়ংকণ পূবে একট স্তুত্ত হুইলেই ভাহাকে নদী বা প্রক্রিণীতে স্নান কব্ ইয়া দিতে হয়। হানের প্রের মন্তকে এবং শক্তে বেশ কবিয়া খাটি দারিয়াব তৈল মর্লন করিয়া দিতে হয়। যে গাভা ''বলদ'' লয় না, ভাষাও ভাষাৰ এক প্ৰকাৰ বাহি। ভাষাৰ জন্ম ভাষাকে গোল, ভুৱী এবং গনেব ভুৱী বা চোকৰ বেশ কৰিয়া পাওরাইতে হয়, এবং কোদশা, পূর্ণিনা বা অমাবস্তা দেখিয়া তাহার ২১১ দিন প্রের্ব একটি কুরুট-সড়ের কুম্বন পাওয়াইয়া দিতে হয় : কিছা ১০১৫টি শ্ৰেতকৃত গুঁড়া কৰিয়া প্ৰিয়াইয়া দিলে দেই গাভী নিশ্চৰ প্রশ্রকালনধ্যে ''ষ্টাড়'' লইবে। এইরপ গাভীকে মাঠে দেওয়া কর্তবা, ষাহাতে সে নির্মাল বায় দেবন কবিতে পারে। ২৩ সপ্তাহ বনৌলা বা কার্পাস-বীজ সিন্ধ, জোয়ারের ভুষা বা শস্তের সহিত, ঠাণ্ডা গাভীকে শাওর্টলে, গাভী গরম হুটুরা ঘাঁড় নইবে। কোন কোন স্থানের

ক্লমকর্গণ গাভীকে বলদ গ্রহণ করাইবার জ্বন্ত সামান্ত পরিমাণে কপোংবিষ্ঠা এবং বোলভাব বাদাব ছাতা বা বাদা, দামান্ত গমেব দিদ্ধ ও গমের ভূধির সহিত খাওয়াইয়া পাকে। ইহাতে স্থিপত ফললাভ ছইতে ৰেখা গিলাছে। মতলবে মৰ এবং মনচোলাই কবিবাৰ ভাটিখানার পরিত্যক্ত মহুরা ফল (distillery refuse) খা ওয়াইলে গাভীকে সম্বর বঁড়ে লইতে দেখা গিয়াছে। ধাঁড়ে লইবার পুর্বে গাভী গরন হয়, মূহমূত ভাকিতে থাকে, প্রস্রাব ও মলত্যাগ কবে, এবং উহার লেজ যোনিদাবের উপব সোজা না পড়িয়া দাড়াইয়া পাকে। ইহাকে ই॰রাজি ভাষায় (Estrum বা "when the cow calls" ব্লা (Lt. Col. James's "Cows in India" পুস্তকথানি দেখা) গো-উৎপাদন সম্বনে "Warneld's Theory and Practice of Cattle breeding, Mandel's Principles of Heridity by Bateson, Sir Richard Owen's Anatomy of Vertebrates, Blandford's Mammalid নামক পুস্তক গুলি বিশেষরূপে পঠনীয়। Mandel তাঁহার ৰগৰিখাত পুস্তকে Galtonএৰ উক্তি উদ্ধৃত কৰিয়া বলেন:—'In 1897 Galton definitely enunciated his famous law of heredity, that to the total heritage of the offspring the parent contributes 1/2, the grand parent 1/4, the great grand parent 1/8, and great great grand parent To and so on, the total heritage being taken as unity." তাহা হইলেই দেখা যাইতেছে যে, এক যাঁড়কে দিয়া সঙ্কর জ্ঞান করাইলে অধন্তন যটবংশের সঙ্কর শাংক আদি পিতামাতার সদৃশ হয় অর্থাৎ ৯৮ per cent, pure original শোণিত সম্ব-দেহে বিরাজ-মান থাকে। কোন কোন বৈজ্ঞানিকের মতে মেণ্ডেলের আবিষ্কৃত থিওরি (নীতি) পণ্ড-জগতে প্রযোজা নহে।

গাভী যাঁড় লইবার পরে অবসাদযুক্ত হইয়া পড়ে; সেই কারণে 🗗 সময়ে ইহাকে প্রচুর তৈলাক্ত থান্ত, থইল, ইত্যাদি দেওয়া নিতান্ত অকর্তব্য। তাহা হইলে তাহারা পুনশ্চ গ্রম হয় (comes in heat) এবং ক্রামোচন করে। কোন কোন গাভী ২. ৩. বা ৫ মাস পরে, এমন কি পরিণত গর্ভাবস্থায় (in advanced stage of pregnancy) জ্রণমোচন (abort) করে। ইহা অপর গাভীদের পক্ষে সংক্রামক বলিয়া বোধ হয়। দেইজন্ম ত্যক্ত ভ্রণটিকে ভন্মীভূত বা গর্ভ খনন করিয়া পুঁতিয়া ফেলা একান্ত কর্ত্তবা। তদ পবে গোশালা বা গোয়ালটিকে ভাল করিয়া ফিনাইল বা কার্বোলিক দিয়া পরিষ্কাররূপ ধৌত করা কর্ত্তবা, যাহাতে কোনরপ অপকারক অণু (bacilli) জন্মিয়া অপরাপর গাভীগণের হানি না করিতে পারে। রুগ্ন গাভীটিকে অপরাপর গাভীর নিকট হুইতে স্বতন্ত্র স্থানে বাধিয়া রাখা ক্রন্বা। জ্রণ-লালাদি সমস্ত নির্গত **চ্টলে পর পীড়িত গাভীটির যোনিদার এবং জরায় "জের ফ্লুইড**়" (Jay's Fluid) বা ফেনাইল ঈষচ্চ্চ কলে নিশ্রিত করিয়া বেশ করিয়া ধৌত করিবে, অর্থাৎ জননেন্দ্রিয়ের গুইপার্ম, পালাম, বাঁট ও পশ্চাৎভাগ বুকুশ দিলা বৌত কবিয়া, তাহা মুছিয়া, প্ৰে যে প্ৰয়ন্ত আৰু থাকিবে সেই প্রয়ন্ত শীতল জনে নিশ্রিত ক্রিয়োলিন (Creolin 1%) দিয়া ২া০ ঘণ্টা অস্তর "ভেজাইনাল্ দিরিঞ্" দারা জরায়ু ধৌত করিয়া দিবে। ঐ গাভীকে অন্তত ৬ মাস ঘাঁড লইতে দেওৱা কঠবা নহে। ৰশিষ্ট এবং স্বাস্থ্যকর (healthy) গাভীকে ক্লয় বা ছুষ্ট ইন্দ্রিররোগ বা দংক্রামক পীড়াযুক্ত যাঁড়ের সহিত সম্ভোগ করিতে দেওরা কদাচ উচিত নহে। এইরূপ অনির্বাচন হেতু আমাদের দেশের গোলাতির ক্রমিক অবনতি ঘটিরাছে। এই বিষয়ে পরেও যথাস্থানে সবিশেষ আলোচনা করা হইরাছে। গো-চিকিৎদা প্রদক্ষে ''গর্ভস্রাব " পর্যার বিশেষরূপে দ্রপ্তবা।

এখন প্রধান প্রশ্ন হইতেছে যে, বর্ত্তমান ভারতীয় গোজাতির বিলাতি গোজাতির স্থায় বৈজ্ঞানিক উপায়ে উন্নতি সাধিত হইতে পারে কি না ? আমার বিবেচনা হয়, যে পরবর্ত্তী কয়েকটি নীতি মনে রাখিয়া যদি আমাদের দেশের চাযীগণ গো চাষ করেন, তাহা হইলে অমৃতমহাল, নেলোর, হরিয়ানা, হান্সি প্রভৃতি ভারতের উৎকৃষ্ট গোবংশের সাহায্যে দেশীয় (indigenous deteriorated) গোজাতির সমধিক উন্নতি দেখাইতে পারেন। আমাদের অবণ রাখা কর্ত্তব্য যে, বিলাতের সাউথ্ ডিভন্, আরশেয়ার, কেরী, হোল ষ্টান্, ও ডচ্-বেল্টেড্ গাতীকুল এক-দিনের অধাবসায়ের ফল নহে। গো-উৎপাদনে আমাদিগের নিম্নলিখিত নীতিগুলি বিশেষরূপে মনে রাখা চাই:—

- ১। "Like begets like." পিতা মাতার গুণাগুণের উপর সম্ভান-সম্ভতির লোষ গুণ নির্ভির করে। ভগবানের নিয়নে সম্ভান-সম্ভতি পিতৃ-মাতৃর অন্তর্মপ হইবার চেষ্টা করে। সেইজন্য থুব বলিষ্ঠ পিতা-মাতার সংযোগ ঘটাইয়া শাবক গ্রহণ বা উৎপাদন করিবে।
- ২। পুনরাগমন (reversion) বিধি:—পিতৃ-পিতামহের দোষ
 বা গুণ অবাবহিত সন্তান-সন্ততিকে অতিক্রন করিয়া পরবর্ত্তী সন্ততিতে
 প্রকাশ পায়। ইহা একটি বৈজ্ঞানিক নীতি। অনেক সময়ে দেখিতে
 পাই যে, ছইটি সাদা গেরবাজ বা গোলা পায়রার দাগযুক্ত ছানা হইয়াছে।
 পিতা মাতা খেতবর্ণের হইলেও তাহাদের ছানা কেন দাগী হয়? ইহার
 উত্তর এই যে, সাদা পিতামাতার হয়ত বহুপুর্ববর্ত্তী পিতৃ-মাতৃ-স্থানীয়
 ক্রা কপোত কপোতীর কোনরূপ কাল দাগ ছিল; তাহাই পরবর্ত্তী
 সন্ততিগুলি অতিক্রন করিয়া অধন্তন বংশে প্রত্যাগমন বা পুনরাগমন
 বিধির দ্বারা প্রকাশ পাইয়াছে। জীবরাজ্যে এই সত্য ভূরি ভূরি
 প্রক্রাক্ষীকৃত এবং প্রমাণিত হইতেছে।
 - ৩। পিতৃ-মাতৃ-গুণাগুণগুলি সন্তানে ক্রমাগত অধিকার-নীতির

(inheritance) বৈশে প্রকাশ পাইয়া থাকে। পুরাতন (old) এবং শিৰ্মণ বংশে (pure breed) ইহা পূৰ্ণমাত্ৰায় প্ৰকটিত হয়। গ্ৰুপালিত পশুৰ মধ্যে আমৰা দেখিয়াছি যে, পূৰ্বপূৰ্তনের কোন গুণাগুণ প্ৰবন্ত্ৰী কোন সন্তানে লক্ষিত হটয়াছে, কিন্তু তাহা পুনশ্চ তাহার সন্ততিতে লোপ পাইয়াছে। এইওণ যদি ঐ সন্তানে রক্ষণের চেষ্টা পাওয় ষায়, তাহা হইলে পিতা মাতা হইতে একটি স্বতন্ত্র জাতি ছই এক পুরুষ পরে আমরা অনায়াদে পাইতে পাবি। এই সকল নীতির প্রতি সুমাক দুষ্টি রাখিয়া বিলাভি চাধাগণ বভ্যান উত্তম বিলাভি গোজাতির স্থাষ্ট কবিয়াছেন। ইহা একটি চিবাগত নীতি যে, পিতামাতাৰ দোষগুণ সন্তানে বঠাইয়া থাকে। গে চায় অতি প্রাচীন কাল হইতে ভারতে অচ্লিত ছিল। নিকাচনে এবং গ্রেযুক্ত চাষেব (careful breeding) দ্বাৰা ভারতেৰ গোজাতিৰ এক সময় যে খুব উন্নতি সাধিত হইয়াছিল, সে বিষয়ে অণুমাত্র স্ফেন্ড নাই। বাদ্সাত আক্বরের সময়ে সর্কারী গো-চাৰ হইত, তাহা আইন-ই-আকৰ্মী গ্ৰন্থে প্ৰকাশ আছে। বৰ্তমানে ইংরাজ রাজাধনে হাসার, মাদ্রাজ, আমেলালাল, নাইনী প্রভৃতি স্থানে গোচাষ প্রবর্তনের জন্ম ফাবন আছে, তাহা কাহার অনিদিত গ

৪। প্রিন্ত্রন্থালত। ইহার ছারা ক্রমিক অন্তর্ত্তির (inheritance) বিশেষ হানি হয়। নিতা ন্তন নৃত্ন শোণিতের ছারা একজাতিতে বিলোম উংপাদন (cross) করিলে, পূর্বে মাতাপিতার দোষগুণ পূর্বেলিথিত রিভাশান্নীতির বশে সন্ততিতে প্নঃপ্রকাশ পাইয়া থাকে। অবস্থার প্রিন্ত্রনের গুণে (on account of changed conditions) সন্ততির আকার, প্রকৃতি প্রভৃতির এককালে সমভাবে প্রির্দ্দিন দটিয়া থাকে। বাহ্নিক অনস্থার নিয়ত পরিব্রুল ঘটিলে (variability) পরিব্রুলখালতা সেইরপই অনিশ্চিত হয়। খান্ত, শোণিত (strain), চক্ষলতা প্রভৃতি গুণ শাবক মাতাপিতা ইইতে

প্রাপ্ত হইয়া থাকে। জীব জগতে এই নীতির সম্বিক সার্থকতা দুষ্টি করা যায়। গর্ভাবস্থায় যে গাভীকে একস্থানে বাধিয়া বাখা হয়, বা নিম্মল বায়ু যাহাকে কলাচ দেবন করান না হয়, বা যথেষ্ট পুষ্টিকর থাতা না ্ৰ ওৱা হয়, ভাহাৰ শাৰ্কেৰ ফুদকুদ যন্ত্ৰ সমাক প্ৰিৰ্দ্ধিত (developed) হয় না. এবং ভাইা চর্বল কুসকুস বুক্ত (weak-hearted or weaklunged) হয়। বস্তু অবস্থায় কোন কোন জন্তর যে দোষাদোষ পাকে. তাহাদের পালিত শারকে দেই গুলি অধিক মাত্রায় প্রকাশ পাইফ शारक। देनींडक এतः मानिमक तृत्ति । द्रिष्ठी अनि अतः देनिहक शहेन, পালিত শাবকে অংশ। দেইজন্ম একটি বিলাতী গাভীকে যদি বাসনা বা বিহাৰ প্রদেশেৰ গ্রায়প্রধান সমত্ব স্থানে আনা বায়, ভালা কইলে ভাতা বাচিবে না. এবং যদিও জাঁবিত থাকে, তবে গ্রীল্নে ভাতাও অত্যন্ত কট্ট হট্রে, এমন কি মবশাপর পাড়া হইবে। ইহাব কাবণ কি প্ প্ৰিবৃদ্ধিত অবস্থা (changed conditions) এবং জনবানুৰ প্ৰিব্ছন্ত আনাত গ্রিটের এই আক্ষিক পাছ। বা মুতা ঘটাইবার কারণ। কিন্ত ং ৩ বা ৫ বংৰৰ খনি ভাষা এৰেশেৰ গ্ৰামবধাশাভাদি ঋতু অভিক্ৰ কবিয়া জীবিত থাকিয়া যায়, তাহা হইলে তাহা রক্ষা পাইল ্It is then acclamatized to the changed conditions, and varied atmosphere of the Indian plains); অথবা ছুই তিন পুকুষ গৱে এই আনাত গাভার সম্ভতিও আঙ্গিক পরিবর্ত্তন ঘটাইয়া এদেশের জল-বায়ুর স্থিত দানঞ্জা করিয়া লয়। ভারউইন, ওয়ালেশ, স্পেন্দার প্রভৃতি বৈজ্ঞানিকগণ ইহা স্বিশেষ প্রমাণিত ক্রিয়াছেন। পশু-জগতে আমরা (correlated variability) "সংশ্লিষ্ট পবিবর্তনশীলতাব" প্রমাণ দেখিতে পাই। জীবজগতে প্রাণীগণের উংকর্ষ সাধনে ইহাও একটি প্রধান উপকরণ। একটা অঙ্গের ঈষং পরিবর্ত্তন ঘটলে অপর অঞ্ সকলের আত্মসন্ধিক পবিবর্তন ঘটে। বিধিপূর্ব্বক নির্বাচনের দ্বাব

পরিবর্ত্তনশীতলতাম বাধা দেওয়া যাইতে পারে। একই মাতাপিতার ভিত্র রঙ্গের ভিন্ন আরুতির ভিন্নস্বভাববিশিষ্ট সন্ততি জনিয়া থাকে; তাহার কারণ এই যে, এরপ বিভিন্ন গুণাগুণ বোধ হয় কোন পূর্ম-পুরুষে বর্ত্তনান ছিল। পণ্ডজগতে রঙ্গেব যেমন পরিবন্তন ঘটে. এমন আর কোন জীব-জগতে দৃষ্টি গোচর হয় না। পুনশ্চ দেখা যায় যে. পত্ন রাজ্যে কোন কোন অঙ্গ প্রত্যঙ্গের অধিক চালনা প্রযুক্ত সেই নেই অন্ন প্রত্যন্ধগুলি শাবকে অধিক পূর্ণতা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। বন্ত এবং পালিত পাতিহাঁদে ওলনা করিলে দেখিতে পাইবেন যে. বক্সগণ পক্ষের ব্যবহার অধিক করে বলিয়া, তাহাদের সমধিক পূর্ণতা দষ্টিগোচর হয়: সেইরূপ পালিত হাস অধিক পদের ব্যবহার করে বলিয়া তাহাদের পক্ষ জড়তাপ্রাপ্ত হইয়াছে দেখা যায়, কিন্তু পদগুলির বন্য অপেকা দুমধিক পূর্ণতাপ্রাপ্ত হইয়া থাকে। দেইরূপ ছুই ভিন্নজাতীয় (breed) গোজাতির সংমিত্রণে যে সন্ধর (cross) জাতি উৎপন্ন হয় তাহারা পিতামাতার গুণ এবং দোষ উভয়ই অধিকার করিয়া ত্যকে। দেশভেদে ও জ্বলবারুর পরিবর্তনে যেমন শাবকের দৈহিক ও মান্সিক পরিবর্তন ঘটে, দেইরূপ থাদ্যের তারতমো স্নায়্বীয় (muscular) ইত্রবিশেষও ঘটিয়া থাকে। সেই জন্য মহাত্মা ডারউইন বলিয়াছেন যে, "Homologous parts tend during their early development to cohere and fuse together much more readily than other parts."

ে। Reversion (প্রত্যাবর্তন):—পিতামাতার যে গুণাগুণ নাই, তাহা শাবকে পুনঃ-প্রকাশকে "প্রত্যাবর্তন" নীতি কহে। Wallace ইহা এইরূপে বর্ণন করিয়াছেন:—"It is the reacquisition by an animal of certain characters which do not exist in the immediate parents, but which existed in its

remote ancestors and had since died out." প্রত্যাবর্তন পিতৃমাতৃ উভরপক্ষ হইতে ঘটিয়া থাকে। ইহা একটি সঙ্কর জাতির মধ্যে দোষ বলিয়া পরিগণিত হয়। ইহা ছিরনিশ্চয়রূপে বলা যায় না যে, প্রত্যাবর্তন দোষ কত পুক্ষে রহিত হইতে পারে। নম্র এবং ধার (docile) পশুর শাবক অনিষ্টপ্রবণ (offensive) হইতে দেখা গিয়াছে। গৃহপালিত গাভীর শাবক বন্য হইবার প্রকৃতিবিশিষ্ট দেখা যায়। "All cases in which a distinguished individual or species or race having been crossed at some former period with a distinct form and a character derived from this cross, after having disappeard for one or several generations reappears suddenly. The common example is to be seen in domesticated animals becoming wild or feral and then these have a tendency to reversion to the primitive wild state." বছকালের (long and continuous) নির্মাচনের হারা প্রত্যাবর্তন-দোব রহিত করা যাইতে পারে।

৬। কোন কোন গাভীতে "আংশিক প্রত্যাবর্ত্তনও" দৃষ্ট চইয়া থাকে। কাল-যাঁড়ের সংযোগে লাল-গাভীর যে শাবক হয়, তাহা প্রথমে লাল বর্ণের হয় পরে বরসের বৃদ্ধির সহিত ক্রমশং রুফ্তবর্ণ প্রাপ্ত হয়। সেইজন্ত সন্ধর উৎপাদন ক্রিয়ার (crossing) হারা প্রত্যাবর্ত্তন নীতি সবিশেষ দাহায়্য ও পরিপৃষ্টি প্রাপ্ত হইয়া থাকে (The act of crossing in itself gives an impulse towards reversion)। সন্ধর শাবকেরা (cross-breeds) প্রায়ই ছর্দম্য এবং বন্তভাবাপন্ন হইয়া থাকে। "(Of a wild and savage disposition, which may be accounted for by the fact that the ancestors of all domesticated animals were

aboriginally wild and the wildness in the cross is a partial return to the primitive disposition.)" গিবেঁ। ইহার অনেক উদাহরণ দিয়াছেন। লর্ড ক্লাইভের বংশধর মার্ল পাওই (Powis) বছকাল পুর্বে ভারত হইতে পালিত কয়েকটি কুকুদযুক্ত গোজাতি বিলাতে লইয়া গিয়া কুকুদহীন বিলাতি গোজাতির সংযোগে সঙ্কর (cross) উৎপাদন করেন। এই সঙ্কর শাবকগুলি বক্তভাবাপন হইরাছিল (were found to be oddly wild.)। প্রত্যাবর্তনের চুইটা কারণ লক্ষিত হয়; (ক) Changed condition of life বা পরিবর্ত্তিভ জীবনধারণের বিধি: (খ) Inherent tendency to reversion in cross breeds অধ্য সম্বর জাতির মধ্যে স্বতই প্রতারের্তন-প্রবণতা। সম্বরের প্রথম পুরুষে পিতামাতার মধাবতী স্থান অধিকার করিতে দেখা যায়, কিন্তু তদপরবর্ত্তী পুরুষে হয় পিভার দিকের না হয় মাতার দিকের গুণ নোষগুলি তাহাদের সম্ভতি অবলম্বন করিয়া থাকে। দেশ, কাল, ও জল বায়র পরিবর্তনে দৈহিক আকার ও গঠন প্রকৃতির বিভিন্নতা উংপাদন করে. এবং এই প্রকৃতি সম্ভতিবর্গ মধ্যে অদ্গ্রাবন্তার (latent) থাকে: কিন্ত সামান্ত অবস্থার আফুকুলো ভাহা পুনঃপ্রকটিত হইয়া থাকে। ত্রমদাত্রী গাভীর অপরিফ্ট শক্তিটি তাহার পুরুষ শাবকগণের দারা পরবর্ত্তী সম্ভতিতে নীত হইয়া থাকে। গোজাতির মধ্যে আমরা প্রায়ই দেখিতে পাই যে, কোন স্বতম্ব উৎকর্মতা একবার সেই বংশে প্রকাশ পাইলে, তাহা সহজে সেই বংশ হইতে দুরীভূত হয় না। এইজন্ত "(fixedness of character)" গুণাগুণের স্থায়িত্ব এবং আধিকা নিণীত হইয়া থাকে। অতএব আমরা নিয়ণিখিত সত্যে উপনীত হই যে. সকল গুণ বা দোষ পিতা মাতা ইইতে শাবকে প্ৰবৰ্ত্তিত **क्हेंग्रा थारक। या खन वा माय यञ्जलक निर्वाहत्नत बात्रा करत्रक शुक्राय**

রহিত করা হয়, তাহা কদাচ দেই জলবায়তে প্রকটিত হইতে দেখা যায় না। কোন কোন বংশীয় গোজাতি স্বীয় আকৃতি (likeness) भारतक अधिकमाञात्र मान कतिहा थात्क। এই विषय शिर्दा । ওয়ালেদের ভাষার তাহা উদ্ধৃত কবিলাম। "Certain individual races and species are prepotent in transmitting their likeness to their progeny. This comes out more clearly when certain races are crossed. The shorthorns are generally acknowledged to possess great power of impressing their likeness on others. There is a great difference between mere inheritance and prepotency. Prepotency apparently depends upon the same character being present and visibly in one of the two breeds which are crossed, and latent or invisible in the other breeds." প্ৰনন্ধ আমবা কোন গোজাতির স্ত্রী বা পুরুষের মধ্যে কোন গুণ বংশামুক্রমে দেখিতে পাই. এবং ইহা স্ত্রী বা পুরুষজাতিক্রমে সম্ভানসম্ভতির মধ্যে নীত হইয়া शारक। ইহাকেই "Inheritance limited by sex" वल। "New characters often appear in one sex and are afterwards transmitted to the same sex, either exclusively or in a much greater degree than to the other. Thus we see that the size of the hump of Indian cattle is greater in the male than in the female. New characters. says Darwin, are more apt to appear in the males than in the females and are to be either exclusively or more strongly inherited by them."

• এখন আমরা law of inheritance "ক্রমাগত বা নীতির" বিষয়ে চার কথা বলিয়া এই প্রসঙ্গ শেষ করিব। (a) Tendency in every male or female character to be transmitted though often counteracted by various known and unknown causes. (b) Reversion which depends on transmission and development, being by themselves distinct powers. (c) Prepotencey in transmission. (d) Transmission limited by sex. (e) Inheritance at corresponding periods of life with some tendency to the earlier development of the inherited character.

৭। পালিতাবস্থা:—ডারউইন ওয়ালেস প্রভৃতি পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ অনুসন্ধানের পর স্থির কবিয়াছেন যে, বক্ত পশু বিশেষতঃ গোজাতি পালিতাবস্থায় রক্ষিত হইলে তাহাদের সন্থান-উংপাদিকা-শক্তির হ্রাস হয়; কিন্তু তাহাদের সহিত অপর জাতির সংমিশ্রণে সঙ্কর জাতি উংপাদন করিলে এই সঙ্কর জাতির উৎপাদিকা-শক্তি খুব অধিক মাত্রায় রৃদ্ধি পায়। (Domestication increases sterility and domesticated animals when crossed are quite prolific.)

প্রচুর ও নিয়মিত থাতে পালিত পত্তর যে উৎপাদিকা শক্তির হ্রাস দোষ ঘটে, তাহা নিবারিত হইতে পারে; কিন্তু অপব দিকে যদি অপর্য্যাপ্ত আহার দেওরা যার, তাহা হইলে পশুদিগের পালিতাবস্থায় উৎপাদিকা শক্তির ছ্রাস ঘটিয়া থাকে। এ বিষয়ে জ্ঞানলাভ জন্ত "Country Gentleman" নামক পত্রিকা পাঠ করিবেন।

৮। আন্তর্গণিক উংপাদন:—নিকট শোণিত এক বংশে আনমন করিলে শাবক ছর্বলকায়, এবং রুগ্ন হয়। মন্তবা, জীব এবং উদ্ভিদ্ রাজ্যে ইহা সবিশেষরূপে প্রমাণিত হইয়াছে। "The consequences

of close itner-breeding if carried on for too long a time are loss of size, constitutional vigour, fertility, sometimes accompanied by a tendency to mal-formation. but not necessarily deterioration of form or structure. It may not be felt for two, three or even four or more generations." আন্তর্গণিক উৎপাদনের দোষ ছই তিন বা চার প্রক্ষ অন্তর নতন শোণিতের প্রবর্তন করিলে নষ্ট হইতে পারে। রুগ্ন বা ভৰ্মল পশুৰ মধ্যে অধিক মাত্ৰায় close interbreed বা সন্ধৰ জনন করিলে, সেই জাতির আকার, গঠন, উৎপাদিকা শক্তি এবং বলের বিশেষ হ্রাস এবং থকাতা সংঘটিত হইয়া থাকে। ইহা প্রথম ছই, তিন বা চার পুরুষে দৃষ্ট হয় না বটে, কিন্তু পরে প্রবলমাত্রায় পরিফ ট হয়। Darwin चरना (य. "with all hermaphrodite animals there is not a single species in which the structure ensures selffertilization. With cattle, no doubt, external closebreeding may long be carried on with respect to exrernal characters and with no manifestly apparent evil on the constitution. But the experience of best English and American breeders have shewn that an occasional cross realizes the highest benefits in the gain of constitutional vigour. An experienced old American breeder, also a member of the New York Dairyman's Association says "to breed in and in" from a bad stock is ruin and devastation. "But the practice may well be safely practised with advantage within certain limits when the parents so related are

descendants of first rate animals, but in this, greatest care is necessary on account of the tendency to sterility and weakness and the selection ought to be rigorously of the most vigorous animals." গোজাতির সম্বন্ধে বছকাল-ব্যাপী অর্থাৎ কয়েক পুরুষ ধরিয়া close আন্তর্গণিক উৎপাদন প্রবর্তন করা নাইতে পারে। ইহাব দারা চুইটি উত্তম জাতির ''ক্রশ'' শাবকের বলিষ্ঠ গঠন, তেজস্কর প্রকৃতি, এবং বছত্তব আকার পাওয়া গিয়াছে। প্রাকৃতিক নিয়ম এই যে, অতাধিক আন্তর্গণিক উৎপাদনে অভভ হয়। ইহার অর্থ এই যে, নিকট-শোণিতের অধিক মিশ্রণে সস্তানসস্ততি ছব্বলকায়, রুগ্ন এবং অস্বাভাবিক-গঠনবিশিষ্ট ছইয়া থাকে। মন্ত্ৰ্যা-ব্রুগতে যে নিয়ম, পশু-জগতেও দেই নৈস্থিক নিয়ম বর্ত্তমান। আমা-দিগের প্রাচীন মুনি ঋষিগণ এই কাবণে নিকট-শোণিত-মিশ্রণ বারণ ও রহিত করিবার জন্ম গোত্র ও প্রবরের স্বান্ট করিয়া স্বগোত্রে বিবাহ পদ্ধতি নিষিদ্ধ করিয়া গিয়াছেন। জাতি গুরুল হইয়া ঘাইলে, বিদেশীয় ক্ষমতাপন্ন শোণিতের আন্তর্গণিক প্রবেশ করণ সময়ে সময়ে প্রয়োজনীয় হইরা উঠে। বাঙ্গালিজাতি বর্তমান কালে অত্যন্ত নিজীব এবং চুর্বল হটয়াছে বলিয়া ইহাদেব পুন্জীবনদানের জ্ঞা দেশহিতৈ্যী মহোদয়গণ এই পথের অগ্রণী হইয়াছেন। তেজশালী, ক্ষমতাবান পাঞ্জাবীগণ এই কারণে তর্বল বিহারী বা বাঙ্গালার স্কুন্দরী ক্সাগণের পাণিপীড়ন করিতেছেন । জাতি চর্মল হউলে তাহার উন্নতিকল্পে তেওস্কর শোণিত অন্তত্র হইতে আনর্যন করা বহুকাল হইতে বিধি আছে। রাবণ, বিশ্বামিত্র, ব্যাস, প্রশার, নারদ প্রভৃতি যোগনিরত ঋষিগণ ইহার প্রমাণ বহুল রূপে দিয়া গিরাছেন। সেইজন্ত প্রথম পুরুষে সঙ্কর উৎপাদন বা "ক্রশ" উপকারজনক এবং আশাসুযায়ী ফলপ্রদ। ইহার দ্বারা পুইটি হিতকার্যা সম্পন হইরা থাকে। (১) স্বাতীয় দোষগুলি লোপ করায় অর্থাৎ (in

obliterating characters and consequently in preventing the formation of new races); (২) মধ্যবন্ত্ৰী জাতি উৎপাদনে ইহা ব্রেষ্ট সহায়তা করে: (in the modification of old races i.e. in the formation of new and intermediate races) t প্রথম ''ক্রশ '' উৎপন্ন শাবক যদিও প্রায়ই ভাল হইয়া থাকে, কিন্তু এই আশাজনক ফলপ্রাপ্তি অত্যস্ত অনিশ্চিত। পালকগণ উত্তম গাভীর জননেজুক হইলে, নিম্নলিখিত নিয়মের প্রতি সবিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন :--"The prevention of free-inter crossing and the intentional matching of individual animals are the corner stones of the breeder's art." সময়-উৎপাদনে স্ত্রী এবং পুরুষকে বাছিয়া পুথক রাখিতে হইবে, তাহার পর সঙ্গমের কাল উপস্থিত হইলে অর্থাৎ গাভী গ্রম হইলে, সেই নির্কাচিত পুরুষের দারা সন্তান উৎপাদন করাইয়া, ক্রমশঃ নির্বাচন দারায় একটি নিরুষ্ট জাতির সবিশেষ উল্লতি সাধন কবা যাইতে পারে। এই নিয়মের দারাই বিলাভি গোজাতির স্টি হইরাছে। সেইজ্ঞ পাশ্চাতা পণ্ডিতগণ এবং আমেরিকাদেশীয ডা: দাণ্ডাদ বিলয়াছেন যে, "No improvement and modification can be expected unless the animals selected are separated." সেই কারণে আমাদের দেশের গোজাতির ক্রমিক অবনতি ঘটবার প্রধান কারণ-গাতী বলদের ও একত্রে মাঠে চরণ এবং সর্বাদা অবাধ-সহবাস করে বলিয়া অনুমতি হয়। যদি হুইজাতীয় গো এইরূপে একত্রে থাকিয়া সক্ষ্ উৎপাদন করে, তাহা হইলে উভয় জাতিরই অবনতি ঘটিয়া কিছুকাল পাঁৱে 'থিচুড়ী'' হইয়া যায়। ⁵ কিন্ত নিৰ্বাচনের দারা যে প্রথম সম্বর জবিয়া থাকে, তাহার প্রকৃতির স্থিতি ৰা পৰিবৰ্তন (১) on the relative numbers of individuals belonging to two or more races which are allowed to

mingle, (২) on the prepotency of one race over the other in the transmission of character, এবং (৩) on the conditions of life to which they are exposed" এর উপর নির্ভর করে। সমরূপ জলবায়তে প্রতিপালিত পিতা মাতা না হইলে শাবকে ইহার ইতরবিশেষ পরিলক্ষিত হইবার সম্ভাবনা আছে। পশুক্তাতে ইহা বিশেষরূপে প্রমাণিত হইয়াছে যে, তুইজাতীয় গাভী সংযোজিত হইলে, তাহাদের জাতিগত (special character) স্বভাবগুলি মিশ্রিত হইয়া শাবকে সমীকরণ ভাব উপন্তিত করে; অর্থাৎ "their characters become ultimately fused together;" কিন্তু কোন কোন প্রকৃতি দিশ খায় না, বরং শাবকে ভাহা হথাযথক্তপে প্রাতৃত্তি হয় (are transmitted in an unmodified state either from both parents or from one. But this is very rare and unimportant especially when the species are crossed."

সক্ষর বা ক্রশোংপর শাবক প্রায়ই আকারে বড় হইয়া থাকে; কিন্তু এইরূপ ক্রমিক চই, তিন বা পাচ পুরুব নির্বাচনের দারা "ক্রশ" করিলে প্রকৃতির পরিবন্ত নশীলতা শাবকে অন্তহিত হইয়া থাকে এবং এই শোষোংপর শাবকে এই প্রকৃতিগত গুণগুলি স্থায়ীভাব ধারণ করে; তথন এই শাবক একটি নৃতনজাতীয় হইয়া উঠে। "The force of inheritance is always strong in old and pure breeds and it may be safely said that inheritance is the anomaly. The power of transmission is a quality which is merely individual in its attachment. As the characters, inherited either from the male or female parents, tend to fuse, the cross animals will ultimately become uniform by continual intercrossing and in

the course of time by the aid of selection and careful breeding it is possible to establish a new breed. But it is very difficult to predict and say how long it will take to evolve such a new type." সম্ভবতঃ ৭৮ পুরুবে এই আশামুঘারী ফল পাওয়া ঘাইতে পারে। গত দেড় বা হুইশত বংসবেব বঙ্গ, অধ্যবসায় এবং চেষ্টার ফলে বর্তমান বিলাতি গোজাতির জন্ম ও উন্নতি সাধিত হুইয়াছে।

কতকগুলি পালিত গোজাতির এমন স্বভাব আছে যে, তাহার৷ নিজেদের নথো (among themselves) সংযোজিত হয় (breed): এবং এমন অবস্থায় তাহাদের উপগত হইতে না দেওয়া বড়ই দোষ-জনক। এমনও সামি দেখিয়াছি যে, এক খোঁয়াড়ের মহিষ নিজের পালের মধ্যে উপগত হয় না। তাহার। স্ব-শোণিতের প্রতি খব লক্ষা রাথে। কিন্তু গোজাতির মধ্যে ইহার বিশেষ বৈলক্ষণ্য পরিদৃষ্ট হয়। যদি চইজাতায় গাভার মধ্যে অবারিত-ভাবে উপগত হইতে দেওয়া যায়, তাহা হইলে যে জাতি দংখাায় কম, সেইটা বুহত্তর জাতির भर्मा लाम बहेदा यात्र। अप्तम्क भाजी, यादात्रा माधात्रभावः त्वत शहन করে না. অথবা গর্ভনোচন করে বা ত্যাগ করে, চারণ মাঠ বা pasture পরিবর্ত্তন করিলে তাহাদের গর্ভধারণক্ষম হইতে দেখা গিয়াছে। পশ্চিমদেশায় ভারী গাভী কলিকাতার জলবায়তে জাঁসিলে ২।১ বিয়ান পরে তাহারা প্রায়ই এইরূপ অবস্থাপর হইয়া থাকে। ইচার প্রধান কারণ বোধ হয়, কলিকাতায় চারণ-মাঠের জভাব এবং খাছের সংকার্ণতা। স্থানীয় জলবায়ুর উপর গর্ভধারণ এবং দুগ্ধ-मोग्निका गिक्कि ध्र व्यक्षिक श्रीसारगं निर्कत करता।

৯। বন্ধ্যাই বা উৎপাদিকা-শক্তির হাস। (Sterility):— বে সাধারণ অবস্থায় কোন গাড়ী নাহুষ হইরাছে অর্থাৎ লালিত

পালিত হ্টয়াছে তাহার পবিবর্ত্তন সংঘটিত হুইলে, কোন কোন গাড়ী গৃহপালিতাবস্থাৰ ষাঁড্এখনে প্ৰাধ্ব এবং গভধাৰণে অক্ষ হয়। কিন্তু আধকাংশ গাভা এই রীতির বশবতী নহে। বন্ধান্ত নিম্নলিথিত কাবণে সংঘটিত হইরা থাকে:-->। অত্যন্ত আন্তর্গণিক সংযোগ. ২৷ অসম-সংযোগ, অথাৎ কোন কোন গাভা ''ডাকিলে' ভাচাতে কোন কোন যাঁড় আলে উপগত হয় না অথবা অনিচ্ছা স্বয়ে উপগত হইলেও গাভী দেই সংযোগে গভ ধারণ করে না; ৩। ভিন্ন জাতীয় গাভী এবং যাড়কে ক্রণ বা স্ক্রর উংপালনের সময় অসমাতানকপ (iniudicious) নিকাচেনে বন্ধান প্রাথ হটতে দেখা গিয়াছে: (৪) সাধাৰণ অবস্তার প্রিব্রন সংঘটন কবিলে বন্ধান উপ্রিত হয়: (e) অপ্যাপ্ত এবং প্রচর ভোজন কর।ইলে গ্রভা বন্ধা, হইয় থাকে। এইজন্ম ক্ষমক খুব বিদেচনা কবিয়া নিজ চন্ধবতা গাভীকে নির্দ্ধাপত সময়ে আবিশুক্মত ভোজন দিবে। (৬) অবভু অপুষ্টিক্ব ভোজন দান, অপ্ৰিক্ষার হোয়োলে নাথা, বেশা খাইলে অথবা অপুষ্ট বা কথা বা ভুনৰে ষ্যুত্বে দ্বাৰা জনন-কাৰ্যা কৰাইলে গাড়াকে বন্ধা হইতে দেখা যায়। "কেশ"-বিবিদ্যাবা গ্রাদি পশুর শাবক আকাবে পরিবৃদ্ধিত হয়, এবং ভাছার দারা উৎপ্রিকা শক্তি (fertility) এবং জোব বৃদ্ধি করা হইয়া থাকে। পালিত পশুতে সম্বর উংপাদন কবিলে উংপাদিকা শক্তি মত্যস্ত বুদ্ধি করে; বিশেষতঃ প্রথম সমর এবং প্রবর্তী ক্রশে পুনশ্চ ক্রশ কবিলে উংপাদিকা শক্তি (fertility) অতান্ত পরিবর্দ্ধিত হয়। ইতার উপলব্ধি একজাতীয় কিন্তু ভিন্নবংশীয় স্ত্রী-পুরুষ সংযোগে প্রমাণিত इंडेग्राइ। 🐰

গোজাতির পক্ষে বন্ধান্ত একটি রোগনিশেষ। যাঁড় ও গাঞ্জী উভয়েরই এই রোগ হইয়া থাকে। মাঁড়ের নীর্যাের ওরল**র্ডা হইলে গাভী-**সঙ্গ করিলেও তদ্ধারা উৎপাদিকা-শক্তির কোন চিষ্ট দেখিতে পাওয়া যায় না এবং গাভীও পর্ভধারণ করে না। বীর্য্যের তরলতা নানা কারণে ঘটিয়া থাকে। তন্বিষয়ে পরে "প্রনেচ বা গন্ধীর রোগ" বিচারাধ্যায়ে কতক আলোচিত হ্ইয়াছে। অধিক স্ত্রীসঙ্গ করিলে শুক্রের তরলতা ঘটিয়া উংপাদিকা শক্তি নষ্ট করে। গাভীও গভণারণে অক্ষম হটলে তাহাকে "বন্ধ্যা" বলিরা থাকে। বন্ধ্যা অনেক কারণে হইয়া থাকে। তন্মধ্যে নিম্নলিখিত কাবণগুলি প্রধান :—

- ১। অত্যধিক আন্তর্গণিক জনন-ক্রিয়া করিলে (in-breeding) অধাৎ বংশামুদারে গাভীর নিকট স্ব-ঘবের মাড় রাথিলে গাভীকে বন্ধাঃ ছইতে দেখা গিয়াছে।
- ২। মৃতবংদা চইলে অগাং মৰা ৰাছুর গাভীর পেট চইতে নির্গত চইলে প্রায় শীঘ গভিণা হয় না, নাগ বংদৰ পরে চইতে পরে। আমাদের গ্রীষ্মপ্রদান দেশে তিন বংদৰেব পুরের দেশী বক্না প্রায়ই গভাবতী হয় না। প্রদেশের প্রব ভাল গাভীবও একমাদ গতে না চইলে পুনরায় গত্ত ধারণ কাবেবাব দামগা হয় না। সাধারণতঃ আমাদের দেশের খুব ভাল গ্রেব া "কেলেন্" বা বংদর-বিয়ানি গাভীবও প্রায়
- ৩। গাভী বৃদ্ধ হইলে বা অতাধিক পবিশ্রম করিলে কিয়া আবশ্যক মত আহার না পাইলে কিয়া অপর কোন কারণে ক্ষাণ ও তুর্মল হইলে, বদ্যা হইয়া থাকে।
- ৪। জরায় বা গর্ভাশয় বা তরিকটয় কোন অংশের রোগ বা বিকার
 জিয়িলে গাভী বন্ধা হইয়া থাকে।
- ে। নপুংসক গোরু হইলে বা যমজের ''নই" হইলে, তাহার বাছুর হওয়া কথনই সম্ভবে না।
- ৬, অত্যাধক তৈলাক্ত খাদ্য খাইয়া গাভীর চব্বি হইলে, গভাধার ঢাকিয়া পড়ায় বন্ধ্যাত্ব ঘটিয়া থাকে।

- গাভীর পেটে বাছুর মরিয়া জরায়ু মধ্যে ভথাইয়া থাকিলে
 বন্ধাত সংঘটিত হয়।
- ৮। বাঁড় অতিশয় বৃদ্ধ, গুর্মল, প্রমেহরোগগ্রস্ত, বা অপর কোন উৎকট রোগগ্রস্ত হইলে তাহার সংগমে গাভী গর্ভধারণে অক্ষম হয় এবং শেষে বন্ধ্যারোগগ্রস্ত হইনা থাকে।

"Hybrids and crosses are in character between the parent forms, yet occasionally they closely resemble one parent in one part and the other in the other part or in their whole structure. When humped cattle are crossed with humpless cattle the hump in the first generation becomes much diminished in size and if the cross is again crossed and mated with humpless cattle, the hump finally tends to disappear altogether. The cross offsprings sometimes exhibit the colour of parents in stripes or blotches."

ন। অতএব উপরোক্ত পাঠে আমরা সমাগবগত, হইলাম বে
নির্নাচনের দারা একটি নিরুই জাতীয় গোর সমধিক উৎকর্ষসাধন
করিতে পারা যায়। পাশ্চাতা উৎপাদকগণ (breeders) নির্নাচন-বিধি
ও পুণক্ করণ দাবা বক্তমান বিলাতি গোজাতির উরতি সাধিত
করিয়াছেন। ক্ষেত্র হইতে যেমন আমরা ঘেঁস গাছ বা পাদপ উত্তোলন
করিয়া অবশিষ্ট গুলিব পুষ্টি ও উৎপাদিকা শক্তি বৃদ্ধি করি; সেইরূপ
ভব্নল, নিরুই, ক্ম গোজাতিকে কৃষক নিজ্প খোঁয়াড় হইতে যত্নতঃ দূর
বা বর্জন করিবে। ডাক্নইন বলেন "The power of selection
embodying in itself the struggle for existence and
consequent survival of the fittest absolutely depends on

the variability of the organic beings. Man does not cause variability, though he unintentionally effects this by exposing organisms to different conditions of life and by crossing breeds already formed. Indomitable patience, the finest powers of discrimination and sound judgment acquired by long experience must be exercised during many years. তিনপ্রকার নির্বাচন প্রণালী প্রচলিত

- া Methodical. ভন্নালেশ্ ও ভারউইন্ ইহাকে এইরূপে বিষ্ত করিয়াছেন :—"Methodical selection is that which guides a man systematically to select and separate and pair animals most suited and thereby modify the breed and to change it altogether."
- ২। জজ্ঞাত-নির্মাচন (Unconscious selection):—"It is the natural preserving of the most valued animal and destroying the least valued without no thought to altering the breed, so that indirectly it graduates into methodical selection." নিয়মবদ্ধ নির্মাচনে (methodical selection) সর্মোৎকৃষ্ট গাভী ও বাঁড় সম্ভর করণার্থ নির্মাচন করিতে হয়। "The finest cows and especially the best bulls should be selected and they must at all events be separated," জনন-ক্রিয়ার জন্ত কিরপ যাঁড় ও গাভী নির্মাচন বিধির হারা স্থির করা কর্তব্য, সে সম্বন্ধ মেজর মিগার ও মেজর ভাউগান্ তাঁছাদের লিখিক "Dairy Farming in India" নামক প্রকের ৫১ পৃষ্ঠায় লিখিরা উপরোক্ত মডের সম্পূর্ণ সমর্থন করিয়াছেন।

আমি পূর্বেই বলিয়াছি যে, সংজনন ক্রিয়ার অর্থাং stock-raising এ
"like begets like" অর্থাং "সমেন সমং জাতি " নিয়মটি খুবই
আবশ্যকীয়। তাহা প্রত্যেক গো-উৎপাদকের স্মরণ রাখিয়া গবাদি
উৎপাদনে সমীচীন প্রকারে নির্বাচন-বিধি প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য। বিলাতে
এই প্রশালীর দ্বারা বেট্ন্, কলিংউড, হাউটন্ প্রভৃতি প্রসিদ্ধ উৎপাদকগণের চেষ্টার বর্তমান বিলাতি গোজাতির এত উন্নতি ও উৎকর্ষতা সাধিত
হইয়াছে।

সেইজন্ম বার্ণ দ প্রভৃতি পাশ্চাতা বৈজ্ঞামিক পশু-উৎপাদকপণ বলিয়াছেন যে, কোন এক প্রকার নৃতন বা উৎকর্ষ (when a new and improved breed of cow is to be raised) প্ৰাপ্ত গোজাতি উৎপাদন করিতে হইলে, উৎপাদক বা ক্রবককে কয়েক্ট অত্যাবশাকীয় রীতি (principle) মনে করিয়া রাখিতে হউবেঃ—১। বংসেব আকার, অন্ত গঠন ইত্যাদি (First, the form of the animal best fitted for the purpose for which they are breeding i.e. the "points" of the animal, ২। পিতৃ-মাতৃ-প্রভাব (Second, the relative influence of the parents in producing the form.) ৩। সম্ভর এবং স্ববংশে উৎপাদনের উপকারিতা এবং আবশ্যকীয়তা (Third, the relative merits of the two modes of breeding "in-and-in" on the principle of consanguinity or "cross" breeding, which is the reverse of this.) ৪। যে কারণ বা উংকর্ষতা দাধনের জন্ম উৎপাদন-ক্রিয়া প্রাবৃত্তিত হয় (Fourth, the purpose for which the animal is desired.)

যাঁড় নির্বাচন সম্বন্ধে পরবর্ত্তী " যাঁড় " পর্য্যারে দেখ। অধ্যাপক বাউলি (Prof. Bowly) বলেন "To ensure success as a good breeder, it is of the first importance to procure animals

possessing 'good forms' and those characteristics which denote sound constitution." এ বিষয়ে মিঃ ছবিটো (Mr. Dobito) তাঁহার বিখ্যাত প্রবন্ধে বলেন "Quality in an animal is of more importance than good form, for all the fat which can be laid on will never hide defects of form. No one should buy animals excessively poor: they eat too much meal before any real progress is made." মিঃ স্পুনারের মতে সন্তানে পিতৃমাতৃ-দোষগুণগুলি অর্দ্ধমাত্রায় বর্ত্তাইয়া পাকে। তিনি বলেন. "The male parent influences those peculiarities which give size to the offspring, as the back, loins, hind-quarter, skin, and general shape; while the female influences the forequarters, the vital and the nervous systems; the height in the human subject, and the size and 'contour' in animals, are influenced much more by the male than the female parent, and on the other hand, that the constitution of the chest and the vital organs and the forequarters generally, more frequently follow the female."

"Whatever part or qualification man values most that part will be found to present the greatest amount of difference. The breeder must be extremely cautious in judging what characters are important and also the correlation of the constitutional peculiarities. Thus' for example, the color which has been generally esteemed unimportant has its bearing on the constitution.

tional peculiarities of the strongest kind. Complexion and susceptibility to certain diseases run together. Liability to attacks of parasites are connected with colour. Under domestication light-coloured animals suffer most." সম্বীকরণ জন্ত (allowed to breed) তর্বল কল্প এবং দৈহিক গঠনের দোষযুক্ত (animals with defects in constitution) পশু कनाठ वावशांत कतिरव ना। शिरतां, वकन এবং অধ্যাপক ওয়ালেদ বলেন "Animals with defects in con stitution should not be allowed to breed. Nor should weak animals or animals with defects in the mutual relation of the parts ought to be crossed, for in that case, the breeder will often fail and even if he does not fail, he will encounter the greatest difficulty in eradicating the evils arising from defective constitution. In order to facilitate the work of selection, there must be variability, which depends on changed condition of life. Unfavorable condition of life overrules the power of selection." নিৰ্মাচনে পিতশোণিতের বিষয় সবিশেষ আলোচনা করা করেবা।" "In selection we should remember the part played by the "male element" and its influence both on the female and the progeny. There is perhaps no limit to the possibility of variation and consequently none in the selection. Together with selection and correlated with it comes the separation of the superior animals and of pairing those most suited,"

১০। প্রং-শোণিতের প্রাত্মভাব।—প্রসিদ্ধ গোপালকগণ বলেন যে, গাভী গঠাধান কালীন পুংদৃষ্টির দারা শাবকে সেই ঘাঁড়ের রঙ ও গুণদোষ প্রেরণ করিতে (transmit by imagination) সমর্থ ছয়। কোন কোন ছলে "the male element has a prepotency of impressing its character on the offspring both in hybrids and cross breeds though the offsprings are generally intermediate in character between the two parent forms." গাভীর জরায়ুর হ্রাস বৃদ্ধির সহিত পুং-বীজের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ আছে। বাহ্যিক প্রকৃতি, "মেজাজ", বং ইত্যাদির সম্বন্ধ ("imagination") কল্পনা ও অমুবৃত্তি মাতৃহদয়ে অসাধারণ শক্তি প্রদান করিয়া থাকে। গর্ভাধানের সময় গাভী যে রং দর্শন করে. শাবককে প্রায়ই সেই রঙ ধারণ করিতে দেখা যায়। নৃতন জাতিকে পরিবর্ত্তিত জলবায়ুর সহিত সমীকরণ (acclimatisation) বিশেষ প্রয়োজন। ইহা করিতে হইলে নিভঃ অভ্যাস (habit), constitution এবং পরিবর্দ্ধিত স্থানের সহিত গাভী জাতির needs and requirements, थ्र ভान कतिया পরিচ্গা, ভোজনাদির বারা compensated হইতে পারে। সেই কারণে অত্ত দেশে আনীত বিলাতী বা অষ্টেলীয় গাভি বিশেষ ষত্ন ও পরিচর্য্যা না পাওয়ায় অকালে কালগ্রাদে পতিত হয়। প্রচর ছগ্ধবতী গাভীর চাষ করিতে হইলে রুষক প্রচুর চুগ্ধবতী গাভীর গর্ভজাত উত্তম যাঁড় এবং বক্নার সংযোগে সম্ব উৎপাদন করিবে। "If one wants to breed good milch cows, he will have to select cows and especially bulls descended from good milkers. Good bulls of a good milking strain—superior in health condition and built should be paired with cows for breeding better animals.

The prepotency of bull to transmit good milking power which lies in a latent state in him, on the offspring will greatly influence the character of the offspring. But it will not be advisable to pair cows with good cross bulls on account of the uncertainty of the result and also of the tendency in the offspring to reversion, but in any case if substantial improvement is wanted selection combined with greater attention and better treatment of the animals is needed. In crossing, the best specimens should be used; and the bulls and cows to be paired in no case should be less than 3 or 4 years old, the latter age to be greatly preferred; the bulls ought not to be more than 6 years of age." গাভী এবং যাঁড়কে এক-স্থানে চরিতে দেওয়া কর্ত্তব্য নহে, যেহেতু ইহার দ্বারা অকাল-পরিপক্ততা উপস্থিত করিয়া অশেষ প্রকারে গোজাতির হীনতা সম্পাদন করিয়া পাকে। একটি বলিষ্ঠ যুবা ঘাঁড়কে বৎসরে পঞ্চাশ হইতে পঁচান্তরটি গাভীর সহিত সম্ভানোংপাদন ক্রিয়ায় নিয়োগ করা যাইতে পারে অর্থাং তাহার " দার্ভিশ " (service) লওয়া যাইতে পারে।

গো-জনন বা উৎপাদন সম্বন্ধে অত্যাবশাকীয় আরও ২া১ট কথা বাহা বাকি আছে, এইবার তাহা বলিয়া এই প্রসঙ্গ শেষ করিব। ইহার প্রতি প্রত্যেক breeder এর দৃষ্টিপাত করা উচিত। স্ত্রী বাছুর বা বক্না গুলি প্রায়ই তাহাদের পিতৃসদৃশ হইয় থাকে। সেইজন্ত গাভীকে 'বলদ' দেখাইবার সময় গাভীর অপেকা উত্তমজাতীয় অর্থাৎ বড় জাতের, পূর্ণযৌবনযুক্ত, তেজী, অত্যধিক হ্রম্বতীর পুত্র, নম্রস্বভাবাপন্ন যাড় প্রদর্শন করিবে। যাড় নির্মাচন ক্রিয়াট একটু কঠিন বলিয়া মনে

করিবে। গাতী অপেকা অধমজাতীয় যাঁড কদাচ বাবছার করিবে না। "Never breed from an inferior cow" অর্থাৎ অধম থেঁটরে দেশী গাভী হইতে ভাল চগ্ধবতী শাবক আশা করা কদাচ উচিত নহে। আন্তর্গণিক উৎপাদন ত্যাগ বা রহিত করিবে অর্থাৎ ভ্রাতা ভগ্নীতে, মাতা পুত্রে, পেতা কল্লায় উংপাদন বর্জন করিবে। এই নিয়ম অমান্ত করিলে গোজাতির ক্রমিক অবনতি ঘটিয়া পাকে এবং এই কারণে আমাদের দেশের গোজাতির অবনতি ঘটিয়াছে। উত্তম শাবক প্রার্থী হইলে যাঁড় ও গাভীকে ভাল ধাওয়ান কর্ত্তব্য এবং তাহাদের বিশেষ সেবা ও পরিচর্য্যা করা উচিত। আমাদিগের দেশে ঘাঁড় বা পুং বাছুরের প্রতি শৈশব অবস্তা হইতে তেমন যত্ন বা অনুগ্রহ প্রকাশ করা হয় না বা মনুষ্যোর গা-ঘেঁসা করা হয় না বলিয়া, তাহারা বড় হইলে, এত হুদান্ত ও মার-প্রবণ হুইয়া থাকে। পাশ্চাতা প্রদেশে কিন্তু ইহার ঠিক বিপরীত দেখা যায়। ঐ শিক্ষিত দেশ সমূহে ২ বা ৩ বংসর বয়স্ক যাঁড়কে নম, ধীর এবং মানুষ-বেঁদা ছইতে শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে। ইহা করিতে হইলে দরা, অমুগ্রহ এবং যত্ন প্রদর্শন করা, গায়ে হাত বুলান, সময়ে খাইতে দেওয়া, ফল কথা, বেশ করিয়া পোষ-মানান উচিত। আমি পাশ্চাত্য দেশে দেশিয়াছি যে, গাভীগণ স্বামীর পশ্চাৎ পশ্চাৎ কুরুরের মত আদেশানুষারী অনুসর্ণ করিয়া থাকে।

গৃহস্থ গো-শাবক এবং ষাঁড়কে খুব ভাল বাসিবে, যত্ন করিবে, যাহাতে তাহারা নির্ভীক হয় এবং প্রভুকে চিনে। এ সম্বন্ধে পশু-চিকিৎসক এবং প্রসিদ্ধ উৎপাদক ইুরার্টের পৃস্তক সকল জ্ঞানেজু ব্যক্তির পাঠ করা করেবা। পূর্বে যে সমস্ত বৈজ্ঞানিক নিয়মাবলীর উল্লেখ করিয়াছি তাহা পাঠ করিয়া এবং সমাক্ বিবেচনা করিয়া ক্রয়ক গো উৎপাদন করিলে ভাল ফলই প্রাপ্ত ইইবেন, সে সম্বন্ধে অণুমাত্র সন্দেহ নাই। "সম হইতে সম উৎপন্ন হয়"। ইহা একটি নৈস্পিক নিয়ম। "Like produces

গোলাতির উন্নতি বিধান করিতে হইলে ইহা রুষক বা গোপালকের বিশেষ শ্বরণ রাখা কর্ত্তব্য যে, গাভী অপেকা উচ্চ বা ভাল কাতীর ঘাঁডের ধারা জনন-কার্যা করাইবে। ইহা বৈজ্ঞানিক সতা। ইহা লহবন করা কলাচ কর্ত্রব্য নহে। "To improve the breed the cow must be crossed by a bull that is superior to her. If the bull be inferior to the cow, the calf will be inferior to the mother and vice versa." Isa Tweed Macdonald তাঁছার গোজাতির পুত্তকে বলেন, "To a person commencing improvement the best advice is to get as good a bull as he can, and he be a good one of his kind, to use him indiscriminately with all his cows; and when by this proceeding which ought to be persisted in, his stock has with an occasional change of bull, become sufficiently stamped with desirable excellences, his selection of males should then be made to eradicate defects which he thinks desirable to be got rid of. He will not fail to keep in view the necessity of good blood in the bulls resorted to, for that will give the only assurance that they will transmit their own valuable properties to their offspring; but he must not trust to this alone, or he will soon run the risk of degeneracy. In animals aiming an extraordinary degree of perfection where the constitution is decidedly good, and there is no prominent defect, a little close breeding may be allowed; but this must not be injudiciously adopted or

carried too far: for, although it may increase or confirm valuable properties, it will also increase and confirm defects; and no breeder need long be in discovering that, in an improved state, animals have a greater tendency to defect than to perfection. Close breeding from affinities impairs the constitution and affects the procreative powers, and therefore a strong cross is occasionally necessary." গোজাতির স্ত্রী বা পুং সন্তান কিরূপে উৎপাদন করিতে হয়. সে সম্বন্ধে জেনীভার প্রোফেসার খুরি একটী বেশ প্রবন্ধ ১৮৬৪ সালে লিখিয়া গিয়াছেন। তাহার মর্ম্ম নিমে প্রদক্ত হুইল। "There are, if the owner pleases, two periods of heating: the one the general period, which shews itself in the course of the year following the seasons: the other, a particular period, which last in cows from 24 to 48 hours, and which reveals itself a certain number of times. It is this second class of seasons of ruts, the commencements of which gives females while its termination gives males. In order that we may obtain a certain result, we must not cause the same cow to be covered twice in succession at an interval, too short, for the generative substance of the bull preserves itself for a time sufficiently long in the organs of the cow. In the experiments made in Switzerland we have taken the cow at the first certain signs of heating for the purpose of obtaining heifers and at the termination of the heating.

for the purpose of obtaining males." The result of the experiment is that we do not yet know what is the relative length of time which gives females, and the time which gives males."

যদি বস্তুতঃ ভারতীয় গোজাতির উন্নতি সাধন করিতে হয়, তাহা হইলে নির্বাচনে যত্ন ও গাভী এবং যাঁডগুলিকে বিশেষ অফুগ্রহ প্রদর্শন করা কর্ত্বা। পূর্ণযৌবনভাবাপর স্বস্থকায় যাঁডকে গাভীর সহিত সম্ভানোংপাদনার্থে সঙ্গম করিতে দেওয়া কর্ত্তব্য। আমি পূর্ব্বেই বলিয়াছি যে. একটি সবলকায় স্বস্থকায় যাঁড়কে বংসরে ৫০ হইতে ৭৫ টি গাভীর সহিত সঙ্গম করিতে দেওয়া ঘাইতে পারে। ইহাতে বাঁডটির স্বান্থ্যভঙ্গের আদৌ সম্ভাবনা নাই। গাভী এবং বাঁড়কে সদাই পৃথক পৃথক রাখা কর্ত্তব্য এবং উভয়কে পৃষ্টিকর খাছা দেওয়া প্রয়োজন। আমাদিগের দেশীয় ঘাদ অপেকা বিলাতি টিমোদী. ক্লোভার, এল্কা-এল্কা প্রভৃতি কয়েক জাতীয় ঘাদ খুব পুষ্টিকর এবং তথ্ববৰ্দ্ধক। ইহার চাষ এবং প্রচলন আমাদিগের দেশে হওয়া কর্ত্তবা। গাভীর রতিস্পৃহা বন্ধিত হওয়াকে চলিত ভাষায় "পালগ্রহণ" বা "রট্ট" (oestrum) হওয়া বলিয়া থাকে। এ বিষয়ে ২।৪ কথা বা ইষ্ট্রাম" আমি ইতিপূর্বে বলিয়াছি এবং এইখানেও যাহা বাকী আছে বলা প্রয়োজন।

কত বয়দে গাতীকে যাঁড় দেখান কর্ত্তব্য, সে বিষয় লইয়া ভাল এবং প্রসিদ্ধ উংপাদকগণের এবং পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণের মধ্যে মতহৈধ আছে। কিন্তু ইহা দ্বির বে, ছুইটি নৃতন দাত না উঠিলে বা গাতী ছুই বংসরের না হইলে, তাহাকে কোন ক্রমেই যাঁড় লইতে দেওয়া উচিত নহে; যে হেতু অল্ল অপরিপক্ষ বয়সে যাঁড় লইলে গাভী এবং যাঁড়ে ভ্রম্বের স্বাস্থ্যের হানি ঘটনা থাকে। গাভী বিয়াইবার অক্তরঃ ৫

বা ৬ মাসের মধ্যে ডাকিলেও ঘাঁডের নিকট যাইতে দেওয়া কর্তব্য নহে: যেহেতু ইহা না করিলে গোস্বামীর অনেক গুগ্ধের হানি হইয়া থাকে এবং দকাল দকাল বলদ দেখানর জন্ম গাভীর স্বাস্থ্যভঙ্গ হইয়া গিয়া শাবকদিগকে রুগ্ন এবং অলায়ু করিরা থাকে। গাভী যাঁড় পরিদর্শনের ২৮৫ দিনে সাধারণ অবস্থায় (regular labour), সকাল-প্রসবে (premature labour) ১৪০ দিনে এবং কঠিন-প্রদরে (protracted) labour) ৩০০ দিনে বংস প্রস্ব করিয়া থাকে। ঐরূপ ঘোটকী ১১৯ মালে (সাধারণ), ১১ মালে বা ৩৩ দিনে (premature) এবং > अभाग (विवास वा protracted) भावक व्यमव कतिया शास्त्र। মেব এবং ছাগল ১৪৪, ১৩৫ এবং ১৬০ দিনে এবং কুরুরী ৬০, ৫৫ এবং ৭০ দিনে উপরোক্ত তিন প্রকার অবস্থা-ভেদে শাবক প্রসব করিয়া যাঁড গ্রহণের পর হইতে যে দিবস গাভী সম্ভবতঃ প্রসব করিবে, তাহার হিসাব করিয়া "গো ক্যালেণ্ডার" আমি পাশ্চাত্য নেশে ভাল ভাল ডেয়ারি ফারমে রক্ষিত হইতে দেখিয়াছি। তাহা ছাড়া গোলাতির ''ষ্টড-বুক্''ও আছে। এই ঞ্জিনিষ আমাদের দেশে নাই। প্রভুবুকে ভাল ভাল যাঁড় বা গাভীর জন্ম-তালিকা লিখিত থাকে। ডিভন শিয়ার, চেশিয়ার, আরশিয়ার, ইয়র্কশিয়ার প্রভৃতি স্থানের রুষকগণের ঘরে এইরূপ ক্যালেণ্ডার এবং ষ্টড্বুক্ রক্ষিত হইয়া থাকে! আমেরিকায় এইরূপ প্রথার প্রায় প্রত্যেক ক্নয়কের গৃহেই প্রচলন দৃষ্ট হয়। আমাদের দেশে গাভির যাঁড়-গ্রহণকে "ডাকা" বলিয়া থাকে। গাভি পূর্ণযৌবনা इडेंग्रा घाँ ज ना नहेरन ता घाँ ज्ञाहरन भन्ना बुध इटेरन क्वकान व्यमतिकात পূর্বে এক বোতল করিয়া দেশী মন্ত্রার মদ এবং distillery মন্ত্রা refuse খাওয়াইয়া খাকেন। ইছাতে বিশেষ ফল পাওয়া গিয়াছে। গাভী উৎপাদন সম্বন্ধে নিম্নলিখিত পুস্তকগুলি যত্ন-সহকারে পাঠ

করিলে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করা যাইতে পারে:--> Cattle Breeding" by Wm. Warfield (J. H. Sanders Publishing Co., Chicago), "Science of Breeding "by K. J. J. Mackenzie (Journal of Board of Agriculture, vol XVII P. 705). Dairy Pigs & Poultry by R. Scott Burn (Crosby Lockwood and Sons. London), "Dairy-stock', by Prof. Gamgee (F. Jack, Edinburgh.), Mons. Guenon's "System of Breeding" in the Eleventh Edition of "Complete Grazier" (Lockwood and Co., London), Prof. Horsfall on "Dairy management" in the 37th and 30th parts of Vols xvii and xviii of the Journal of the Royal Agricultural Society of England "Canadian Dairying" by H. H. Dean (W. Briggs Toronto, U. S. A.), Bulletins and Herd Books issued by the Dairy Short-horn Association of England," "Outlines of Modern Farming" by R. S. Burn (Crosby Lockwood and Sons, London). Livestock Breeding and Management by P. M.' Connell (Cassel and Co., London, 1s.). Cattle Sheep and Horses by R. S. Burn (Crosby Lockwood and Sons, London). Stock Breeding by Manly Miles (Macmillan and Co., Ny.); Maccombie's Cattle and Cattle breeders, (Wm. Blackwood and Sons, Edinburgh 3s. 6d.)

मगम পরিচ্ছেদ।

সকর গাভী উৎপাদন।

এখন দেশী গোজাতির সহিত বিলাতি গোজাতির সংযোগে সঙ্কর উৎপাদনের বিষয়ে ২।৪ কথা এইখানে বলা বিশেষ প্রয়োজন। ছগ্ধ-দায়িকা গুণে বিলাতী গাঙী ভারতীয় গাভীর (২)৫ বংশ ছাড়া) অপেক্ষা যে অনেক গুণে ভাল, তাহাতে অণুমাত্র সন্দেহ নাই। ডেয়ারি ফার্নিংএর জন্ম বিলাতী গাভীর মধ্যে শর্টহর্ণ, আরশিয়ার, এবং জার্দিট ত্রুদায়িকা গুণে সর্ব্বাগ্রগণ্য। ইহাদের সম্বন্ধে "বিলাতী পর্যায়ে দেখ। শর্ট্রর্গ জাতীয় গাভী ভরহাম এবং ইয়র্কদেশে টীস नामक ननीत डेर्सत जीत (मान वहन डेप्शामिक स्टेग्ना था कि। ডিভন ধাঁডগুলি খুব ভাল, কিন্তু গাভীগুলি প্রচুর ছগ্মদাত্রী না হইলেও তাহাদের হুগ্ধে প্রচুর ননী এবং মাখন সাধারণতঃ থাকে। ডিভনজাতীয় গাভী বেশী হগ্নদাত্রী নহে। "ট" (Taw) নদীর ধারে ইহাদের জন্ম: কিন্তু পোর্ট লক এবং বিড্ফোর্ড নগরন্বয়ের মধাবর্ত্তী প্রদেশে ইছারা খাঁটি এবং অমিশ্রিত শোণিতাবস্থায় পাওয়া গিয়া খাকে। ইহারা প্রায়ই "চেশ নাট বা বে-ব্রাউন" রঙ্গের ছইরা থাকে। ধরেরের মত লালবর্ণের গাভীরই থাঁট বা অমিশ্রিত শোণিত বলিয়া প্রদিদ্ধি আছে। এশাদ, কেরী, গেলোয়ে ও আরশিয়ার জাতীয় পাভীগণ প্রচুর ছগ্ধবতী বুলিয়া প্রসিদ্ধ। এই জাতির সহিত ভারতীর গোজাভির ''ক্রশ'' স্থানীয় বলিয়া বোধ হয়।

সন্ধর উৎপাদনের বিধিগুলি যাহা পূর্ব্বে লিখিরাছি, তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিরা কার্ফো অবতীর্ণ হইলে আশাপ্রদ ফল যে পাওরা হাইবে, সে বিহুরে কোন সন্দেহ নাই। সন্ধর উৎপাদন করিতে হইলে বলিষ্ঠ অঙ্গপ্রতাঙ্গ এবং তথ্বদায়িকা শক্তি—এই উভয়ের প্রতি দৃষ্টিপাত করা কর্ত্রন। আমাদেব ভাবভবর্ষে মাংদের জন্ম গো-পালন বা সন্ধর উৎপাদনের বিধি নাই। সন্ধর উৎপাদন করিতে হইলে প্রত্যেক জাতিব উত্তম স্ত্রী ও প্রুষ্থের সহিত সংযোগ করা কর্ত্রন। এই বিষয়ে মিঃ রবার্ট স্কট্ বার্ণ তাঁহার "Farming" এবং "Dairy Pigs and Poultry" নামক পৃস্তকন্বয়ে (Crosby Lockwood and Co.) এ বিষয়ে বিশেষ উপদেশ দিয়াছেন। অল্লের মধ্যে বার্ণ সাহেব অভিসারগর্ভ উপদেশ দিয়াছেন। তাহা রুষকমাত্রেরই পাঠ করা কর্ত্রন। পাশচাতা জাতিগণ যে কাজটি আরন্ধ কবেন, তাহা বৈজ্ঞানিক রূপে সমাধা করিয়া থাকেন। আমাদের সে বব নিয়মাবলী এককালে ছিল। ভরত, পরাশর, মাতঙ্গ প্রভৃতি থাবিগণের প্রদর্শিক্ত পশুভাগিনারের বৈজ্ঞানিক নিয়মাবলী ও বিধিসমূহ আমরা বিশ্বত হইয়াছি। এখন মাণিক পীরের প্রদর্শিত জনন-প্রণালীও উপেক্ষা করিয়া টোড়া হইয়া দাঁডাইয়াছি। তাঁহার প্রানমাত্র দেশে শ্বতিক্রপে পড়ে আছে।

এখন আমাদিগের দেখা কর্ত্বা যে, আন্তর্গণিক (in-and-in breeding) সংযোগ কিম্বা বৈজ্ঞানিক (cross) সংযোগে ভারতীর পোলাতির সক্ষর উৎপাদন দারা গো-লাতির উন্নতি সম্পাদন করা উতিত কি না ? এবিষয়ে বহু নতভেদ দৃষ্ট হয়। আমার বিবেচনায় cross হারা দেশী গোজাতির উন্নতি বিধান শ্রেয়:। যে হেতু ইহার হারা যদিও কোন কোন দোষ লক্ষিত হয়, তত্রাপি তাহার প্রচলন ও প্রবর্ত্তন এদেশে করা ক্ষকদেব সর্বত্যভাবে কর্ত্তব্য। মাদ্রাজ গভর্ণমেন্টের (expert) অভিজ্ঞের মতে "আন্তর্গণিক" সক্ষর উৎপাদনই সমীচীন। সক্ষরোৎপাদন সম্বন্ধেও মতভেদ দৃষ্টি হয়। ভারত গভর্গমেন্টের জ্ঞান Agricultural Department এর বড় সাহৈবের রিপোর্টের-মতে "About crossing also considerable variety of opinion."

exists as to whether to cross with well-known and superior country breeds (Indian) or with foreign cattle." অমৃতমহাল বংশীয়, নেলোর বংশীয়, গুজরাট বংশীয়, স্থানর এবং দক্ষিণ পাঞ্জাবের হরিয়াণা ঘাঁড় ভারত, এমন কি পান্চাত্য দেশপ্রসিদ্ধ, তাহা কাহার অবিদিত আছে ? এই বাঁডের সাহায্যে বহু প্রাচীনকালে ভারতবিজয়ী মহামতি আলেকজান্দার গ্রীসদেশীয় গোজাতির উন্নতি দাধন করিয়াছিলেন। এই ঘাঁড়ের দাহায়ে ভারতবিজয়ী রবার্ট ক্লাইভ (লর্ড পাওই) প্রপশেষারের গাভীর সংযোগে এক অতি উত্তম "ক্রন" গোজাতির সৃষ্টি করিয়াছিলেন। বিলাতী গোজাতি "বস ট্রাস জাতীয় **হইলেও. উভ**য়ের উৎপত্তি এক বিধায় ভারতীয় এবং বিলাতী গো-জাতির সংযোগে সঙ্কর উৎপাদন (cross) সমীচীন বলিয়া বোধ হয়। কিন্তু উপরোক্ত বিধি এবং কারণে যাহা পূর্বে সবিশেষ উল্লেখ করিয়াছি খুবই ছুক্কা ইহাতে কৃতকার্য্য হইতে হইলে বিশেষ অধাবসায়, ষত্ন এবং দুরদর্শিতার প্রয়োজন। আমাদের উষ্ণপ্রধান সমতল দেশে বিলাতী গোজাতিকে acclimatize করা বড় কঠিন। বিলাতি গোজাতির সৃহত দেশী গোজাতির "ক্রশ" করার প্রকৃত অর্থ ত্রগ্নদায়িকা শক্তি বৃদ্ধি করিবার জন্ম বোধ হইতেছে। বিলাতি জাসি, আঙ্গাস . গেলোরে, কেরী, গার্ণসী, জারশেয়ার, সাউথ ডিভন, ছেরিফোর্ড, महेंच्य व्यवश् किरित्रकोन कांजित मर्पा कीक लाख, नवमान्, बिहेनि, नः इंडेरताभीत्र किंदिनके वा छेखत आकि का वा अर्ह्डेनीया एम्म इटेरड আমদানি করা হাইতে পারে। আফ্রিকাদেশীয় এবং রুট্নি ঘাঁড় পাৰ্বতা এবং উষ্ণপ্ৰধান দেশের জলবায়ুর পক্ষে বিশেষ উপযোগী क्टेंट**ं शादत । देहाँदात विद्यास एक धार** किहा कतिदन स्नामाद्यत दारेन acclimatize করা কঠিন হইবে না। কাইলো গাভী এবং ভারতীয়

মহিষীর সহিত "ক্রেশ" করিলে বেশ হগ্ধবতী গাভীর উদ্ভব হইরা থাকে ইউরাটের মতে ডিউক্ অব্ নর্থান্থরলাগু ইহা পরীক্ষা করিরা খুব আশাপ্রদ ফল প্রাপ্ত হইরাছিলেন। ইহা আমাদের দেশে প্রচলন করিলে সবিশেষ লাভবান হইতে পারে। তিব্বতের এবং হিমালয় প্রদেশের ইয়াক্ র্যাড়ের সহিত তদ্দেশস্থ গাভীর সহিত "ক্রেশ" হইলে ভাল হয়। আবার ঐ র্যাড়ের সহিত ভারতীয় সমতল ক্ষেত্রের হরিয়ানা বা গুজরাট্ বা অপর কোন ভালজাতীয় দেশী গাভির সহিত "ক্রেশ" করিলে অধিক সম্ভোষজ্ঞনক ফল প্রাপ্ত হওয়া পিরাছে। চট্টগ্রাম দেশীয় "গয়াল" বাঁড়ের সহিত দেশী গাভীর "ক্রেশ" করিয়া আশাপ্রদ ফল প্রাপ্ত হওয়া গিরাছে।

উপরোক্ত নিয়ম ও বিধিগুলির প্রতি দৃষ্টি রাথিয়া ক্লমক যত্ব, অধাবসায় এবং দ্রদর্শিতার সহিত "ক্রশ" করিলে আশাপ্রদ ফল প্রাপ্ত হইবেন। এসম্বন্ধে ওয়ালেস, ইউয়াট্, ক্রক্, ডারউইন্ প্রভৃতির পুস্তক পাঠ করিলে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করা ষাইতে পারিবে। 'কান্ট্রি-জেন্টেল্ম্যান' নামক পত্রিকাও যত্তে পাঠ করা উচিত।



একাদশ পরিচ্ছেদ।

গোশৃঙ্গ।

ছগ্ধবতী গাভীর শৃঙ্গের কোন উপকার বা সার্থকতা দেখিতে পাওয়া ধায় না। সেই কারণে বিলাত বা ইউরোপীয় প্রদেশে একজাতীয় শৃঙ্গ-'বিহীন গাভী দেখিতে পাওয়া যায়: ইহাদিগকে "পোল্ড" (polled cattle) বলে। শৃঙ্গহীন (dehorn) কবা বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়ায় সাধিত ইইয়া থাকে। গাভী প্রসন করিলে সেই দিনই বাছুর ছগ্নাদি পান করিয়া স্লুস্থ হইলে, শুঙ্গ উঠিবার লোমহীন স্থানে চুই বা তিন বার ২।৩ ঘণ্টা অন্তর কষ্টিক পটাশ (N2OH) এবং এমন পরিমাণে বিশুদ্ধ জল (H2O) মিশাও যাহাতে ঐ কষ্টিক পটাশ দ্রব হয়। তাহার পর উহা উপরোক্ত প্রকারে ব্যবহার কবিলে গাভীর শৃঙ্গোদগম হইবে না। এক ফোঁটা ব্যবহার করিবে যাহাতে গড়াইয়া না পড়ে। দক্ষিণ ভারতে শুঙ্গোদ্গমেব পূর্বে লোহার ছাক। দিয়া শৃঙ্গহীন করা হয়। বর্ত্তমানকালে বিলাত, ইউবোপীর মহাদেশ, আমেরিকা, সুইজরল্যাণ্ড প্রভৃতি দেশে শৃঙ্গলীন গাভীর পুবই আদর দেখা যায়। স্বভাবজাত শৃঙ্গলীন গাভীর সাহায়ে এবং উপরোক্ত বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়ায় লব্ধ শৃঙ্গহীন গোজাতির বংশ বৃদ্ধি করিয়া পাশ্চাতা বৈজ্ঞানিকগণ এক স্বতম্ত্র শৃঙ্গহীন গোজাতির সৃষ্টি করিয়াছেন। এই শৃঙ্গহীন গোজাতির প্রথম সৃষ্টি "পোল্ড্নফে কি" कां कि इहेट इहेबारक। अथेन পোল্ড कांनि "तृत्मत आमत्र आरमतिका মহাদেশে খুব বেশী দৃষ্টিগোচর হইরা থাকে। উত্তর ইংলগুদৈশে "পোল্ড এক্সাস্-এবার্ডীন'' জাতির আদর বড় কম নহে। শৃক্ষহীন করিবার জন্ত আমেরিকার অনেক দোকানে তত্পযোগী শাণিত ছুরী বিক্রন্ত इहेबा बोट्क। छाहाटक "dehorning knife" वटन। छाहाटनव

ঠিকানা আমার নিকট ডাক-টিকিট সহ পত্র লিখিলে পাওরা যাইবে।
সন্ধর গাভী সম্বন্ধে পূর্ব্বোক্ত গো-বিভাগ অধ্যামের মন্তর্গত "বিলাতি"
পর্য্যায় দ্রন্তরা। অধ্যাপক্ ম্যাক্ডোনাল্ড এবং ষ্টিকেন্ বলেন যে, বিলাতি
শটহর্ণ যাঁডের সংযোগে ভারতীয় ছগ্ধবতী গাভীর গভে অভ্যুত্তম সন্ধর গাভী উৎপাদিত হইরা থাকে।

পাশ্চাত্য প্রদেশে শিন্ত -বিহীনকবণ" (dehorning) কেবল মাত্র যে সথ্ তাহা নহে, বরং ইহার হারা অনেক উপকার সাধিত হয়। গাভী "মার্কুটে" হয় না. ধীর এবং শান্তস্বভাববিশিষ্ট হয়, থোঁয়াড়ে অপেক্ষাক্ত অল্লন্থানে থাকিতে পারে। এই প্রক্রিয়ার হারা বিলাভি উৎপাদকগণ "পোল্ড" গো-বংশের উৎপাদন করিয়াছেন। "Polled Aberdeen-Angus," "Polled Norfolk" এই প্রণালীর ফল। কেহ কেহ বলেন যে, "শিঙ্-বিহীনকরণ" অতি নিষ্ঠুর প্রথা (cruelty to animals) এবং সেই জন্ম বিলাভ প্রভৃতি দেশে উহার বিক্লন্ধে আইন বিধিবদ্ধ আছে; কিন্তু আনাদেব দেশে গো-হননের বিক্লন্ধে কোনক্ষপ আইন নাই।

প্রথম গাভীটিকে খোঁটায় উত্তমরূপে বাধিয়া (বাহাতে নজিতে চজিতে না পারে) ছুরিকা দারা শিঙের গোজায় অর্থাং যেখানে লোম আরম্ভ হইরাচে সেইথানে কর্তুন করিবে। শিঙ্ কর্তুন ছুরী বা (dehorner) বাজারে অনেক পাওয়া যায়। তাহার নিদর্শন পরে প্রদত্ত হইয়াছে। করাং দিয়া কাটাই সমীচান, কারণ হাহার ব্যবহারে কোনরূপ ভবিষাং বিপদের আশক্ষা থাকে না। শিঙ্ ছেদন-কালে ''dehorning knife'' কিলা bone saw বাবহার করাই ভাল। শিয়ার (shear) দারা শিঙ্-বিহীনকরণে অনেক বিপদের সম্ভাবনা থাকে, ফেক্তের্ এই প্রণালীতে শিঙ্গুলি থেঁংলাইয়া গিয়া অপর পদার্থ ক্ষতস্থানে প্রবেশলাভ করিয়া ঘা হইরা পাকে। সেইজন্ত ছেদনের পর '' পাইন-টার

(pine tar) কাপড়ে লাগাইয়া ক্ষতস্থানে প্রয়োগ করিবে, গাভীকে মাঠে যাইতে দিবে না এবং এমন ভাবে দাবধানে রাখিবে যাহাতে ক্ষতের সভ্সভানিতে নাপা চুলকাইতে না পারে, ও অপর পদার্থ ক্ষতে প্রবৃষ্ট করাইয়া তাহা বাড়াইয়া তরারোগ্য করিয়া না ফেলে। ঠাগুার সময় এবং প্রধানতঃ শীতকালে " শিঙ্কাটা" বিধি প্রারন্ধ করিবে এবং তুই বংসরের কম বয়য় গাভীকে এই ক্রিয়ার অধীন কদাচ কবিবে না।

বংসকে শিঙ্-নিহান করিতে হইলে কষ্টিক্ সোডা বা কষ্টিক্ পটাশের পেন্শিল, শিঙ্ উদ্গমেব স্থানে (button) প্রয়োগ করিবে। স্থানের এক সপ্তাহেব মধ্যে অর্থাৎ ৪।৫ দিনের হইলেই এই ঔষধ প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য। এ নিষয়ে ডাঃ Richard V. Hickman, V.M.D., Chief of the Quarantive Division, Bureau of Animal Industry, U.S., Department of Agriculture, ১৯০৯ সালের Farmer's Bulleton No. 350 সংখ্যায় এ বিষয়ে সবিশেষ এবং বিস্তাবিত আলোচনা করিয়াছেন।



षांपण পরিচ্ছেদ।

গোচারণ।

বলিষ্ঠ গাভী উৎপাদন করিতে হইলে এথন আমানের গোচারণের বিষয় বিশেষ আলোচনা আবশ্যক। ভারতেব লোকসংখ্যা পরিবর্দ্ধিত হওয়ায়, জমীদারগণের অর্থলোলুপতা এবং পিপাসার কারণে গ্রামে যত গোচারণ স্থান ছিল তাহা দথল কবিয়া বন্দোবস্ত কবিরা আয়বৃদ্ধির পরাকার্তা প্রদর্শন করা হইয়াছে। রা**জার** প্রজার আইন-আদালতে বিবাদ করিয়া শত শতবিঘার আয় অবথা নষ্ট করিতে আমরা অবলালাক্রমে পারি, কিন্তু গ্রাম্য জমীদার বাবুর পিতার প্রাদ্ধোপলক্ষে ত্যক্ত ঘাঁড় বা নিমাই দকারের খুড়ার শ্রাদ্ধে দাগা যাঁড়টি যে ছই মুঠা থাদ থাটবে তাহা না জমীলার বাবুব সহা হয়, না পঢ়া সন্দার বা হানিফ গাজী বা হাকুমোড়লের তাহা সহু হয়। বেচারা শাড় সহবে নীত হইয়া ময়লার গাড়ি টানিতে টানিতে নাজেহাল। এই ত আমাদের গোজাতির প্রতি বাংদল্য। তার উপর বলি ''দন্তা তথ পাইনা কেন ?'' "টেঁপার লিভার আর যায় না"!—ইত্যাদি ইত্যাদি বছ প্রকার অভিযোগ করিয়া থাকি। ইহার প্রতিকার আনাদের হাতে ? না-সরকার বাহাত্রের হাতে ৪ গয়া, বরহমপুর, দাদ্রি, হরিহর ছত্ত্র, অমৃতসহর প্রভৃতি ন্তানের মেলায় যে শত শত গাভী ও চন্মপোষা বংস কসাইহন্তে অচিরে ছুরিকার রঞ্জিতদেহ হইবার জন্ম বিক্রীত হইতেছে, তাহার বিক্রেতা কে 🛉 এই কলিকাতা সহরেই শত শতগাভী বা বৎস প্রথম শ্রেণীর 'বীফ' বলিয়া বিক্রীত হইবার জন্ম স্থানীয় গোয়ালাদের দ্বারা বাজারে নীত হইতেছে। ভাহাদের বিক্রেতা কে? হিন্দুসমাজ কি এই সকল গোজাতির অকাল-

মরণে কৃষিপ্রধান ভারতভূমে কৃষিকার্য্যের অবনতির আশস্কা করেন না ? যদি করেন, তবে নিজেদের দেশের গোজাতির থাদা-সংগ্রহে যত্নবান ছউন: যাহাতে এতদেশীর গোজাতির রক্ষা হয় তাহার জন্ত যত্নবান হউন; ষাহাতে ভারতীয় গোজাতি থাদ্যাভাবে জীর্ণ ও শীর্ণ-কলেবর হইয়া অকালে মুক্তাপ্রাসে পতিত না হয়, তাহার উপায় বিশেষ চেষ্টা করিয়া উদ্বাবন করুন ৷ মনুষারাজো যেমন থোর জাবন-সংগ্রাম উপন্থিত, পশুরাজ্যেও সেইরূপ বিষম জীবন-সংগ্রাম উপস্থিত। পল্লীগ্রামে ডোয়ার পাড়টি পর্যাস্ত হইয়া লাঙ্গলের ফালের গতি হইয়াছে: গোচারণ আবাদ হইয়া, গ্রাম্য নিকাশের পর্থটি পর্যান্ত জোতাই হইয়া আবাদ হইয়াছে। ইহার জন্ত আমাদের জমীদারগণ দায়ী নহেন কি ? আমার বিবেচনা হয় যে, দেশের মান্ত গণ্য लाक এवः स्मोमानगामत উচিত यে. मनकान नाराजन क विवास আবেদন করিয়া এই মর্ম্মে একটি আইন বিধিবদ্ধ করান যে, প্রত্যেক জমীদার তাঁহার জমীদাবীতে স্বল্পরিমাণ ভূমি পোচারণ জন্ত ছাড়িয়া গোচারণার্থে প্রত্যেক হশ্ববতী গাভীপ্রতি ন্যন-মাত্রায় এক বিঘা করিয়া মাঠ যথেষ্ট। এই জমীতে যেন প্রজাগণ চাষ করিতে না পারে, এবং করিলে, গ্রামের জনাদার বা জেলার ম্যাজিষ্টেট বাহাত্র তাহার জ্বিমানা করেন-এইরূপ বিধান উক্ত আইনে থাকা উচিত। দমন্ত বংশৰ ধরিয়া টাট্কা কচি ঘাদের জন্ত প্রত্যেক পাভীপিছু এক একার বা ৩া০ বিঘা জমীই প্রচুর এবং যথেষ্ট বলিয়া আমার বিবেচনা হয়। এক বিঘার পরিমাণ ১৪০ ফিট লম্বা এবং ১৪০ ফিট চৌড়া বৰ্গভূমি। প্ৰত্যেক গাভী-পিছু ৭ বিঘা জমী হইলে আমার . त्वाथ हम २ वा २॥० विधात धाम এवः वद्धी ८॥० वा ६ विधात (गा-थाम) শস্য অর্থাৎ কাউপি, ক্যাবেজ , ক্যারট্, গম, কড়াই, ছোলা, তিসি ইত্যাদি উংপাদন করা যাইতে পারে। ইহার দারা বড় ছগ্ধবতী গাভী হইলেও তাহার সম্ব্যুরের থোরাকের ব্যবস্থা অনারাসেই হইরা ঘাইতে পারেন

কম থাজনার পাহাড়ের সাহদেশে বিস্তর পতিত অমুর্বার জমি পাওয়া বার। পরিশ্রমী ক্ষক তাহাতে সার দিয়া তাহা হইতে প্রচুর ফসল উৎপাদন করিয়া লইতে এবং গোচারণও প্রস্তুত করিয়া লইতে পারিবে। এ সম্বন্ধে "Sutton on Temporary and Permanent Pastures" নামক পুস্তক যত্নে পাঠ করিলে অনেক জ্ঞাতবা বিষয় অবগত হওয়া যাইবে। ছোলা, বার্লি যাহা ক্ষেতে উৎপন্ন হইবে, তাহা আবশাক-মত গাভীকে খোঁটার বাঁধিয়া থাওয়ান যাইতে পারে, এবং মাড়াই হইলে পর প্রচুর ভূবিও পাওয়া যাইবে যাহার দারা প্রতাহ জাবের জন্তা বড় ভাবিতে হইবে না। পাঠক মনে রাখিবেন যে আমাদের দেশের গো-থাদ্য নির্বাচন, দান ও প্রণালী পাশ্চাতা দেশ হইতে বিভিন্নপ্রকার। তাহা ক্রমশঃ এই পুস্তকে থাদ্য-বিচারাধ্যায়ে সবিশেষ আলোচিত হইবে।

গোচারণ মাঠ প্রস্তুত করা এইজন্ম প্রয়োজন যেহেত্ব আমাদের দেশে
ইহা একটি নৃতন জিনিষ। আমাদের দেশের গ্রীম্ম এবং রৌদ্র এত তীক্ষ
যে, রৌদ্রের প্রথরতার গ্রীম্মকালে মাঠগুলি শুক তৃণক্ষেত্রে পরিণত হইরা
গোজাতির খাদ্য-সামগ্রীর অকাল-অভাব ঘটাইয়া রোগ উৎপাদন করে,
গোমড়ক হয় এবং শত সহস্র গাভী অকালে ভাগাড়ে নীত হয়। সেই জন্ম,
ভাই গৃহস্থ ষদি গোরু পুষিতে বাসনা কর, তাহা হইলে নিজের ও নিজের
ছেলেদের যেমন আহারের সংস্থান করিতে ক্রটী কর না, সেইরূপ তোমার
আপ্রিত গাভী মাভা ও তাঁহার শাবক (যাহারা তোমার শিশুসন্তানকে
এবং ভোমাকেও পর্যান্ত ক্রম্মানে জীবন ও আয়ু বদ্ধিত করিতেছেন)
তাহাদের খাদ্য সংগ্রহের জন্ম বিশেষ যত্রবান হও। তুমি রুষক, তুমি
ক্রমিজীবী, তোমার মটো হওয়া উচিত—'' রুবিধ ন্তা ক্রমিনে খ্যা জন্তনাং
জীবনং কৃষি: ''। কেহ কেহ মনে করেন যে, গোচারণে ঘাদ আপনা
আপনি জন্মাইলে তাহাই গাভীর পক্ষে যথেষ্ট। কিন্তু ইহা সম্পূর্ণ ভূল।

সায় দেওয়া প্রয়েজন। ঘাসের দারা জমীর উৎপাদিকা-শক্তির যত হাস হয়, সেইরূপ অপর কোন বুক্ষ লতা ফসলাদিব দারা হয় না। সেই জন্ম দাদের মাঠে বিশেষ করিয়া দার দিতে হয়, কিম্বা লাঙ্গল দিয়া মাটী উদ কাইয়া গাদেব শিকড়ে জড়িত মাটীর চাপড়া ভাঙ্গিয়া দিতে হয়। গোচারণ-মাঠে জল-দেচনের বিশেষ নিয়মিত ব্যবস্থা প্রয়োজন। আমাদের দেশে জলেব বড় টানাটানি: সেইজন্ম চারণভূমিতে প্রত্যেক বংসর সার দেওয়া প্রয়োজন। মার্চ্চ মাসে বেশ করিয়া লাঙ্গল দিয়া থেতে মই मिया. (गावव वा गामुक वा गामन-घत वा जानावतन बाँगिनि, जावर्जना वा ठाफ 3 कवना खँफाव मात निवा भून क महे निवा ছाफ़िया नित् । গোচারণে দেচন জন্ত নালী বা প্রঃনালা প্রস্তুত করিয়া রাখিবে, যাহাতে व्यावभाक इनेटन कन-८महत्वत (कान वार्षिक ना घटि। সারপ্রদান ও দেচনের স্থাবস্থা থাকিলে প্রচুর ঘাস সমন্ত বংসর পাওয়া যাইবে। ল্যানডেথের বা বপির বা সটনের নিকট হইতে বিলাতি ঘাসের বীজ মানাইরা আদেশ-পত্রমত রোপণ করিলৈ প্রচুর তাজা ঘাদ এবং হে পাওয়া ষাইবে; আল্ফা-আলফা, ক্লোভার বা লুসার্ণ ঘাসও ভাল। কিন্তু লুসার্ণ বা ক্লোভার ত্রমবতী গাভার ত্রমের হ্রাস করে এবং কিছু গরম বিধার নবযৌবনার্কা বকুনা বা ঐ অবস্থাপন্ন ঘাঁড়ের অকালপূর্ণতা আনয়ন করে। সেই জন্ম ইহা আমানের গ্রীম্মপ্রধান দেশে ত্যাগ করাই ভাল। नौज्ञान (मान इंश निया छेशायाती। त्रम, वार्ति, कनारे, यानात्र ইত্যাদির পাতা ও ডগাতে বেশ ঘাসের কাজ করিতে পারে। গোচারণের কতকাংশে দুর্বাঘাসও দেওয়া যাইতে পারে। ইহা অজর এবং অমর এবং বংসরের সকল সময়েই হয়। Peacock-crest grass (মাইএল্ कानाहे भिन्), हित्रानी वा dog-grass (आक्रशाम भिन्), sedge grass (কোরাই পিলু), horse gram (কোরু, dolichos unifloris), বাগী, finger grass (মথেকা পিরু), guinea grass

(শোনাই পিলু), মকা (Indian Corn), সোর্থম (great millet stalks) ঘাদের বীজ গোচারণে বেশ রোয়া যাইতে পারে।

গোচারণে ঘাসের খেতে বিলাত প্রভৃতি পাশ্চাতা দেশে সার मिवात **5**नम व्याष्ट्र। शामग्र, व्यथ्मानांत कठिम এवः अनीग्र मात्रहे इंशांत भाक्त थूर छेभागी। हार्निभ, त्काभी, काइन-तरि, राधात्काभी, প্রভৃতি কাঁচা শাক-সব্জার পক্ষে জলীয় সার বিশেষ উপযোগী। জই, জব প্রভৃতির স্থায় কোপীপাতা, বাধাকোপী, টার্ণিপ, গাজর, ওলকোপী প্রভৃতি গ্রীণ-থাত্ম ও "রুট"-খাত্ম গোজাতিকে দিবার প্রথা পাশ্চাত্য সকল দেশেই প্রায় দেখা যায়। গোচারণ মাঠে সারের মধ্যে stable refuse, cow-dung এবং litter দিলে খুব ভাল সারে হয়। বৈজ্ঞানিক উপায়ে সোডা নাইট্রেট এবং ছাই চালা সমান অংশে মিশাইয়া থেতে इफारेबा मात मिल थुन मरशयङ्गक कल পा ७वा गारेरन। अभीरिक রাসায়নিক সার দিতে হইলে ইহার সহিত নিশাইয়। প্রয়োগ করাই স্ক্তোভাবে কর্ত্ত্তা। বর্ষার পূর্ব্বেই বেশ করিয়া জর্মাতে চাষ দিয়া মই দিয়া সার দিয়া পরে আবার মই দিবে। পবে ডীলে করিয়া বীজ রোপণ করিবে বা গুঁড়া মাটির সহিত বীজ মিশাইয়া 'broad-cast' জমিতে ছডাইবে। সোডা নাইট্রেট একার পিছু ২ হন্দর প্রয়োগ করিবে এবং সমান পরিমাণ ছাইও মিশাইয়া ঘাসের থেতে ছড়াইবে। গোশালার "গোময়-গর্ভ" (dung-pit) চাপা (covered) রাথিবে, নচেৎ জলে ধুইয়া গিয়া গোময়ের এমোনিয়া নষ্ট হইয়া সারের উৎপাদিকা-শক্তির বিশেষ হাস করিয়া থাকে। গোময়-গর্তের উপরে থোলার চাল বা ছাউনি করিয়া দিবে, কিন্তু পার্যগুলি খোলা রাথিবে। গো এবং অর্থণালার সকল আবর্জনাই তাহাতে রক্ষা করিবে। ঘাস, থড়, ইক্সাদি একসঙ্গে মিশাইবার জন্ম dungpitএর নিকট ১০/৫টা শূকর ছাড়িয়া দিবে। গো-চোনা কলের সহিত মিশাইয়া গোচারণ-খেতে

প্রযোজ্য, তাহা আমি "সারের" পর্যায়ে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছি। ম্যানগোল্ড-ওবজেল বুকের বীজ বপনেব পর জলমিখ্রিত গোচোনার দারা সেচন করিলে বিশেষ উপকার হয়: গাছগুলিও তেজস্কর হয় এবং ফদলও প্রচর পরিমাণে জন্মিয়া থাকে। রুষক যেন মনে রাখিবেন ৰে, "all kinds of ashes are perfectly grateful to the turnip, cabbage, mangold-wurzel & grasses." কোপিপাতার গাভীর দ্বন্ধ বন্ধিত হয়। কোপীর জমীতে ছাই বা সোডা নাইটেটের স্তিত কিছু ল্বণের সার দিলে খুব ভাল হয়। ধানের খেতে সোরা দিলে ধান দিল্ল প্ৰিমাণে পাওয়া যাইতে দেখা গিয়াছে। গোহাড-চর্লে জমির উৎপাদিকা-শক্তির থব বৃদ্ধি হইয়া থাকে: তাহা ভারতবর্ষে এবং বিলাতে বাবছাবে পরীক্ষিত হইয়াছে। ঘাসের বীজ 'মিকশ্চার" কোথায় এবং কি দরে পাওয়া যায়, তাহা "Indian Gardening Association" আপিষে লিখিলে অথবা "Country gentleman" পত্রিকায় প্রকাশিত বিজ্ঞাপন-পত্রিকা দেখিলে সনিশেষ জানা যাইতে পারিবে। Cowpea (কাউপি) গোজাতির পৃষ্টিকর একটি উপাদের খান্তদামগ্রী। এই সকল ঘাদ-বীজ পাইবার ঠিকানা আমার নিকট টিকিটসহ পত্র লিখিলে জানা যায়। এ বিষয়ে অনেক পুস্তক আছে. কিন্তু আমি "Flint's Grasses & Forage Plants" নামক পুত্তকখানি যতে পঠনীয় মনে করি।

গোচারণ-ক্ষেত্র প্রস্তুত করিয়া তাহাতে এল্ফা-এল্ফা থাসের বীজ্ঞামেরিকা হইতে আনাইয়া গোচারণ প্রস্তুত করা কর্ত্ব্য। কোন কোন ক্ষেকের বীজ ভাল এবং তাহাদের কি ঠিকানা তাহা আমার নিকট পোষ্টেজ সহ পত্র লিখিলে জানা ঘাইবে। এল্ফা ঘাস প্রচ্র জ্যায় এবং ইহা খুবই পৃষ্টিকর। টিমোখি ও ক্লোভার ঘাস্ও খ্ব চ্যুবর্দ্ধক এবং পৃষ্টিকর। বক্নার পক্ষে টিমোখি বিশেষ উপ্রোগী নহে,

বেহেতু ইহা অকাল-পরিপক্ষতা আনম্বন করিয়া থাকে এবং ভাহা হইলে কাজে কাজেই বক্না সকাল সকাল বলদ-গ্রহণ-প্রবণ হইয়া থাকে। নবযৌবনার্ক্টা বক্না বা ছগ্ধবতা গাভীকে পাইনপত্র বা টিমোথি ঘাস বা টিমোথির হে দেওয়া উচিত নহে।

গোচারণ সম্বন্ধে বিলাতী ও আমেবিকান বছবিধ পুন্তক আছে।
সেই গুলি পাঠ করিলে এ বিষয়ে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করা যাইতে
পারে। Journal of Board of Agriculture পত্রিকার দ্বাদশ
ভাগের ৩৮৫ এবং ৪৪৯ পূর্চায় মিঃ T. H. Middleton এবং ৬৭২
পূর্চায় অধ্যাপক Wright of the West of Scotland Agricultural College এ বিষয়ে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন।

গোচারণ প্রস্তুত এবং বীজ নির্বাচন প্রস্তুতি সম্বন্ধে Stebler, Hall, Elliot এবং De Laune প্রস্তুত্তির পুস্তুক পাঠ করিলে বিশেষ অভিক্রতা লাভ করা যাইবে। ঘাসের জন্ত কিরূপ মাটী প্রস্তুত্ত করিতে হয়, তাহা উপবোক্ত পুস্তুকের সহিত্ত S. W. Fletcherএর ক্রত এবং Londonএর বিশ্যাত পুস্তুক-বিক্রেতা Constable & Coর দ্বারা প্রকাশিত "Soils, How to handle and improve them" এবং W. J. Gordon's "Manual of British Grasses" (London, Simpkin & Marshall) প্রকাশিত পুস্তুক্তর এবং Vasey's "Agricultural Grasses of United States" পাঠ করা বিশেষ প্রয়োজন। গ্রাদি পশুকে মড় রা, জোরার, বাজরা, মজা, চিনা, শ্রামা প্রস্তুতি ঘাদ দিলে বিশেষ আগ্রহের সহিত্ত ভোজন করিরা খ্যাকে। See also E. T. Shepherd's "Practical Farming", (Crosby Lockwood & Sons, London.)

ভিন্ন ভিন্ন প্রকারের ঘাদের নাম ও কিরূপে এবং কি প্রকারে উৎপাদন করিতে হন্ন ভাছা Mr. Henry Stephenga "Book of

the Farm" নামক পৃস্তকের দিতীয় ভাগের ২২০ পৃষ্ঠা এবং বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে চারণ প্রস্তুত ও হে-আহরণ প্রণালী ঐ পৃস্তকের ৪৩০ পৃষ্ঠায় সবিশেষ আলোচিত হইয়াছে।

গোচারণ সম্বন্ধে আরও ২।৪ কথা আরও বলা আবশুক। পাহাডের 'ধারে গোচারণ করিলে বড মন্দ হয় না: কারণ, ইহার জল আপনিই গড়াইয়া পড়িলে ঘাদের বীজ দার দিয়া তাহার উপর ছড়াইলে প্রচুর ঘাদ গাভীর থাইবার জন্ম পাওয়া গিয়া থাকে। সাদা কোভার কাউ-গ্রাদ, টিফয়েল, বাইগ্রাস এবং পোয়া ঘাসই বিলাতি ঘাসের মধ্যে প্রধান। ইহার চাষ আমাদের দেশে দটন, বর্পি বা ল্যান্ডে থের নিকট হইতে বীজ আনাইয়া চারণ প্রস্তুত করিলে বড় মন্দু হয় না। এ বিষয়ে সটনের "Temporary and Permanent Pastures" এবং মেজর মীবারের "The Farm Manuel" পাঠ করা বিশেষ আবশাক; তাহা আমি পুর্বেও 上লিয়াছি। পাহাড়ে বা পাথুরে জ্মীতে Italian rye grass ভাল সার না দিলে জন্মায় না। ঐ ঘাদের জন্ম ভাল সারযুক্ত মাটীর প্রয়োজন। পাথুরে জমীতে নিম্নলিখিত ঘাদের বাজ জন্মায় এবং একার-পিছু কত বাজ দেওয়া প্রয়োজন তাহা পার্বে লিথিয়া দেওয়া গেল। টার্ণিপ্-ক্ষেত্রে স্থায়ী ঘাস চারণের জন্ম বীজ বপন করা যাইতে পারে। হেমন্ত কালই ইহার বিশেষ উপযোগী। প্রাথমিক বা early turnip বুনিয়া এই থেতে মে মাদে খাদের বীজ বপন করিতে হয়; ঐ ঘাদ আগষ্ঠ ও দেপ্টেম্বর মাদে প্রচুর জন্মিলে গোজাতির খাবার কোন অনাটন হয় না৷ চারণের জন্ত white clover, cow-grass (Trifolium Medium), Trefoil, Rye-grass, পোরা জাতীয় বাস (Poas) এবং Festucas সর্বাপেকা উপযোগী। পাহাড়ের গামে চারণ-ভূমি প্রস্তুত করা কিছু ব্যরসাধা, বে হেতু এগুলিকে ভাল করিয়া সেচনের বন্দোবন্ত করা উচিভ এবং জল-নিকাশের ব্যবস্থা করাও প্রয়োজন। তাহার পর বীক

নিৰ্ম্বাচন কৰা কিছু কঠিন। গোচাৰণ প্ৰস্তুত জন্ম ৰীজ পাকা পৰিপুষ্ট এবং জানা দোকানদারের মার্কাযুক্ত ফারমের হওয়া উচিত: ভাহা না ছইলে প্রায়ই নৈরাশা ঘটা বড় আশ্চর্যা নহে। কাঁকর ও পাথরযুক্ত মাটীতে লগন এণ্ড দক্স (Lawson and sons) নিম্নলিখিত ঘাস-বীজের mixture ছড়াইতে অনুরোধ করেন। Argotis Vulgaris একার-পিছ ৩ পাউও, Arrhen-atherum avenacum ৮ পাউও. Festuca Rubra ৮ পাউও, Holcus mollis > পাউও, Lolium Perenne ১০ পাউত্ত: Medicago lupulina ৮ পাউত্ত: Poa pratensis ৮ পাউণ্ড, সর্বান্তম ৫৫ পাউণ্ড। বেলে জমাতে নিম্নলিখিত বীজ ছড়াইবে:—Ammophila arundinacea ৮ হইতে ১৫ পাউতঃ Elymus arenarins ৬ ছইতে ১৪ পাউত্ত: Elymus geniculatus १ इरेट 8 : मर्ब ७६ २७ इरेट २० शाउँ । जान मात त्मल्या क्रमीए Italian rye grass বীজ রোপণ বিধি। ঘানের জমিতে ভাল করিয়া সার দেওয়া কর্ত্তবা। গোবর, গাছের পাতা পচা, গোশালা বা আন্তাবলের থড় ও গোমর-পচা, গোমূত ও হাড়-গুঁড়া দিয়া ঘাদের সার দিবার ব্যবস্থা বহুকালাব্ধি আছে। গোচারণ প্রস্তুত সম্বন্ধে জমীর মীবার সাহেব তাঁহার "Farm Manuel" নামক পুত্তকে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। তাহা যত্নসহকারে দ্রপ্তব্য: এবং R. Scott Burns সাহেবের "Systematic Small Farming নামক পুস্তকও পঠনীয়।

ক্লোভার, এন্ফা-এল ফা প্রভৃতি পৃষ্টিকর ঘাসের বীজ উত্তর-আমেরিকার ফিলাডেল ফিরা নগরের Henry A. Dreer, কিয়া O. M. Scott & Son of 180 Main Street, Marysville, Ohio. U. S. A.এর নিকট লিখিলে তাঁহাদের দোকান হইতে বিভন্ধ জ্বামিন্তিত বীজ আনম্বন করা যাইতে পারে। আমেরিকার আরম্ভ ব্দনেক বীজ্ব-ব্যবসায়ীর নামধাম আমার জানা আছে। টিকিট সহ পত্র দিলে পাঠক তাহা পাইতে পারেন।

তাহ ার পর আমাদের দেশে গ্রীম্মকালে প্রায়ই গ্রাদির খাদ্যসামগ্রীর অভাব হয় এবং প্রচর পরিমাণে পাওয়া যায় না। বর্ধাকালের প্রচর দুৰ্বা বা অপরাপর দেশী বা বিলাতী ঘাস ''সাইলো''তে রক্ষা করার উপায় এবং বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়া আমাদের দেশের ক্রযকগণকে শিক্ষা দেওয়া কর্ত্তবা। সে বিষয়ে পরে পুথক অলোচনা করিব। Agricultural Journal of Indias পঞ্চন ভাগেরমে D. L. Narain Rao, হারদাবাদ ডেকান হইতে গিনিবাস চাষের বিষয় সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। বোডগ্রাদ ছই প্রকার:—(১) Chloris virgata, (২ Chloris Gyana. ইহা গোজাতির অতি পুষ্টিকর খাদা ৷ ইহার বীজ আমেরিকা इटें जानान याहेट शारत: किया निर्णेण প্রদেশের রাজধানী পিটার-মাারিজ বর্গন্থিত Minister of Agricultureএর নিকট পত্র দিলে এই বীজ পাওয়া যাইতে পারে। ইহার উৎপাদম-বিধি মান্দাজের Central Agricultural Committeeর নিকট ৪ নং বুলেটিনের জ্বন্ত ্থ পয়সাসহ পত্র দিলে পাওয়া যাইবে: তাহাতে সবিশেষ উৎপাদন ও চাষপ্রণালী লিখিত আছে। এই ঘাসকে বিলাতি ভাষায় "prickly pear" বলে। লুমার্ণ (Lucerne) কিম্বা Alfa-alfa (এল ফা-এল ফা) ঘাসম্বয়প্ত গোজাতির কম পৃষ্টিকর থাদ্য নহে। আমেরিকার যুক্তরাজ্যের পশ্চিম-ভাগে অর্থাং ওহিও, ক্যালিফর্ণিয়া, উইন্কন্সিন্ প্রভৃতি প্রদেশে, বেখানে র্যাঞ্চিং খুব পূর্ণমাত্রায় প্রচলিত, এল ফা-এল ফা ঘাদের চাষ খুব হইরা থাকে। Agricultural Journal of India নামক পত্রিকার চতুর্থ ভালুমের ৩১৯ পৃষ্ঠায় ব্রহ্ম প্রদেশের কৃষি-কলেজের প্রধান অধ্যক্ষ (Principal) মি: ই, থম্ষ্টোন্ (E. Thompstone) এই ছই জাতীয় দ্বাস চাবের বিষয় স্বিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। এই ঘাসন্তয় মস্ত্ৰ

ও বেলে জমীতে জন্মিতে পারে। বেলে মার্টীতে বেশী সার দিতে হয়। "They grow on loamy & porous subsoil, which will allow the roots to penetrate deeply." সাব দিলে এই ঘাস সকল জমিতে জনিয়া থাকে। লাইম বা চূণ্যুক্ত জমিতে ইহারা খুব অতিরিক্ত প্রকারে জন্মিতে পারে, সেইজ্ঞু মাটী বিশ্লেষণ করিয়া, চণের ভাগ কম থাকিলে তাহা হইলে তাহাতে চুণের দার মিশ্রিত করিতে হইবে। প্রতি-একারে এই ঘাস উৎপাদন করিতে হুইলে ১০ হুইতে ১৫ টন গোশালা-জাত, ঘাদ, পাতা বা আন্তাবলের পুরাতন পচা দার দিতে হইবে। বর্ষার পূর্বেই ডিল বা হস্ত দারা বীজ ছড়াইতে হয়। যদি বর্ষার প্রারম্ভে বীজ বপন না হয়, তাহা হইলে অকটোবর বা নবেম্বর মাসে বীজ ছড়াইবারও বিধি আছে। মাটীতে ভাল করিয়া চায দিয়া ঘাস-পাতাদি নীডাইতে হইবে, যেন একটিও আগাছার বীজরাশি বড না থাকে। একবারে ২০ পাউও বাজ বালির সাহত মিশাইরা বা ডিলের দারা ছড়াইতে হইবে। অর্থাৎ ১৫ গজ লম্বা ও ১৬ গজ চৌডা জমিতে এক পাউও বীজ যথেষ্ট বলিয়া বোধ হয়। টিকিটসহ পত্র দিলে আমেরিকার বীজ-বিক্রেতাদের ঠিকানা পাঠাইতে পারা যায়। গাছগুলি একটু বড় হইলে সর্বনাই নিড়ান প্রয়োজন, যাহাতে আগাছাগুলি বাসগাছগুলিকে চাপিয়া না মারিয়া ফেলে। বিতীয়, তৃতীয় বা চতুর্থবর্ষে ৪ কিম্বা ৫ টন সার প্রয়োগ করিলেই বিশেষ কাজ হইয়া থাকে। বীজ তৈয়ার করিতে হুইলে ৩।৪ বৎসরের পুরাতন গাচ হুইতেই বীজ আহ্রণ করা উচিত। প্রতি-একারে দাবশেষ যত্ন করিলে অন্যুন ৩০০ পাউণ্ড ভাল বীব্দ পাওয়া ৰাইতে পারে।

ত্রয়োদশ পরিচ্ছেদ।

माहिता।

ভারতবর্ষের স্থায় বৃহৎ ক্ষপ্রিপ্রধান প্রদেশে - যেথানে গ্রীম্মের প্রকোপ অত্যন্ত অধিক, সময়ে সময়ে গ্রাদি পশুর থাগু সামগ্রীর অত্যন্ত অভাব দৃষ্ট হয়। এইজন্ম পাশ্চাতা প্রদেশে কচি এবং টাটকা গোপাদাসামগ্রী সঞ্চয় করিবার বৈজ্ঞানিক প্রথা বিগত ২০।২৫ বংসর হইতে আবিষ্কৃত হইয়াছে। আমেরিকার রুষকগণ ইহার প্রথম পথ-প্রদর্শক। যে বৈজ্ঞানিক প্রকোষ্টের অভ্যন্তরে টাটকা ও সবুজ ঘাস, লতা, গুলাদি সংরক্ষণ করা হয়, তাহাকে সাইলো বলে। কর্ণেল মীঘার সাহেব তাঁহার Farm Manual নামক পুস্তকে ''সাইলো'' নিশ্মাণের, বোঝাই-করণের ও গ্রীণ খাদা দংরক্ষণের বিষয় স্বিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। আমাদের দেশে জঙ্গলী বাঁশের সাইলো কিরূপে স্বরবারে প্রস্তুত করা যাইতে পারে, সে বিষয়ে ছয় ভালুম Agricultural Journal of India নামক পত্রিকার ২০ পৃষ্ঠায় ভারতীয় ক্র্যিবিভাগের অস্থায়ী ইনেম্পেক্টার-জেনারেল বাছাত্র, মিঃ বার্ণার্ড কভেন্টি মহোদয় সবিশেষ উপদেশ দিয়াছেন। এ বিষয়ে "কটি জেণ্টেল ম্যান" পত্রিকাও বিশেষরূপে ্ দ্রষ্টবা। লুসার্ণ, টিমোথি প্রভৃতি ঘাদের এবং মক্কা বা Indian Corn এর ভাল সাইলেজ প্রস্তুত করা যাইতে পারে। এই সম্বন্ধে Mr. Th mas Shaw কুত "Forage Crops" এবং "Clover and how to grow them" নামক ছইখানি পুস্তকও বিশেষ যত্ন-সহকারে দ্ৰপ্তবা।

আমাদের দেশের কৃষকগণ যদিও বৈজ্ঞানিক উপারে সাইলো নিশাণ করিতে জানে না, এনসিলেজ, সাইলেজ প্রভৃতি বৈজ্ঞানিক

20

কথাগুলির অর্থ ব্রিতে সম্পূর্ণ অজ্ঞ, তত্রাপি অতি প্রাচীনকাল হইতে আমাদের দেশের সেই মান্ধাতার আমলের ক্রযকগণ এনসিলেজ প্রভৃতির কাজ "ফদ্ ষ্টং তৎকুতং" রূপে চিরকালই করিয়া আসিতেছে। পাটনা জেলার অন্তর্গত বহুত্বানের বিশেষতঃ গিয়াশপুর পরগণার ক্ষকগণ, এবং সাহরাণপুর, মোরাদাবাদ, ঝান্সি. গন্না, পাটনা, লাহোর, মলতান প্রভৃতি জেলার চাষীগণ মৃত্তিকার অভ্যন্তবে গর্ভ পুঁড়িয়া তদভান্তরে রবিশস্য চাপা দিয়া রক্ষা করিয়া থাকে। ঐ সকল জেলায় ভিন্ন ভিন্ন শদ্য ঐরপ প্রকারে রক্ষিত হইয়া থাকে। তাহাতে ক্সই বা অপর কোন পোকা ধরিয়া তাহা নষ্ট করিতে পারে না। স**হাদর** পাঠক, দেখুন, যাহা অদা বিজ্ঞান-বলে আবিষ্কৃত হইতেছে, যে সভা আজ পাশ্চাতা জগৎ আমাদিগের চক্ষের সমক্ষে ধরিতেছেন, ভাহা বছ শতাকী হইতে মতজ পরাশরীয় যুগের পূর্ব্ব হইতেও আমাদিগের দেশের অজ্ঞ ক্রমকসম্প্রাদায় অজানিতভাবে অমুসরণ করিয়া আসিতেছে। আমরা এত অমুকরণপ্রিয় হইয়াছি যে, আমাদের কোন ভাল জিনিষেও স্মামরা সহজে বিশ্বাস কবিতে চাই না। কোন পাশ্চাতা পণ্ডিত মিথা। কোন জিনিষ প্রচার করিলেও আমরা তাহা দাদরে আদল বলিয়া গ্রহণ করি। আমাদের এমনই অধোগতি হইয়াছে। ভারত মাতা. আমাদের এই মেকীর সংসার হইতে রক্ষা কবে করিবেন, বলা যায় না !!!

শুক্ত শুন্ত গোলায় রাথার প্রথা আমাদের দেশে অতি প্রাচীনকাল ইইতে প্রচলিত আছে। পশ্চিমদেশে এইরপ শুক্ত শস্ত রাথিবার গোলাকে "ঠেক" বলে। ইউরোপ এবং অপর পাশ্চাতা প্রদেশেও অতি প্রাচীন কাল হইতে শুক্ত শস্য রক্ষার প্রথা আছে, তাহা গ্লিনী এবং কি: উইল্কিন্সন (Wilkinson's "The Ancient Egyptians") কৈত প্রক্রের প্রথম ভাগে দেখিতে পাই। এই বিষয়ে নি: H. W. Jenkins, Secretary of the Royal Agricultural Society of England একটা গবেষণাপূর্ণ প্রবন্ধ লিখেন, তাহা ঐতিহাসিক পাঠকমাত্রের পাঠ করা কর্ত্তব্য।

গো-থান্ত কিরূপে সাইলেজে বছকাল সংরক্ষণ করিতে হয়, তাহা
মি: Henry Stephen বিরচিত "Book of the Farm" নামক পৃত্তকে
সবিশেষ আলোচিত হইয়াছে। গোজাতিকে কিরূপে থান্ত-নির্বাচন
করিয়া দিতে হয়, তাহারও ঐ পৃস্তকের ৩৪৫—৩৫৭ পৃষ্ঠায় সবিশেষ
উল্লেখ আছে। অধ্যাপক Manly Mies সাইলো নির্দাণ সম্বদ্ধে
এক প্রেরণাপূর্ণ পৃত্তক রচনা করিয়াছেন; তাহা সকলের পাঠ করা
কর্ত্তব্য। বিগত ১৯০৯ সালে যুক্তরাজ্যের "Bureau of Animal
Industryর ১৩৭ নং শাকুলারও এসম্বন্ধে বিশেষ মনোধাপসহকারে পাঠনীয়।

আমি খাছ-বিচারাধ্যারে বলিয়াছি মে, হয়বতী গাভীকে প্রত্যন্থ ত হইতে ৪০ পাউও সাইলেজ্জাত-খাদ্য দেওয়া প্রয়েজন। সেইজক্ত সাইলো নির্মাণ করিতে হইলে, প্রথমে ইহার ঘেরা সম্বন্ধে বিচার করা কর্ত্তবা। নির্মলিখিত তালিকা দেখিলে স্পষ্ট প্রতীয়মান হইকে বে, কত পরিমাণ ঘেরার সাইলোতে কয়টা গাভীর খাদ্য সঞ্জিত খাকিতে পারে।

সাইলোর ব্যাস		গাভীর সংখ্যা
कि है	•	
>•	•••	>₹:
১২	•••	วัจ
58	***	રહ
34	***	••
3F	•••	نوه 💮

চতুর্দশ পরিচ্ছেদ।

গোজাতির খাদ্য বিচার।

গোজাতির থাদ্যের বিষয়টাই এই বর্ত্তমান পরিচ্ছেদে আমাদের আলোচনার বিষয়। আমাদের ভারতে সবই আছে, অথচ আমাদেরই দেশে গোমাতার থাদাভাব সকল স্থানেই পবিদৃষ্ট হয়। বেদেশের অধিকাংশ অধিবাসীর ভাগ্যে একসন্ধ্যা আহার অতিকণ্টে জুটে, সে দেশেব গোমাতা যে অনাহারে মরিবেন, তাহাতে আর বিচিত্র কি ? সবই ভগবানের হাত, আর আমাদের কপাল!!! বিলাতি বৈজ্ঞানিক যন্ত্রের সাহায্যে কত প্রকার অভিনব কল-কারথানার আবিষ্কার হইয়াছে তাহা বলা যায় না। এই গুলির মধ্যে Willacey's "Patent Cattle Feeding Machinery" (of Pentwortham Priory, Preston) উল্লেখযোগ্য। অপর কলের বিষয় পরে বিবৃত হইবে। এখন দেখা যাউক, গো-শরীরে কি কি উপাদান আছে এবং কি প্রকার খাদ্যাদানে ইহা পৃষ্টিলাভ করিতে পারে। এ সকল বিষয়ের আলোচনা আদেন আমাদের দেশে হয় নাই।

গাভীর থানোঁ ছই প্রকার জিনিষ আছে; (১) organic এবং (২) inorganic পদার্থ। ইন-অরগেনিক থান্যে Phosphate of lime, Magnesia এবং অন্তান্ত পার্থিব পদার্থ আছে যাহার দারার হাড় বন্ধিত হয়। এইগুলিই থান্যের ক্ষার-অংশ হইতে উৎপাদিত হয়। এই ক্ষার হইতে রক্ত এবং দেহের লাবণিক রসগুলি জন্মে (saline substances, e. g., the chlorides of potassium and sodium)। এই ক্ষার or ash জংশীয় থান্য হইতে গোজাতির দৈহিক রঠন, রক্ত, হাড় ইত্যাদির পৃষ্টি সাধিত হইয়ান থাকে। সেইজন্ত পাশ্চাত্য রাদায়নিকগণ গোজাতির inorganic থান্যের প্রতি বিশেষ

দষ্টি প্রদান করিয়া পুঞারুপুঞ্জারপে দেখাইয়াছেন যে, খাদ্যের উপর গাভীর গ্রনায়িকাশক্তি সম্পূর্ণ নির্ভর করে। গোজাতির খাদ্যের organic জংশে নিম্নলিখিত রাসায়নিক পদার্থ, বিশ্লেষণ দারা, স্থিরীকত হইয়াছে: — এল বুমেন্, গ্লেন্, কেদীন, ষ্টার্চ্, গম (gum), চিনি, তৈল (oil), এবং fibre. রসায়নবিদ পণ্ডিত Ligbieএর মতে এই গুলি আবার ছই ভাগে বিভক্ত: (১) Nitrogenous কিম্বা albuminous. এবং (২) Non-nitrogenous or carboniferous. যুবক্ষারজান-যুক্ত সমষ্টিতে পুনশ্চ কাৰ্বন (কয়লা), oxygen (অমুজান), hydrogen (জলজান) এবং nitrogen-(ব্ৰক্ষারজান) যুক্ত element আছে। খালোর এই সমষ্টি গোজাতির মাংসবর্দ্ধক ও পেশীর পুষ্টিসাধক। এই জন্ম ইহাদিগকে 'মাংস-বৰ্দ্ধক'' (Flesh-formers) বলিয়া থাকে। ইহারাই পুনশ্চ প্রোটান-সংযুক্ত (protein compounds of food) বিশয় অভিহিত হইয়া থাকে। সেইজন্ম গাভীকে মোটা করিতে হইলে এইরূপ খাদ্য দিতে হয় যাহাতে carbon, nitrogen, hydrogen and oxygen জনিত দ্রব্যগুলি বিশেষরূপে অধিক পরিমাণে বর্তমান আছে। ডাঃ লাঙ্কেষ্টার ইহা বৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণ দারা সবিশেষ প্রমাণিত করিয়াছেন। তিনি বলেন "The growth and support of an animal is now easily explained, when a flesh eater, like the tiger, lives on the flesh of another animal. it eats, from a chemical point of view, the substance of its own body, and requires only to give it a new place and form. When a child receives its mother's milk, it does the same thing, eating, in fact, its mother. and giving her flesh a new place and form in its own body. The nutriment of vegetable eaters is precisely

the same; they find in vegetable fibrin, albumen and caseine, the substance of their flesh and blood actually formed and have only to give it a place and position within their bodies. Vegetables are the true makers of flesh; animals only arrange the flesh which they find ready formed in vegetables. The nutritive value of food depends upon its richness in flesh-forming matter."

গো-খাদোর দ্বিতীয় সমষ্টি বা non-nitrogenous পদার্থের মধ্যে carbon, oxygen এবং hydrogen আছে, কিন্তু ইহার মধ্যে nitrogen বা যবকারজান আদৌ নাই। এই জাতীয় খাদ্যের সাহায়ে গাভীর শ্বাস-ক্রিয়ার সাহায় এবং দৈহিক উত্তাপের সংরক্ষণ সাধিত হইয়া থাকে। এইজন্ম এইরপ থাদ্যকে বৈজ্ঞানিকগণ উত্তাপ-সংরক্ষণকারী বা Carboniferous অথবা অন্বরজ্ঞান-পরিবারভুক্ত शामा विनया थारकन। भानव वा পশু-भवीरत नक्षानार जानायनिक পরিবর্ত্তন ঘটিতেছে, তাহা বোধ হয় সকলেই অবগত আছেন। ঐ পরিবর্তনের সঙ্গে দঙ্গে উত্তাপেরও হাস হইয়া থাকে: সেই তাপের সংরক্ষণ জন্ত খাদ্যরূপ ইন্ধনের আবশ্যক হইয়া থাকে। সেই জন্ত সচরাচর উদ্রোপ সংরক্ষণ করিয়া যদি অধিক উত্তাপ-উৎপাদিকা শক্তি দেহমধ্যে সমষ্টিভত থাকে, তাহা হইলে তাহা দৈহিক ননী (Animal fat) বা ঞান্তৰ চবর্বী প্রস্তুতের জন্ম নীত হইয়া থাকে। সেই জন্ম জার্মাণ পণ্ডিত ডা: ক্রিশ ম্যান এবং বিলাতি পণ্ডিত মিঃ অলিভার উভয়েই বলিয়াছেন যে "When there is a preponderance of the "heat-givers" in food, more than is sufficient to maintain the proper temperature of the body, they are assimilated

and produce a store of fat. But as the claim of the body to be kept warm must first be met, before fat can be formed, the importance of keeping up the warmth of the animal we are feeding and fattening, by shelter and other means is insisted upon; for the warmer the body, the greater surplus of food will be left to go to the formation of fat. Heat, therefore, is to a certain extent food. It is therefore good reason to say why cattle should not be left shivering in the frosty air on wintry days. The food is the fuel, the excrements are the ashes, the gases from the mouth are smoke and gases which fly up the chimney of a furnace. So, the less, then, we draw upon any food for heat, the more have we left for fattening purposes." এই সকল নিয়ম, যাহার উল্লেখ উপরে করিলাম, বিবেচনা করিয়া গাভীকে নির্বাচন করিয়া থাওয়াইলে অধিক চন্দ্র পাওয়া যাইবে এবং আবশ্রক-মত বথেষ্ট ছগ্ধভোজনকারা বংসও তেজী ও উত্তম হইয়া থাকে। গোবংসকে ভূমিষ্ঠ হইবার পর প্রথম সপ্তাহ পর্যান্ত মাতৃত্বগ্ধ পান করাইবে, তাহার পর কুত্রিম খাদ্য দিবার ব্যবস্থা করিয়া ক্রমশঃ চথ্ণের মাত্রা হাস করিয়া আনিবে।

"On three quarts linseed-meal and four quarts bean or peameal pour thirty quarts boiling water, cover up well for 24 hours, then pour it into a boiler holding about 30 quarts more of boiling water; give it an half hour's boiling, stirring it well all the time, then put by

for use, giving it to the calves milkwarm, mixed with milk. The calf should get its dem's milk for the first weak, when the mucilage may be mixed with it, at the rate of one-third mucilage to two thirds milk, gradually decreasing the milk till the seventh or eighth week, when the milk may be entirely withdrawn.

কিন্তু যদি গোবংসকে ছগ্ধ দেওয়ার স্থবিধা থাকে, তাহা হইলে উহা অপেকা আর উপযোগী থাদ্য তাহাদের পক্ষে নৈসর্গিক নিয়নে অপর কিছু হইতে পারে না। মিঃ প্রিংগল্ (Mr. Pringle) গোবংসদিগকে নিয়নে পালন করিতে বলেন:—

"Thirty quarts of bioling water are poured on three quarts of linseed meal and four quarters of bean meal, all then close covered up; and at the end of 24 hours added to 31 other quarts of boiling water then on the fire, being poured in slowly to prevent lumps (যাহাতে চাপড়া বাঁধিয়া না যায়) and being well stirred with a small, flat shovel shaped board (ভাড়) persorated with holes to produce thorough incorporation. After 30 minutes boiling and stirring, the mucilage is put by for use, to be given blood warm to the calves as soon as they are three days old; first in equal portions with new milk, increasing gradually to twothirds, as the calf gets older, substituting skim-milk (ননীভোলা ছগ্ন) after a month and feeding on mucilage alone after six weeks."

বিলাতের একজন বিখ্যাত পালক (breeder) তাঁহার পোশাবক-গণকে নিম্নরপ আহার দিয়া থুব শীঘ্রই বর্দ্ধিত করিয়া খববেশী দামে "শ্বিথ ফিল্ড গো-প্রদর্শনী"তে বিক্রন্ত করিয়াছিলেন। প্রথম পক্ষ দৈনিক ৭ কিম্বা ৮ কোয়াট মাতৃত্বগ্ধ-সকাল, দ্বিপ্রহর, বৈকাল, এবং রাত্রে-এই চারিবাবে খাওয়াইবে। বংদগুলি তিন দ্থাতের হুইলে মনিনা এবং জবের মণ্ডের (linseed and wheat meal) সহিত ননীতোলা চন্দ্ মিশাইয়া ভোজন করাইবে। অর্থাৎ 🖁 কোয়াঁট তিসি, ৩০ কোয়াট জলে সিদ্ধ করিয়া, তাহাতে (Whitnell's Domestic Flour mill এ) গম ভাঙ্গিয়া তাহা ঐ পায়দে (jelly) ফুটাইয়া ঈষতৃঞ্চ থাইতে দিবে। সকল থাদোই কিঞ্চিং লবণ এবং তাহার চতুর্থাংশ গন্ধক-গুঁড়া সংযোগ क्रिया वरमननरक था ७ या है दिया । वर्षार के भाषामान क्रियाक क्रियाक क्रियाक পিণ্টের সহিত ৪ কোয়ার্ট ননীতোলা ছগ্ধ মিলাইয়া ৩।৪ বার ঐরপ মিশ্রিত করিয়া থাওয়াইবে। তাহার পর সামার সামান্ত ধইল ওঁড়া ধাইতে শিধাইবে এবং ক্রমশঃ ঘাস, হে, কোপীপাতা, এবং আলু ও টার্ণিপ্-সিদ্ধ থাইতে শিথাইবে। বৎসগুলি ৬।৭ সপ্তাহের এবং ছই मन्नाम थए ভृषि বা कृषी ও धरेन मिनारेम जाव नित्र। মেজর মিগারের মতে হগ্নবতী ভারতীয় গাভীকে নিম্নলিখিত থানা मिल ভाল হয়:--

ছোলা কিম্বা মাষকলাইয়ের ভূষি অথবা অড়হরের ভূষি ৬ পাউও

মলিনার খইল

কচি থাসের কুটী

অথবা গুল্ক হে ঘাস

কিঞ্চিৎ লবল এবং গন্ধক মিশাইয়া থাওয়াইবে।

বে গাভীগুলি পূর্বমাত্রায় অর্থাৎ দিনে ১৪ পাউগু বা তদপেকা

অধিক ছুগ্ধ দের, তাহাদের পূর্ণমাত্রায় খান্ত (full feed) দিবে এবং ভাহা অপেকা বাহারা কম চগ্ধ দেয়; তাহাদিগকে অর্দ্ধনাত্রা (half feed) বাস্থ দিবে। বে গাভীগণ চারি পাউণ্ডের কম গ্রন্থ দেয়. ভাহাদিগকে অপরাপর পাভীর ভুক্তাবশেষ দিবে। হগ্ধবতী পাভী অপেক্ষা হশ্বৰতী মহিষকে ২ পাউণ্ড অধিক একীভূত (concentrated feed) খাদ্য কিন্বা ৮ পাউও ভূবি দিবে। ঐ পরিমাণ না দিরা মশিনার থইল দিলেও মন্দ হয় না। ৬ পাউগু বা তিনসের হগ্ধবতী মহিষকে দিবে অর্থাৎ এক সের বেশী খইল দিবার ব্যবস্থা করা ঘাইতে পারে। ঐ পরিমাণ মশিনার খইলের পরিবর্ত্তে ৬ পাউও অভহরের ভবি এবং ২ পাউও কাপাস-বীজ শীতকালে দেওয়া যাইতে পারে; বেহেতু এই উভরের উপকারিতা সমান। হগ্ধবতী গাভীকে ছোলা দেওয়া ষাইতে পারে না, কারণ ছোলা বেশী ধাইলে হগ্ধবতী গাভীর হগ্ধ হাস হইবার সম্ভাবনা বেশী। ভূষি না পাওয়া যাইলে ছোলার হর। দিবার ব্যবস্থা আমাদের দেশে দেখা যায়। গোজাতিকে জাব এবং পরিষ্কার জল নিয়মিত সময়ে দেওয়া কর্তব্য; তাহা পূর্বেও বলিয়াছি, এবং হ্য-দোহনের পূর্বেই জাব দিবার ব্যবস্থা করা উচিত। কাপাস-বীজ বা কাপাস-**ধইল চুগ্নের ননী বৃদ্ধি করে. সেই জন্ম তাহা মহিবীকে দিলে মন্দ হয়** না। গোজাতির থাদ্য দিবার ব্যবস্থা করিবার পূর্কে ছইটা অত্যাবগুকীয় क्शा मान ताथा करूवा :--(>) चारमात পরিমাণ এবং গুণ (quality) বিশেষরূপ পরীকা করিয়া দেখা কর্ত্বা। (২) থাতের মূল্য। কম-মুল্যে যাহাতে ভাল খান্যমামগ্রী ক্রম করা ঘাইতে পারে, তাহার প্রতি বিশেষ লক্ষ্য রাথিবে ; কারণ ইহার উপরেই এই বিষয় নির্ভর করে বে গাভী লাভে রক্ষিত হইতেছে কিমা গৃহস্থের লোকসানদায়িকা হইয়া আছে। ননীতোলা হয় এবং ছানার জলে নিম্নিখিত উপকরণ-শুলি স্নাছে: তাহা বিশ্লেষণ ছারা জানা গিয়াছে:--

	ননীতোলা হগ্ধ।	ছানার জলে।
অস	>.	8.06
এ ল্ বুমেন	૭.૧	6.
হ ন্ক -চিনি (লেক্টোজ্)	8.1	8.৮
ननी (fat) वा माथम	ط.	
ছাই	.9	હ .
	>••	>••

গো-ছগ্মন্থিত মাধ্ম বা ননী (fat or butter) শতকরা ৩.৪ হইতে ¢ পরিমাণ পর্যান্ত থাকে। চুগ্ধবতী গাভীকে অধিক পরিমাণ ননী-উৎপাদক (fat producing) খাদা দেওয়া প্রয়োজন। দেশী মকা, জোরার, বাজ রা, থইল, কাপাস-বাজ, কাপাস-থইল আদি সামগ্রী অধিক পরিমাণে ননী-উৎপাদক খাদ্য বলিয়া জানিবে। গোজাতি যে খাদ্য প্রত্যাহ ভোজন করে, তাহার অধিক অংশ দৈহিক উত্তাপ সংরক্ষণে এবং সায় ও পেশী উৎপাদনে ব্যয়িত হয় বলিয়া, তাহার অতি · অল্প পরিমাণ চন্ধের এলব্দিনমেড জাত (albumenoid) সামগ্রী প্রস্তুতকরণে লাগিয়া পাকে। সেইজন্ম হগ্ধবতী গাভীর এলবুমিন-জাত খাদ্যের উপর অধিক আহা দেওয়া প্রয়োজন বলিয়া আমরা গৃহস্বকে সেদিকে বিশেষ দৃষ্টি রাখিতে বলি। ছগ্নে অধিক পরিমাণ ননী ইচ্চা করিলে কাপাস-বীজ বা কাপাস-খইলজাত থাদা দেওয়া আবশ্রক। সেই জন্ম গৃহস্থ অধিক পরিমাণ ছগ্ধ আশা করিলে, স্বীয় গাভীকে খুব বিবেচনা করিয়া থাওয়াইবার প্রতি বিশেষ শক্ষ্য রাখিবেন. যাহাতে গো-পালনের ব্যয় যেন গোজাত সামগ্রীর মূল্য হইতে অধিক ना इत्र। अर्थार थाना दयन मछा इत्र. अथठ इन्ह याशास्त्र ना किया बाब, এইक्रम थामा निकारन कतिया मिरव। এक्रम मखा वा बाजाम थामा

পুনশ্চ হ্য়বতী গাভীকে দিবে না, যাহাতে হ্রেরে গন্ধ হয় বা হ্রেরের স্থাদ
নষ্ট হয়। হয় বেশী পাইবার আশায় গৃহস্থ যেন কদাচ প্রিয় গাভীকে
অতাধিক তৈলাক্ত সামগ্রী থাদারূপে না দেন। তাহার ফলে
কৃষক গাভীর প্রসবের অতাল্পকাল মধ্যে অর্থাৎ ১০০১৫ দিবস মধ্যে
বংসটিকে হারাইয়া নৈরাশুসাগরে ময় হয়। অতাধিক পরিমাণে
থইল-ভক্ষণকারী বংসেব মাথাঘোবা রোগে প্রাণনাশ হইয়া
থাকে। আমাদের দেশের অজ্ঞ কৃষকেরা এবিষয়ে কিছুই অবগত নহে;
কাজেই বহুশত গোবৎস, মাতার তৈলাক্ত সামগ্রী থাওয়ার জন্ত, অকালে
মৃত্যুমুথে পতিত হইয়া থাকে।

এখন দেখা যাউক, গাভীকে কিরূপ খাদ্য দেওয়া কর্ত্তব্য। খাদ্যের উপর ছগ্ধ, এবং শাবকের জীবন ও ইতর্বিশেষ হওন নির্ভর করে। সেইজন্ম গাভীর খাদ্য-নির্বাচন একটী গুরুতর দায়িত্বপূর্ণ কাজ। খড় ষতই ত্যাগ করিবে, ততই ভাল। ইহা ছগ্ধ শুষ্করে। গাভীকে ছগ্ধ-দোহনের পূর্ব্বে ভাল করিয়া জাব দিবে। জাবের পাত্র খুব পরিষ্কার রাখিবে এবং প্রতাহ থোত করিবে যাহাতে থইল বা অক্তান্ত बानामाम श्री পिछित्रा छर्गक ना इत्र। य मन शाक्त वाता मार्छत काव्य, হলবহন, জলটানা, মোট বহা, শক্ট-বহন প্রভৃতি কার্য্য লইতে হইবে ভাহাদেব ছোলা, চোকর এবং ভূবি দিবে। ছগ্ধবতী গাভীকে ছগ্ধ-বৰ্দ্ধন জন্ম কলাইর সহিত জর এবং গমচর্ণ মিশাইয়া লবণ মিশ্রিত করিয়া थरेलत मान मुड़की-माथा कतिहा जांच मित्र। शम, जन এवः कलाहे-চূর্ণ সমভাগে খাইবার মত আন্দাজ করিয়া দিবে। কাপাস-বীজ্ও দেওয়া বাইতে পারে। ইহা জাবের সহিত কদাচ আধুসেরের বেশী দিবে না, থেকেতু ইহা অত্যন্ত গ্রম (heating)। গমের ভূষি (চোকর), লবণ, পদ্ধক, খইল, কাঁচা যাস, শস্য ইত্যাদি দ্বারা জাব প্রস্তুত করিয়া দিবে।

সরিষার বইল অপেকা তিল, তিদি বা নারিকেলের বইল ভাল।

সরিষার থইল যাঁড় বা বলদের পক্ষে বিশেষ উপকারী। তিলের বা তিসির খইলই হগ্ধবতী গাভীর পক্ষে বিশেষ উপকারী ; কিন্তু ইহা পাওয়া किছ कठिन এवः दिनीमिन शांकित्व পांका धित्रश्ना नीघ नष्टे इटेशा यात्र । टेरा বেশীদিন স্থায়ী নহে। কাপাদ-বীজ এবং শস্য বেশ করিয়া জাঁতায় ভাঙ্গিয়া লইবে এবং অন্ততঃ ৭৮ ঘণ্টা ব্যবহারের পূর্ব্বে ভিজাইয়া রাথিবে বা ৪া৫ সের জলে বেশ করিয়া সিদ্ধ করিয়া ভূষির সহিত মিশাইয়া sloppy করিয়া নাদে বা ম্যাচ লায় বা টবে কবিয়া থাইতে দিবে। উহার মহিত কিছু লবণ এবং গন্ধক মিশাইয়া দিতে ক্রটী করিবে না। ক্লযক নিজের গাভীকে নিয়মিত এবং পরিমিত ভোজন দিবে, যাহাতে গাভীর সহজে পরিপাক হয় এবং বেণা ভোজন করিয়া fat বা চবরীযুক্ত হইয়া মোটা না হইয়া পড়ে। খাদ্যের সহিত mangold বা টার্নিপের কুঁচি সিদ্ধ করিয়া বা লাউসিদ্ধ দিলে মন্দ হয় না। গাজর কিম্বা আকের টুকরা বা কুটা অথবা ভামাঘাৰ বা রাগী বা বাজরা-ডাঁটা কুটীর মত কাটিয়া জাব দেওয়া যাইতে পারে। ছোলা চর্ম্বী-উৎপাদক, সেই জন্ম ছগ্ধবতী গাভীকে কম্ব্রুম্ব (comfry বা লুদার্) ঘাদ কিবা ছোলার দর (জাতায় অর্কভাঙ্গা) খুব বিবেচনা করিয়া দেওয়া প্রয়োজন। সেই জন্ম গাভীর ভোজনের নির্ব্বাচন করা তত সহজ ব্যাপার নহে, যেমন আমরা মনে করিয়া থাকি। অনেক গৃহস্তকে অভিযোগ করিতে শুনা গিয়াছে যে, আমি আমার গাভীকে প্রচুর খাদ্য দিই, কিন্তু আশামুক্রপ হয় পাই না। গাভীর খাদ্য সময়ে সময়ে পরিবর্ত্তন করা কর্ত্তব্য। সকাল বেলা গমের ভাঁটার বা কলাই গাছের ডাঁটার বা জবের একপ ভূষি দিয়া জাব দিবে, ভাহার পর দোহন করিবে। দোহন সম্বন্ধে পরবর্তী অধ্যায়ে সবিশেষ লিখিত হইরাছে। তাহার পুরা জাব অর্থাৎ মাহুবের মধ্যাহ্ন-ভোজনের ক্সার বা সাহেবদের supper এর মত ভোজন দিবে। এই খাদ্যে গমের-"कृति" চোকর, जब, नर्सा बहेन जानि याथाहेन्ना ভোজন निर्दा। इश्वर्षी

গাভীকে দিনের মধ্যে চারিটা জাব দিবে; অর্থাৎ দোহনের পূর্বে হুইবেলা ফুইবার, মধ্যাক্তে, এবং রাত্রে দোহনের পর জাব দিতে হয়। জাব দিবার মাত্রা নিম্নলিথিতরূপ অন্ধুসরণ করিলে মন্দ হয় না!—

সরিষার গইল বা তিসির
থইল (শেষটাই প্রশস্ত
ছুইটি মিলাইয়া সমভাগে) ... > সের
জ্বের বা গমের ভূষা ... > ২ ,,
জব (দর্রা) ... ২ ,,
তিসি (সিদ্ধ দর্রা) ... ২ ,,
কাপাস-বীজ (দর্রা) ... > ,,
কাবণ ... > ২ ছটাক
গদ্ধক ... ১ ঐ

ইহার সহিত ১০ বা ১৫ সের কচি টাট্কা ঘাসের কুটী মিশাইয়া
দিবে। গাভীকে সকালে দোহনের পূর্ব্বে থুব প্রত্যুযে, ৯বা ১০টার সময়,
১২ বা ১টার সময়, বৈকালে ৩টা, ৬টা এবং রাত্রে ৮টা অথবা ৯টার সময়
নিয়মিত জাব দিবে।

গাভীকে ইচ্ছামূরপ প্রচুর নির্মাণ পানীর জল দিবে। আমাদের দেশে এক ত্রম বিশ্বাস আছে যে, জাবের সহিত জল মিপ্রিত করিয়া দিলে হ্র বেশী হর। ইহা অত্যন্ত ভূল; যে হেতু থাদ্যসামগ্রী জলে বহুক্ষণ থাকার জন্ত অপেকাকৃত অর সময়ের মধ্যে পচিয়া যার। শাদ্য পচিয়া গোলে গাভী তাহা স্ব-ইচ্ছার বা স্থথে আগ্রহের সহিত—শ্বার তাড়নার তাড়িত না হইলে—খাইতে চাহে না। এই জন্ত জল প্রথক পাত্রে গাভীকে দেওয়া উচিত। ঘাস, খড় বা জবের বা জইর

বা রাগীর বা বাজ্বার ডাঁটার জাব যথন দিবে, তাহার পূর্বে তাহাকে কলে বা গাঁড়াশ ধারা কুটার মত কাটিয়া তবে জাব দিবে। দর্বা জলে ভিজাইয়া বা দিজ করিয়া দেওয়াই প্রশন্ত, যাহাতে খাদ্যামগ্রী গাভীর শরীরে উত্তমরূপ গৃহীত (assimilated) হয়। তাহা হইলেই গাভীর স্বাস্থ্য ভাল হইবে এবং হগ্মণ্ড বৃদ্ধি হইবে। শকটের বলদ বা বাঁড়কে বুটের দর্বা দেওয়াই উচিত। হগ্ধবতী গাভীকে বুট বা ছোলা দেওয়া ভত প্রশন্ত নহে; তবে তাহা বছদিন অন্তর করিয়া মাঝে মাঝে দেওয়া ঘাইতে পারে। যাঁড়ের ভোজন দিনে ছইবার দেওয়া কর্ত্ব্য এবং তাহাকে সর্বাদাই লখা দড়িতে বাঁধিয়া ফারমের সামনের মাঠে বা পোচারণে একক চরিতে দিবে। গাভীর সহিত তাহাকে কদাচ একসঙ্গে চরিতে দিবে দা। হিসার, নেলোর বা গুজরাটী অথবা ক্রফা হরিয়ানা যাঁডেই আমার ভাল বিবেচনা হয়।

थंटेन .	•••	২ সের
ভূষি	•••	۶ "
টাটকা কচি ঘাস	***	8 ,,
ভূষি বা চাফ্	•••	8 ,,
न्दन	•••	> ছটাক
গদ্ধক	***	_ট ছছাক

ইহা একটা বড় হান্সি বা শুজরাটা যাঁড়কে আধা-আধি করিরা
২৪ ঘণ্টার মধ্যে চইবার জাবে ভাগ করিয়া দিলেই যথেষ্ট হইবে।
ইহা ছাড়া প্রচুর ঘাস দিবে বা চরিতে দিবে। তাহা হইলে যাঁড়ের
কোনরূপ স্বান্থ্যভঙ্গ হবে না। যাঁড়কে অল্ল অল্ল থাটাইবে অর্থাৎ
মোট-বহনাদি অল্ল অল্ল কাজ লইবে। গাভীকে দোহনের পূর্বে অস্ততঃ
কিছু বাইতে দিবে, অর্থাৎ অত্যন্ত প্রভূবে যে জাব দেওয়া যাইবে,
ভাহার অবশিষ্টাংশের উপর কিছু ভূবি ছড়াইয়া দিলে গাভী থাইছে

থাকিবে এবং দেই সময়ে তাহাকে দোহন করিলে বড় মন্দুহয় না।
সকল গৃহস্থই ইহা লক্ষা করিয়া থাকিবেন বোধ হয়। দোহনের পরেই
গাভীকে ৯টা পর্যান্ত মাঠে চরিতে দিবে; যাহাতে অধিকক্ষণ তীত্র
রৌদ্রে না থাকিতে পায়। গাভীকে সদাসর্বাদা গোয়ালে খোঁটায় বাধিয়া
খাওয়ান বড় প্রশস্ত নহে। গাভীকে সকল সময় মাঠে চরিতে দেওয়া
যাইতে পারে, কেবল বৃষ্টির সময় যাইতে দিবে না; যেহেতু ঐ সময়
ভিজিলে ঠাগু লাগিয়া পীড়া হইতে পারে। শসোর মধ্যে কলাই,
বাউরীদ, জব এবং গম হগ্ধবতী গাভীকে দেওয়া যাইতে পারে। মকাও
মন্দ নহে। পাটনার গোয়ালাগণ মকা-ডাটার কুটা এবং থেসারির
লতা গ্রীয়ের সময় প্রচুর খাওয়াইয়া থাকে। হগ্ধবতী গাভীকে কদাচ
থেসারি দিবে না। ইহাতে হগ্ধ শুষ্ক হইয়া যায় এবং অধিক মাতায়
থাইলে পক্ষাঘাতও হইতে দেখা গিয়াছে। একটি মাঝারি ৮০০ সের
হগ্ধবতী গাভীকে নিম্নলিধিতরূপ প্রাত্যহিক জাব দেওয়া যাইতে পারেঃ—

উরীদ বা কলাই, বা জব বা গনচূর্ণ (দর্বা)	১২ সের
কলাই, অড়হর, মটর বা গমের চোকর	₹,,
খ ই ল	۰, د
ছোলা কিম্বা কাপাদবীজ-চূর্ণ	ž ,,
কালাই বা উরীদ, মুগুরী, জব বা গমের ভূষী (chaff)	o "
কচি ঘাস কুচান	۶۹ ,,
ল্বণ	১ ছটাক
গন্ধক	🗼 ছটাক

ইহার সহিত আবশুক হইলে জবের ভূবী বা থড়ের কুটী ৮।১০ সের মিশাইতে পারা যায় এবং জাব ৪।৫ বা ৬ বারে বিভাগ করিয়া গৃহস্থ ২৪ ঘণ্টার মধ্যে নিজ গাভীকে দিবে। চাল-ধোয়ানি জল, কেনু, এবং মুশুরীর সহিত শিকড়শুদ্ধ কাঁটানটে গাছ সিদ্ধ করিয়া

২॥০ সের

খাওয়ান ফাইতে পারে। ইহা হগ্ধবর্দক। কোপীপাতা, বীট এবং অপরাপর শাক-সব্জীর পাতা, আনাজের খোদা গৃহস্থের বাড়ীতে ফাহা প্রতাহ হয়, তাহা ইচ্ছানত গাভীকে দেওয়া যাইতে পারে। হগ্ধবতী গাভীকে নিমন্ত্রপ খাদ্য দিনে হইবার খাওয়াইবে:—

	- 41 (4	
অভ়হরের ভূষি	•••	২ সের
গমের ভূষি	***	۶ ,,
তিসির থইল		٠,, د
চুনী	•••	٠,,
ছোলা দর্বা	***	٠,,
নিম্নলিখিত খাদ্যও দিনে ছইবার খ	াওয়াইতে পারা	याग्र :
স্ রিসা বা তিলের থইল	•••	২ সের
কলাই-সিদ্ধ	•••	٠, ١
বালির বা গমের ভূষি বা থড়ের কু	টী—(ষত খাইটে	
থাস	•	"
অস্তান্ত হগ্ধবৃদ্ধিকারক ঔষধ বা সাম	গগ্ৰীও সময়মত খ	াইতে দিবে।
গৃহস্থ নিজ ধাঁড়কে নিমন্ধপ থাদ্য	দিতে পারেন :-	
সরিষা বা তিসির থইল	•••	১॥॰ সের
থেশারি বা গমের ভূষি	•••	,
থেসারির ডাইল	•••	۰ اور لا
(ঘাস ও বিচালির কুটা যত খাইতে	ज পারে দিবে।)	
বড় নাগৌরা গাভীকে নিম্নরূপ খাদ	্য খাইতে দিবে।	হশ্ববতী গাভীকে
সরিদার খইল যত কম হয় দিবে।		

তিসির থইল

জব বাঁ জই বা গমের ভূষি

কলাইর দর1 সিদ্ধ ··· **৯: সের** ১৯ড ··· অর্দ্ধসের

যাস ও ভূষি বা খড় ষত থাইতে পারে দিবে। গাভীর খাদ্যের উপর হুগ্নের গাঢ়ত এবং ননী ও মাথম নির্ভর করে। মহুরা, টার্ণিপ,, গাজর, ম্যাডার (madder), জাফরান প্রভৃতি থাইলে হুগ্নে দ্রব্যগুণভেদে গন্ধ ও আস্বাদনের তারতমা ঘটিরা থাকে।

গর্ভবতী গাভীর প্রদবের পূর্বে অন্ততঃ দেড় মাস দোহন বন্ধ করা কর্ত্তব্য এবং এই সময়ে পেশীবর্দ্ধক ও শরীবের উক্তাপবর্দ্ধক থাদ্য দিবে। চোকর এবং জইর দর্বা সমভাগে মিশাইয়া সামান্ত থইলের সহিত মিশাইয়া খাওয়াইবে। ইহা প্রসব পর্যান্ত থাওয়াইবে; প্রসবের পর সামান্ত সামান্ত সিদ্ধাদ্য দিবে। এসম্বন্ধে W. A. Henry এবং Stuartএর পুন্তক যত্নে পঠনীয়। Thomas Shaw কৃত "Feeding Farm Animals" নামক পুন্তকথানি আমেরিকার পুন্তক বিক্রেতা (Orange Judd and Co.)র নিকট হইতে আনাইয়া পাঠ করা কর্ত্ব্য।

হর্স ফল্ সাহেবের মতে হগ্ধবতী গাভীকে এইরূপ খাদ্য দিবে :—

সরিসার খইল

ভূষি (চোকর)

ত

ঁ এবং যথেষ্ট ও আবশুক্ষত কড়ায়ের বা জ্বইর বা থড়ের ভূষি (straw) দিনে তিন বার কবিয়া যত তাহারা থাইতে পাবে দিবে। এইগুলি নিশাইয়া "steam" করিয়া ঈষহক্ষ থাকিতে থাকিতে থাইতে দিবে। ইহার সহিত বীন্মীল (beanmeal অর্থাৎ বীন কড়াই দিজ করিয়া তাহাকে অর্কভাঙ্গা অবস্থায়) উপরোক্ত জাবের সহিত মিশাইয়া দিবে। হগুদাত্রী গাভীদিগকে > পাউগু দিবে এবং 'থেঁড়ে গাভীদেব অর্থাৎ বাহারা ক্ষ ছগ্ধ দের ভাহাদিগকে ঐ মাত্রায় ক্ষ দিবে।

ইহা শাইলে পর ঘাদ or green food অর্থাৎ কোপীপাতা ইত্যাদি

ঐ জাতীর খাদ্য যত পরিপাক করিতে এবং আগ্রহের সহিত ভোজন
করিতে পাবে তাহা দিবে, অর্থাৎ ৩০ বা ৩৫ পাউও পর্যান্ত দিবে।
ভাহার পব মেডো-হে বা শুক্ষ ঘাদ ১২ পাউও অর্থাৎ প্রত্যেক
জাব-অন্তে ৪ পাউও করিয়া রোমছেব দহায়তার জক্ত দিবে। ইচ্ছামত
নিশ্মল পানীয় জল দিনে তুইবার শাইতে দিবে। ঘাদের দমর কচি
ঘাদ জামিলে ''হের'' পরিবর্জে কাঁচা ঘাদ দিবে। বড় এবং হ্য়বতী
গতীকে নিমর্মপ জাব দিনে তিনবার সমান ভাগ করিয়া দিবে:—

মেডো-হে	•••	8 1	পাউগ্ত
থড়	•••	20	,,
তিসি-মীল্	•••	84	,,
বীট	•••	>>	,,
এবং সিদ্ধ জাউ অর্থা	ৎ টার্নিপ	¢¢	,,
ৰীট	•••	२१	33
তিসির মীল্ (linsee	d meal)	۶ ३	,,
থইণ-ভিজা	•••	•	,,
চুণী (grain dust)		25	,,
লবণ	•••	> } ⟨	ৰা:
জন	•••	6 (1	গ্লন।

কেছ কেছ প্নশ্চ ৯০ পাউও টার্ণিপের কুঁচির সহিত ৭ পাউও বড়ের ভূষি কাটিরা তিন দিন রাখিরা দিলে তাহা "মজিলে" ঐ সমস্তটি দিনের মধ্যে ৫ জাগ করিরা সকালে ৬টা, ৯টা, ১২টা এবং বৈকালে ১টা এবং ৪ টার সময় সমান করিরা থাইতে দিবার ব্যবস্থা দিরা থাকেন। ইহা ছগ্ধ-বৃদ্ধিকারক খাদা। প্নশ্চ কেছ কেছ মুগ্ধদার্জী (those that are in milk) গাভীকৈ নিম্নদিখিত খাদা সমান সংশো সকাল এবং সন্ধায় দিবার ব্যবস্থা করিয়া থাকেন, এবং অপর সময়ে প্রচুর; বাস থাইবার কাষবা ঠাণ্ডার সময়ে মাঠে চরিবার ব্যবস্থা দিয়া থাকেন।

অভৃহরের ভূষি	•••	২ সের
গমের ভূষি	•••	₹,,
খইল		١,,
চ ূनी	•••	٠, ډ
ছোলার দর	•••	٠,,
	মোট	ъ

এই সম্বন্ধে নিয়লিথিত পৃস্তক গুলি পাঠ করিলে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করা যাইবে:—

১। কান্টি জেণ্টেলম্যান পত্ৰিকা, ১৯০৫ হইতে ১৯১০ পৰ্যান্ত। ২। Stewart on "Foods and Feeding." ৩। Jordan's "Feeding of Animals."

মিঃ জেম্ন্ সাহেব তাঁহার "Cows in India" নামক প্রুকে ছগ্ধবতী গভীকে অত্যধিক তৈলাক্ত থাদ্য দিতে বারণ করেন। তিনি বলেন যে, তাহা করিলে তথ্যে ননী পরিমাণে অধিক হয় বটে, কিছ তথ্য কমিয়া যায়। তিনি নিয়লিখিতরূপে থাদ্য মিশাইয়া তাহাই সকাল ও সন্ধ্যায় তথ্য-দোহনের পূর্বে দিতে বলেন:—

ভূষি	•••	/> সের
ट्याना (मर्त्र 1)	•••	15 "
খোল	•••	/s "
কাপাদ-বী জ	•••	15 ,,
ভূষি বা কাটুয়া (গমের ডাঁটাচূর্ণ)		尽"
ধাস-কৃটী		J8 ,,

গিনি-ঘাস গুগ্ধবতী গাভীর পক্ষে উপাদের খাদ্যসমগ্রী। ইহা অতাম্ভ পুষ্টিকর। হায়দ্রবোদ—ভেকাননিবাদী নার্দারি গার্ডেনের স্বভাবিকারী D. L. Narain Rao—"Agricultural Journal of India" নামক পত্রিকায় ইহার উৎপাদনের বিষয় সবিশেষ আলোচনা ক্রিয়াছেন। তাঁহার নিক্ট ভাল বীজ পাওয়া যায়। Cassava বা শঠী আমাদের ভারতের মাটাতে প্রচর জন্মাইতে পারা বায়। ইহার চাব এদেশে ক্রমশ:ই দিন দিন বৃদ্ধি হইতেছে। ইহার পাতা এবং শিকড়ের আলু গো-খাদ্যরূপে প্রচুররূপে অম্মদেশে ব্যবহৃত হইতে পারে। বীটও পানিত পশুজাতির খাদারূপে ব্যবহৃত হইতে পারে। ২০ বা ৩০ পাউণ্ড বীট প্রত্যেক গাভাকে প্রত্যহ দেওয়া যাইতে পারে। অব্যাপক কেলনার এই কথা বলেন। বীটের মাথা এবং পাতা (tops and leaves) গোজাতিকে বড় একটা দিবে না। ইছা খাইলে ইছাদের পেট নরম বা গোময় ঢিলা করে। সেই কারণে ইহা (sparingly) কম ব্যবহার করিবে। গোজাতির খাদাদান সম্বন্ধে নিম্নলিধিত পুস্তকগুলি পাঠ করিলে বিশেব অভিজ্ঞতা লাভ করা মাইতে পারিবে:—1. "Dairying and Dairy Farming" by J. C. Newsham, to be had from "Dairy World Office." London. 1 s. "Computing Rations for Farm Animals". by E. S. Savage, Corneli Reading Courses, Vol. II. No. 262; "Ohio Experimental Station Circular No. 128," on Feeding Dairy Cows (Wooster, Ohio, U. S., America), "Michigan Exprimental Station" Bulletin, No. 128, "Fertilizers and Feeding Stuffs" by Dyer (Crosby Lockwood and Sons. London, S).

विनार्टिय व्यनिष रिक्छानिक ও গো-উৎপাদक भिः नरतका (Mr.

Wm. T. Lawrence) বলেন যে, গোজাতির খাদ্য নিম্নলিধিত তালিকা দেখিয়া নির্বাচন করা কর্তব্য :—

Feeding Stuff { Water Dry matter Dry matter Nitrogenous | Albuminoids (Proteids) | Amides. | Fat & Oils Carbohydrates Fibre Mineral matter (ash)

পাদ্য-সামগ্রীর মধ্যে এল বুমিনয়েড "গুলি প্রকৃত মাংস বা পেশী-উৎপাদক (true flesh or muscle formers) পদাৰ্থ এবং দেই কারৰে इंशापित "প্रकृত" वा "Essentials" वर्ता। शामात्र मरशा अन-বুমিনয়েড পদার্থে শতকরা ১৬ ভাগ nitrogen বা যবক্ষারজ্ঞান থাকে। ওই ব্যক্ষারজ্ঞান খাদামধ্যন্তিত কাব্বন, গুইডোজেন এবং অক্সিজেনের সাহত মিশ্রিত হট্যা গো-শক্তি ও পেশা (tissues) উৎপাদন, সংরক্ষণ এবং বৰ্দ্ধন করে। থাছেব মধ্য হইতে এই সকল পদার্থ আবশ্যক মত ইন্ধা যে পদাৰ্থ গুলি অৰ্বশিষ্ট থাকে, ভাগতে গোশক্তি এবং দৈহিক উন্মতা (animal heat and mechanical force) উৎপাদিত হইরা থাকে। যদি ইহার পরেও এল ব্যান্তঃভ পদার্থ শ্রীরে বেশী থাকে, তাহাতে কোন কাজ হয় না; তাহা জীবদেহে নষ্ট চইয়া যায় কিম্বা দামাক্ত পরিমাণে কার্বোছাইডেড (Carbohydrate) সংজননে ব্যয়িত হইয়া থাকে। নেইজন্ম ক্লেক গৃহস্থ খাদ্যপ্রণালী সম্যক না জ্বানা প্রযুক্ত গাভীগণকে অপ্রাপ্ত এল বুমিনরেড -ঘটিত থাদ্য দিয়া থাকেন। ইহা অত্যন্ত ভুক ৰলিৱা জানিবে। বেশী থাওয়াইলেই বেশী **৮% হয় না.** বরং অপকার সুংঘটিত হইরা থাকে। মশিনা, মশিনার খইল, কাপাসবীজ, বা ভাপাদ-বাজের থইল, বা কড়াই (beans), মটর (peas), তার শ্লা ded grains) প্রভৃতি গো-খাদ্যে সমধিক পরিমাণে এল্বুমিনয়েড

মাছে। এমাইডের (amide) নধ্যে বৰক্ষারজান থাকিলেও তাহারা भारत्रवक्षक कराठ नहर (are never flesh formers)। हेराना কার্বে হিট্ডেডের মত উন্নতা-উংপাদক (heat producers)। খালোর carbohydrates এর ছারা শারীরের উল্লভা এবং শক্তি (heat and energy) সম্পাদিত হইয়া থাকে এবং অধিক পরিমাণে কাবে হাইডে ড-জনিত থাদ্য গোকুলকে দিলে পাশবিক চর্বি (animal fat) বা ননী সংজ্ঞনিত হইরা থাকে। ষ্টার্চ্চ বা ধেত্যার এবং চিনি (starch and sugar) এই পর্যায়ভুক্ত বলিয়া বৈজ্ঞানিকগণ উল্লেখ করিয়া থাকেন। এইজন্ম উত্তর-পশ্চিম প্রদেশ, পাঞ্জাব, বোদাই, বিহার এবং ইংগ্ড, আমেরিকা প্রভৃতি পাশ্চাতা প্রদেশে হয়ে অধিক-মাত্রায় ননা পাইবার আশায় গোজাতিকে নির্মিত চিটা গুড় বা ভুরা চিনি খাওয়াইবার বাবস্থা অছে। গোথাদাজাত ননী (fat and oils) দেহের প্রধান উন্নতা উৎপাদক (heat producers পদার্থ এবং এইগুলি কাবে হাইডে ড অপেকা ২॥০ গুণ অধিক গুণ ও শক্তিদায়িকা প্রকৃতি बार्थ। গৃহপালিত গো. ছাগল, মেষ, মহিষাদি পশুকে यদি এক্নপ খাদ্য দেওয় যায়, যাহাতে শরারের উত্তাপবর্ত্বক সামগ্রীর পরিমাণ অধিক আছে. ভাহা হইলে শরীরের উত্তাপ সংরক্ষণ করিয়া যে থাদ্য-সামগ্রীর সার জীব-দেহে অবশিষ্ট বা উৰ্ত্ত গাকে, তাহা ননী (fats and oils) উৎপাদন বা বৰ্দ্ধন করিয়া শরীরের ভার (weight) বৃদ্ধি করিতে সক্ষম হয়। এ বিষয়ে পরে স্বিশেষ বলা হইয়াছে। মিদনা, মিদনার থইল, থোসা, (husked or decortigated) কাপাদবীজ বা থইল, ভঙ্ক শদ্য, অথোধা কাপাদবীজ बा बहेल, वालि, बहे. ह्यांना এवः मका वा जूहा (maize or Indian corn) পর পর অধিক পরিমাণে তৈলাক্ত (oils and fats) পদার্থ উৎপাদন করিয়া থাকে। শেলিউলোজ (Cellulose) হইতে জীবনেহের fibre-ছাত সামগ্রী উৎপন্ন হইয়া থাকে। অতএব অধ্যাপক ই নাট এবং

লবেন্দের মতে নিম্নলিখিত আর্যাামত গোজাতির পাদাসামগ্রী হওকা কৰ্ত্তবাঃ-- २॥ • (এলব + oil) + কাৰ্কোহাইডে ড = একটি গাভীর পুরামাত্রা দৈনিক আহারীয় সামগ্রী বা total Unit of food. সেইজন্ম অধিক ননী পাইতে হইলে তিসিঘটিত খাদা বা তিসির খইলের সহিত ননীতোলা ছন্ধ (Skimmed or separated milk) মিশ্রিত জাবই সর্বতোভাবে প্রশস্ত বাশ্যা জানিবে। ইহা কর্ণেল, উইসকর্নসিন, ওছিও, ওন্টারিও, নিউজার্দি, ডর্ছাম কলেজ, ওয়াই একদপেরিমেন্ট ষ্টেশান, স্থাসগার্ড স্কল অব এগ্রিকাল চার এবং ডেয়ারি ফার্ম্মিং প্রভৃতি স্থানে পরীক্ষিত ছইয়াছে। বৈজ্ঞানিকগণের মতে কেবলমাত্র শুষ্ক শস্মা এবং পোসা, কাপাস-বীজের প্রলমিশ্রিত খাদা-মসিনার থইল অপেকা উংক্টতর গোগাদা বলিয়া প্রসিদ্ধ। চন্ধবতী গাভীকে এইরূপ সামগ্রীঘটত থাদা বাক্সা করিবে। অধ্যাপক ষ্টুয়ার্টি তাঁহার পুস্তকে গো-থাদ্য নির্বাচন পর্যারে বৰেন:- "Palse grains include beans, and peas and these are albuminoid foods. The above judiciously given to dairy cows produce full pail of milk and rich and superior creamy butter."

গোজাতির থাদ্যনির্ণয়ে কতকগুলি অত্যাবশুক কথা মনে রাখা
চাই। আমাদের দেশের অজ্ঞ কৃষকগণ রসায়নের গুণাগুণ জানেন না
বলিয়া তাঁহারা মনে করেন যে, গাভীকে খ্ব থাওয়াইলেই বৃঝি বেশী প্রশ্ব
হয়। ইহা সম্পূর্ণ কুল। নিমলিণিত তালিকা দেখিলে বেশ উপলিজি
হইবে যে, গো-খাদ্যের প্রত্যেক দ্রব্যে কি কি উপকরণ আছে। তাহা
দেখিয়া খাদ্যসামগ্রী এইরূপ নির্বাচন করিবে যে, এল বৃ মনয়েড্ ও মাজা
এবং কার্বোহাইড্রেড্ ১৭ মাত্রা (unit) হয়। এখন গাভীকে এমন
খাদ্য দিবে যাহাতে ঐ উপকরণের মাত্রা খাদ্য হইতে জীবদেহে জমিতে
শারে। সেইজন্ত গোজাতিকে roots বা গাজর, টার্নিণ্, ক্রেড্

ন্যারিগোল্ড প্রভৃতি কল্মগুল্মটিত থানা দিবার বাবস্থা আছে। এরিষরে। নবম ভাগ Journal of Veterinary Scienceএর ১৫০ পৃষ্ঠার অধ্যাপক William F. Lawrence বিস্তারিতরপে আলোচনা করিয়াছেন।

পো-খাদোর	উপকরণ	বিচার	তালিকা।
----------	-------	-------	---------

জাবের নাম	Ų	এল ্বু	তৈল বা		<u>কাবে হাইডে</u>	
থোসা কাপাস				क विव		
থই শ—	•••	3 6.9		>•.•	•••	> &'9
অংশেশ কাপাস—		2p.0	• • •	¢.»	•••	2 4.4
তিসির বইল—	: ···	₹8.4	•••	<i>₽.</i> ¢	•••	₹2.₽
তিসি —	•••	₹ • ''		.૭૯.ઽ		22.9
रौन्—	•••	२३.०		2.8	•••	¢•.•
Peas (কড়াই)		5 • .2		2.8	•••	€⊙.•
명투 비 명		28.%		₽. 8	• • •	% .%
ভিজা' শস্ত —		۵.۶	•••	2.0	•••	ه.ع
গমের চোকর—		> 4.0		₹.8		88.8
গ্ৰ-	•••	22.4	•••	2.5	•••	€8.3
मञ्जा —	•••	p.0	•••	2.•	•••	422
टेब	•••	p.•	•••	8.0	•••	88.4
रेब -हर्ग (meal)—	•••	22.0	***	6. P		¢•.5
वानि—	*	4.4	•••	e .8		e 9'8
46	•••	· 10.0		8.•		P
75 —	***	€.8	•••	۶.٠٠	, -··	8
देखन थक-	• • •	3.8	•••	٠٩		8.0.3
alfa " — .	.*	2.8	•••		` •••	8•*\$
**		4.	***,	· · · · · ·		405.2

এল্ব্		তৈল বা	4	াৰ্বোহাইছে ভ	
		ठ कि			,
र.>	• • •	`₺	•••	२५४ े	•
2.0	•••	.>	•••) a.p	
2.2	•••	•>	•••	4.5	
2.2	•••	٠.>	•••	*•*•	
ንንъ	•••	••	• . •	¢2.29	
৩:২	•••	٠,	••	€.•	
8.•		a.2 ·	•••	8.2	
و.6	•••	•	•••	8.4	
ъ	•••	٠,	•••	8,9	
	2.3 3.0 3.3 3.3 3.3 9.2 8.0	2'3 3'3 3'3 3'3 8'4	5 (4) '8 3.0 '3 3.0 '3 3.0 '3 3.0 '3 3.0 '3 8.0 '3	を を で で で で で で で で で で で で で	を マン・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・

পাতীদের থাদ্যের মধ্যে কিছু সারক বা কোষ্ট-পরিষ্কারক সামগ্রী থাকা অভ্যস্ত প্রয়োজন; সেই জন্ত মাস, মৃশ, চিটা বা গুড় এবং হে-বাস দেওরা প্রয়োজন।

পোজাতি, মেব, ছাগল প্রভৃতি গৃহপালিত পশুর পক্ষে লুশার্গ
(Medicago Sativa) একটি পৃষ্টিকর এবং উপাদেয় থালা। এই বিবরে
"Journal of Board of Agriculture" পত্রিকার ১ভাগ—৪০৭ পৃষ্ঠার
বিশেষ আলোচনা আছে। তাহা পাঠ করা করুবা। এই ঘাদ শুক (বিপু)
কেনে এবং dry climateএ জনিয়া থাকে। ১৯০৩ সালের "Agricultural Ledger" "পত্রিকার সপ্রম সংখ্যার Dr. J. W. Leather.
F. I C., F. C. S. Agricultural Chemist to the Government of India (Calcutta Imperial Library) গোজাতির খালাবিচার ক্ষমে খুব বৃহৎ প্রেষণা-পূর্ণ এক প্রবন্ধ on "Food Grains and Fodder; their Chemical Composition" শিখিয়াছেন।

প্রত্যেক প্রকার খাদ্যে নাইটোজেন্; অক্সিজেন, এশ্ব্মিনরেড, কার্কোহাইডেড তৈল আদি সমগ্রী কত কত অংশে বিদামান আছে। এই ভালিকা দেখিরা গোজাতির খাদ্যসামগ্রীর নির্বাচন করা বিশেষ সহজ হইতে পারে।

আমাদের দেশের উষর (alkaline) বা অমুর্বার " পোড়ো " জমিতে ৰঙপ্ৰকার গো-খাদ্যসামগ্রী উৎপাদন করা যাইতে পারে। "ক্যাসাভা" ৰা "টেপিওকার" চাষ আমাদিগের দেশে করিলে মনুষা এবং গো-খাদ্যের প্রচুর সামগ্রী জন্মিতে পারে। তাহা ছাড়া অষ্ট্রেলিয়া দেশের "Paspolum Dilatatum" নামক ঘাস গোজাতি বা অপর রোমছন-কারী গৃহপালিত পশুর পক্ষে এক অতি স্থথান্য সামগ্রী (fodder) i. ইহা 🗝 - এবং বেলে মাটীতে (dry and sandy soil) সামান্ত সার দিলে এচুর জন্মিতে পারে এবং গ্রীম্মকালে জাবের ও হে ঘাসের পরিবর্ত্তে বেশ শাভজনকরূপে ব্যবহৃত হইতে পারে। একার-পিছু ৫ হইতে ৮ পাউঞ্জ বীজ্ব বৰ্ণন করিলে গুব ভাল এবং মোটা ঘাস জন্মিয়া থাকে। প্রথম বদক্তে (Early spring) বা গ্রীমের প্রারম্ভে বীজ মাঠে ছড়াইবে যাহাতে প্রথম বর্ধার জল পাইলেই বীজগুলির অঙ্রোদ্গম হইয়া অল্লকালের মধ্যে মাঠে একটি সবুজবর্ণের সংরঞ্জির আকার ধারণ করিতে পারে। हैहात बीख Messrs, Law Somner & Co. of 139-141 Swanston Street, Melbourne, Victoria, Australiaৰ টিকাৰাছ পত্র দিলে পাওয়া ঘাইতে পারে। Italian Rye Grass, Clove, Timothy প্ৰভৃতি মেডো-হে দাসের বীজ বর্পি বা ল্যান্ডে থ বা Sutton-& Sons, Reading (England) এর ঠিকানার লিখিলে পাওরা বাইবে। আমেরিকার নিমলিখিত ঠিকানার অভ্যুত্তম ঘাসের বীজ অপ্রাপর জরী-ভরকারীর বীজ পাওয়া যাইতে পারে। পাঠকগণের প্রবর্গতির অক্স তাহা নিমে প্রদত্ত হইব।

W. Atlee Burpee & Co., Burpee Buildings, Philadelphia. U. S. A; W. F. Allen, 90, Market Street, Salisbury, Md; Walter P. Stoke:, Dep 123, 219 Market Street, Phil, Pa; Kelly Bro's Nurseries 37 Main St. Dansville N. Y.; Griswold Seed Co., 220 So. 10th St. Lincoln, Nebraska; Holmes Seed Co. Depdt 122, Harrisburg, Penna; W. N. Scarff, New Carlisle, Ohio; F. W. Eberle, Ellwanger & Barry, Mount Hope Nurseries, Box 67A, Rochester N. Y; Forrest Seed Co., Box 28, Cortland, N. Y. Edward F. Dibble, Seed-grower, Honeoye Falls, N. Y. Box C.

আমেরিকার বিথাতি অধ্যাপক ষ্টুয়ার্ট (Professor Stewart)
প্রপ্তবতী গাভীকে শীতের সময় নিমলিথিত থাদ্য দিতে বলেন।

	এল্বু	কাৰ্বোহাই	তৈল
উত্তম হে ১২ পাউণ্ড—	0,40	\$ 6.8	•:>5
মকা বা ইণ্ডিয়ান কৰ্ণ গণাউণ্ড—	०'२¢	3. A2	•.28
৩ পাউণ্ড কৈ চূর্ণ—	۰٠২٩	7.30	*.78
💩 🍌 গমের চুনী (shorts)	۰٬২٩	7.64	0,03.
৪ ,, তিসির মীল—	2,20	2.55	•.54
	5.48	22.89	• . 449

উপরোক্ত মাত্রা দেখিলে বেশ প্রতীয়মান হইবে বে গাভীর থাদ্যের কার্কোহাইডেড এবং তৈল হইতে জীব দেহের উক্তা সংগৃহীত এবং ছর্কি সংরক্ষিত হয় এবং এল বুমিনয়েড হইতে মাংস বৃদ্ধি হইয়া থাকে। গোজাতির থাদ্য দান সম্বন্ধে Mr, R. S. Burnএর "Dairy Pigs and Poultry" নামক পৃত্তকের দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ খুব বত্ন সহকারে প্রত্যেক গৃহস্থের পাঠ করা কর্তব্য। তাহা ছাড়া নিম্নলিধিত বই গুলি পাঠ করা বিশেষ কর্মব্য:—

"The Diseases of Animals" by N. S. Mayo; The Feeding of Animals by W. H. Jordan; O'Kellners' "The Scientific Feeding of Animals; "Computing rations for Farm Animals by E. S. Savage (Cornell University Reading Courses Vol. ii No. 26.), "Fertilisers and Feeding Stuffs" by Dyer Bernard (Crosby and Lockwood, London).

বিগত ১৯১২ সালের অক্টোবর মাহায় কর্ণেল বিশ্ববিদ্যালয় হইতে প্রকাশিত Farmer's Reading Courses পত্রিকায় মি: Savage এ বিষয়ে গবেষণাপূর্ণ প্রবন্ধ লিখিরাছেন। তিনি মি: Lawrenceএর পূর্ব্ব লিখিত মতের সম্পূর্ণ সমর্থন করেন। এ সম্বন্ধে পরে "গোচায় লাভ জনক হুইতে পারে কি না" পর্যায়ে যংসামান্ত আলোচিত হুইয়াছে। এ সম্বন্ধে Mr. Savage বলেন "যে কৃষকের পক্ষে খাদ্য নির্ব্বাচন ক্রিয়াটি খুব জটিল এবং দায়িছপূর্ণ।

আমেরিকায় প্রসিদ্ধ অধ্যাপক Stewart হগ্ধবতী গাভীকে নিয়-লিখিত রূপ জাব দিতে বলেন : —

,		এল্বু	7	দাৰ্বোহা	\$	काछि
১২ পাউ	9 ভাল হে যাস ্	•.06		8.७४	• • •	, • *>૨
و ا	मकानीन (maize meal)	ۍ:< ﴿		2.4.2	•••	8 د.ه
٠,,	बहे हुर्ग —	•.≤ d		>.00	• • •	e">8
	গম চুৰ্ (wheat shorts) -					
	ভিসির থইল (linseed					,
	meal)—	2.26		2.05	,	4 25
						9

ইহা দেখিলে বেশ জানা যাইবে যে ননীজাত খাদ্যের মাত্রা এলব্মিনরেড খাদ্যের তৃতীয়াংশ হওয়। কর্ত্তবা এবং কার্বে হিন্তিছে ছের চতুর্বাংশ ওজনে এলবু হওয়া কর্তবা। ক্রমক এই সব বিশেষ রূপ দেখিয়া খাদ্য নির্বাচন করিবে। কার্বো হাইডেড চিনি, গাদ, খেতসার, সাত্রী বা মণ্ড (Starch) ইত্যাদি পদার্থ থাকে। কোন কোন গো উংপাদক শীতকালে গাভীকে ঈষত্রজ জল পান করিতে দিবার ব্যবস্থা করিয়া খাকেন। তাহা বড় মন্দ হয় না। মিঃ মরের (Murray) মতে শীতকালে ছয়্কারী গাভীকে নিয়লিখিত খাদ্য সারাদিনে দিবেঃ—

থড় এবং হে ঘাদের কুটী—	₹•	পাউত্ত
ज्यी (Bran meal)—	ર	**
জট চূৰ্ণ (ground oats)—	ર	">
গম এবং বালি মীল্-	\$	9.6
তিসির থইল বা মীল—	ર	25
চুनी वा Bran-	2	,,
Roots বা কন্দ—	ર	,,
হে খাস (তৃই বারের জন্ম)	t	,,
	৩৭	,,

ছগ্ধবতী গাভীকে আবশ্যক মত যথেষ্ট জাব দিবে কিন্তু অপর্য্যাপ্ত শাওয়াইবে না (over-feed)।

পঞ্র দারা অধিক কার্য্য করাইয়া লইতে হইলে. তাহাদিগকে নাইট্রোজেন্ হীন ও নাইট্রোজেন্ যুক্ত এই উভয় বিধ থাদ্যই দিতে হইবে। মাদ্যের শক্তির সহিত পশুর শক্তির নিতান্ত ঘনিষ্ট সম্বন্ধ। অধিক প্রিমাণে হল্প পাইতে বাসনা করিলে গাভীকে আবশ্যক মত ছল্পোৎপাদক আদ্যু দিতে হন্ত। বদি কোন পশুকে কাশাই হক্তে বিক্রীত ক্রিতে হয়। শাহাতে অধিক মূল্য পাওয়া বার। সেইজন্ম তাহাকে মোটা করিয়া বেচা উচিত, হিল্পুগণ এ ব্যবসা করেন না। আমাদের দেশের মুসলমানগণ এই ব্যবসা বিলাত, অস্ট্রেলিয়া বা আমেরিকার ক্রবকদের অনুকরণে প্রবর্তন করিলে মন্দ হয় না। তাহা হইলে অনেক বক্না হয়বতী গাভীর প্রাণরক্ষা হয়। কোন পশু হইতে অধিক পরিমাণে মাংস পাইতে ইচ্ছা করিলে উহাকে মাংস বর্দ্ধক থাদ্য দেওয়া প্রয়োজন। কোন পশুর চর্বির পরিমাণ বৃদ্ধি করিতে হইলে উহাকে চর্বির বর্দ্ধক থাদ্যই বেশী দিতে হইবে। স্কতরাং ক্রবকের পক্ষে ক্রবিকার্য্যাপ্যোগী পশু থাদ্যের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখা কর্তব্য। গোশালা জাত নলুয়োপ্যোগী থাদ্য ও প্রানিজ্নসার মাত্রেরই শশু থাদ্যের সহিত হনিষ্ট সম্বন্ধ রহিয়ছে।

ন্ধিন পূর্বেই বলিয়াছি যে গৃহ পালিত পশুর সংবর্জন, সংরক্ষণ ও পৃষ্টিসাধন এবং জীবন রক্ষার জন্ত ১। নাইটোজেন্ যুক্ত ও নাইটোজেন্ হীন এই বিবিধ থাদ্যেরই আবশাক হয়। নাইটোজেন্ হীন থাদ্যে পশুদেহের উষ্ণভা রক্ষিত এবং চর্বির উৎপত্তি হইয়া থাকে। খেতসার (Starch), আঠা (Gum or mucilage), শর্করা (Sugar) এবং তৈল (oil) এই করেকটি নাইটোজেন্, অন্ধার carbon), উদ্জান (hydrogen) ও অমুজ্ঞান প্রভৃতি নাইটোজেন্ শ্রেণীর অন্তর্গত। শরীরের উষ্ণভা বা উত্তাপরক্ষক পদার্থের অভাব ঘটিলে, নাইটোজেন্ যুক্ত থাদ্যেও দেই অভাব পুরুণ হইতে পারে।

খাদ্য হইতে রক্তের উৎপত্তি হয়। রক্তের ধারা শরীরে উষ্ণতা বিষ্ণিত হইনা থাকে। কুস্কুনের খাদ-প্রখাদ ক্রিয়ার হারাই শরীরের উষ্ণতা রক্ষা হইনা থাকে। পশু খাদ্যে খেতদার, আঠা, ও শর্করার ভাগ থাকার ইহাদের ধারাই উষ্ণতার স্টে হয়। উক্ত ত্রিবিধ পদার্থের অভাব হইলে, খাদ্যের তৈলাক্ত পদার্থ ধারাও পশুলেহের উষ্ণতা স্টির ক্রান্থ সাধিত হইকে পারে। শ্রীরের উষ্ণতা বিষ্ণা হইলে, শ্রীর ন্রক্ ও কর্মাঠ থাকে। উষ্ণতার হাস হইলে শরীর ফ্রাও চুর্মাল হইয়া পড়ে। এই নিমিত্ত যে সকল থান্যে উষ্ণতা রক্ষিত হইতে পারে, তাহাই ব্যবহার করা প্রয়োজন। সাধারণ ঘাস ও থড় থাইয়া যে সকল পণ্ড জীবন ধারণ করে, তাহাদিগকে নাইটোজেন্ প্রধান খাদা দিলে তাহাদের মল ও মূত্র হইতে উৎকৃষ্ট দার প্রাপ্ত হওয়া গিয়া থাকে। বলকারী থাদ্য ভোজন করিলে পগুগুলি দীর্ঘজীবি, সবল ও কর্মাঠ হইয়া থাকে এবং ঐরূপ থান্যে ভাহার। সত্ত্রই সুলকার (fattened) হইয়া থাকে। সুলকায় হইলে জীবন ধারণ ও শরীবের উষ্ণতা রক্ষার জন্ম অধিক পরিমাণেই আহারের প্রয়োজন হর এবং গৃহস্থ তাহাদিগকে অধিক পরিমাণেই আহার দিয়া থাকে। অধিক আহারে অধিক মল মুত্র শরীর হইতে নির্গত হওয়ার अधिक পরিমাণে উত্তন সার পদার্থ পাওয়া গিয়া থাকে। ঘাস ও থড়ের সহিত শশু ও থইল ধা ওয়াইয়াই পশুকে ফুলকায় ও বলবান করিতে পারা যায়। গমের ভূষী ও সর্ষপ গৈল নাইট্রোজেন্ প্রধান খাদা; তত্তিয় অক্সান্ত শস্তের ভূষীও বিশেষ উপকারী। ধানের কুঁড়াও মন্দ নছে। সর্বপের ভূষী গো খাদ্য সামগ্রী নহে; কিন্তু কলাই মাত্রেরই ভূষীই পঞ্চর প্রিয় এবং সুখাদ্য সেইরূপ পৃষ্টিকরও বটে। হর্কাঘাস পশুর পক্ষে বিশেষ স্থান্য। ইহা হইতেও যথেষ্ট নাইট্রোজেন্ পাওয়া যায়। গাভীকে থৈল ও লবণ মিশ্রিত হ্বাঘাসের " কুটী " খাওয়াইলে তাহার বিষ্টা হইতে অপেক্ষাকৃত অধিক পরিমাণে নাইট্রোজেন্ ও এল্বুমিন্ সৃষ্টিকারী পদার্থ প্রাপ্ত হওয়া যায়।

ধানের থড় হুই চারি ঘণ্টা জলে ভিজাইয়া রাথিয়া তাহা রৌদ্রের উত্তাপে উষ্ণ করিয়া লইলে এবং তাহাতে লবণ ও থৈল অথবা গুড়ের মাত (treacle) মিশ্রিত করিয়া দিলে উহা গৃহ পালিত, পশুর অতি প্রির মাদ্য হয়। এই থাদ্য ভক্ষণকারী পশুবিষ্ঠা হইতেও অত্যুৎকৃষ্ট দার প্রাপ্ত ইওসা যায়। ঐ থাদ্য স্থোজ্ঞাপে উষ্ণ করিলে, ফোটন ক্রিনার (fermentation) দারা উহাতে নাইটোজেনের সৃষ্টি হয়। তদবস্থায় উহা পশুকে থাওয়াইলে তাহার বিষ্ঠাতে নাইট্রোজেন বা যবক্ষারজানের ভাগ অধিক থাকে। সাঁাৎসেতে বা জলী মোটাঘাস থাওয়াইলে প্ত বিষ্ঠা হইতে অপেক্ষাকৃত কম নাইট্রোজেন পাওয়া যায়। পণ্ড বিষ্ঠাজাত বাদ পশুরা প্রায় থায় না: কিন্তু উহার সহিত থৈল, লবণ, ভুষী, অথবা গুড়ের মাত মিশ্রিত করিয়া জাব দিলে গৃহপালিত পশু তাহা আগ্রহের স্থিত ভক্ষণ করে এই খাদ্যজাত মল ও নাইটোজেন প্রধান। জলীঘাস বা তদ্রুপ অন্ত বাদ থাদারূপে বাবহাত হইলে তজ্জাত দার উৎরুপ্ত হয় না: किन्द कनी वा माछ। माछ। शामत घारम १७त माश्म ७ माश्मरभनी অধিক পরিমাণে বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। শালগম, মূলা, বিট, ওলক্সি, গাজোর, শাক ও নানারূপ আলু এবং বাধাকোপী প্রভৃতিও উত্তম পত্ত-খাদ্য। এই সকল থাদ্যজাত পশু বিষ্ঠায় জলীঘাদের স্থায় এল বুমিন সৃষ্টির পক্ষে বিশেষ উপযোগী নহে। জলীয় থাদ্যে শর্করার ভাগ বৃদ্ধি করে বটে কিন্তু উহাতে নাইট্রোজেনের ভাগ কম হয়। মুলা শালগম প্রভৃতি অথবা তদ্রুপ থাদ্যের সহিত থৈল, গুড়ের মাত, শস্তের ভুষী ও ৰূপ মিশ্রিত করিয়া দিলে তাহাতে গুণের বৃদ্ধি হয়। শর্করা, শ্বেতসার, গাঁদ ও থৈলযুক্ত থালো পশু দেহের উষ্ণতা বক্ষিত, চর্মির সৃষ্টি এবং চলচ্ছক্তি বৰ্দ্ধিত ও সজ্জাত হইয়া থাকে সত্য, কিন্তু যাহাতে এল বুমিনের স্ষষ্টি হয়, থাল্যের সহিত এমন পদার্থ ব্যবহার না করিলে, তাহালের বিঠাজাত দার অকর্মণ্য হয়। দাধারণ বড় মাত্রই আঁশ প্রধান : উহা পশু থাদোর পক্ষে উপযোগী হইলেও, অন্ত বস্তুর সংযোগ ব্যতীত তত উপকারী হয় না। যে থাদ্য জাতসার উদ্ভিদের এল বুমিন স্টের সহায়ন্ত। करत, উहाई উৎकृष्ट १७ शाना। এইরূপ शानावाता পতর মাংসপেনী, অন্থি ও মাংসপেশীর বন্ধনীর (tendon) স্টে হর তাহাদের বংজ্যোপভিন্ন (production of crives) সহায়তা ঘটে এবং ছম্মের পরিমাণ বৃদ্ধিত হয়। যে সকল ঘাসে সর্কবাব ভাগ অধিক তাকা থাইলেও পশুৰ ক্রছের পবিমাণ বন্ধিত ক্ষ। ঐ সকল ঘাস স্বভাবতঃ মিষ্ট। যে ঘাসে জলের ভাগ কম াতা থাওয়াইলে ঘন বা গাত ক্লয় পাওয়া যায়।

পালামু, গয়া, হাজাবিবাগ প্রাকৃতি জেলাব পার্কতা এবং জঙ্গলী স্থানেব গোষালাগণ বহু পবিমাণ গোও মহিষ পোষণ কবে। ঐ সকল দেশে সমস্ত বৎসবেব আহাবীয় ঘাস পাওয়া স্লকঠিন। সেইজন্ম ঐ সকল দেশের কৃষকগণ নাঁল ও অন্তান্ত গাছেব পাতাও অনেক সময় পশুখালা রূপে ব্যবহার কবিয়া থাকে। অনাবৃষ্টি অথবা অন্ত কোনও কাবলে শশুব খালোব অভান ঘটিলে, বৃক্ষপত্র হাবা সেই অভাব পূবণ করা হয়। বৃক্ষপত্রও কম পুষ্টিকর পশুখালা নহে। বৃক্ষপত্রে ধাতর পালার্থের ভাগ অধিক থাকায় বৃক্ষপত্রভাজী পশুব বিচা হইতে উৎকৃষ্ট সার প্রাপ্ত হুবরা বায়। ভাগল সকল প্রকাব ঘাস ও পাতা খাইয়া জীবন ধাবণ কবিতে পাবে। আমাদের দেশে গৃহপালিত পশুর মধ্যে অধিকাংশ সম্বেই খালোব অভাব সংঘটিত হুইয়া থাকে। স্লুতবাং উহাদের খাল্য সংস্থানের প্রতি কৃষকের বিশেষ দৃষ্টি বাখা প্রয়োজন।

পশু থাদ্যের অভাব চইলে গোলঞ্চলতার পাতা ও কাও বও বও বিরা কাটিয়া বৈদ ও গুডের মাতসহ গাভীকে থাইতে দেওয়া হয়।
ইহাও গাভীব পক্ষে অতিশয় পৃষ্টিকর খাদ্য। মহিষের পক্ষে বেমন
ভঙ্চি পাতা ও ডাঁটা উপকারী ও পৃষ্টিকর খাদ্য, গোজাতিয় পক্ষে
গোলঞ্চও ভচ্প। গোলঞ্চ ভক্ষনে গরাদ পশুর চথের পরিমাণ বৃদ্ধিত
ইয়া থাকে। নাইটোজেন যুক্ত গাদে এল বৃমিন, হানা, (casein) ও রক্তর্ত্তর থাকে। নাইটোজেন যুক্ত গাদে এল বৃমিন, হানা, দৈহিক ক্ষর প্রতিবিধক এবং প্রতিদেশক পদার্থ আবৈ ইহাদের ঘাবায় দৈহিক ও সাম্ববীর
ক্ষম প্রাপ্ত আংশের পূর্ব হয় (repairs the waste of the body
spd the tissues) এবং ইহারা পেশীবর্দ্ধক কার্যের স্থাকক।

প্রাণীমাত্রেরই গতির সহিত প্রতি মুহুর্ত্তেই শারীরিক বন্তসকল পদি-চালিত হইয়া আংশিক করপ্রাপ্ত হইতেছে। নাইটোজেন-জাত খাদ্য ছারাই এই লারবীর কর পূর্ণ হইরা থাকে। আমি পূর্কেই বলিরাছি বে, ক্ষয়প্রাপ্ত অংশ পূরণ করিয়া খাদ্যের যে সারাংশ অবশিষ্ঠ এবং উদ্বন্ত খাকে, তাহাতেই মাংসপেশীর স্বষ্টি ও পুষ্টি হয়। থাদ্যের অন্তর্গত ধাতৰ পদার্থ হইতে অন্ধি ও কল্পাল (skeleton) স্বষ্ট ও বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

এখন ২া৪টি প্রধান গোখাদোর বিষয় উল্লেখ করিয়া এই প্রসঙ্গ শেষ ক্রিব। ডা: ওয়ালটার লেদার ও বিলাতের রদারহামষ্টেড ক্র্যি-পরীকা-কেত্রের (Exprimental Station Report) রিপোর্টের মতে নিমলিখিত গো-খাদো নিমন্ত্রপ পরিমাণে এলবুমিন আছে:-

>। जुलादीक ଓ होंना।

বাদামের থটল

ভাগ 8 **c** - c •

২। মদিনাও রেপ থইল

२8-७¢ ভাগ

০। মটর ও সীমজাতীয়।

क्रमन

२०-२¢

১। গম, ধব, চীনা, ভুটা, ও কাউনি

€। সর্ধপ-থইল

शान এলবুমিন স্ষ্টের পক্ষে একেবারেই উপযোগী খাদ্য নহে।

কোন কোন গো-উৎপাদক, হয়বতী গাভীকে নিয়ন্ত্রপ জাব দিবার ৰাৰম্বা করিয়া. বেশ আশাপ্রদ ফল পাইয়াছেন:-

হে-ঘাস <u>রাইলেজ</u> ১৫ হইতে ২০ পাউ😻

২০ হইতে ৩০ "

÷

कसम्गापि

২∙ হইডে ৪∙ ,,

चूबी ध्वर हुनी वा चूनी (Shorts)

৪ হইতে ৮ 💃

ভূষি এবং চুণী সমান অংশে মিশাইনা সিদ্ধ কলের সহিত মিশাইর। cooked food করিয়া, food mixerএর সাহায্যে মিশাইর। ২া০ ঘণ্টা পরে থাইতে দিবে।

ভ্রৱতী গাভীকে এইরপ খাদ্য দেওয়া কত্তব্য যাহাতে তাহার তথ্য হাদ না হয়। কাজেই এইরপ খাদ্যদামগ্রীর নির্দ্রাচন করা অজ্ঞ র্ববকেব শক্ষে কিছু কঠিন ব্যাপার। কাজেই এসম্বন্ধে এই পুস্তকে লিখিত উপরোক্ত পুস্তকগুলি বিশেষ মনোযোগের সহিত পাঠ করা কর্ত্তব্য। বিলাজের প্রসিদ্ধ গো-উৎপাদক ডাঃ আর্ টমসন সাহেব বলেন যে, হ্রৱতী গাভীকে ১২ সের বা ০ পাউণ্ড ভেলীগুড় বা চিটে ৯ পাউণ্ড বালি মীল বা বালী-সিন্ধের সহিত মিশ্রিত করিয়া খাইতে দিলে কোন হানি হয় না এবং প্রন্ধেপ খাদ্য বছকাল পর্যান্ত গাভীর হ্রম্নায়িকা শক্তি পুর্মান্তাম অক্ষ্প রাখে। বীট্, গাজর, ন্যানগেল, উরজেল, টার্নিপ, কোহল, সাবি (kohl-rabi), বারাকিপি, আলু, সোর্ঘাম্, স্যান্ক্রেন্, শার্ষ্ নিপ্ এবং ভেঁচ জাতীর খাদ্যে green খাদ্যের কাজ বেশ চলিয়া থাকে এবং হয়েরও হাস হয় না। ইহা আনেরিকার ভিন্ন ভিন্ন ছিxperiment ষ্টেশনে পরীক্ষিত হট্য়া প্রতিষ্ঠিত হট্যাছে।

কচি দুর্ব্যাঘান এবং green food গোজাতির পক্ষে বিশেষ উপ-যোগী। ক্লোভারের 'হে ঘাস' অপেক্ষা টাট্ কা ক্লোভার বিশেষ উপ-যোগী বলিয়া জানিবে। গোজাতিকে খাদ্যসামগ্রী এইরূপ ভাবে দেওয়া কস্তব্য যেন তাহাতে চর্বণের এবং পরিপাকের সহায়তা করে। ক্লেইজ্জু কন্দাদি 'ফালি' করিয়া চিরিয়া দিবার ব্যবস্থা এবং ম্লাদিকে নিজ করিয়া ব্যবহার করিবার ব্যবস্থা পাশ্চাত্য ক্লবক্ষণ উদ্ভাবন করিয়া সভ্যজগতে প্রচার করিয়াছেন। এই বিষয়ে পরে 'বিগড়' পর্যাক্ষে মিঃ বার্লির উক্তি উদ্ধৃত করা হইয়াছে। তাহা জন্মদিন্তি ক্লম্বের পাঠ

"The advantages of cooking food may be summed up briefly by stating that it enables it to be more quickly digested by the animal, saving much mastication; against this, however it should be remembered that there may be a disadvantage arising by avoiding too much the process of mastication, which we know is a natural process, having certain important ends in view, as mixing the food with the saliva. &c., and absorbing the Oxygen from the air. The second advantage obtained by the cooking of food is the getting rid of, in many cases, nasty odours and bad flavours, which are present in cattle food very fregently; and thirdly, by adding to the warmth of the animal, or perhaps more correctly stated by not subtracting from it that which it already has, by giving it large bulks of cold uncooked food. The advantages obtained by pulping roots may also be briefly stated here:-Reducing the quantity of food consumed as no waste is allowed; ordinary straw can be used with the roots: and all danger of the cattle chocking is avoided. Much has been said lately of the advantages afforded by allowing mixed food, as cut straw or hay, and pulped roots to ferment and become sound. There is no doubt whatever that many animals are greedily fond of fermented or soured food. The most mouldy hay cut into

short lengths and mixed with pulped roots becomes, after fermantation sets in, most sweet and palatable. When pulped roots are mixed with straw they soften it and render it more assimilated."

গোজাতিকে কিরপ থাদ্য শীত এবং গ্রীয়ে দিতে হয়, তাহা মি:
বার্ণ্স্কৃত 'Dairy, Pigs, and Poultry' নামক পুস্তকের দিতীয়
পরিচ্ছেদটি প্রত্যেক গোছ্য়-ব্যবসায়ীর য়য়ৢ-সহকারে পাঠ করা কর্তব্য
কাবণ, কেবল খাদ্যের উপরই গোছ্য়ের তারতম্য বিশেষরূপ নির্মার
করে ৷



চতুর্দশ পরিচ্ছেদ।

সার-MANURE.

পোষর ও গোম্ত্র উত্তম সার হইরা থাকে। গোমরের ঘুঁঠা প্রস্তুত করিয়া ভারতের প্রায় সর্বতেই জ্বালানি কার্য্যে ব্যবহৃত হইরা থাকে। কিন্তু গোম্ত্রের সারের জন্ম ব্যবহার জ্মমাদের দেশে প্রায় দৃষ্টিপোচর হর না। গোম্ত্র জলে মিশাইয়া ক্ষেতে প্রয়োগ করিলে বিশেষ সারের কাজ করিয়া থাকে। উদ্ভিদ্-জীবনের পোষণকারী সামগ্রী প্রচুর-পরিমাণে গোমরে এবং গোম্ত্রে থাকে। জ্মমাদের দেশে কত গোম্ত্র ও গোমর জ্বযথা নষ্ট হয়, তাহার কি ইয়ভা জাছে? ত্রাপি ভারতভূমি প্রচুরশন্যপ্রদা,—সদাই শ্ন্য-শ্রামলা। এমন দেশ

গো-হাড়ে প্রচুর লাইম্ ফদ্ফেট্ আছে; কাজেই উদ্ভিজ্জ-জীবনবর্দ্ধক একটি প্রধান উপকরণ গোহাড়ে আছে। আমাদের দেশের
লোকেরা দ্বণাপ্রযুক্ত ইহা স্পর্ল করেন না; কিন্তু চামারগণ ছাই বা
তিন পরসার ঝুড়ী বিক্রন্ন করিলে, মুসলমান ব্যবসায়ীগণ পাড়ী পাড়ী
গোহাড় বালী, উল্টাডিঙ্গি প্রভৃতি স্থানের হাড়ের কলে আনারর
ক্রিরা চুর্ণ মরলা প্রস্তুত করিয়া বিলাত, ট্রিনিডাড্, গায়না, মরিশান্,
আসাম প্রভৃতি অঞ্চলের চা বাগানে, বীট ও ইক্ষেত্রে সার দিবার্থিত
জন্ত বিন্তা রপ্তানি করিয়া অর্থবান হইতেছেন।

গোহাড় নিম্নলিখিতরূপে সারার্থে ব্যবহৃত হইতে পারে। হার্ডুই গুলিকে প্রথমে গুঁড়াইয়া তাহার পর H2SO4 (Sulphuric Acid) বা মহাদ্রাবকের সহিত মিশাইয়া কিছুদিন (৫।৭ দিন) মাটীর নিম্নে পুঁজিয়া, তাহার পর উঠাইয়া ব্যবহার করিবে। হাড়-শুঁড়ার সহিত ক্ষিত্রক পটাশ (NaOH), সাল্ফিউরিক্ এসিডের পরিবর্ত্তে ব্যবহার করা যাইতে পারে। আর এক উপায়ে হাড় সারের জক্ত ব্যবহৃত্ত হইতে পারে। একটি গর্ভ খুঁড়িয়া হাড় এবং তাহার উপর কাঠের ছাই এবং কয়লা হুই বা তিন ইঞ্চি মোটা করিয়া এইরূপ পাশা-পাশি গর্ভের মুখ পর্যন্ত বোঝাই করিয়া এবং উপরের থাকে অন্ততঃ ৭৮ ইঞ্চি ছাই কয়লা দিয়া তাহার উপর মাটা চাপা দিবে। এইরূপ এক বর্ষা ফেলিয়া রাথিয়া পর বংসর তাহা তুলিয়া হাতে বা পাথরে শুঁড়াইয়া কেতে আবশ্রুক-মতে ব্যবহার করিবে। হাড় এইরূপে "কিউর" (cure) করিলে আপনা-আপনি নরম (in a friable or state of powder) হইয়া যাইবে। জগদ্বিখ্যাত ফরাশী রাসায়নিক কোরভয় এবং ভ্যায়ুইলিনের মতে হাড়ে নিয়লিখিত উপকরণগুলি আছে, বাহা উত্তিদ-দিগের প্রাণপোষক এবং বর্দ্ধক:—

Decomposed Animal matter	51.0
Phosphate of Lime	37.7
Carbonate of Lime	10.0
Phosphate of Magnesia	1.3
,	100.0

সারার্থে প্রবীণ এবং বৃদ্ধ গাভীর হাড় অধিক উপযোগী এবং মৃল্যবান।
হাড়ের কলের আবর্জনা, ট্যানারীর ধোরানি, পচা জল, চামড়ার
কারথানার পরিত্যক্ত পচা চামড়ার টুকরা, চুণের পচা জল, লোম,
ইত্যাদি সারের খুব উপযোগী পদার্থ। আমাদের দেশে এই সকলের
ব্যবহার আদৌ নাই; কিন্তু পাশ্চাত্য প্রদেশে এই সব জিনিব আদৌ
শড়িতে পার না। হাড়-গুড়ার সহিত অর্থ্বেক মাত্রা সল্ফিউরিক্

এসিড বাব ভাগ জলের সহিত গুলিরা মিশাইরা, ২৪ ঘণ্টা কাল রাথিরা, পুনর্বার একশত ভাগ জলের সহিত মিশাইয়া ক্ষেতে আবশুক্ষত ছড়াইরা সার দিবে। জীবদেহের করলা-গুঁড়াও কম উত্তম সার নহে। ঘাসের গোচারণে হাড়ের সার বড় উপকারী। একার পিছু ১০ বা ১২ হলর এই সার দিলেই বথেষ্ট ঘাস হয়। ক্লেভার্-ক্ষেতে জিপ্সাম একটি ভাল সার। ভালা বাড়ীর রাবিশ মাটীর সহিত হাড় বা অপর কোনরূপ সার মিশাইরা তাহাতে ঘাসের বীজ ছড়াইলে উত্তম চারণ-ভূমি প্রস্তুত হইতে পারে।

গো-হাড়ে কার্পনেট অব লাইম (CaCO3) আছে! ইহা ভূমির একটি প্রধান উৎপাদিকা-শক্তিবর্দ্ধক সামগ্রী। রসায়ন বিছার সাহাব্যে আমরা অবগত হইরাছি যে, সকল ভূমিতেই চুণের কিছু অংশ, অস্ততঃ « হইতে > per cent. চুণ থাকা চাই ; তাহা না হইলে চুণের মাতা কম বলিয়া জানিবে। উদ্ভিহংপাদন জ্বন্ত জ্মীতে চুণ **সার্ব্ধপে দেও**য়া চাই। Calcium Cyanamide একটি চুণঘটিত সার পদার্থ। তাহা ভূমিতে দেওয়া কর্ত্তব্য ৷ ইহা "North Western Cyanamide Co. (Norfolk, England) ঠিকানায় পত্ৰ দিলে পাওয়া ঘাইৰে শার সম্বন্ধে Journal of the Board of Agriculture পত্রিকার এম্বোদশ ভাগের ৩৮. ২১৬. ৪১০ এবং চতুর্দশ ভাগের ৩৫ পৃষ্ঠার Mr. A. D. Hall সৰিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। গো-জাত সার ভারতের প্রায় সকল স্থানেই দারক্রপে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। তাই বলি, গাভী খায় ঘাস—নাদে অমৃত !! এহেন গোলাতির প্রতি আমাদের দেশের লোকের ব্যবহার দেখুন দেখি-কিরূপ নৃশংস এবং পাৰভা দূর হইতে বৃদ্ধ, খেরো, পীড়িত ও শীর্ণকার বলদ, বাহার। चालनात जी-श्वामित कीरनशात्रण निमिष्ठ मण উৎभागनार्थ प्राकीरन লাকণ টানিতে টানিতে ঐ অবস্থাপর হইরাছে, তাহাদের আমরা ভুক্ত

৩৪ টাকার বিনিময়ে অবাধে কদাই-হন্তে অর্পণ করিতে কিঞ্চিগ্রাত্ত কৃষ্টিত হই না। ক্ষাইগণ খরিদ করিয়া কশাঘাতে তাহাদের দৌড় করাইয়া কলিকাতার আনিয়া ৩।৪ দিবস জল ও থাদ্য না দিয়া অনাহারে রাখিয়া, পরে তাহাদের শমন-সদনে প্রেরণ করে। ইহা করিবার काष्ट्रके जात्रि इट्रेल अधिकजत मुला विक्रीज इट्रेग्न थाएक विनिग्राः কলিকাতার কদাইগণ এইরূপ নিষ্ঠুর ব্যবহার করিয়া থাকে। গো-মাতা ও গো-পিতার এই ছর্দদা আমাদের দেশে নিতা হইয়া থাকে। কাজেই এইরূপ অবস্থায় খাঁটি হগ্ধ ছম্পাপা হইবে না ত কি ? অথবা কৃষিক मिन मिन व्यवनिक घो। कमां व्यान्धर्ग नहा। व्यामता थारे "रानुसा পোলোরা" ত্যাগ করি বিষ্ঠা। ইহা এইরূপ দ্রব্য বে. মেথানে রাথা ৰায়, দেখানকার ঘাসটি পর্য্যস্ত জ্বলিয়া গিয়া ৩৪ বংসর সে জ্বমিতে ্কোন স্কুল জন্মায় না। গাভী ধায় ঘাস—দেয় অমৃত। এ হেন া গোজাতির প্রতি আমাদের ভক্তি অটুট এবং পূর্ণমাত্রায় বিদ্যমান! ভাই চন্ধ ছাড়িলেই শাবকটিকে প্রথমেই ৪/৫ টাকার কসাই-হত্তে দিয়া ভাহাকে জন্মের মত শমন-সদনে পাঠাই। তাহার পর তাহার মাটিকে **ফুঁকা দিয়া শেষ** ফোঁটা পৰ্য্যস্ত হগ্ধ লইয়া তাহাকে ১৫৷২০ টাকায় পूर्नेन्ड कमार्ट इत्छ जुनिया मिनाम। आमता दिमिक यूरात हिन्सू कि ना. ठारे जामदा रेश शांतिलाम। जात मिर निर्वाक जमराम গাভী মাতা বা গো-পিতা, ঘাঁহারা তোমার আমার সন্তানদিগের জক্ত **শস্ত** উৎপাদন করিয়া বা মাতৃবৎ হগ্ধ দান করিয়া পালন করিলেন. তাঁহাদের তঃখ-কাহিনী বলে কে,—ভনে কে ? সম্প্রতি টেম্বরা প্রভৃতি ক্সাইখানার মধ্যে বধোপযোগী গোজাতির জল ও থাদোর সুবাবস্থা ক্রিরা ভবানীপুরনিবাসী বাবু ভোলানাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় সমগ্র ः हिन्दुकाতির ধন্তবাদার্হ হইরাছেন, তাহা বলা বাহন্য মাত্র।

পালিত পশুর মধ্যে যাঁড় একটি খুব ক্ষমতাশালী এবং তেজী জন্ত। তাহাদের এবং শৃকর জাতির থাদ্য-পরিপাক লক্তি খুব বেশী ও তেজী। তাই তাহাদের অস্ত্রে "পেপ্দীন" (pepsine) নামক অজীর্ণ রোগের অত্যুংকৃষ্ট ঔষধ প্রস্তুত হইয়া থাকে। যাঁড়ের নাদে কোন সারত্ব থাকে না বলিয়া চলিত কথায় "যাঁড়ের নাদ" বা "অপদার্থ" শক্ষটি ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

আমি পূর্বেই বলিয়াছি যে গো-হাড় জমির পক্ষে একটি প্রধান সার।
পূর্বে মাঠে, ভাগাড়ে, যেথার সেথার গ্রামের মধ্যে গো-হাড় পড়িয়া
থাকিত। তাহা জলবায়ুর নৈসর্গিক ক্রিয়ার ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়া বর্ষার জলে
ধৌত হইয়া জমীর চতুর্দ্ধিকেই ক্ষরিত সার বিক্ষিপ্ত করিয়া জমীর
উৎপাদিকা শক্তি রুদ্ধি করিত। এই হাড় সম্বন্ধে পাশ্চাত্য বৈজ্ঞানিকগণ
আনেক জ্ঞাতব্য ও উপকারী কথা বলিয়া গিয়াছেন। তাহা আমাদিগের
দেশের ক্ষয়কগণের সবিশেষ জানা প্রয়োজন। কিন্তু আমাদের স্থীনদেশে
ক্ষয়কোপযোগী শিক্ষাপ্রণালী এত অসম্পূর্ণ যে, আময়া কিছুই জানি না।
আময়া এ বিষয়ে সম্পূর্ণ অক্ত ও চিরকাল ''যে তিমিরে সেই তিমিরে''।
প্রাকালে জ্মীতে কিরপ অলক্ষিতভাবে সার প্রদন্ত হইত, তাহার
বিষয় তুই এক কথা আমি এইখানে উল্লেখ করিব।

পূর্ব্বকালে প্রত্যেক গ্রামের প্রাস্তভাগে গো-ভাগাড় এবং শ্বরালয়ের স্থান নির্দিষ্ট থাকিত। বর্ধাকাল নিকটবর্ত্তী হইলে, ঐ ভাগাড়টির স্থান গ্রামের নিকটে সরাইয়া আনিবার বিধি ছিল; এবং বর্ধাকালে রৌদ্র এবং জলের নৈসর্গিক (natural) ক্রিয়ায় হাড়ের এমোনিয়াদি সারপদার্থ ধৌত হইয়া জমিব অভাস্তরে প্রবেশ লাভ করিয়া তাহার উৎপাদিকা শক্তি বৃদ্ধি করিত এবং বর্ধায় জলে এই সারপদার্থ চতুর্দিকে ছড়াইয়া বিক্ষিপ্ত হইয়া পড়িত; কাজেই সেই হাড়জাত সার সমানভাবে সকল স্থানেই প্রবেশ করিত। এখন কলের প্রভাবে, গ্রামের

একটি মাত্র হাড় পড়িয়া থাকিবার জো নাই। শবর পুলিন্দ বা চর্ম্মকারগণ তাহা সংগ্রহ করিয়া বিলাতী ব্যবসায়ীদের কলে বেচিয়া আসিতেছে, এবং আমাদিগের শস্যক্ষেত্রকে দিন দিন সারহীন করিয়া নিঃস্ব করিতেছে। আমাদিগের জমীদারদের সেদিকে নজর আদৌ নাই। গৃহবিবাদে প্রতিবেশীর সর্ব্ধনাশ করিতে, আইন-আদালতে অষথা মামলা মকর্দমা করিতে আমরা খুবই পটু। ইহা অপেক্ষা আমাদের আর অধিক অধংপাত কি হইতে পারে।

উত্তম থাদ্যে যে উত্তম সার হয়, তাহা বলা বাহল্য। সেই জক্ত সারের আবশুকীয় পদার্থগুলি ঘাহাতে নষ্ট না হয়, তজ্জ্ঞ সার অর্থাৎ গোশালার পরিত্যক্ত গোময়, গোম্ত্র, আবর্জনাদি পদার্থ ষত শীঘ্র মাঠে নীত হয়, তাহা করিবে।

থৈলের অন্তর্গত যবক্ষারজাত পদার্থ বিশ্লেষণ দারা । হু হুইতে ১৯ আংশ আছে বলিয়া প্রমাণিত হুইয়াছে; স্থতরাং গবাদি পশু যে থৈল ভোজন করে, তাহার প্রায় অর্জাংশ গোমর ও গোমূত্রে পরিণত হুইয়া সারের কাজ করিয়া থাকে। অতএব দেখা যাইতেছে যে, ভগবানের রাজ্যে কোন জিনিষ্ট অযথা নষ্ট বা অপব্যয়িত হয় না। পশুকে যেরূপ খাদ্য দিবে, তাহাদের মলমূত্রাদি হুইতে সেইরূপই সার পাওয়া যাইবে। খাদ্যের উপকার যে পশুর শ্রমশক্তি ও সারের উপকারিতা সম্পূর্ণ নির্ভর করিয়া থাকে, তাহাও বিশেষভাবে শ্বরণ রাখিতে হুইবে। পশুবিষ্ঠা-জ্যাতে সারের মধ্যে বলদ ও মাডের বিষ্ঠাই বিশেষ উপকারী।



পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ

বৎস-পালন।

এখন গোবংসের পালন সম্বন্ধে তুই চারি কথা আলোচনা করা কর্ত্তবা। আমাদের দেশে গোবংস বা বকনা, এমন কি গ্রাম্য প্রদেশে ছগ্ধবতী গাভীকে ও আদৌ যত্ন করা হয় না. বরং মাঠে গোঁ পুঁতিয়া চরিবার জন্ত রাথিয়া আসা হয় এবং সন্ধ্যার সময় কিবা দ্বিপ্রহরের সময় ২।৪ আটি শুষ্ক থড় বা কিম্বা ২ হাঁড়ি জল থাইজে দেওয়া হইয়া থাকে। গাভীর বা তাহার শাবকের প্রতি আমরা এই রূপে যত্ন এবং অমুগ্রহের পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিয়া থাকি। পালামু দেশে আমি দেখিয়াছি যে, এক এক জন গোয়ালা ২০০ হইতে ৩০০ শত পশু গো-পালে রাথে. কিন্তু শীত কিম্বা বর্ষার সময় তাহাদের কোনরূপ ঘরে বা আচ্ছাদনের অভ্যন্তরে রাথিবার ব্যবস্থা নাই; কাজেই ঋতুর প্রকোপে সময়ে সময়ে ভাহাদের মধ্যে সংক্রামক রোগ প্রবেশ করিয়া শত শত গাভী, বলদ বা বক্নাকে অকালে মৃত্যুমুখে পাতিত করিয়া থাকে। সেইজন্ম বৈজ্ঞানিক উপায়ে গোপালন করিতে হইলে আমাদের কি করা কর্ত্তব্য, তাহা অবশ্য জ্ঞাতব্য। প্রথমতঃ, গাভীগণকে রাত্রে কিম্বা রৌদ্রের উত্তাপের সময় পরিষ্কার গোশালায় উপযুক্ত খাদ্য এবং পরিষ্কার পানীয় জল দিয়া বাঁধিয়া রাখিবে। গোশালার উত্তাপ (temperature) গাভীগণের দেহের উত্তাপের সহিত—যথাসাধ্য চেষ্টা করিয়া—সমভাবে রাখিবে: 'যেহেতু, ডাক্তার লায়ন প্লেফেয়ার সাহেবের মতে উত্তাপই গোজাতির খাদ্যের সমতৃল্য। গোশালার উত্তাপ শীতকালে যদি সমভাবে না থাকে অর্থাৎ ইহার টেম্পারেচার

ষদি খুব অন্ন হয়, তাহা হইলে শীতে গাভীগণ কষ্ট পাইয়া থাকে; এবং বে খাদ্য তাহাদিগকে দেওয়া হইয়া থাকে. তাহার অধিকাংশ দেহের উত্তাপ-সংবৃক্ষণ জন্তুই ব্যব্ধিত হইয়া থাকে: কাজেই বেশী খাদ্যের প্রয়োজন হয়। সেই জন্তুই উপরে বলিয়াছি যে, উত্তাপই (warmth) গোদেহের খাদ্যের সমান হইয়া থাকে। এই বিষয়ে থাদ্য-বিচারপর্যায়ে কতক বলিরাছি। অতএব দেখা যাইতেছে যে. গো-দেহ সংরক্ষণ জন্ত দেই দেই দ্রব্য থাইতে দেওয়া উচিত, যাহা গো-ছগ্নে প্রচুর পরিমাণে বর্তমান আছে। মাথম বৃদ্ধির জন্ম তৈলাক্ত সামগ্রী আবশুক্ষত প্রচর পরিমাণে গাভীকে থাইতে দিবে, অর্থাৎ আফ্রিকাদেশীয় 'পামমীল' বা থইল আদি তৈলাক্ত সামগ্রী আবশুকমত দিবে। যদি দধি বা পনির করার আবশুক হয়, তাহা হইলে কড়াই, মটর, কোপীপাতা ইতাদি খাদ্য প্রচর পরিমাণে দিবে। ছুই তিন বিয়ান হইতে গাভীর ত্থ্বদায়িকা শক্তি পূর্ণমাত্রায় প্রকাশিত হয়, এবং প্রচুর চ্থ্মদাত্রী গাভীর विज्ञान পर्गान्ड वक्न ७ प्रपर्गाटकन कतिवा थानानित नावन्द्र। করিলে, প্রচুর ছগ্ধ দিতে পারে। ছগ্ধ-দোহনের পূর্বে গাভীকে মাঠে কদাচ চরিতে পাঠাইবে না। কোন কোন গাভী নিজের হগ্ধ নিজেই বাঁট চুষিয়া পান করিয়া থাকে। ইহা একটি ব্যাধিবিশেষ। ইহা বারণ জন্ত পালামে জাল বাঁধিয়া রাখিলে ফিম্বা পালামে "ক্ষোট্রাইন क्रमत्वतत्त्र मनम नागाहित्न वित्मव छेशकात शाख्या यहित्व ; वर्शा भूमत्वत्र, মলমের মত আটারূপে প্রস্তুত করিয়া, পালাম ও বাঁটে তাহার প্রলেপ লাগাইরা দিলে পাভীর হগ্ধ চুষা দোষ নিবারিত হয়।

গোৰংসগণকে শীল্ল ছাইপুই করিতে হইলে মাংসবৰ্দ্ধনকারী আহার দেওরা কর্ত্তব্য অর্থাৎ Oxygen, Hydrogen, Carbon এবং Nitrogen-প্রধান আহার দেওরা উচিত। শাবকগণকে নির্মাণিখিতরূপ আব বিবার ব্যবস্থা করিবে:—

Meal	***	2 cwt
Oil-cake	• • •	I cwt
Pollard -	•••	ı "
Malt Coombs	•••	3 Sack
Chaff	•••	8 sacks
Salt	***	3 tbs

মীল প্রস্তান মপ্রকাবে হইয়া থাকে:—মস্থরী, কড়াই বা মটর,
মকা এবং জই—প্রত্যেক এক স্থাক করিয়া জাঁতায় ফেলিয়া আধভাঙ্গা
বা দর বিকরিয়া সিদ্ধ করিয়া, কিম্বা জলে ভিজাইয়া আবশুক্মত বংসগণকে
বাওয়াইবে।

ছদ্ধবতী গাভীগণকে মাথম বা ননী-বৃদ্ধিকারক উপকরণে প্রস্তুত থাদ্য দিবে। তজ্জ্য Oxygen, Hydrogen ও Carbon-জাত থাদ্য দেওয়াই প্রয়োজন। এই কারণে নিয়লিথিত দ্রব্যসম্বলিত আহার ছ্প্পবতী গাভীকে দেওয়া কর্ত্বব্য :—বীণ, কড়াই, বার্লি, জই, গাজর, টার্নিপ, গমের ভূষি, জইর ভূষি। ১০০ পাউও উত্তম মেডো-হে, ৯০ পাউও কচিক্রোভার-হে, লুশার্গ, সাান্কয়েন, কিম্বা ভিচেস (viches) হের সমকক্ষা কোপী, বীট্, সালগম্ ও ওলক্ষপির পাতা বা গোড়া, মাংসবর্দ্ধনকারী থাদ্য। বংসকে সকালে ৭টার সময়, বৈকালে ৩টা এবং ৫টার সময় প্রত্যেকবারে ৭ পাউও করিয়া উপরোক্ত মিশ্রিত জাব দিবে, এবং সকালে ১০টার সময় গাজর, ক্যারট্ বা টার্নিপ্ বা অপর কোন গোড়া বা কন্দ (roots) কলে কাটিয়া চেলা (sliced-roots) একয়ণ বা অরপরিমাণে (য়হা শাবক আগ্রহ সহকারে থাইতে পারে) লরণ মিশাইয়া ভোজন করিতে দিবে। বৈকাল ৫টার সময় উপরোক্ত জাব দিরা থাইবার্গ মৃত হে-ঘাস দিরে।

দ্বাল মেডো-হেঁ-বাসে নিম্নলিথিত উপকরণ আছে। এইগুলি গো-দ্বানিরের মাংস, চর্বি এবং ছগ্ধ-উৎপাদক উপকরণ বলিয়া কামিবে।

क ल	<i>>৬.৬७</i>
তৈল চৰ্ব্বি	€.•>
এলব্ মেন কিম্বা প্রোটান	٧٠٠)
চিনি	>€.⊅₽
Digestible fibrė	२०.৮৮
Soluble inorganic matter	8.49
Insoluble protein compounds	७.२६
Indigestible woody fibres	>4.98
Insoluble inorganic matter	الله عالم الله
	>00.00

গোবংস-পালন সম্বন্ধে পূর্ববিধিত মিঃ Pringleএর অভিমত গোজাতির খাদ্যবিচার-অধ্যায়ে লিথিয়াছি। তাহা পাঠ করা কর্ত্তবা ।

পাশ্চাতা প্রদেশে বংসকে মাতৃত্ব বাটে মুখ না দিয়া খাইতে দিবাৰ ব্যবস্থা আছে। ঐ সকল দেশে গোতৃত্ব লোহন হাত-পালামে সমাহিত হইয়া থাকে। কাজেই বংসগণের পালন ও বৰ্জন ক্ষক্ত ক্ষুত্রিম ও বৈজ্ঞানিক উপায়ের সাহায্য গ্রহণ করিতে হয়। এ বিষয়ে মিঃ W. মি. Lawrence, "Journal of the Board of Agriculture" এর একাদশ ভাগের ৭০৫ পৃষ্ঠায় স্বিশেষ বর্ণনা করিয়াছেন। আমি ঐ প্রবন্ধ হইতে নিম্লিখিত আবশ্রকীয় অংশটুকু এই স্থানে উদ্ভ করিলাম।

বংস জন্মিবার পরেই মুখের লাল ও গোটানি ভাঙ্গিয়া দিয়া গাত্র বৈশ্বরিয়া মুছাইয়া একটি পূথক (৬×৫ ফিঃ) থেঁ ায়াড়ে লইয়া গিয়া রাখিবে। পূর্ব্বে ঐ থেঁ ায়াড়টিকে disinfect করিয়া রাখিবে। বংসটিকে স্থানান্তরিত করিবার অব্যবহিত পরেই তাহার নাভি ছেদন করিয়া তাহা বন্ধন করিয়া দিয়া, নিম্নলিখিত জাবণে (solution) তাহা ধৌত করিয়া

দিবে :--- পণ্ট Calvert's No. 4 Carbolic Acid to 19 pints of Galipoli Oil.)। তাহার পর নিম্নলিখিত প্রকারে পালন করিবে:--

প্রথমে Colostrum বা টাট কা (new) হ্রম ৪া৫ দিন দিবে। যদি বংসের মাতা প্রসব করিয়াই মারা যায়, তাহা হইলে একটি ডিম্বের শ্বেত-আংশটি বেশ করিয়া ফেটাইয়া (whip) তাহার সহিত 🕹 পিণ্ট গরম অল, এক চামচপূর্ণ রেড়ির তৈল এবং ১ পিণ্ট টাট্কা ছগ্ধ মিশাইয়া প্রত্যেক বাবে থাদ্যের পরিবর্ত্তে দিবে। বংসকে তিনবার প্রত্যিহ অর্থাৎ প্রাতে ৬৩০টা মধ্যাকে ১২।৩০টা এবং বৈকালে ৫৩০টার সময় উপরোক্ত-ন্ধপে প্রত্যেকবারে থাওয়াইবে। এইরূপ থাদ্য ৮ সপ্তাহ পর্যান্ত দিবে অর্থাৎ যে পর্যান্ত না ৰৎস আপনি ভুক্ষবাস বা হে-ঘাস থাইভে পারে। জন্মিবার প্রথম তিনদিন অঙ্গ লি-সাহাযো খাদ্য খাওয়াইবে। চতুর্বদিন হইতে এইরূপ অভ্যাস করাইবে যে, পাত্রে তর্ল থাদ্যসামগ্রী দিলেই বৎস যেন ষ্মাগ্রহ-সহকারে তাহা লেহন করিয়া লয় বা চুষিয়া পান করে। চতুর্থদিন হইতে > শিণ্টের পরিবর্তে ছই কোয়াট্ বোতল পূর্ণ ছগ্ধ প্রব্যেকবারে দিবে। ২ সপ্তাহ পরে milk বা টাট্কা ছগ্ধ বন্ধ করিয়া নিমন্ধপ খাদ্য শিবে:- > কোয়ার্ট টাট কা হগ্ধ, ৩ পিণ্ট ননীতোলা (separated) इश्व अवः मनी-छेरभाषक थामा । ननी-छेरभाषक थामा व। cream substitute নিমন্ত্রপে প্রস্তুত করিবে :--

(১) ৩ গ্যালন জলে পূর্বরাতে ২ পাউও তিরি ভিজাইর। রাখিবে।
পরদিন ২০ মিনিট জাল দিবে এবং নাড়িতে থাকিবে, বেন বসিয়া
বা ধরিরা না যায়। নামাইবার পূর্বে ২ পাউও নয়লা জলে গুলিরা
মিলাইবে ও অলক্ষণ জাল দিবে, যাহাতে "ডেলা" না হইয়া যায়।
নামাইয়া উপরোক্ত থালের সহিত ব্যবস্থামত ব্যবহার করিবে। তিসির
লীব বা মীল্ নিয়লিবিত আর একরপে প্রস্তুত করা যাইতে পারে।

(২) প্রথমে তিদি জাঁতায় ভাঙ্গিয়া পৃথক্ রাথিয়া দিবে। অংশ মকা বা মেজ্ (maize বা Indian corn—জাতায় ভাঙ্গা) এবং ৭ অংশ উপরোক্ত তিসি-ভাঙ্গা মিশাইয়া তাহা হইতে এক কোয়াট দর্গ বা মীল্ লইয়া এক গ্যালন জলে সিদ্ধ করিয়া; পায়স বা প্রমান্ন বা মাাশের (mash) মত হইলে নামাইয়া ব্যবহার করিবে। এই প্রমান্ন খাদ্যের ১ পিণ্ট এবং ৪ পিণ্ট্ননীতোলা ছগ্ধ (separated milk.) প্রথম মাসে ব্যবহার করিবে। প্রথম মাসের পরে new milk দেওয়া রহিত করিবে, এবং তাহার পরিবর্তে তিন কোয়াট্ ননীতোলা ছগ্ধ এবং ননী-উৎপাদক উপরোক্ত খাদ্য প্রত্যেকবারে দিবে। বাঙ্গণবাহী বা থাদ্যোপযোগী বলদকে (veal calf) > পিণ্ট্ননীতোলা ছগ্ধ বেশী निदंव এवः इंशत महिक भग्नात भाग्नम भिगारेग्रा निदंव, अथवा देखत काव (oat-meal) মিশাইরা খাইতে দিবে। ইহা যদি না জ্টিরা উঠে, তাহা-হইলে separated milkএর সহিত এক চামচ (dessert spoonful) हिनि, नर्कता वा ७७ नित्व। त्य त्र त्र त्र क्य निवात अना छैर-পাদন করা হইতেছে, ভাহাদিগকে নিষ্ট মেডো-ছে (sweet meadow hay) পঞ্চম সপ্তাহে ব্যবস্থা করিবে, কারণ ঐ সময়ে ভাহারা বেশ জ্বাপ্তর কাটিতে পারে। নবম সপ্তাহে মধ্যদিনের (midday) ছুগ্ধ রহিত করিয়া তাহার পরিবর্ত্তে মশিনার (linseed) খইন আলাজ ৬ আউন পরিমাণ এবং সকালে ও বৈকালে প্রত্যেকবারে e কোয়াট্ खक्रन ननीक्रांगा एवं (separated milk) मित्र ; कि cream substitute দিবে না। বৎস যেমন বড় ছইবে, সেইসজে ভঁক খাস (hay) এবং মশিনার থইল ক্রমশ: বর্দ্ধিত করিবে। এই খান্য এমনভাবে বাড়াইবে যেন পঞ্চম মাসে বৎসগুলি 🗟 পাউণ্ড মশিনার খইল এবং পোউও হে-খাস প্রতাহ থাইবার জন্ত পায়। এই সময় সিকি পাউও দৈ পূর্ব থাদোর সহিত সংযোগ করিবে এবং মধ্যে মধ্যে সুইছঙ সামান্ত পরিমাণে থাইতে দিবে। ষষ্ঠমাসে হয় দেওয়া একেবারেই বন্ধ করিয়া দিবে। ফল কথা, বংসেব খাদ্য-পবিবর্ত্তন অল্লে অল্লে এবং ক্রমশ: ক্রমশ: হওয়া উচিত। এই সময় বাছ্রদের আমাশা, পেটের অল্লেখ এবং ঠাগু লাগিয়া বোগ উৎপন্ন হইয়া থাকে। অয়বৃদ্ধি হওয়ার জ্বন্য পেটের অল্লেখ হইয়া থাকে, অর্থাৎ খাদ্য বা জাব বেশী খাইয়া অপরিপাক ছইলে এই রোগ উৎপন্ন হয়। সেই জন্ত সময়ে সময়ে Soda bicarb কিলা চুণেব জল ছয়ে মিশ্রিত কবিয়া খাওয়াইবে; ঠাগু লাগিলে রোগীকে গুণ বা চট্ বা কল্ল জড়াইয়া রাখিবে, এবং এক ডেসাট (dessert spoonful) চামচ-পূর্ণ নাত্রায় "sweet spirits of nitre গরমজলে মিশাইয়া খাইতে দিবে।

এখন দেখা যাইতেছে যে, ছয়মাস বয়স প্র্যান্ত বংসকে নিম্নলিখিতক্লপ খাদ্য দিবাৰ ব্যবস্থা হইতেছে :—

প্রথম সপ্তাহ:—> কোরার্ট ওজন হইতে ক্রমশঃ বন্ধিত কৰিয়া তৃতীর দিনে ২ কোরার্ট পর্যান্ত বাড়াইরা সপ্তাহ পর্যান্ত টাটকা মাতৃহগ্ধ অঙ্গুলী-সাহায্যে থাওয়াইতে শিথাইতে।

দ্বিতীয় সপ্তাত:—গরম টাট্কা হ্ও (বংলেব মাতৃহ্য দরকার নাই) ≉ কোরার্ট ওজনে সমস্তদিনে তিনবাবে খাওয়াইবে।

তৃতীয় সপ্তাহ:—২ পিণ্ট টাট্কা (new) ছগ্ম এবং তিন পিণ্ট্ ননীতোলা বা মাধম-তোলা (skimmed or separated) ছথের সহিত আধ পিণ্ট্ উপরোক্ত মনিনার পায়স (ছিতীয় প্রকাশ) মিশাইয়া থাইতে দিবে।

পঞ্চম সপ্তাহ:—প্রত্যেকবাবে তিন কোনার্ট্ ওজন ননীতোলা, (skimmed or separated) হুগ্নের সহিত এক পিণ্ট্ননী-উৎপাদক আদ্য বা মশিনার পারস মিশাইয়া দিনে তিনবার করিয়া খাইতে দিবে, প্রবং প্রদে সঙ্গে সামান্ত স্বিয়া কৃচি বিষ্ট সেড়ো-হে (medow-

hay) বা ৩ফ খাস ধাইতে দিবে। খাসের মাত্রাটি ক্রমশঃ বাড়াইটে খাকিবে।

নবন সপ্তাহ:— দ্বিপ্রহরের (midday) হুর্ম এবং তিসির পারস যা নমী-উৎপাদক জাব বন্ধ করিয়া, তাহার পরিবর্জে বৎসকে সমস্ত দিনে পাঁচ কোরাট্ নমীতোলা ছুদ্ম (সকালে ও কৈকালে) দিবে এবং একস্টি পরিমাণ অর্থাৎ ৮ বা ও আউন্ন্তাল তিসির থইল, এরুপ কিঞ্চিৎ হুদ্দে ভিজাইয়া গুলিয়া, দ্বিপ্রহরের ভোজন দিবে। হে-ঘাস সপ্তাহে সপ্তাহে ক্রমশং বৃদ্ধি করিবে।

ত্রোদশ সপ্তাহ: পূর্বনত ৫ কোয়ার্ট্ ননীতোলা এর সকালে ও বৈকালে দিবে, এবং ট্ব পাউও তিসির থইল চূর্ণ এবং জই-চূর্ণ মিশাইয়া, আব গালন ফালি-কাটা স্থইড্-কন্স (pulped swedes) দিবে; অথবা গ্রীম্মকালে মড়্যা, জোয়ার, চিনা, বাজরা, মকা প্রভৃতির কাঁচা পাতা (green feed) যথেষ্ট পরিমাণে থাইতে দিবে। হে-ঘাস ক্রমশ: ইচ্ছামত প্রচুর থাইতে দিবে।

একবিংশ সপ্তাহ: — ননীতোলা হগধ পূর্বমত দিবে। এক পাউণ্ড দশিনার থইল এবং দর্রাও (crushed meal) ঐ সঙ্গে দ্বিপ্রহরে দিবে। কন্দ (roots) এবং হে বা কাঁচা যাস ইচ্ছামত ক্রমশঃ বিশ্বিত করিবে।

চতুর্ব্বিশ সপ্তাহ:—বৈকালের হগ্ধ দেওরা একেবারেই হুগিত করিবে।
ক্রমক যেন এইটি শ্মরণ রাখেন যে, খাল্যের পরিবর্ত্তন ক্রমিক
(gradual) হয়, নচেৎ বৎসের পেটের অস্থুখ বা আমাশর হইরা বিশেষ
ক্রমায়ক হইতে পারে। গোবৎসের পক্ষে পেটের অস্থুখ বা আমাশা
ক্রমায়ক হরতে পারে। গোবৎসের পক্ষে পেটের অস্থুখ বা আমাশা
ক্রমায়ক হরতে পারে।

ৰংগ ও গোপালন সম্বন্ধে O. Kellner ক্লড "The Scientific of Animals" (London, Duckworth, 6s.);

R. S. Burn's কৃত্ত "Modern Outlines of Farming", "Dairy Pigs and Poultry", এবং "Cattle Sheep and Horses" নামক বইগুলিও বিশেষ যত্ত-সহকারে দেখা কর্ত্তব্য।

মি: Thomas Bowick এবং Major S. McClintock গবেষণা-পূর্ণ প্রবন্ধে Journal of the Royal Agricultural Society of England পত্রিকায় বংস-পালন সম্বন্ধে যাহা প্রকাশ করিয়াছেন, ভাহা কৃষক্মাত্রেরই পাঠ করা কর্ত্তবা। বংসপালন সম্বন্ধে কার্ণের কৃত 'Outlines of Modern Farming' প্রকের ৫০ ছইতে ৬৬ পৃঃ দুষ্টবা।

কটি বৎদগণের আমাশয় বা পেটের অন্থবের কারণ—বেশী মাত্রায় মাতৃহগ্ধ পান বলিয়া অন্থমিত হয়। এইজন্ত ছগ্ধপানের নিয়ম বদ্ধ করিয়া 'Dairy Supply Co.' কৃত বাটযুক্ত 'feeding pail' আনাইয়া তাহা ব্যবহার করিবে।

ভগবানের রাজত্বে কিছুই নষ্ট হয় না। প্রকৃতি হইতে তোমার বৈটা আবশুক হইল, তুমি লইলে, অপরটি ত্যাগ করিলে। তুমি বেটা ত্যাগ করিলে। তুমি বেটা ত্যাগ করিলে। তুমি বেটা ত্যাগ করিলে। তুমি বেটা তাগ করিলে। তালি-জগতে ও উদ্ভিক্ষ-জগতে এই ক্রিয়া অর্হনিশ চলিতেছে। বর্ত্তমান রসায়ন-বিদ্যা ইহা দিন দিন প্রমাণ করিতেছে। ডেয়ারি ফারম হইতে, তুম হইতে, ক্রমিজাত ফসলসমূহ হইতে যত প্রকার "বাই-প্রভক্ট" (bye-product) জনিতে পারে, তাছা পাশ্চাত্য রসায়নবিদ্ পণ্ডিতগণই বলিতে পারেন। বিজ্ঞানবলে কলিকাতার "ফার্মা-সিউটিক্যাল সমিতি" তাহা দিন দিন অন্ধ বঙ্গবাসীরে দেথাইতেছেন। পশ্চিম-ভারতে অধ্যাপক অর্জার অন্ধ ভারতবাসীর চক্ উন্মীলিত করিয়া দিতেছেন। কিছু আমরা চাবার জাতি বে "ভিমিরে সেই ভিমিরে"!!

কৃষকের পক্ষে বংসপালন যেমন একটি গুরুতর সমস্তা, সেইরূপ থেঁড়ে গাভা পালন করাও একটি জটিল এবং দায়িত্বপূর্ণ ব্যাপার। সামানের দেশের কৃষক সম্প্রদায় তাহা আদৌ বুঝেন না। তাঁহারা শনে করেন তে থড়, জাব ভূষি আদি থাতাগামগ্রী দিলেই বুঝি সব নাজা ফুরাইল। কিন্তু বস্তুতঃ তাহা নহে। যুক্তরাজ্যের বিখ্যাত গাতত্ত্বিং Mr. W. J. Spillman নিম্নলিথিতরূপে বংসপালন ক্রিতে অন্ধ্বোধ করেনঃ—

"The owner of this farm (Mr. H. L. Blanchard, of Jefferson County, Washington, situate on the west side of Puget Sound, at the base of the Olympic Mountains, North America) prefers to raise fall and winter calves for the dairy. The calves are allowed to nurse their dams only once. After this they are fed on their mother's milk for a couple of weeks. The first week they are given 2 quarts of milk in the morning, I quart at noon, and 2 quarts in the evening. The second week they are given 3 quarts twice a day, morning and evening. During the next two weeks the feed of the calf consists of half whole and half skim milk, with a pinch of flax seed meal (made by grinding the whole seed) added to it, about 1 oz at a feed. The quantity of milk fed during this period (the second two weeks) is about 3 quarts, twice a day.

After the calf is a month old it is given 4 quarts

of skim milk twice a day with an ounce of flax-seed meal and a handful of mixed corn meal and ground oats. The calf is taught to eat this by putting the mixture in a milk a few times. Then the grain is fed dry after the skim milk. Feeding this dry material after this skim milk is finished, presents the calves from sucking each other when they are let out in the open space for airing or of the crib in which they are fed. The quantity of grain is gradually increased until at two months of age the calf is receiving a quart of the mixture a day. About this time the feeding of a small quantity of roots and silage begins, and the calves are given all the hay they will eat. Milk is fed until the calves are six months old, some times longer. They have access to fresh water at all times. Absolute cleanliness about the feeding vessels is essential. Keep the calf dry and clean, fairly warm, but in pure air and allow it to exercise. Young calves like company, but if kept together are likely to learn bad suckling habits, which must be cured or eschewed by ingenuous devices. Every calf had better have its own box (খায়াড) until a month or two old, and then be tied up out of reach of neighbours; but several may exercise together if not turned out until an hour after taking milk.

In spring the calves are turned out to pasture in a small enclosure made for their use. As they begin to eat grass freely, they are fed less milk, grain, &c. though as previously stated, milk is fed more or less until calves are at least six months old. During the next fall and winter they are given rations similar to those of cows in milk, but smaller in proportion to their size. The author cautions against breeding two soon."

ভারতবর্ষ গ্রীমপ্রধান দেশ। এদেশে বকনাকে অন্যন তিন বংসরের না হইলে বুষ গ্রহণ করিতে দেওয়া উচিত নহে। হৈমন্তিক বৎসগুলি (fall calves i.e those that are born in September and October just before the winter sets in) সচরাচর জোণ্ডবা হইরা থাকে: এই জন্ম পাশ্চাতা প্রদেশে ইহারা অধিকাংশই "dairy cows" রূপে প্রবর্ত্তি হইরা থাকে। "From the time milk ceases to be the main food of the calf until the heifer drops her first calf (at which time she becomes a cow, if ever, regardless of age) the feeding of the animal should be with a view to nourishment and growth, without accumulation of flesh. When pasturage is good, after the calf is 6 months old, there can be no better food; if grass is short or dry and growth slackens, supplement with clover hay, wheat bran or oats. At other times let the food be mainly of the coarser and more bulky kinds of forage; the digestive appa-

ratus needs to be developed and become accustomed to working up large quantites of food. A big belly may result, but no matter. If accompanied with a well sprung rib, a strong back and loin, depth of flank, and other marks of constitutional vigour, a big belly is to be desired, indicating capacity as a feeder and user of feeds. Give long forage, fodder, or 'roughness" the preference with young stock, and use grain sparingly as needed to balance the ration and promote growth and thrift. A fall calf, well bred and healthfully grown, should "come in" (वांड नहरूव) when just about 2 years old and ought to make a good cow." ভারতবর্ষের গ্রীয়প্রধান জলবায়তে ত্রইবৎসর বয়সের পূর্বে অল্পংথ্যক বক্লাকে বাঁড লইতে দেখা যায় না। "Grain should be sparingly used, oats and bran preferred, perhaps a little linseed, and always to judiciously supplement the other food. Do not turn it on to grass too soon. If a spring calf, carry it over to the second summer without pasturage. A fall calf will be in a good shape to get its living from pasture during its first summer.



ষোড়শ পরিচ্ছেদ।

গোশালা এবং গোশালা-নির্মাণ।

গোশালার স্থান নির্বাচন এবং গোশালা নির্মাণ করা বড কম শুক্তর কার্য্য নহে। গোশালা ওক এবং উচ্চস্থানে হওরা কর্ত্তবা। ইহা কোন বড় নগর বা সহরের সন্নিকট রেল-ষ্টেশানের পার্শ্বে কিম্বা নগরের উপকণ্ঠবর্ত্তী স্থানে অবস্থিত হওয়া উচিত। অধিকন্ত শ্রামল গোচারণের আসল স্থানে গোশালা নির্ব্বাচন সর্বতোভাবে সমীচীন বলিয়া বোধ হয়। এই কারণে কোন বহতা নদী, নালা বা তড়াগের কাছে গোশালার স্থান মনোনীত করা ক্রুষকের (Dairy farmerএর) কর্তব্য। গোশালা নিশ্বাণের প্লান বিলাভি জ্বর্ণাল বা কৃষি-পুত্তক হইতে সংগ্রহ করিয়া প্রদত্ত হইয়াছে। রুষক নিজ আবশুক্ষত মনোনীত করিয়া নিজ গোশালা ইহা হইতে নির্মাণ করিবেন। আমেরিকাদেশীয় 'ফার্মার.'' কিমা "কার্মাইয়ার্ড প্রভৃতি "পত্রিকা হইতে এইরূপ প্লান আবশ্রকমত সংগ্রহ করিয়া লইবেন। কিন্তু Stephen and Burn কৃত" "Book of Farm Buildings" পুতকখানিকে আমি খুব ভাল বলিয়া মনে-করি এবং তজ্জ্য আমাদের দেশে জমিদারমাত্রকেই ভাহা পাঠ করিতে অনুবোধ করি। স্কেচ বা নক্সায় ক্ থ গ্ ঘ দেখ। এ সম্বন্ধে ভিন্ন े जिन्न क्षकारतन रशानांना निर्मारनन भ्रान E. B. Powell कुछ "Barn Plans and Out-buildings" (Orange Judd & Co., New York), John Speir Kt., St. O.-45 "Cowhouses" in Journal of Board of Agriculture, vol. XVI, P. 533, G. Mayall Fo "Cows, Cow-houses and Milk" (London, Bailliere Tindall & Cox, 1909, 2s. 6d.) পুস্তক ও প্রবন্ধভালি বছ-সহকারে পাঠ করা কর্ত্তব্য। অখ্যাপক শ্রেপার ক্রত গোরালের : প্রাান নিয়ে "ৰু" কেচে (Sketch) প্রায়ত হইবা।

গোশালার মেজে (floor) পাকা হওয়া উচিত কারণ, গোজাতির যাবতীয় ব্যাধি অপরিষ্কার গোশালা হইতেই উৎপন্ন হইরা থাকে। মেন্সেটী পাকা ইট কাংভাবে পাশা-পাশী স্থরকী চুণে জমাইয়া খড়াগুলি বিলাতি সিমেণ্টে মারিয়া দিলে খুব ভাল মেজে প্রস্তুত হইবে। গোশালা এমন ভাবে প্রস্তুত করা কর্ত্তব্য, যে নির্মাল বায়ু, রৌদ্র ও উত্তাপ গ্রাবেশ করিতে পারে: অথচ দারকদ্ধ করিলে যেন শীত বা জল वां कड़ नां धाराम कतिराज मार्थ इत्र। छेशरताक भ्रास्त हेश राम প্রদর্শিত হইয়াছে। থোলা, করোগেট্-টীন্শেড্. গোলপাতা, খড়, বা উলু দিয়া ঘরের ছাউনী করিলে বেশ সন্তায় গোশালা তৈয়ার হইতে গোশালায় জল, মল, এবং মৃত্র-নির্গমনের প্রনালী থাকা কর্ত্তব্য এবং গোয়ালগুলি বেশ ঢালু হওয়া কর্ত্তব্য, যাহাতে জল নিজ্ঞামণের কোনরূপ বাধা না ঘটিতে পারে। প্রত্যেক গাভাকে অন্ততঃ ৪০ বর্গ-ফিট থাকিবার স্থান দিবে, কিন্তু যদি প্রচুর স্থান পাওয়া যায়, তাহা হইলে ৮০ বর্গদিট দিলেই ভাল হয় অর্থাৎ ৪০×৩ ফিটের পরিবর্তে ১০×৮ ফিট দিবে। গোয়ালগুলি যদি পাকা ছাতওয়ালা হয়, তবে মেজিয়া হইতে ছাত পৰ্যান্ত ১০ ফিট উচ্চ হওয়া উচিত, কিন্তু যদি থড় য়া বা থোলার হয়, তাহা হইলে ছেঁইচ্৮ ফিট উচ্চ এবং মটুকা অস্ততঃ ১২ ফিট্ উচ্চ হওয়া কর্ত্তব্য। উপরের প্ল্যানগুলি দেখিয়া গোশালা নির্মাণ করিলে সব অভাব দূরীভূত হইবে।

বিগত ১৯১২ সালের ১৬ই নবেম্বর তারিথের "কান্ট্রিজেণ্টেল ম্যান্" পত্রিকার ২৭ পৃষ্ঠার বে গোশালার প্ল্যান্ দেওয়া হইরাছে, তাহা আমাদের দেশে পর্বতের ঢালু প্রদেশে নিশ্মাণ করিয়া দেখিলে মন্দ হয় না।

আজ কাল বিজ্ঞানের বছল আলোচনার সহিত বৈজ্ঞানিক উপান্ধে বাদ্যশামন্ত্রীর উৎপাদন, সংরক্ষণ, ইত্যাদি হইয়া থাকে। হয় আমাদের একটি প্রধান থাদ্যশামন্ত্রী; তাহা কাহারও অবিদিত কাই। এই

থাদ্যসামগ্রী আমাদের দেশে বিভদ্ধাবস্থার প্রায়ই পাওয়া যায় না। তাহাব কয়েকটি বিশেষ কারণ আছে। তাহার মধ্যে অবৈজ্ঞানিক উপায়ে গোশালা নির্মাণ একটি প্রধান কারণ। এগ্রিকলচারেল জার্ণাল অব্ইভিরা নামক পত্রিকার পঞ্ম ভালুমের ৫২ পৃঠার অধ্যাপক স্পেয়াব এবিষয়ে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। অধিকন্ত আমেরিকা প্রদেশ হইতে প্রকাশিত কিমালের "Dairy Farmer," "American Farmer," "Country Gentleman" প্রভৃতি পত্রিকার এবিষয়ে স্বিশেষ আলোচনা আছে। স্বাস্থ্যকৰ গাভীৰ জন্ম স্বাস্থ্যকর ও বৈজ্ঞানিক নিয়মে নির্ম্মিত গোশালা প্রয়োজন। আমেরিকা বিলাত ও ফরাসী व्यातन, रन्छ, कार्त्यनी, एजमार्क व्यञ्जि व्यातन वर्जमान देवकानिक शानाना निर्माण अगानी, इध-रायमात्र, एमाति कार्मिः अन्ति विस्त শিকা দেওয়া হইয়া থাকে। শিকাগো ক্লবি-কলেজ, কর্ণেল বিশ্ববিভালয়ের অন্তর্গত নিউটয়র্ক, নিউজাদি, কালিফর্ণিয়া উইদ্কন্সিন, ওণ্টারিও, বাফেলো, ওহিরো, মিশিসিপি, ইণ্ডিয়ানা, জন্মিয়া প্রভৃতি স্থানের কৃষি-ন্ধ্ৰ ও কলেজ—আমেবিকা প্ৰদেশে; শাইরেন সিষ্টাৰ (Cirenceester) **उत्रहाम, इव्रक, नि**ष्म, मानितिष्ठात, द्रम्बिष ७ तन्तेह्रम्किन, क्रिय-কলেজ ও কুল-ইংলতে; এডিন্বারা, মাদ্গো, হোম্দ্ ফারম্ Holmes Farm at Kilmarnock), এবার্ডীন্, প্রভৃতি স্থানের ক্রবি-কলেজ ও ক্ল-কট্লণ্ড্ প্রদেশে; স্থাস্গার্ড ক্লবি-ক্ল-ডেন্মার্কে; প্যারি নগরের সোদাইটি আগোনামীক্ প্রভৃতি স্থান—ক্লমি-বিস্থালর বা কলেজ বলিয়া জগতে প্রসিদ্ধ। এই সকল স্কৃল বা কলেজের "ডেরারি ইকোনামি" বিভাগে গোশালা এবং ক্ল্যক্দের বাসোপযোগী গৃহাদি নির্মাণ সম্বন্ধে विट्निय निका दिखा रहेश बादक।

এখন দেখা কর্ত্তব্য, কিরূপ স্বাস্থ্যকর বৈজ্ঞানিক গোশালা নির্মাণের পদ্ধতি আমাদের দেশে প্রচলিত করা কর্ত্তব্য। আমি পূর্বেই বলিয়াছি বে, আমাদের দেশ গ্রীমপ্রধান। হগ্নবতী গাভীকে কদাচ অনাচ্ছাদিত অবস্থার দিনে বা রাত্রে রাথা কর্ত্তব্য নহে। পালাম্, সিঙ্গভূম, মানভূম, আসাম, মধ্য-ভারত প্রভৃতি দেশে রাত্রে গাভীগণকে গোয়ালে রক্ষা করার প্রথা আদৌ নাই। এবিষয়ে তত্তৎদেশবাসী লোকগণ বড়ই শৈথিলা প্রদর্শন করিয়া থাকে।

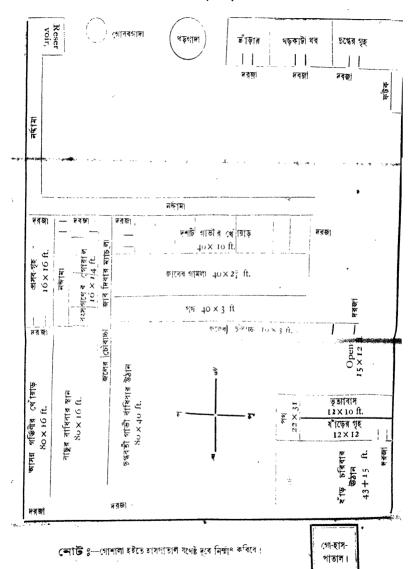
আমাদিগের দেশেই গোশালার বাবন্তা বড ভাল দেখা যায় না। বৈজ্ঞানিক বিধিতে গোশালা নির্ম্মাণ আমাদের ভারতের মত নিঃস্বদেশে প্রায়ই দেখা যায় না। ইহার কারণ এই যে, আমাদের দেশ গ্রীম্মপ্রধান: দেশে গবাদি গৃহপালিত পশু রাখিবার স্থানেরও অকুলান নাই। জাসি, কেরি বা আর্শেয়ার জাতীয়গণের স্থায় আমাদের দেশের ছোট জাতীর গাভী রাখিবার গোশালা double row যুক্ত নির্মাণ করাই শ্রেয়:। নাথার নিকটম্ব দেয়াল হইতে অর্থাৎ গাভীম্বরের মন্তক ব্যবচ্ছেবক প্রাচীর হইতে মলমূত্রের নালি পর্যান্ত ৬ ফিট ৯ ই: হইতে ৭ ফিট হইলেই যথেষ্ঠ। ইহার মধ্যে জাব থাইবার গামলা বা troughs থাকা চাই। আরশায়ারগণের জন্ম সাত হইতে সওয়া সাত ফিট পরিসর হইলেই যথেষ্ট বলিয়া বোধ হয়; কিন্তু শর্টহর্ণ গণের স্থায় বৃহৎ-বংশীয় গোজাতির জন্ম সওয়া সাত হইতে সাড়ে সাত ফিট্ লম্বা পরিসর জমি হইলেই চলিতে পারে। গোয়াল-ঘর খুব বড় করা উচিত নহে। কারণ তাহা হইলে গাভী ঘুরিয়া থান্তের ভাত্তে বা গামলায় মলমূত্র ত্যাগ করিয়া ভোজনাবশিষ্ট জাব সমুদয় নষ্ট করিতে পারে। অধিকন্ত গোরালের মধ্যে বিশ্রামন্থান অধিক থাকিলে গাভী তাহার উপর মল মুত্র ত্যাগ করিলে এবং তত্তপরি বসিলে, পুচ্ছ এবং পার্বদেশ অপরিষ্কৃত হইরা দোহনকালে হুয়ে পড়িয়া হয়ভাও কলুবিত করিতে পারে, এবং কোটা কোটা বিষাক্ত কীটাণু উদ্ভবের আকর হইরা দাড়াইছে পারে। ইহা বারণ করা দক্ষ ক্রকেরই কর্তব্য। সেই কারণে

শাশ্চাত্য প্রদেশে গোশালা নির্মাণের বিধি স্বতন্ত্ব। সেধানে গোশালা-শুলিকে এইরূপ পরিসরযুক্ত করা হয় যে, গাভীগণ স্বচ্ছনে উঠিতে ও বসিতে পারে, পরস্ক মল মৃত্র ত্যাগ করিলে তাহা তংক্ষণাং পয়:নালিতে পড়িয়া গোময়-ভাতে (dung pit) প্রবাহিত হইতে পারে। ইহাতে পুছু বা পার্মদেশ অপরিষ্কার হইতে পারে না।

ছোটজাতীয় গাভীগণের জন্ত গোয়াল-বর ৬ হইতে ৬২ ফিটু চৌড়া এবং বড় জাতির জন্ত ৬১ হইতে ৭১ ফিটু চৌড়া হওয়া উচিত। গো**ন্নালের** মধ্যস্থ বিভাগ প্রাচীর ৪২ ফিটু লম্বা এবং ৪ হইতে ৪৯ বা ৪২ সাড়ে চারি ফিট উচ্চ হইলেই চলিবে। প্রত্যেক গোয়ালে পৃথক্ পৃথক্ পামলা, জলপাত্র এবং লবণ ও গদ্ধক রাখিবার স্থান চাই। নিকাশি পর:নালিটি ২৪ ইঞ্চি চৌড়া হওয়া চাই, কিন্তু বড়জাতীয় গাভীর পোয়ালে এই জল বা মল-নিকাশী নর্দামাটি ২৭ বা ২৮ ইঞ্চি চৌডা এবং ৬ বা ৯ ইঞ্চি গভীর হওয়া বিশেষ প্রয়োজন। গাভীগুলিকে মাথায় মাথায় রাথিবে এবং থাদ্যের গামলা বা উফ এরূপ ভাবে নির্মাণ করিবে বে একটি গাভী অপর প্রতিবেশিনীর থান্য চুরি করিয়া থাইতে না পারে। এক একটি ছোট গাভীর গোয়ালে ৪২০ হইতে ৪৫০ কিউব ফিট, আর শেয়ারগণের ৫০০ঘন ফিট এবং শর্টহর্ণ বা হোলদ্টীন্গণের জক্ত ৬০০ ঘন ফিট ভূমি হইলেই বথেষ্ট হইবে বলিয়া আমার বিবেচনা হয়। বিলাত বা আমেরিকায় যাইলে কত শত শত ভিন্ন ভিন্ন প্রকারের বৈজ্ঞানিক গোশালা পর্যাটকের দৃষ্টিপথে পতিত হয় তাহা বলা যায় না। ওটাওয়া, ওহিও, ক্যালিকর্ণিরা প্রভৃতি দেশে এইরূপ স্থন্য স্থনর বহু গোশালা আছে। গোশালা নির্মাণ করিতে হইলে বায়ুর পরিচালন জন্ত দার, জানালা, নালি, আলোক প্রভৃতি প্রবেশপর্থ ু রাখিবার ব্যবস্থা করা বিশেষ কর্ত্তব্য। অধিকন্ত গোমূল, গোময় খান্য ্রামগ্রী, ঘাস খড় ও বিছানাদি স্থানান্তরিত করিবার ব্যবস্থা **প্রতাহ**া করা কর্ত্ত্য। এ বিষয়ে Country Gentleman American Farmar, প্রভৃতি পত্রিকা বিশেষ যত্রসহকারে ক্ষকনাত্রেরই পাঠ করা কর্ত্ত্ত্য। এবং Ecklesএর "Dairy Cattle and milk Production" (Macmillan and Co,) পুস্তকের শেষভাগু দেখিলেও মন্দ হয় না। ইহা ছাড়া নিম্নলিখিত পুস্তকগুলি পাঠ করা বিশেষ কর্ত্ত্ত্যা:—"Barn Plans and Outbuildings, S. B. Reed's College House." "House plans for every body" (Macmillan and Co. N. Y.) "Construction of Sanitary Dairy stables" by H. E. Cook ("Cornell Reading course for farmers" series V. No 23.)

ি হিন্দুর ধর্মশাস্ত্র ও অথর্ববেদের মতে গোশালা হিন্দুর পক্ষে একটি পরম তীর্থস্থান। হিন্দুর সপ্তপ্রকার প্রায়শ্চিত্তের মধ্যে আদ্যশ্রাদ্ধ বা প্রেত শ্রাদ্ধ বা বাংসরিক সপিওন শ্রাদ্ধ সর্বপ্রথমে গোশালায় করিবার বিধি আছে। তশ্চরিতা দ্রী প্রায়শ্চিত্তান্তে একমাসকাল গোয়ালে বাস করিয়া শুদ্ধা হইতে পারিত; এবং স্বামী সমক্ষে দোয স্বীকার कतिरल भूनः तकः यना इहेरन यामी कमा कतिरल भूनः गृशी इहेरछ পারিত। আয়ুর্কেন শান্ত্রেও দেখা যায় যে কুটাদি রোগে গোশালা পরিষ্কার করা, আবর্জনাদি ঝাঁট দেওয়া, সদাসর্কদা গোয়ালের বাতাস দেবন করাই বিধি আছে। গোমুত্র এবং গোময় আমাদিগের হিন্দুগণের নিতাই দৈব এবং পিত্রা কার্য্যে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। তাহার কারণ ইহারা অতি তীত্র বায়ু পরিষারক পদার্থ (disnifectant) Mr. Henry Stephen কুত "Book of the Farm" নামক পুতকের প্রথমভাগে গোপালন গোথাদ্য দান: গোরক্ষা, বংসাপালন ইত্যাদি ক্লয়ক কলের যাবতীয় জ্ঞাতব্য বিষয় অতি প্রাঞ্জলভাবে আলোচনা করিরাছেন। ঐ পুত্তক কলিকাতার ইম্পিরীয়াল পুত্তকালয়ে আছে। অধ্যাপক Ecckles বলেন যে উত্তম গোশালায় গাভীকে রাখিলে হগ্ধ আপেকাকত অনুমূল্যে উংপাদিত হইয়া থাকে। কাজেই ক্লমকের পক্ষে হগ্ধ ব্যবসায়টি লাভজনক হয়। আমাদের দেশের বিলাত বা আমেরিকা ক্ষেবং ছাত্রগণ বই পড়িয়া বিদ্যান হইয়া আসেন কিন্তু প্রকৃত ব্যবহারিক বা লৌকিক জ্ঞানলাভে বঞ্চিত (Practical knowledge) বলিয়া আমাদের দেশে গোবাবসা বা "ডেয়ারি ফার্ম্মিং" কেহ লাভজনকরপে এভাবংকাল পর্যান্ত করিতে পারেন নাই।





না 8	नीत क्ना- शत ×8×4	গোবৰ গাদা	अर ष्ड् ^व शामा '	ভাগ্ৰাৰ	খড়কাটিবার ঘর	হুৰেন ব্য
		-	, नर्कमा	and administrative to the superior of the supe		з
l			৫০টা গাভীৰ গোয়াল 200	× 10 ft.		
l			জাবেৰ পাকা গামলা 200	οχ <u>ş</u> ft		
.*			१९ 200 X 1 ft.		Contract of Contract of	* ************************************
		डेठान			জলের চৌবাচ্চা বা জলাগার।	
	কচি বা নব প্ৰস্তুত বাছুৱেৰ খোষাড় 80 x 10 ft. ভাবেৰ গাঁমলা 80 x 2 ft. Passage 200 x 3 ft.	লৈট বাছবেৰ উঠান alve:	· চুগ্ধবতী গাভী	বাধিবাৰ উঠান উ	· a	क्छावाग ।2 × ।2.
	(本)	क्रमाथाय क्रमाथाय	,	- A	ৰাসন্ত্ৰস্বা গাভী নাৰিবাৰ উঠান 48×15 ft	ভাকারধানা !2×!2
Ž.	. ' ~	क्रवाधि	•	म	া িৰাৰ ভ ঠ	12
Prepar	11 है। इ.स. है। 12 के 🛪 है।	ब ड िश्रम े ft.				নেবা গাড়ীর গে 12×13 ft.
,	বৰ্লা ও থেডে গাভীয় গোয়াল 125×9 ft. জাবের গামলা 120×3 ft.	ৰড় বাছুৰেৰ উঠাস 120×20 ft.			নবপ্ৰস্তু গান্ধী ও বংস ব উঠান 36×15 ft.	ধুনৰা গাড়ীৰ গোৱাল নৰবুংস্বাস 12×13ft.) 12×12
		1 1	संहर्दक वर्ष क्रि 12 × 12 ft कि	' যাঁড় বাধিবাৰ উঠান	वस्त्र वैक्यित्र (15 ft.	ৰাস হামৰ-ধ্র 2 12×12.

ं हुनांहें :-- গোয়ালঘৰ হইতে হাসপাতাল যথেষ্ট দূৰে নিশ্মাণ কৰিবে।



			7])			
4	5	পথ	,	η		ভাক্তারখা
ভা	ভার					*
1	*	—— , ধেঁড়ে গাও	ীর খোঁয়	T	*	
	*	পানীয় জলে র চৌৰাচ্চা		• •		
	*	\maximum and in the contract of the contract o			× iD	
	*	19.	1	4	i d	
	*		F		* *	
	*	म	म	and an experience of the state	9 -	
man MY		The state of the s	16			
	*	₹			ς.	
***	* %		_	*	M	
8		JA	্ৰাশিবর গ	मा -		
<u>k</u>	*		·		* 6	
	Ł	क नैकाम।	- 4°	न क्रांभा	¥	
	*	.	<u>.</u>		*	
	*				×	
			<u> </u>		*	
į.	<u>\$</u>	To an organization of the second	y gang a gang a sagar a	ente e greneri g geneur i An	P	
	*	No.				
	*		•		**	
		*			Leaf	
الله د دی	**	js *				
*	*	প্রসব-ঘর৷ আসমপ্রসবা গাভীর খোঁয়াড়		বাছুৱে	a য 🛣	
-	*					1 '
, 1	ব		্ ফ ট ক '			- 544
ডক	টা ঘর	গ পথ		গ পথ		""

मञ्जा:--(गानानी इहेरक हामभाजान मृत्त निर्मान कतिर्व।

*

গো-হাসপাতাল বা Segregation Camp

Marieris	থাদ্য দিবাব গথ Λ ্ ফ $$ $$ $$	N	D	जिल्लीया २३%	(Cleaning and Milking Passage.) পরিকারক ্	ें नकिवा	
	**************************************	V	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	, with constraints	्रोहिस 6 [.] ्रे धन्द		

সপ্তদশ পরিচ্ছেদ।

য'ড়।

দ্বলকায় ভালজাতীয় আবশাকমতে বাঁড় প্রত্যাক ডেয়াবি ফার্টেই
বাখা কর্ত্রা। দেশীর মধ্যে হিদাব, হরিয়ানা, নেলোব, অমৃতমহাল,
এডেন্, গুজরাটী, মণ্টপোমেরী এবং মথ্যাপুরী বাঁড়ই ভাল। ইহারছারায় বিলাতি গাতীকে ক্রশ্ করাইবে অর্থাৎ ঐ বাঁড়েব ছাবায় ভাল
শট হর্ণ, সফক্ বা জাসি পাভীকে ক্রশ্ করাইয়া ভাহাদের উংপন্ন একটি
দবলকায় ভেজী বাঁড় মনোনীত করিয়া ৩ বা ৩৮০ ক্ষেসরের হইলে তাহার
পিতৃজ্ঞাতীয় গাভীগণের ক্ষেত্রে সম্বর উৎপাদন কবিলে হগ্নবভী শাবকলমূর্র
জন্মগ্রহণ কবিবে। আইসা টুইড ভাহাব পুস্তকে বলেন বে "The
half bred English and Hissar (Hariana) heifer should
be covered by a pure-bred Hissar bull. বাঁড় বত বড় হয়
ততই ভাল। আইসা টুইড ভাল বাঁড়ের এইরপ বিবরণ দিয়াছেম:—

"He must be deep and wide in the chest, long and broad in the back and round in the barrel, well-ribbed up and strong in the shoulders, and have massive but not very long legs; large joints, and legs fairly apart to support the body, compound and solid-looking carcass, short face, with large, prominent eyes, set far apart and broad forehead and muzzle. His neck must be short and stout rising well over the withers into a large hump. The head should be carried erect. The dewlap should be long, but the ears should not be very long,"

গাভীর স্থায় বাঁড়কেও যত্ন ও পরিচ্গা করিবে। তাহাকে প্রচুর ঘাস দিবে এবং সনাসর্বা গাভীর সহিত থাকিতে দিবে না, কারণ তাহা হইলে সে সর্বা ভাঁফ বক্না এবং নব গভিনা বক্না বা গাভীগণকে বিরক্ত করিবে কিয়া সনাসর্বা। স্ত্রীসংসর্গে থাকার দরণে তাহার শুক্রভারলা বোগ জ্য়াইয়া অকাল বাধিগ্রস্ত কবিবে। আমাদের দেশে এই নিয়ম বড় strictly প্রতিপালন করা হয় না বলিয়া ভারতীয় গোজাভির অবনতির অস্তম কাবণ বলিয়৷ অত্মিত হয়। বাঁড়কে গাভীর স্থায় লবণ এবং গরুক নিয়মিত থাওয়াইবে। তাহাকে নিয়রপ জাবের নিতা সকাল এবং সন্ধা এই গুইবার বাবস্থা করিবে। ইহা একটি বড় হান্সি বা হারিয়ানা বাঁডের থালোর তালিকা:—

	সরিসার পইল		•••	• • •	2	সের।
,	গমের ভূষী (চোকর	বা ব্রাণ)	•••	••	ર	,,
	কাঁচা ঘাদ		•••	***	8	"
	থড়কাটা চাফ ্বা					
	ভূষা (ছোলা,	গমগাছ আদি	ষাড়ান)	•••	8	,,
	লব্ণ	***	•••	•••	>	ছটাক
	গন্ধক	***		•••	<u>६</u>	,,
**	mental mental and	Frie at Tra	ख्या विकास ।	Same Car	ert ar	(mareir

এবং আহারান্তে প্রত্ব নির্মাণ পানীয় জল দিবে। ইয়র্কশিয়ার-নিবাদী Mr. Wright of Sigglesthrone Hall তাঁহার বাঁড়কে নিয়-লিখিতরূপ থাওয়াইয়া বেশ আশাপ্রক ফল পাইয়াছেন।

Barley or bea	an meal	•••	•••	8 9	छिख ।
টাৰ্নিপ্কাটা	•••	•••	•••	۲	
८३ पान	•••	***	•••	ર	,,
थरेन	***		•	ર	12
			•	-	

জননকাৰ্য্যে নিযুক্ত যাঁড়কে বেশী থইল দেওয়া কৰ্ত্তব্য নহে. যেতেত অধিক থইল ভোজনে জননশক্তি হ্রাস হয়। গো-সেবা ও গো-খাদ্য দান সম্বন্ধে "The Lessons of my Farm" নামক পুস্তকখানি (Lockwood & Co., London) यज्ञमहकादत शर्रेनीय। कलक খাদ্য ভোজন সম্বন্ধে Mr. Burns বলেন, "The mangolds and other roots should be pulped about 36 to 48 hours before the pulp is required for use and it should be laid in separate heaps for successful service and in order that it may undergo the requisite amount of fermentation to change its character and convert it into truly nutritious food, when fermentation is sufficiently advanced, i.e. when the heap becomes really warm it may be mixed with finely cut chaff, cut from oat, barley, pea, or even wheat straw (if a little hay could be spared to be cut and mingled with it, all the better), and in a few hours it will be fit for use. when it should be given sparingly in clean troughs.

A small quantity of cake, not exceeding two pounds' weight per day, to be given after the evening feed. Water should not be too freely supplied. Another plan is to slice the swedish turnip, and give about one bushel per day, divided into three equal feeds for morning, noon, and night; cut chaff twice, and hay for "suppering up." Pulped swedish turnips I do not find equal to pulped mangolds. Good cake is a great

aid to the well being of all young stock, and on no account would I attempt to bring them through the winter without a moderate supply daily; with roots it is indispensable. The common white-fleshed turning when well-grown and sliced is excellent food in the early winter; and if a quantity of the leaves could be given along with the bulbs, all the better; the leaves promote the sounder and free growth of the hone in all young animals. With this kind of food a little barley or oats should be daily given; of course, cut chaff or hay or even a great superabundance of good straw for the young stock to browse over, is to be included as food. Roots will never be alone; in all cases dry cereal food is desirable, if not absolutely necessary. Much has been written about the necessity of exercise for young animals......Taking all into consideration, I prefer the plan of tying up, with an occasional run into the adjoining yard, in suitable weather."

তিন হইতে ৪ বংসর ব্যক্তম হইলে যাঁড়কে জনন-কার্যো (serving)
ব্যবহার করিতে পারা যায়। গাড়ী সম্পূর্ণ গ্রম না হওলে বা ' না
ভাকিলে' (coming in season or rut) যাঁড়ের নিকটে যাইতে দিবে
না। কোন কোন পাশ্চাতা গো-উংপাদক এই সময়কে "Oestrum"
বলেন। এ সম্বন্ধে পূর্বেও যথেও বলা হইয়াছে। গাড়ী ' ডাকিলে "
কয়েক ঘণ্টা মাত্র অভির থাকে। এই সময়ে তাহার যোনিম্বার হইতে
শ্বেতশালা নির্মত হয় এবং আরও কয়েকটি লক্ষণ পরিদৃষ্ট হয়। এ

সকল কথা পূর্মে বলিগাছি, স্থতরাং এখানে তাহার পুনরলেথ নিম্প্রোজন। প্রথম "ডাকেট" অর্থাং গাভী ঋতুনতী হইলে প্রথম অবস্থাতেই ষ্ট্-সন্দর্শন করাইলে, বক্না ছানা হইয়া থাকে। অনেক ক্লবক তাতা জানেন না। কোন কোন গাভী প্রথমবারে "ষাঁড-দন্দর্শনের "পর গ্রাহ্যাব্রে সক্ষম হয় না। তাহাকে পুনঃ পুনঃ (২।০ ব্রব) '' ষ্টাড-দর্শন " কর্টিতে হয়। প্রথমবারের পর নবগাভী পুনশ্চ তিন সপ্তাহে ওতুমতী হট্যা থাকে। ছুই তিনবাৰ পাল ধ্বাইলেও যদি গাভী গাভিণী না হয়, তবে তাহাকে বলদ এবং শুষ্ক বা খেঁড়ে গাইব সহিত সমস্ত দিন মাঠে চরিতে দিবে। তাহা হইলে ভাছাৰ দেই "changed con lition" বা পৰিবৃত্তিত অবস্থায় গৰ্জ-ধাবণ কবিবার ক্ষমতা পুনঃ-প্রবৃত্তি হইবে। ভাই ক্লমক, যদি বক্না 519. তাহা হইলে গাভী পাতুমতী হইলেই প্রথম অবস্থায় তাহাকে শাভ সন্দর্শন করাইবে: তাহা হইলেই অভীষ্ট নিদ্ধ হুইবে। জেনিভা এক ডেনীব অধ্যাপক মুদোঁ। গুরি (M. Thury) এই সত্য অনুসন্ধানেব প্রবর্তক। তিনি বলেন. "If you wish to have females, put the bull to your cow at the fresh signs of heat." এগৰ আমাদের দেশে গো-পালন বা dairy farming বা cattle-breeding লাভজনক হইতে পারে কি না, তাহার আলোচনা করা প্রয়োজন হইয়াছে। তাহা পরে লিখিত হইবে।

ভাল গাভী উৎপাদন কৰিতে হইলে Breeder নিম্নিথিত বিষয়-গুলির প্রুতি দৃষ্টি রাখিবেন। এ সম্বন্ধে মাক্ডোনাল্ড সাহেব বলেন, "In looking over a herd of breeding cattle the intelligent breeder has often seen the owner or cattle-keeper pointing out a cow that throws a good calf and never threw a bad one and at the same time telling you how great

a milker she is. It is well known to breeders of cattle that there are particular races that are celebrated, and upon which one can calculate that they will never propagate an inferior animal. Specimens not so desirable will now and again appear, but the blood is there and the divergence will not be great from the desired type. Again there will be one race noted for producing celebrated males and another for producing celebrated females." সেইজন্ম বিলাতি গোজাতির মধ্যে ড্রাম, ইয়র্ক শিয়ার এবং ডিভনবংশীয় গাভাগণ হগ্নদারিকা এবং মোটা হওন গুণছয়ে প্রসিদ্ধ। ভাল ৰাঁড় নিম্নলিখিত ৰূপ গুণবিশিষ্ট হওয়া প্রয়োজন:—"As regards the bull, his fore-head should be broad and short, the lower part, i.e., the nasal part and jaws tapering; and the muzzle fine; the ears moderate; the neck gently arched from the head to the shoulders, small and fine where it joins the head but boldly thickening as it sweeps down to the chest, which should be deep, almost to a level with the knees, with the briskets well developed. The shoulders should be well-set, the shoulder-blades oblique, with the humeral joint advancing forwards to the neck. The barrel of the chest should be round. with hollowness between it and the shoulders. The sides should be ribbed home, with little space between them and the hips; the whole body being barrel-shaped and not flat-sided. The belly should not hang down.

being well supported by the oblique abdominal muscles, and the flanks should be round and deep. The hips should be wide and round, the loins broad, and the back straight and flat. The tail should be broad and well-haired, set on high, and falling abruptly. The breast should be broad; the forearms short and muscular, tapering to the knee; the legs straight. clean, and fine-boned. The thighs should be full and long, and close together when viewed from behind. The hide should be moderately thin, with a mellow feel, and moveable, but not lax; and it should be well covered with soft hair. The nostrils should be large and open; the eyes animated and prominent, the horns clean and white." গো-দেবা, গো-পালন, গো-পরিচর্যা ও যাঁড-নির্বাচন, প্রভৃতির জন্ম অভিজ্ঞতা লাভ ও শিক্ষার কারণ বিলাতের প্রসিদ্ধ কুবক এবং "ব্রীডার" (breeder), চেশিরার-নিবাদী মি: স্কট্ বার্ণদের পুস্তক-গুলি, এবং বিশেষতঃ "Systematic Small Farming" নামক পুত্তক-থানি প্রত্যেক কুষকের পাঠ করা কর্ত্তব্য। তাঁহার ক্রত ও রুট লেজের প্রকাশিত "Hints to Farmers" নামক বইখানিও কম উপকারী ৰলিয়া বিবেচনা করি না। অধ্যাপক ট্যানার (Tanner) তাঁহার প্রশিদ্ধ পুরুকে (Breeding and Rearing Cattle) ১৮৬০ সালের স্বট লগু দেশীর "হাইলাও সোসাইটির" রিপোর্টের ৩৪১ পূর্চার বাঁড়-নির্বাচন সম্বন্ধে বাহা লিথিয়াছেন, আবশাকবোধে তাহা নিমে উদ্ধৃত করিলাম:--

"The heads should be rather small in proportion to the animal and well set on the neck with a fine tapering muzzle, a broad forhead, bright, full, yet placid eyes, furnished with a graceful horn of fine quality and ears small and fine. The neck should be thick but not too short, but having a graceful appearance by tapering steadily towards the head, yet not getting thin behind the ears. The shoulder should be snugly in the carcase and should be covered with a well-developed muscle down to the knee, below which it should possess a fine and flat bony structure. The chest should be bold and prominent, wide and deep but not a coarse dewlap. The carcase should be barrel-shaped, having a top level and broad, especially across the hips. The ribs should be well rounded; the space between the last rib and the pin should not be too short, yet at the same time we must guard against too much length. The flank should be full and pendant. The hind legs should be full and fleshy down to the hock, with a well developed buttock, showing great substance but below the hock we require a fine and cleanly formed bone. The tail should be finely formed without much hair. The hide mellow to the touch, covered with a fine vet plentiful coat of hair."

বঁড় নিত্তেজ হইয়া গাভী-রমণে অক্ষম হইলে, গাভীর পাল হইতে তাহাকে অন্তঃ > মাস পৃথক্ রাখিবে এবং নিম্নলিঞ্চি ঔষধ ধাইতে বিদিনে:—

স্পিরিট টপেণ্টাইন

... ৩ আ:

মশিনার তৈল

··· > কোরার্ট

-- मित्न छ्रेवात-- नकारण अवः देवकारण नमजाव कतित्रा था अवाहरू, **এবং জিহ্বার উপর ৩**০ ফোঁটা ফুইড এক্ট্রান্ত অব্ নক্স-ভমিকা (Fluid extract of Nux Vomica) দিবে এবং যথেষ্ট খাটাইবে। গাভীর যে সকল ভভাভভ লক্ষণ বর্ণিত হইয়াছে, যাঁড়েও সেই সেই লক্ষণ জানিবে। যে যাঁড়ের মুদ্ধ সূল ও অতিশয় লঘা, ক্রোড়-দেশ শিরাজানে পরিবাাপ্ত, গওনেশে ছুল শিরাসমূহ দেখিতে পাওয়া याब, ७५, ठातू ७ किस्ता कश्चर्या, मर्सराहे व्यञान्त स्थान वरह, শৃঙ্গ তুল, উদর খেতবর্ণ কিন্তু শরীরের অপরাংশের রঙ রুঞ্চদার মগের স্থায়, সেই সকল যাঁড় অত্যন্ত অগুভ-স্চক। যে সকল যাঁড়ের চকু ক্ষ্ণ-পীতবর্ণ ও আবরণ স্থল, গতি আখের স্থার, উদর त्मरणत छात्र नीलवर्ग, भंतीरतत तड माना, हकू शिक्रलवर्ग, मुक्त छाञ्चवर्ग. তাহার। ভ্রত-ফলনায়ক। যে যাঁড়ের কুকুন লাল এবং শরীরের বঙ্খেত ও কৃষ্ণবর্ণ মিশ্রিত, যাহার একটি চরণ সাদা, অপর চরণ ও শরীর নানা রঙের, তাহা অত্যন্ত ভভফলপ্রদ। ভাল ঘাঁড় হইতে ভাল গাভী উৎপন্ন হইয়া থাকে। সেই জন্ম উত্তম যাঁড় রুষকের সর্বাদা রাখা বিশেষ প্রয়োজন। এ সম্বন্ধে "Guenon on Milch Cows" নামক বই পাঠ কর। ভাল গাভী ইহতে ভাল বলদ উংপন্ন হয়। ভাল বলদে চাষের বিশেষ উপকার সাধিত হয়। সেই জন্ম যাঁড় ও গাভীর স্বাস্থ্যের প্রতি প্রত্যেক ক্রুকের সবিশেষ দৃষ্টি রাথা প্রব্যোজন। আমরা এই সব করি না বলিয়াই আমাদের দেশের গোঞ্চাতির ক্রমিক এত অবনতি ঘটরাছে। আমাদের দেশ ক্রমিপ্রধান দেশ, তাহা আমি প্রর্কেই বলিয়াছি। ক্লবিকার্যা গো-সাহায্যে সম্পাদিত इर, जाहा अन्यति बात्नन। कि कात्रण व्यामालत स्राप्तत श्री-

জাতির ক্রমিক হ্রাস হইতেছে তাহার কারণ অনুসদ্ধান করিলে বেশ উপলব্ধি হইবে বে, (১) গো-মড়কে বা সংক্রামক রোগে বা চামারের অত্যাচারে বহু-গো অকালে মারা যায়; (২) আহারাভাব, অযুদ্ধ ও **অচিকিৎসা, এবং (৩) কসায়ের ছুরীর মৃথে অনেক গরু প্রত্য**হ নিপতিত হইয়া থাকে। তাহার পর পূর্বে প্রত্যেক গ্রামে পর্য্যাপ্ত গোচারণ-ভূমি থাকিত; এখন তাহার বিশেষ অভাব ইওরার গো-খান্তের নিমিত্ত কচি দুর্বাাঘাদেরও তেমনি অভাব ঘটিরাছে। আমাদের দেশে ক্রতিম 'পাশ্চার' বা চারণ-ক্ষেত্র প্রস্তুতের নিয়ম নাই। তাহা আমাদের জমীদার কৃষক এবং গোপালকদের সর্বাণ্ডো শিকা করা মাতুষের খাদোর জন্ম প্রত্যহ দহল্র দহল গো-হনন এই ভারত-ভূমে সংঘটিত হইয়া থাকে। ইহাতে বে দেশের কৃষির কি অনিষ্ট সাধিত হইতেছে, তাহার প্রতি আমাদের দেশের দেশহিতৈবী মহোদরগণের আদৌ লক্ষ্য নাই; ইহা বড়ই অমুতাপের বিষয়। ভারতের স্তার প্রীয়প্রধান দেশে গোমাংসের ব্যবহার সম্পূর্ণ অপকারজনক। গোমাংস নানাবিধ পীড়া-উৎপাদক। গোমাংসের মধ্যে এক প্রকার কীট জন্ম: এ কীটে তাহার এরপ ভাবান্তর করে যে, তাহা মাছুবের পক্ষে অত্যন্ত অহিতজনক থাদো পরিণত হয়। গোমাংস-ভক্ষণে কুঠ, অন্ধতা প্রভৃতি নানারপ উৎকট পীড়া জন্মিরা থাকে। কার্যালোবে ঐ সকল পৈতৃক পীড়া সন্তান-সন্ততিতেও বর্তিয়া থাকে। এই জন্ম নিয়শ্রেণীর মুস্বমান-মহবে কানা, খোঁড়া ও কুষ্ঠাদিরোগগ্রস্ত অনেক অকম নরনারী দৃষ্ট হয়। সায়ুর্বেদীয় শাল্পেও গোমাংদের ভূরি ভূরি অপকারিতা কৰিত হইয়াছে। বিলাতের প্রসিদ্ধ শরীরতত্ববিৎ ডা: পার্ক , গোতম্বরিৎ বিখ্যাত ভাঃ আরমাটেজ এবং রঙ্ক-শান্তবিৎ এলেন, জে, ডিলেমিয়ার বিলাভে গোমাংসের অপকারিতা সম্বন্ধে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। তথালি আয়াদের দেশে খাদ্যের জন্য বে গোহনন হয়, তজায় গো-বংশের ক্ষ

কদাচ প্রিত হয় না। কাজেই ক্ষিবলের প্রাত্যহিক অবনতি ঘটতেছে। খাদ্যের জন্য গোজনন ব্যাপারের এদেশে কোন ব্যবস্থাই নাই।

এই অধ্যায় শেষ করিবার পূর্বের বাঁড় সম্বন্ধে আরও এই একটি আবশুকীর কথা বলা নিপ্রয়োজন হইবে না বলিরা, তাহার উল্লেখ করিতে বাধ্য হইলাম। গাজীদিগকে বাঁড় দেখান হইবামাত্র শরন করিতে দিবে না; কিছুক্ষণ পরে স্নান করাইয়া দিবে। তড়াগ কিমানদীতে নামাইয়া স্নান করাইয়া দিলেই ভাল হয়। হই চারি দিন অরাহারে শহিবে, এবং তৈলাক্ত খাত্র অর্থাৎ থইল ইত্যাদি ভেজম্বর দ্রব্য আদৌ খাইতে দিবে না। জ্বলও সামান্ত দিবে, কিন্তু লবণ যথেষ্ট দিবে। ১০।১৫ দিন বা একমাসের পর যথেচছ থাবার দিবে; তাহাতে কোনক্রপ বাধা নাই।

পূর্বকালে ধর্মার্থ অনেক যাঁড় ছাড়িয়া দেওয়া হইত। স্বেচ্ছামত আহার বিহার করিয়া উহাদের শরীর বিলক্ষণ হাইপুই ও বলিঠ এবং তক্ষপ্ত তাহাদের শুক্র অত্যন্ত তেজকর হইত। অধিকাংশ গাভীই এই সকল যাঁড় বারা গর্ভিণী হইয়া অত্যন্ত বলবান, দীর্ঘাবয়ব ও কর্মিঠ বংস প্রসব করিত। এক্ষণে ধর্মার্থে পরিত্যক্ত যাঁড় একরূপ উঠিয়া গিয়াছে। যদিও ঐরপ যাঁড় হই একটি গ্রামে আছে, কিন্তু তাহাদের এমনই হর্ভাগ্য যে, সামাক্তরপ কসলাদি খাইলে হয় খোঁরাড়ে প্রেরিত হইয়া থাকে, কিন্তা কনাই-হন্তে বিক্রীত হইয়া থাকে, অথবা সহরের মিউনিসিপালিটীর হল্তে মরলার গাড়ী টানিবার জক্ত অর্পিত হইয়া থাকে। এ দোব কাহার ? জনীদার ও গৃহস্থ উভয়েরই। ভাহার উপর জনীদার মহাশয়ণ আয় বাড়াইবার জক্ত গোচারণগুলি বা গ্রাম্য পতিত-মাঠগুলি, এমন কি চলাচলের গ্রামাপথগুলি পর্যন্ত আয়্রসাৎ করিয়া লইয়া, একদিকে আয় বাড়াইয়া, অপরদিকে গ্রামের গাজীকুলকে অনাহারে রাখিয়া, অলক্ষিতে গোকুল-ধ্বংসের পথ-প্রদর্শক হইয়াছেন।

পাশ্চাত্যদেশে কৃষি-কার্য্যের উপর দৃষ্টি রাথিবার জন্য উচ্চ কর্ম্মচারী আছেন: এমন কি পালিয়ামেন্টেও এই বিষয় পর্যাবেক্ষণের জন্য একজন সচিব আছেন। কিন্তু ভারত ক্ষবিপ্রধান দেশ হইলেও কে তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করে বলুন দেখি ? যদিও একজন কম্ম চারী আছেন বটে, কিন্তু তিনি নামনাত্র কর্তা। তাঁহার এত কাজ যে, তিনি এদব ছোট বিষয়ে मृष्टिभाङ कतिवाद आस्तो अवनत भान ना। आमारमत रमस्त समीव প্রতিনিধিগণেরই এ কাজ করা উচিত। তথু কথায় কাজ হয় না। यिन ভाরতের देनना पूर कतिए उठो हहेशा थाक, তবে ভারতীয় গোন্ধাতির উন্নতিদাধন কর, তাহাদের রক্ষা কর, তাহাদের পালন कत। भिः जामाश्रामा वा अशिमानान वर्षा वा जाननविशाती मानटक সাহায্য কর। যেমন তোমাদের মা বাপ, আত্মীয় কুটুম্বদিগকে অন্ন দিয়া পালন করিয়া থাকে, দেইরূপ গো-মাতাকে পালন কর। কেবল অবামভাড়ার মত--'যতকণ হয় পাও ততকণ পালন, তাহার পর ভাগাড়ে প্রেরণ'—এইরূপ পালন করিও না। ষেদিন ইহা করিতে শিখিবে, দেই দিনই জানিও যে, ভারতের দৈন্ত গেল, হুংখ অন্তর্হিত হইল ৷৷ যে সকল বক-ধার্ম্মিক হিন্দুগণ শাস্ত্রবাক্যে অনাস্থাবশত: ধর্মার্থে বৃষ-উৎসর্গের বিরোধী, তাঁহারা একবার স্থিরমনে বিবেচনা कतिया (निथित्न, त्य छेठ्य याँ ए अञात जातत्वत कृषिकार्यात कि অনিষ্ট সাধিত হইতেছে। যে মাত্রায় গো-হনন দেশে চলিয়াছে, তাহাতে পুরাণ-বাকা অভিবে প্রত্যকাভূত হইবে; ভারতের গো-কুল নির্কংশ হইবে: ভগবান শ্রীক্লফের সেই প্রাণের স্থরভিদল আর ভারতভূমে বিচরণ করিবে না।

এখন গো-দেবা সম্বন্ধে তুইচারি কথা বলিব। পাশ্চান্ত্য সকল প্রাদেশে সভর্গমেণ্টের পক্ষ হইতে অবৈত্তনিক বা সামান্ত ব্যয় শইরা কুমুক্সপুক্ত উৎপাদন-ক্রিয়ার পাতী-সন্ধনের জন্ত যাঁড়ের সাহায্য দান করিবার ব্যবস্থা আছে। কিন্তু আমাদের দীন ভারতে—বেশানে এককালে গো-জাতির এত আদর ছিল—এখন এসব কিছুই নাই। ইহা
অপেক্ষা আমাদের হুর্ভাগ্য আর কি হুইতে পারে ? আমাদের গর্ভর্ণমেন্টের রুবিবিভাগ নামে একটি বিভাগ আছে। কিন্তু এদিকে উক্ত বিভাগের আনৌ চৃষ্টি নাই। জার্মনীর অন্তর্গত সাক্শনি, প্রদেশে
Oldenburg এবং Simenentalers নামক হুই জাতীর হুগ্মবতী
গাজী আছে। ইহাদের মধ্যে ভাল ঘাঁড় নির্বাচন ও চাষাদিগকৈ
দানের জন্য ব্রাপ্তেনবার্গ এবং বেডেন নগরে রীতিমত আড্ডা আছে।
আমেরিকাতেও এইরূপ ব্যবস্থা আছে। কিন্তু আমাদের ভারতে ইহা
স্বপ্রবং বলিয়া বোধ হয়।

পালের মধ্যে সর্কোংকৃষ্ট ঘাঁড় রাখিবে। অধ্যাপক শেল্ডন্ তাঁছার ''রটিশ ডেরারিইং'' পুন্তকের ৩৬ পৃষ্ঠার বলেন বে, পালের মধ্যে উৎকৃষ্ট ঘাঁড়ই কৃষকের সর্কায় ধন। সমগ্র পালের অর্দ্ধেকই ঘাঁড়ের মূল্য হইতেছে। সেইজন্ম সর্কোংকৃষ্ট ঘাঁড় পালে রাখিবে।

বাঁড় দেখান শেষ হইলে ধেমুকে শয়ন করিতে দিবে না। মৈথুনের পর গাভীকে স্থান করাইবে এবং ৩।৪ দিন অলপরিমাণ আহারীয় প্রদান করিবে। থইল বা তৈলাক্ত সামগ্রী অস্কুট: ১৫ বা ২০ দিন দিবে না। মৃতবংসা গাভীকে ২।১ বার সময় উত্তীর্ণ করিয়া যাঁড় দর্শাইবে। তাহা হইলে ভাহাদের মৃতবংসা দোষ দ্ব হয়।

ষাঁড় সম্বন্ধে এইথানে আরও ২।৪ কথা বলিয়া এই পরিচ্ছেদ শেষ করিব। আমি পূর্বেই বলিয়াছি যে পালের মধ্যে যাঁড়ই সর্বস্থ। ইহার প্রত্যেক অকরের মূল্য আছে। সহানয় পাঠক, দেখুন, আমাদিসের লালন-পালনে মাতা কত কট স্বীকার করেন; গর্ভভার বহন করিয়া কত কট বন্ধণা ভোগ করিয়া তত্ত দিয়া আমাদের লালিত পালিত করেন; সেই মণের সহস্রাংশের একাংশও আমরা পরিশোষ করিতে পারি মা এমন কি, স্বরং জন্মদাতা পিভাও সেই ঋণের একাংশ শোধ করিতে পারেন কি না সন্দেহ; তত্রাপি আমরা হিন্দুর ধর্মণান্তে মাতাকে প্রাধান্য না দিয়া পিতৃবীজের শ্রেষ্ঠতাহেতৃ পিতাকেই গ্রেষ্ঠতা প্রদান করিয়া থাকি। সেই জন্ত শান্তকারগণ বলিয়াছেন যে,—

"প্রয়ণাতা ভয়ত্রাতা যস্য কল্পা বিবাহিতা। জনিতাচোপনেতাচ পঞ্চৈতে পিতরঃ স্থৃতাঃ॥" অর্থাৎ—জন্মদাতা, আর যিনি করেন পালন, বিদ্যাদাতা, কল্পাদান করেন বে জন, আর যিনি ভয় হ'তে করেন রক্ষণ, শাস্ত্রমতে পিতা হন এই পঞ্চলন॥"

অতএব দেখা ঘাইতেছে যে, মহুষা-রাজ্যে পিতারই প্রাধান্য সকল স্থানে, সকল দেশে, সকল কালেই বিদিত আছে। তাহার সমর্থনে দেখুন বে. পিতাই সম্ভতিবর্গের প্রধান পালক, এবং ওলি-ওছি শাল্লামূশাসন-মতে প্রসিদ্ধ আছেন। মাতা ব্যতিচারিণী হইলে পুত্রগণের রক্ষাক্র্তা এবং পালক দর্বাত্রে পিতাই হইয়া থাকেন, তৎপরে মাতা। পিতা বর্তমানে মাতার কোনই অধিকার থাকে না। ইহার অর্থ কি ? এইরূপ অনুশাসন धर्मानायात्वाशन कि ना वृशिशाहे कतिशाहितन ? ना, कनाठ नत्ह। হিন্দুর প্রত্যেক দৈনিক ক্রিয়ার শাস্ত্রীয় এবং বৈজ্ঞানিক ক্ষর্থ বা তাৎপর্য্য আছে। আমরা তাহা বরং অসুসন্ধান করি না, করিবার চেষ্টাও করি না। দেশীয় পঞ্জিতগণ ভাহা বলিলে বা বুঝাইয়া দিলে ভাহা গ্রাছ করি না, বরং উপেক্ষা করিয়া তাহা উড়াইয়া দিয়া থাকি। পাশ্চাত্য কোন টাইটেল্ধারী বা তগ্মা-পরা অধ্যাপক তাহা প্রচার না করিলে আমাদিগের নিকট দিল্ধ বলিয়া বিবেচিত হয় না। এমনিই ভারতের ু পোড়া কপাল হইরা দাড়াইয়াছে ৷ আবার দেখুন, শারে দেখিতে পাওর ৰার, "জন্মদো মন্ত্রদো জ্যেটভাতা চ পিতরঃ স্বতাঃ।"—এই ক্থাওলিরও উপরোক্তের ন্যার তুল্য-অর্থ ও সার্থকতা আছে; অর্থাৎ ঐগুলির সহিত কেহ যৌন-সম্বন্ধে আবদ্ধ হইতে পারে না। পশু-জগতেও এই নিয়ম আছে। অবিগণের মতে পৃংবীক্তের প্রাথান্য প্রভিন্তিত করিবার র্জন্য উপরোক্ত লোক ও শাস্ত্রীয় বচনগুলির রচনা হইয়ছে। যে নির্মাবলী মনুষ্য-জগতেও দেখা যায়, পশু-জগতেও সেইগুলি বিদ্যামান এবং প্রয়োজ্য। অর্থাৎ যে সকল যাঁড় জন্মলাতা, একসঙ্গে লালিত পালিত এবং বর্দ্ধিত অথবা ল্লাভুসম্বন্ধযুক্ত, হোহাদের সাহায্যে জনন-ক্রিয়া কদাচ করাইবে না। আর এক কথা না বলিয়া থাকিতে গারিলাম না। ১৮৭৬ সালে আমি ৮পিতৃদেবসহ মান্টা, জীন্দা, রোজেটা, বারবার, আলেক্জান্দ্রিয়া, পোর্ট্ সাইদ্ বন্দর, মন্ধাট, কোয়াট, বেলোচিস্থান, কুয়ু, পেরিম, বন্ধাই, কাশ্মার, প্রভৃতি অনেক দূর পশ্চিম দেশ পর্যন্ত কার্য্যোপলক্ষে লমণ করিবার স্থবিশ পাওয়ার গোজাতি সম্বন্ধে ঐ সকল দেশের রীতি নীতি ও নিয়নাবলীর সম্বন্ধে অন্থসন্ধান করিবার স্থযোগ পাইয়াছিলাম। তাহার অনেক বিষয় অত্য পুস্তকে সন্ধিবিষ্ট করিতে ক্রটী করি নাই।

তাহার পর পাঠক, অরণ করুন, প্রাকালে প্রাকান্তে ছাই পুই যাঁড় দাগিবার প্রথা প্রচলিত ছিল। এই বাঁড় নির্বাচনের কতকগুলি নিয়ম ছিল। কালের শাসনে, এবং আমাদের অধঃপাতে যাইবার সঙ্গে সঙ্গে এই সকল আমরা সবই হারাইরাছি। সম্বন্ধ পাঠক! এইরূপ যাঁড় নির্বাচনের অর্থ কি, তাহা বলিতে শারেন কি ? বোধ হয়—না। প্রাকালে হাইপুই সবলকার পালের জ্রেষ্ঠ বলদাট দাগিবার বিধি ছিল এবং তাহাকে শশিবতুলা জ্ঞানে, তাড়না করা জ দ্রের কথা, স্পর্ণ পর্যান্ত করিবার নিষেধ-বিধি ছিল। ইহার অর্থ এই যে, নির্বাচন দারা দেশের সর্বোৎকৃই যাঁড় সংগৃহীত করিরা অবাবম্কাবহার ছাড়িরা দেশের হাউত ; কলে তৎসাহাব্যে দেশে অত্যুৎকৃষ্ঠ শাবক সকল জ্ঞারা দেশের ক্রিবলের সাহাব্য দান করিতে পারিত। দেশে বলদের স্বিবলের সাহাব্য দান করিতে পারিত। দেশে বলদের স্বিবিশের সাহাব্য দান করিতে পারিত। দেশে বলদের সাহাব্য দান করিতে পারিত। দেশে বলদের সাহাব্য দান করিতে পারিত। দেশে বলদের সাহাব্য দান

কাজ হয়, সমগ্র ভারতের, ঘোড়া, কগ, নৌকা ও জাহাজের বল সমষ্ট্রভ করিলেও করাচ তাহার সমকক্ষতা করিতে পারে না। তাহা হইলেই নেখা যাইতেছে যে, বলনের পরিশ্রন (labour) আমানের রেশে কন্ত ম্ল্যব্রি। আজকলকার ভারতবাসী তাহা বুঝেন না। আমরা মনে कति, द्वैभी सभी हार कतिलारे दुनि देवभी कमल रहेद्व। हेश स्त्रामालत 'সম্পূর্ব। জমির উংপাদিকা শক্তি ক্রমণা শ্রীদ হইয়া আসিলে ভাহাতে একমুঠা সার দিবার ব্যবস্থা আমরা ভুলিরাও করি না. অথচ तिनी कनतात आकाङ्या किता । जारा किताल भून हरेट भारत ? ए जिनित्वत ज्ञ यामता माथा घामाहेव ना. यथठ मनाहे 'तन्हि-तिह" বিশিরা ভগবানের দ্বারে চিংকার করিব, তাহা ভগবান এরূপ চেটাহীন অলস জাতিকে দিবেন কেন ? যথন আনাদের এই সব বিষয়ে চেষ্টা ছিল, তথন পাইয়াছিলাম; এখন নাই, তাই সব হারাইয়াছি ও হারাইতেছি। বিশতে, আমেরিকা, ডেনমার্ক প্রভৃতি সভা শিক্ষিত উল্লেখন দেশের অধিবাদীগণ চেষ্টা করিতেছেন, মাণা ঘামাইতেছেন, পরিশ্রম করিতেহেন: কাজেই তাঁহারা সর্মনিকে জয়ী: সর্বপ্রকার ইঞ্জিত দ্রবা, ধন, ফদল ও উন্নতি ভগণানের নিকট পাইতেছেন। কোন সংকাম দেশে প্রারদ্ধ ক্রাই কঠিন: কিন্তু একবার তাহা চালাইয়া দিলে. ভাহার পতি রক্ষা করা কঠিন নহে। ভাই ছিন্। আপনারা সবিশেষ অবগত আছেন যে, ৺জগন্নাথ প্রান্তর পুরীর র্থে শত শত মোটা মোটা कांचि मः याकि छ थारक, এवः अथथानितक हानाहर छ अनान विश्म महस्र লোকের বলের প্রয়োজন হয়। কিন্তু চক্রটি একবার পুরিয়া বাইলে পাঁচণত লোকেই তাহা সমগ্র প্রতি টানিয়া লইয়া বাইতে সক্ষম হয়। শেইরপ পোরকা করা কাজটি অত্যন্ত কঠিন হইলেও তাহা ২৷১ বা শ্বৰ বিৰম্ভন লোকের আয়তাধীন নহে। সমগ্ৰ প্ৰজাইনৰ ও রাজপজির नेत्रक्ष मृष्टि ও मत्नारपारभन्न अरमाजन। किन्छ रमित्रक व्यामानिरमन व्यारमी

দৃষ্টি নাই। আমার মনে হয়, এই কাজ করিতে যাইলে অর্থাৎ দেশের
মধ্যে প্রাকালের মন্ত বলিষ্ঠ ঘাঁড়ের অবাধ-প্রাপ্তিবিস্তার করিতে যাইলে,
সকল গ্রাম্য-সমিতির একজোটে একমতে কাজ করা প্রয়োজন।
সকল হিলু ও মুসলমানের ভাবী রুষির উন্নতিবিধারিনী এই সংসম্বরে
যোগদান করা কর্ভূব্য; তাহা হইলে দেশে বুলিষ্ঠ ঘাঁড়ের অধাধ-বিচরণ
প্রা-প্রচলিত হইয়ৢ৳ কৃষির উন্নতি সাধিত হইবে।

দেশে দেশে, গ্রামে গ্রামে, পাড়ায় পাড়ায় হরি-সভার মত, বৈষ্ণ্ব-স্থিননীর মত গো-পরিচ্গা, গো-রক্ষিণী ও ক্রষির উন্নতি-বিধায়িনী সভা সমিতি প্রতিষ্ঠিত হউক—এই আমাদের একান্ত আন্তরিক বাসনা। মাহিষ্য ক্রষি-পরিষৎ কি এদিকে মনোযোগ দান করিবেন ? এই সব গ্রাম্য-সমিতি গো-রক্ষা করুক, হগ্ম বিক্রেয় করুক, গোজাত দারক্রমাদি বাজারে লইয়া গিয়া গো-রক্ষায় ব্রতী হউক,—ইহাই আমাদের
মানসিক আকাজ্জা। তাই বলিতেছি, ভাই হিন্দু মুসলমান, জৈন,
মাড়োয়ারি, ভারতবাসী। আমরা সহায়হীন এবং দরিদ্র, এই মহাব্রতে
রাজার দৃষ্টি আকর্ষণ করুন; অচিরে মনহামনা সিদ্ধ হইবে।

বিলাতের প্রানিদ্ধ গো-উৎপাদক ডাঃ ট্যানার (Tanner) বলেন যে, জনন-ক্রিয়ার উপযোগী হাঁড়কে বেক্সী উড় বা চিটে ক্লাচ থাইতে দিবে না। ঐ সামগ্রী বেশী মাত্রায় দিলে তাহারা অধিক পরিমাণে চর্কি ও মাংসে পৃষ্ট হইয়া, কদাইয়ের ছুরিকা রঞ্জনের অত্যধিক উপযোগা হইয়া থাকে। সেইজন্ম পাশ্চাত্য গো-উৎপাদকগন্ম ঠিকই (appropriately) বিলিয়া থাকেন যে, "The bull is the head of the herd."—"He is half the herd", ইত্যাদি। এই কথার খুবই সার্থকতা আছে। যাঁড়রক্ষণ সম্বন্ধে মিঃ আল্ভোর্ড (Alvord) বলেন যে, "It is much better to keep the bull as much as possible in the presence or the full sight of the herd than stabled by

himself in a lonely place. Let him be in the same room with the cows during the stabling season, and at milking times the rest of the year."

পৃংবাজের শ্রেষ্ঠতা সকল দেশেই আছে। অনেক সভ্যদেশে পিতৃনামে সম্ভানের নামকরণ হইরা থাকে। হিলুব তর্পণ-বি্ধিতে ''পিতা ধর্ম পিতৃা স্বর্গ------দেবতা'' শ্লোকটি পিতৃপ্রাধান্ত জ্ঞাপদ করিতেছে।



व्यक्षेप्रमें शतिदृष्ट्म।

(गा-(मवा।

গোদেবা হিন্দুর একটি নিত্য-নৈমিত্তিক কর্মা। মন্থ বলিয়াছেন যে,
বৃদ্ধ পিতামাতা, সাঁধবা ভার্যা, শিশুসন্তান, ইহাদের ভরণ-পোষণের
জন্ম সন্তবমত যেমন শত অকার্য্য করা যাইতে পারে, তদ্ধপ গোর
ভরণপোষণ জন্মও শত অকার্য্য করা যাইতে পারে। অর্থাৎ গৃহস্থ
তরবন্ধাগ্রন্থ হইলেও গো-সেবা বা গোপালন সহজে পরিত্যাগ করিবে আঃ।
কারণ, শাত্রে দেখা যায় যে, ভোগবাসনাত্যাগী উদাসীন, এমন কি
যোগনিরত মুনিগণও শ্বাপদসন্থল অরণ্যে বাস করিয়া, কুদ্র পর্ণকৃটীরেও
গোসেবার ক্রটি করিতেন না। রামায়ণে মুনিপ্রবর বশিষ্ঠ ও বিশ্বামিত্রসংবাদেও ইহার বিশেষ তন্থ প্রকাশ আছে। প্রাচীন শ্ববিগণ নীতিশাল্পে
বলিয়াছেন, যে গৃহে ব্রাহ্মণেরা পাদ প্রকালন না করেন, যেথানে বালক জ্ব
বৎসগণ রোদন না করে, এবং যে স্থলে (হোম, শ্রাদ্ধ ও পুজাদির জন্ম)
স্বাহা স্থা ও স্বন্তি প্রভৃতি মন্ত্রোচারিত না ক্রে, সেই গৃহ শ্বশানত্ব্য।

গো-সেবা হিন্দুর ন্তন কার্যা নহে। আহার, ব্যবহার, ক্ববি, বাণিজ্ঞা, ধর্মা প্রভৃতি সকল বিষয়েই গ্রহ্ন প্রধান অবলম্বন বলিয়া গরুর নিকট ক্রতজ্ঞ আর্যাসমাজ অনস্তকাল অসীম ঋণজালে আবদ্ধ আছেন। তাই তাঁহারা গরুকে সামায় পশু জ্ঞান না করিক্লাভক্তিভরে মাতা বলিয়া সম্বোধন করেন এবং সাক্ষাৎ দেবতা ভাবিয়া পূজা করেন। হুর্ভাগ্যাব্দত: ক্রমে ক্রমে দে পবিত্রভাব আমাদের অন্তর হইতে অন্তর্জ্ঞান হইতেছে। সেকালে মুনিখবিগণ প্রাতঃক্রত্য সমাপন করিয়া ভক্তিভরে বাসমুষ্টি লইয়া গো-সেবার জন্ম বখন গাভীর সমুধ্যে দ্যারমান হইতেন, তথন তাঁহাদের মুখ হইতে আপনা আপনিই এই বাক্য নি:স্ত হইত :—

"সৌরভেষ্যঃ সর্বহিতাঃ পবিত্রাপুণ্যরাশরঃ। প্রতিগৃহুদ্ধ মে গ্রাসং গাবদ্রৈলোক্যমাতরঃ॥"

উত্তরোত্তর এত অন্নকষ্ট, এত মহামারী এত প্রবল ভূকস্পন গোজাতির ছরবস্থাতেই জন্মিতেছে বলিয়া মৃদ্ধির ক্ষুদ্রব্যক্তির বোধ হয়। যিনি যাহাই বনুন না কেন, আমরা ক্ষুদ্রবাক্য উপেক্ষা করিয়া কোন কথায় বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারিব না। আমাদের শাস্ত্রেই লিখিত আছে :—

"বাবদ গো ব্রাক্ষণা: সন্তি ভাবৎ পৃথীচ স্থান্থিরা:।
তন্ত্রাৎ পৃথীরক্ষণার্থে পূজ্যেদ্ দিজগোসতী ॥
জীয়ো গাবো ব্রাক্ষণাশ্চ পৃথিব্যাং মঙ্গলত্রম্।
এতেষাং দেবকুদ্ যন্ত স মঙ্গলপ্রিচ্যুত: ॥"

বৃহদ্ধর্মপুরাণ, উত্তরখণ্ড।

যাবং কাল পর্যান্ত গো ও ব্রাহ্মণ অবস্থিত আছেন, তাবং পর্যান্তই বস্থমতী স্থিরভাবে অবস্থিতি করিতে পারিবেন। এজন্ত পৃথিবীরক্ষার্থে ছিজ, গো, ও সতী খ্রীকে পূজা করা কর্তব্য। সতীন্ত্রী, গো ও ব্রাহ্মণ—ইং ারাই পৃথিবীর মঙ্গলম্বরূপ। যে ব্যক্তি ইং াদের ছেষ করিবে, সে মঙ্গল ছইতে বিচ্যুত হইবে।

গাভী ভগবতী এবং বৃষ মহাদৈবরূপে শাস্তে বর্ণিত হইরাছে, যথা :—
"জ্ঞানশক্তিঃক্রিরাধেম দে ব্যারূপা প্রকীর্দ্ধিতা।"
দেবীপুরাণ, সপ্তাধিক শততমোহধ্যার:।
"নীলগ্রীবোমহাদেবঃ শরণ্যো গোপতির্বিরাট্।"
সৌরপুরাণ, ত্রিপঞ্চাশোহধ্যার:।

জ্ঞানশক্তি (মাতৃকাদেবী) ক্রিয়া ও ধের এই করেকটী—দেবীর। (গুর্গার) মূর্ত্তিবিশেষ। ভগবান নীলকণ্ঠ মহেশ্বর সকলের শরণা; ভিনিত্তি গোপতি ও মহান্। কেবল তাহাই নহে, গাভীর অঙ্গে সকল দেবতাই বাস করেন। ভবিষ্যপুরাশের দিতীয় অধ্যায়ে শীশীগোমাহান্মে লিখিত আছে,—

ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশ্বর, দেবগণ, মহর্ষিগণ, অনস্ত, অষ্টকুল পর্বত, গলানদী, চন্দ্র, সূর্য্য, প্রভৃতি সকলেই গো-শরীরে অবস্থিতি করেন। নিমে শ্লোকটী উদ্ধৃত হইল:—

"পৃঠে ব্রহ্মা গলে বিষ্ণু মুখে কক্ত প্রতিষ্ঠিত:।
মধ্যে দেবগণাঃ সর্কে লোমকৃপে মহর্ষর:।
নাগাঃ পুচ্ছে কুরাগ্রেষু যে চাটো কুলপর্কতা:।
মৃত্রে গলাদয়ো নদ্যোঃ নেত্রয়োঃ শশিভাস্করৌ।
এতে যন্তান্তনৌ দেবাঃ সা ধেরু বরদান্ত মে।

ভবিষ্যপুরাণ।

দেবর্ষি নারদ বলিয়াছেন, যে ব্রাহ্মণ, গো, ছতাশন, হিরণ্য, ঘত, আদিতা, জল, এবং রাজা, ইহাঁরা জগতের মললজনক ও পবিত্রতার কারণ, হুতরাং মললাকাজ্জী মানবেরা সতত ইহাঁদিগকে দর্শন, প্রণাম, আর্চনা, ও প্রদক্ষিণ করিলে দীর্ঘায় লাভ করিয়া সর্বাভীষ্ট প্রাপ্ত হইবেন। ভবিষাপ্রাণে ব্যাসদেব বলিয়াছেন, গোর প্রণাম ও প্রদক্ষিণ করিলে সপ্রদীপা বহুরুরা প্রদক্ষিণের ফল হয়। গোর অছি শব্দন করিবে না এবং মৃত গোর গঙ্কে নাসিকা আচ্ছাদন করিবে না। বিষ্ণু ক্ষি বলিয়াছেন,—গোম্রা, গোমর, গোহ্মা, ঘত, দধি, ও গোরচনা, গোস্বদ্ধীয় এই ছয়্টী দ্রবাই পবিত্র ও মাললা। শাক্ষে লিখিত আছে বে, নিতা গোসেবার মহাপাতকেরও নাল হয়। গোর পদোত্ত ধুলিকণা দেহে লাগিলে বায়ব্য স্নান সিদ্ধ হয় ও গোস্পর্শে শরীর তৎক্ষণাৎ পবিত্র ছয় এবং গোর প্রসরতাই ঘোর পাপ নালক প্রায়ন্ডির সিদ্ধির লক্ষণ।

ब्याहिन्छ कहाजनधार वम वि शामजी विशामानक धकी छात

বিলয়ছেন, বথা—গো দকল গুগগুল গদ্ধের স্থায় নিত্যসৌরভযুক্ত; গো সর্বভৃতের প্রতিষ্ঠার এবং পবিত্রতার কারণ ও মহৎ স্বস্তায়ন এবং গো জীবের অন্নমূলক দেবভোগ্য হবির প্রবর্ত্তক ও ঋষিদিগের আমি-হোত্রাদি যক্ত্রীয় হোমের প্রয়োজক। গো পরম মঙ্গল ও পবিত্রতার আত্রয় এবং স্বর্গের সোপান, সংসারের নিত্যবস্তু গোই ধন্য। ব্রহ্মা এককুল ছিভাগ করিয়া ব্রাহ্মণ ও গোর স্বাষ্ট্র করিয়াছেন; উহার এক অংশ মন্ত্রের এবং অপর অংশ ম্বতের আত্রয়। অতএব এই প্রকার স্বর্গভিবংশসম্ভূতা ব্রাহ্মস্তা অতীবা পবিত্রা শ্রীমতী গোকে আমি বারন্থার প্রণাম করি।

চিকিৎসকেরা গবাসকল নানাপ্রকার ঔষধে ব্যবহার করেন। তাঁহারা বলেন, নিত্য গোম্ত্রপানে রক্ত পরিষ্কার হওয়ায় কুঠাদি রোগ আরোগ্য হয়। প্রীহাদি যাত্রিক পীড়ারও ইহা উৎক্কৃত্ত ঔষধ। বৈজ্ঞানিকেরা বলেন, গো-নিশ্বাস সর্কান গ্রহণ করিলে শ্বাসরোগে উপকার হয় এবং গো-শ্রীরের তড়িত দ্বারা স্বাস্থ্য বৃদ্ধি হয়।

গোময় অতি পবিত্র এবং উহা লেপনে অগ্নিদশ্ব স্থান শীঘ্র শীতল হয়।
তেঙ্ক গোমরের ধুনে বায়ু শোধন হয়, উহার ভন্ম ঘারা দস্তধাবনে অস্নরোগের উপকার হয়। বিচক্ষণ কবিরাজগণ ঘুঁটের আগুনে রোগীকে
ভাত রুঁশধিয়া দিবার ব্যবস্থা করিয়া থাকেন। প্লচা গোময় ও গোম্ক্র
প্রায় সর্বপ্রকার চামেই উৎকৃষ্ট সারক্ষপে ব্যবহার করিলে কৃষির বিশেষ
উন্নতি লাভ হয়।

ধর্মশাস্ত্রকারগণ নীতিশাস্ত্রে বলিয়াছেন বে, গবাহীন ভোজন—বৃধা ভোজন, এবং ঘুজ্জীন মাংস বা ব্যঙ্গন আহার করিলে স্থরপতিরও লক্ষ্মী-ভ্যাগ হয়। উদ্ভিজ্জ রস হইতে উৎপন্ন বলিয়া ফলমূলাদির স্থান্ত গবাই উৎক্রম্ভ সাত্ত্বিক আহার। জগতে একমাত্র দ্রবা ভক্ষণে জীবিত থাকিছে ইইলে কেবল হুগুই সেই দ্রবা। ছুগুপানী যোগীগণ ও শিশুগণ ইহার দুটাভছল। স্থান্ধে ব্যুরস্ট বিদামান আছে; এইজনা উহাজে শব্দ দিতে হয় না; এবং বোধ হয় রাসায়নিক ধর্মানুসারে অনিষ্ট হয় বলিয়াই ছথে লবণ-সংযোগ হইলে, গোমাংস তুলা হইবে বলিয়া শাস্ত্রে কথিত আছে। উষ্ণ দ্বত আয়ুষ্কর ও ব্রন্ধতেজ-বর্দ্ধক।

অতএব আহার, ব্যবহার, ক্লবি, বাণিজ্য, ধর্মা, সকলের মূল কারণ গো; স্থতরাং এইজন্যই তত্ত্বদর্শী ক্লতজ্ঞ আর্য্যসমাজ গোধনের প্রতি এত ভক্তি শ্রদ্ধা করেন এবং কোনরূপে ইহার অনিষ্ট হইলে মহাপাপ জ্ঞানে কঠোর প্রায়ন্চিত্তামুষ্ঠানে ব্রতী হয়েন ও সর্বাদা উহার উরতির জল্প চেষ্টিত হওরা আবশ্যক বলিয়া স্থানর উপায়ে ব্যোংসর্গাদির প্রথা প্রবর্তন করিয়া হাইপুষ্ট ব্য সকলকে ত্রিশূল চক্র চিহ্ন দ্বারা স্থাধীন ভাবে ছাড়িয়া দেওয়া হইত। অতএব হে ভারতসন্তানগণ! গোজাতির উরতির জন্ত আন্ত যদ্ধান হউন। সহুদ্য গর্জন্মেণ্টকে ইহার প্রয়োজনীয়তা দেখান।

গোসেবা মহৎ কার্য্য বলিয়াই কি সেই গো-ব্রাহ্মণ-হিতকারী, যমুনা-পুলিন-বিহারী ভূভারহারী, আদর্শ পুরুষ শ্রীকৃষ্ণ স্বয়ং রাখাল বৃত্তি অবলম্বন করিয়াছিলেন !!!

পুরুর প্রতি এরপ ভক্তি শ্রদ্ধা যে কেবল এক হিন্দুজাতিরই দেখিতে পাওয়া যার, তাহা নহে। ইতিহাস অমুসঙ্কার করিলে অন্তান্ত প্রাচীন জাতিরও গরুর প্রতি অসাধারণ ভক্তির প্রমাণ পাওয়া যাইতে পারে। প্রাচীন মিসরবাসীরা গরুকে দেবতা জ্ঞান করিতেন। ইজিপ্তে বহু প্রাচীনকালের বে সকল মঠ আজিও অভয় অবস্থায় আছে, তাহাতে নানা জাতি গরুর চিত্র দেখিতে পাওয়া যায়। প্রাচীন এথেন্সের যে সকল মর্ব ও রোপামুলা বিলাতের মিউজিয়াম গৃহাদিতে সংগৃহীত আছে, তাহার তই একটিতেও ব্যের মূর্ব্ধি ক্যোদিত দেখিতে পাওয়া যায়। ইহা দেখিয়া বিলাতের পশ্তিতেরা অমুমান করেন বে, এথেন্সেও প্রাচীনকালে গরুর যথেষ্ট্র সন্থান ও আদর ছিল।

পূর্মকালে খুটানেরাও গত্নকে ভক্তি করিতেন। সেকালে খুটবর্ম-

যাজকদিগের শরীরে ব্য-চিত্র-অন্ধিত পরিচ্ছদ শোভা পাইত। তথন ব্যেব ছবিই ধর্ম্ম যাজকদের সাঙ্কেতিক চিহ্ন ছিল। স্থপ্রসিদ্ধ আকবারশাহ ধেন্ত, গোময়, ও গঙ্গোদককে পবিত্র বস্তু বোধ করিতেন।

গোজাতির দ্বারা আমাদের যে কত উপকার সাধিত হইরা থাকে, তাহা আমি পূর্ব্বেই লিথিরাছি। গোজাতি মন্থ্যের অগ্রাহ্ন ও ডাক্ত লতা ঘাসাদি ধাইরা সংসারের অনেক শুরুভার বহন করে; রুবিকার্য্যে নিযুক্ত হইরা থাল্ঞাদি উৎপাদনে সমগ্র সাহায্য কবিরা জীবসমূহের জীবন রক্ষা করে; হগ্ধ দিরা আবালর্জ্বনিতা ও রুর ব্যক্তিদিগের জীবন রক্ষা করিরা থাকে। ক্ষীর, ছানা, ননী আদি দেবতুর্গত থাদ্যাসামগ্রী। যাহার শুণাশুণ পরে সবিশেব বিবৃত হইরাছে, হগ্ধ হইতেই উৎপর হইরা থাকে। গোচম্ম, অস্থি ও নিরা দ্বাবা যে কত উপকার মন্থ্যা-জগতে সাধিত হইতেছে, তাহা বর্ণনা করা হুঃসাধ্য। গোপুছে শেতচামর উৎপর হয়। গো-শরীর হইতে গোরোচনা নামক এক অত্যন্ত প্রয়োজনীয় ঔষধ উৎপর হয়রা থাকে। গোসুত্র এবং গো বিষ্ঠা গৃহছের সাংসারিক কার্য্যে এবং চাষের সারে বহুল ব্যবহৃত হইরা থাকে। গোমাতা সম্বন্ধে আমাদিগের ধর্মগ্রেছে কি লিথিত হইরাছে, তাহা নিয়ে দেখুন:—

ভাব-প্রকাশে ভাবমিশ্র বলিভেছেন, শূল, গুলা, উদস্মির,কপ্তৃ-রোগ বা চুল কনা, চক্রোগ, মুধরোগ, কিলাস বা চুলী, বাতরোগ, ৰন্তি ও মূত্রকোষের রোগ, কুচ, করকাস, খাসকাস শোধ, কামল, অতিসার, মৃত্তকৃচ্ছ, কুমি, কম্প, শ্লীহা প্রভৃতি অনেক রোগেই গোমৃত্ত মহৌবধ।

হিন্দাত্র বলেন, "গোম্জং গোময়ং ফীরং সর্পি দধি গোরোচনা। বট্কনেত্তি মাললাং পবিজ্ঞং সর্বলা গবাং"॥ অর্থাৎ গোম্জ গোময় গোছর,গবাস্থভ দধি এবং গোরোচনা এই বট্ প্রকার গব্য জবাই ওছ। হিন্দুর সকল প্রকার গুডকর্মে ইহার প্ররোজন। গরু স্ট না হইলে একমৃহর্জের নিমিত্তও জগৎসংসার চলিত না। তাই হিন্দুগণ গোজাতিকে ভূগবতী বলিয়া মানেন ও তাব করেন; যথা —

ইক্সসচ্ছমিক্সাণি বিকোল ক্সীশ্চ যা ছিতা।
ক্রদ্রস্য গৌরী যা দেবী সা দেবী বরদান্ত মে ॥
যা লক্ষীলে কিপালানাং যাচ দেবেঘবছিতা।
বেমুরূপেন সা দেবী তস্যা পাপং ব্যপোহতু ॥
দেহস্থা যাচ ক্র্র্যাণী শব্বরস্য সদাপ্রিরা।
বেমুরূপেন সা দেবী তস্যা শান্তিং প্রবছতু ॥
দর্জদেবময়ী দোগ্ধী সর্কলোকময়ী তথা।
বেমুরূপেন সা দেবী তস্যাং স্বর্গং প্রবছতু ।।

হিন্দুর নিকট গো-জাতি কি ভাবে পৃজিত ও প্রতিগালিত হইরা আসিতেহে, তাহা এই পৃত্তকের যথাস্থানে লিখিত হইবে। আর গরুর যে সকল পীড়া সচরাচর হইরা থাকে, তাহারই মধ্যে কডকগুলির চিকিৎসাদি দ্বিতীয় ভাগে লিখিত হইবে।

> শুকর্মনা চ মাতা চ পিতা স্থােদশ্বকর: । প্রত্যক্ষ দেবতা এতা: পতি: স্ত্রীণাং তথা স্বতম্। ব্রাহ্মণান্দ স্থিরো গাবোহবিরত্তক তথাতিখি: ॥

> > বুহদ্ধর্মপুরাণ, উত্তর্থও।

শুক্ত গলা মাতা পিতা স্থ্য চন্দ্ৰ অগ্নি ব্ৰাহ্মণ গাভী পরিব্ৰাহ্মক ও অতিথি এবং দ্বীলোকের পক্ষে গাভী প্ৰত্যক্ষ দেবতাৰ্ত্মণ।

ভগবান জীক্তক নন্দকে বলিয়াছিলেন ;—
'গাবোধ মনৈবতং তাতঃ ৷'

বিষ্ণুবাণ, পদমোহংশ।

পিত: ! গাভীই আমাদের দেবতা। ঐ অধ্যায়ের ৩৬ স্লোকে 'গো আমাদের দেবতা' ইহা পুনরায় উল্লেখ করিয়াছেন।

সর্বাদা গো স্পর্শ করিলে আয়ুর্দ্ধি হয়। গোসেবা নিজে করিলে অনারাসেই গোস্পর্শ ঘটে।

'शाम्भर्गनमायुवर्कनानाः'।

দেবীপুবাণে, দশাধিক শততমোহধ্যায়ঃ।
স্বায়ুক্তর কার্য্যের মধ্যে গোম্পর্শ শ্রেষ্ঠ।

পুতনাবধের পর যশোদা ও নন্দ, পুতনার বক্ষ হইতে রুঞ্চকে ক্রোড়ে লইরা, গোপুছ ও ভঙ্ক গোময়ন্বারা তাঁহার রক্ষাবিধান করিয়াছিলেন।

"আদার কৃষ্ণং সম্রতা যশোদাপি দ্বিজ্ঞাত্তন।
গোপুচ্ছং ভাষাহত্তেন বালদোষমপাকরোৎ।
গো: করীষমুপাদার নন্দ গোপোহপি মন্তকে।
কৃষ্ণন্ত প্রদুদ্দৌ রক্ষাং কুর্বংশ্চেতভদীরয়ন॥"

विकुश्तान, शक्तारः ।

ব্রহ্মণ । তথন যশোদা ভীত হইয়া ক্লফকে গ্রহণপূর্বক হস্তদারা গোপুচ্ছ ঘুরাইয়া বালকের আপদ বিপদ দূর করিলেন, এবং গোপ নলও মন্তকদারা শুদ্ধ গোমর গ্রহণ পূর্বক ক্লফের রক্ষা বিধান নিমিত্তক মন্ত্রপাঠ করিতে লাগিলেন।

মহর্ষি বেদব্যাস মহাভারতের শান্তিপর্ব্বে ১৯৩ অধ্যারে বলিয়াছেন;— 'গোপুছ্ক ম্পর্শ প্রভৃতি কার্যাও পবিত্ররূপে নির্দিষ্ট আছে।'

শুক্ষ গোমর ও ভন্মধারা বোধ হর মানবদেহের কোন মহান্ উপকার দাধিত হইতে পারে। আমরা গোগৃহ পরিকারার্থে এখন গোমর স্পর্ণ করিতে ত্বণা বোধ করি। কিন্তু বিষ্ণুপুরাণের ৬ম অংশে ৬ঠ অধ্যারে লিখিত আছে;— 'করীষঃ ভন্ম দিগ্ধাদৌ ভ্রমমানাবিতস্ততঃ। ন নিবার্ফিতুং শোকে যশোদা ন চ রোহিণী॥'

তাঁহারা (ক্লফ ও বলরাম) শুক্ষ গোমর ও ভন্ম নাথিয়া যেখানে সেখানে ভ্রমণ করিয়া বেড়াইতে প্রবৃত্ত হইলেন; যশোদা ও রোহিনী তাঁহাদিগকে নিবারণ করিয়া রাখিতে পারিলেন না।

> গাবো যত্র তৃ তিষ্ঠস্তি তৎস্তানং নিয়তং শুচিঃ। গবাং স্পর্শেন সর্বাণি সংশুধাস্ত্যেব সর্ব্বথা। গবাং মৃত্র পুরীষঞ্চ পবিত্রং পরমং মতম্।

> > বৃহদ্ধর্মপুরাণ, উত্তরখণ্ড, ৬৪ অধ্যায়।

যে স্থানে গাভী অবস্থান করে তাহা সর্বাদা শুচি; গোম্পর্শে সর্ব দ্রবাই সর্বতোভাবে শুদ্ধ হইয়া থাকে। গোমূত্র ও গোময় পরমপবিত্র হিন্দুর শাস্ত্রগ্রেষ্ গরুর পূষ্ঠ এবং গোগৃহ তীর্থ বলিয়া কথিত হইয়াছে।

> 'অধাতঃ শৃণু বক্ষ্যামি তীর্থানীন্দ্রির দেহতঃ । বিপ্রাণাং চরণৌ তীথোঁ গবাং পৃষ্ঠং তথামতম্। এতে যত্রহি তিষ্ঠস্তি তচ্চ তীর্থ মুদান্ধতম্।'

> > বৃহদ্ধর্মাণ, পঞ্চদশোহধাায়ঃ।

এক্ষণে ইন্তির ও দেহের মধ্যে কোন্ কোন্টী তীর্থপদবাচা, তাহা প্রবণ কর। বিপ্রগণের চরণদম ও গোপৃষ্ঠ এবং ই হারা বথার অবস্থান করেন তাহাও তীর্থ বলিয়া কথিত হয়।

গঙ্গালানের পূর্বে গো-প্রণাম ও গো-প্রদক্ষিণ করা শান্তে বিহিত আছে।

> 'গুরুং গণেশং বিকৃষ্ণ শিবং ছগাং সরস্বতীম্। গোব্রাঙ্গণসভীকৈব প্রণমেদ্ গাঙ্গযাত্রিক: ॥' বৃহদ্ধশ্বসুরাণ, মধ্যথণ্ড, পঞ্চবিংশোহধ্যার।

গন্ধার গমনকালে ইষ্টদেব, গণেশ, বিষ্ণু, শিব, হুর্গা, সরস্বতী গোব্রাহ্মণ ও পতিব্রতা সকলকে প্রশাম করিবে।

'গঙ্গাভটে গবাকৈব দর্শনে স্যান্মহাফলম্।'

বুহদ্ধর্মপুরাণ, মধ্যথপ্ত, অষ্টাবিংশোহ্ধ্যার:।

গঙ্গাতটে গোদর্শনে মহাফল হয়। কেবল ভাহাই নহে, স্থানান্তরে গমন করিতে গোদর্শন করা কর্তব্য।

> খাত্রাকালে স্বৎসাঞ্চ ধেহুং দৃষ্টা স্থাং রজেং ॥' বৃহদ্ধপুরাণ, উত্তরখণ্ড, বর্ছোহধাায়:।

যাত্রাকালে সবৎসা ধেন্তু দেখিয়া স্থাপ গমন করিবে।

'আয়েরং ভন্ম না স্থানং বারব্যাং বজ্ঞসা গ্রাং ॥'

त्मोत्रश्रतान. **अ**ष्टामत्नारुशायः ।

ুক্তমবারা যে সান তা্হা আলের, গো-খুরোজ্ত ধূলি বারা যে সান ভাহা বায়বা।

পিতৃপ্রাদ্ধানি করিয়া ব্রাহ্মণ ভোজনে অশক্ত হইলে গরুর সেবা করিলে কার্যা সিদ্ধ হয় :

> 'যতঃ কুতন্তিৎ সংপ্রাপ্য গোভ্যোবাপি গবাহিকম্। অভাবে প্রীণয়ন্ত্রান্ শ্রদ্ধাযুক্তঃ স দাস্যতি ॥'

> > বিষ্ণুরাণ, ভৃতীয়াংশ, চতুর্দশোহধ্যার:।

অথবা যদি ইহাতেও (ব্রাহ্মণ-ভোজনে) অপারক হয়, তাহা হইলে যে কোন হান হইতে গবাহ্নিক তৃণ সংগ্রহ পূর্বক প্রকাযুক্ত হইরা আমাদের (পিতৃগণের) প্রীতির উদ্দেশে গাভীকে প্রদান করিবে।

শাস্ত্রে অন্নসন্ধান করিলে এরূপ ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওরা বাইতে পারে। নিত্য প্রতাক্ষ দেখিতে পাওরা বার, গো-শরীরের সকল জব্যই আমাদের কাজে লাগে। চর্বে প্রাণধারণ, চর্মে ক্তা, মূবক প্রভৃতি, ক্ষাহিতে ছাতা ছুরি প্রভৃতির বাঁট ও বোতান ইত্যাদি প্রস্তুত এবং চিনি প্রভৃতি পরিষ্কার হয়। লোম জমাট করিয়া এক প্রকার বন্ত্র,
শৃক্ষ ও খুর গলাইয়া শিরীশ এবং নাড়ীতে বাদ্যযন্ত্রের ডাঁত নির্মিত
হয়। মূত্রে বছবিধ পীড়ার শান্তি হয়, রজকেরা বন্ত্র ধৌত করে, বৈছেরা
ধাতৃজ্ঞারণ করে, এবং গোমৃত্র উৎকৃষ্ট সারস্কপে ব্যবহৃত হয়। বিষ্ঠা—
শার এবং ইন্ধনার্থে আবশুক হয়। গোরোচনার ঔষধ ও প্রেছ চামর
নির্মাণ হয়। গো মাংস কোন কোন লোকের জক্ষ্য; আবার একপ্রকার
মদ পরিষ্কার করিতেও নাকি গোরজ্ঞের প্রয়োজন হয়।

পুরা স্বয়ন্তুর্ভগবান্ স্কন্ লোকান্ স্বশক্তিত:। শ্রীতার্থং সর্বভূতানাং গাব: স্ঠা দিলোভম: ॥'

বুহদ্ধর্মপুরাণ।

ফে ছিজোন্তম ! পূর্বকালে ভগবান্ স্বয়স্কু ব্রহ্মা স্বীয় শক্তিপ্রভাবে লোক সৃষ্টি করিয়া সর্বভৃতেব প্রীতির জন্তু গো সৃষ্টি করেন।

শাস্ত্রে গোহত্যাকারীর নিয়লিখিত বিধান আছে।
'জ্রণহা পুরহর্জাচ গোল্লফ মুনিসন্তম!

যাস্তি তে নরকং রোধং যদ্যোচ্ছ্বাস নিরোধকঃ।'

বিষ্ণুপুরাণ, দ্বিতীয়াংশ, ষঠোহধ্যারঃ।

কে মুনিশ্রেষ্ঠ ! যাহারা ক্রণ হত্যা করে, যে ব্যক্তিরা অস্তের ভদ্রাসন কাড়িয়া নর, বে কোন লোক গোহত্যা করে; তাহারা রোধ নামক নরকে নিকিপ্ত হইরা থাকে।

গোবৰে পরীকাদি ব্রভ নির্দিষ্ট আছে; কিন্ত ইচ্ছাপূর্বক গোহত্যা করিলে মনীবিগণ ভাহার শুদ্ধির উপায় দেখিতে পান না। 'ব্রাহ্মণংশ্চ স্ত্রীয়ো গাশ্চ পুলেনাপি ন তাড়য়েং।' বৃহদ্বর্শপুরাণ, উত্তরথণ্ড, দ্বিতীয় অধ্যায়: ।

ব্রাহ্মণ, সতী, ও গোগণকে পুষ্পদারাও আঘাত করিবে না।
ধাবস্তীং গাং পরক্ষেত্রে নচাচক্ষিত কণ্ডচিং।'
সৌরপুরাণ, অষ্টাদশোহধাায়:।

বংস গরুর তথ্য পান করিতেছে বা পরক্ষেত্রে গো বিচরণ করিতেছে নিবারণাভিপ্রায়ে কাহাকেও তাহা বলিবে না।

> 'স্ত্রীযু নর্ম্ম বিবাহের রুত্তার্থে প্রাণসন্ধটে। গোত্রাহ্মণার্থে হিংসায়াং নানৃতং স্থাচ্ছ্ গুপ্ সিত্ম্॥' বৃহদ্দর্মপুরাণ, মধাধণ্ডে, সপ্রদশোহধাায়ঃ।

স্ত্রীলোকের নিকট পরিহাসচ্চলে, বিবাহসময়ে, জীবিকার্থে, প্রাণ-সংশ্বে, গোব্রাহ্মণার্থে, ও প্রাণীবধবিষয়ে মিথা। কদাচ দ্যনীয় নহে। মহাভারতের আদিপর্বে দ্বাণীতি অধ্যায়ে লিখিত আছে;— প্রাণসংশ্বে গো-ব্রাহ্মণার্থে।

'গো, ব্রাহ্মণ, স্ত্রী, দীন, অনাথ প্রভৃতির নিমিত্তে স্থলবিশেষে মিথ্যা সাক্ষ্য প্রদানেও পুণ্য জন্মে।'

যুগাদি যুগান্ত, বড়শীতি, বিষুবসংক্রান্তি, উত্তরায়ণ এবং দক্ষিণায়ন প্রভৃতি দিনে এবং চক্র বা স্থ্যগ্রহণে ও পূর্ণিমা, অমাবস্থা, চতুর্দশী, স্বাদশী ও অষ্টমী তিথিতে গরুর বিশেষ সেবা করিবে।

> 'গবাং দেবাতু কর্ত্তব্যা গৃহকৈঃ পুণ্যলিপ্স্ভিঃ। গবাং দেবা পরো যন্ত তদ্য প্রীবর্দ্ধতেহ চিরাং॥ তাড়নং দ্রিরতাং বাক্যং স্পর্শনং তালপত্রতঃ। পদাঘাতং ভক্ষ্যরোধং বর্জরেদেগারু মানবঃ॥ গোগৃহেরু সধ্মক ক্ষোরকামিবভোজনম্। ° পীঠাদনং প্রাণিদাহং ব্যারামং মৈথুনং তথা॥

মিথ্যাবাক্যং প্রাণিহিংসাং ভৃষ্টদ্রব্যস্য ভোজনম্।
পরারভোজনকৈ বাদশৈব বিবর্জ্জয়ে ॥
গবাপরাধদওঞ্চ গৃহস্থানাং নকারয়ে ।
এতান্ দিজেন্দ্র গোধর্মান্ গৃহী কুর্য্যাৎ স্থধং লভেং ॥"
বৃহদ্ধর্মপুরাণ, উত্তর্থপু, ষ্টোহধ্যায়ঃ ।

পুণালাভের আশার গৃহস্থগণের গোদৈবা করা উচিত। বে ব্যক্তি গোদেবা-পরারণ, তাহার চিরকাল শ্রীবৃদ্ধি হইয়া থাকে। তাড়ন, "মর"—এই বাক্যপ্রয়োগ, তালপত্র দ্বারা স্পর্শন, পদাদাত ও ভক্ষ্যরোধ, এই কয়েকটী গো বিষয়ে পরিত্যাগ করিবে। গোগৃহে ধূম (অকারণে ধ্রা দেওরা) প্রদান, ক্ষোরকর্মা, আমিষভোজন, পীঠোপরি উপবেশন, প্রাণিদাহ, ব্যায়াম, মৈগুন, মিথ্যাবাক্য কথন, প্রাণিহিংসা, ভ্রষ্টদ্রব্য ভোজন ও পরারভক্ষণ পরিহার করিবে। গাভী অপরাধ করিলে গৃহস্থ তদীয় দণ্ড বিধান করিবে না। হে দ্বিজ্বর, গৃহস্থব্যক্তি এই সমস্ত গোধর্ম্ম পালন করিলে স্লথ প্রাপ্ত হইবেন।

'গবাং গ্রাসপ্রদানেন মুচাতেসর্বপাতকৈ:।' ু সৌরপুরাণ, দশমোহধ্যায়:।

গো-গ্রাস প্রদান দারা সকল পাপ হইতে মুক্তি হয়। অতঃপর গো-দানের ফল কথিত হইতেছে।

গো-দান অশেষ পুণাজনক বলিয়া শাস্ত্র কীর্ত্তন করিয়াছেন। গো-দান মহাদান নামে খ্যাত।

> 'মহীদানঞ্চ গোদানং হেমবস্ত্র জিলাঞ্চলম্। ধান্তদীপারদানঞ্ত মহাদানানি দানস্থ॥' দেবীপুরাণ, একনবতিতমোহধ্যার:।

ख्मिनान, त्यानान, रखनान, श्रवर्गनान, जिननान, कननान, थानानान, नीथनान अवः अन्नमान महानान विनन्ना भारत खिल्लिक हहेन्नारह । 'গোদানঞ্চ পরং দানংদাতরং তাররেদ্ধি গৌ:।
সবৎসাঞ্চ সবস্তাঞ্চ দতা ধেন্দ্র মলকৃতাম্॥
তদ্রোমসংখ্যকান্ বর্ধান্ স্বর্গলোকে মহীরতে।।'
বৃহদ্ধর্মপুরাণ, উত্তরধণ্ড, পঞ্চদশোহধাার:।

গোদান পর্মদান; প্রদন্তা গাভী দাতাকে উদ্ধার করিয়া থাকেন।
বন্ধানদারভূষিত সবৎসা ধেরু দান করিলে প্রদন্ত ধেমুর গাত্রে যত রোম
থাকে, তত বৎসর স্বর্গলোকে সসন্মানে দাতার বাস করা ঘটে।

'গামলস্কৃত্য যোদদ্যাৎ সবৎসাঞ্চ সদক্ষিণাম্। সক্ষীরিণীং দিক্ষেক্রায় শ্রদ্ধরা দিকপুঙ্গবাঃ। প্রাপ্রোতি শাখতালোকান্ নানাভোগসমন্বিতান্॥'

मोत्रश्रुतान, मनस्यादशादः।

হে ছিজশ্রেষ্ঠগণ, যে ব্যক্তি শ্রদ্ধাসহকারে হগ্নবতী সবৎসা গাভী অলঙ্কত কবিরা দক্ষিণাসহ সদ্বাহ্মণকে দান করে, নানাভোগসময়িত অক্ষয় লোক সমূহ তাহার প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

গোরছ-ব্রত নামক একটি ব্রত আছে।

ব্ৰন্ধোৰাচ—

"বৃষং গাভীং সমাদার যুবানৌ লক্ষণাবিতৌ। হেমশৃকৌশফেরোপ্যে সবস্তৌ পূজ্যেশুনে।। শিবং মাং পূজরিস্বা তু তদিনে য: প্রযক্তি। শিবভক্তার বিপ্রায় রোহিণ্যাং বা মুগেনব।। ন বিরোগো তবেৎ তদা স্থতপদ্মীপতিঃকৃতা। বাতরং হসবৈ মানৈগচ্ছেচ্ছিবপুরং ব্রজেৎ॥ তত্রভোগাংশিরান্ তুকু। ইহ আগত্য জারতে। সমুদ্যোধনধান্যাভাং পুত্রমিত্রসমাকুলং॥ বিগভারির্ভবেদ্ ব্রহ্মণ্ ব্রহ্মাস্য প্রভাবতঃ।
বোবা রত্মসমাযুক্তং গোযুগং পূজ্যেক্সনে ॥
প্রযক্ষতি 'শিবো মেচ প্রীয়েতাং' ভাবিতাত্মনঃ।
সর্বপাপঞ্চ হঃথাভ্যাং বিমুক্তঃ ক্রীড়তে সদা।
ইহলোকে ভবেদ্ধন্যো দেহান্তে পরমং পদম্॥"

দেবীপুরাণে, গোরত্বতং নাম চতু:বঞ্চিতমোহধ্যায়:।

ব্রন্ধা বলিলেন,—হে মুনে, যুবা এবং লক্ষণারিত গোমিখুন (গাভী এবং ব্রহ) আনিরা তাহাদিগকে হেমশৃন্ধ, রৌপ্যপুর এবং বন্তাচ্ছাদিত কবিরা পূজা করিবে। যে ব্যক্তি রোহিণী এবং মুগশিরা নক্ষত্রযুক্ত সেই দিনে শিবছর্গা পূজা করিয়া শিবভক্ত ব্রাহ্মণকে তাহা দান করিবে, সে ব্যক্তি সম্ভবামুসারে পূজ এবং পশ্পী বা পতিকর্ভ্ক বিযুক্ত হইবে না। বায়ু-বেগগামী বিমানে আরোহণ করিয়া অন্তে শিবলোকে গমন করিবে। তথার বহুকাল ভোগ করিয়া শেষে পৃথিবীতে জন্মগ্রহণ হইলে এই ব্রতপ্রভাবে ধনণাশুসমৃদ্ধিপুশ্রমিত্রপরিবৃত এবং শক্রবর্জিত হইবে। হে মুনে, যে ব্যক্তি রন্থসমন্বিত গোমিখুন পূজা করিয়া 'শিব দ্বর্গা আমার সম্বন্ধে প্রীত হউন ইহা ভাবনা করতঃ দান, করে, সে ব্যক্তি সর্ব্বপাপ ও দুঃখবিমুক্ত হইয়া স্থভোগী হয়; সে ইহলোকে ধয়্য এবং পবলোকে পর্মপদ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

কৃষ্ণবন্ধুর্বেদীয় কঠোপনিবদে লিখিত আছে;—বে গাভীর পুনরার বংদ প্রদব করিবার বা হগ্ধ প্রদান করিবার সম্ভাবনা নাই এবং জলপান এবং তৃণভক্ষণে অশক্ত, এরপ নিম্মলা গাভী দান করিলে দাতা আনন্দ-নামক (আনন্দশুস্তু) ঘোরতর নরকে বাদ করে।

"প্রতিগৃহ তু যোদদ্যাদ্ গাঞ্চ শুদ্ধেন চেতসা।
মুগন্ধা তুর্গমং স্থানমমবৈঃর সহমোদতে ॥"
বৃহদ্ধশুসাণ, উত্তরপত, পঞ্চদশোহ্যারঃ।

বে ব্যক্তি অন্য কাহারও নিকট গোদান গ্রহণ করিয়া দেই গোকে বিশুদ্ধচিত্তে অপরকে প্রদান করেন, তিনি ছল'ভ স্থান প্রাপ্ত হইয়া অমর-গণের সহিত আনন্দ অনুভব করিয়া থাকেন।

আমাদের দেশ অতি প্রাচীন কাল হইতে গোজাতির উপকারিতা ঋষিগণ উপলব্ধি করিয়া গিয়াছেন। ১৩১৯ সালের বৈশাধ সংখ্যা 'কৃষক' পত্রিকায় তাহার সবিশেষ উল্লেখ আছে।



্ ঊনবিংশ পরিচ্ছেদ।

গাভীর শুভাশুভ লকণ।

এখন গাভী ক্রম করিতে যাইলে কিরপ চিহ্ন এবং **গুণবিশিষ্ট** গাভী বা বলদ ক্রম করিবে, তাহা দেখা যাউক। এ বিষয়ে পশ্চিমদেশে ধনার বচনের স্থায় এক গ্রাম্য সঙ্কেত আছে; তাহা পরে বলিতেছি:—

"বরেল বসাহে চল্লহ্ কছ্।
কৈল্কে নহি দেখিহ দক্ত্॥
বেক্রা দেখিহ বৈরিয়া গোল্।
তেক্রা করিহ উঠ্ বৈঠ্নোল্॥
কার্ কছোটী সামর্ বান্ত্।
তেহ্ ছোড় ন কিনিহ আন্॥
বেক্রা দেখিহ রূপা খৌর্।
তেক্রা দিহ টাকা চার উপরোট্॥
করিয়া কাবর্ (গোর্ গোড়ার্) মাথা টিকার্।
সে নাশিহে দাম্ তোহার্॥"

অর্থাৎ একটি গোরালা বড় বোকা ছিল; কিন্তু গোরালিনীটি খুব চালাক চতুরা এবং তাহার বাটার সকল চাষ ও গৃহস্থালী কাল কর্ম চালাইত। এক সমরে গোরালার ছগ্ধবতী গাভী এবং হালের জন্ত বলদ্ থরিদ করিবার প্রয়োজন হওয়ায় গোলালিনী স্বীয় স্বামীর কোমরে কতকগুলি টাকা বাঁধিয়া উপরোক্ত বচনটি বলিয়া দিল। ইহার অর্থ এই বে, "হে স্বামি, আপনি ভাল বলদই থরিদ করিবেন; কিন্তু বে বাঁড়ের স্কন্ধ হইতে হস্তপদাদি নির্গত হইয়া থাকে এবং দাহাদিগকে ছিন্দুগণ পূজা করিয়া থাকে, তাহা কদাচ থরিদ করিবে না; স্বাধিকত্ব বে বলদ্ কৈল্ব বা কণিলাবর্ণের, তাহা কদাচ ক্রম করিও নাঃ বে বলদ্ ঈবং লাল (chocolate or light red) তাহা বেশ করিয়া উঠাইয়া বসাইয়া লেজ কণ্ডৄয়ণ করিয়া পছন্দ ইইলে, দাম করিবে। যে বলদ য়য়াদেশে শামবর্ণ অথবা শামবর্ণের সহিত বেশ আঁটি গঠন যুক্ত বা যাহার মাথার ঘাড়ে ও পার্থে বাঘের মত কাল আঁচড় আছে, এবং যাহার গঠন বেশ শক্ত এবং বলিষ্ঠ, তাহাকে নিশ্চয়ই ক্রেম ক্রিবে, তাহা কদাচ ছাড়িবে না। খুব খেতবর্ণের বলদ—(যাহাকে বিহারদেশীয় চলিত ভাবায় "রূপা ধৌর" বলিয়া থাকে অর্থাং যাহা সক্র লোমযুক্ত এবং খুব সাদাবর্ণের), ২।৪ টাকা বেশী দিয়াও খরিদ করিবে। কিন্তু যাহার মাথায় বা কপালে সাদা "চাদী" আছে বা যে বলদ্ কালবর্ণের তাহারা প্রায়ই কুড়ে হইয়া থাকে। এমত বলদ্ খরিদ করিলে, তোমার টাকা হানি হইবে। এই গোয়ালিনী, বচন বুঝিয়া জাই ক্রমক, হাটে বলদ খরিদ করিবে।"

এই গেল মোটাম্টি আমাদের দেশের বলদ বা যাঁড় থরিদের
নিরম । কিন্তু পাশ্চাত্য বৈজ্ঞানিকগণ বহু আলোচনা করিরা
বিজ্ঞানের দার আমাদের চক্ষে উদ্ঘাটন করিরাছেন। তাঁহাদের
মতই আমরা সমীচীন বলিরা প্রায় অন্থসরণ করিরা থাকি ।
বিলাতি গাভীদের মধ্যে ফ্রিজ্লগণ্ড, ডচ্-বেল্টেড্ হোলস্টান-ফ্রিজিয়ান
লর্টহর্ণ, আরশিয়ার, কেরী, জার্সি; রুট্নি, ডিভন্, গেলোরে, স্কট্লগুদেশীর
প্রসাদ্পোল্ড্ ব্রাড, এবং হাইলাগুজাতীর কাইলোই প্রচুরত্র্য্বদাত্রা বলিরা
প্রসিদ্ধ । এবিষরে জ্ঞান ও অভিজ্ঞতা লাভের জন্ম অধ্যাপক Gamgee's
"Dairy Stock" নামক পৃস্তক যত্নসহকারে পঠনীর । তীত্র শীত এবং
কঠিন গ্রীত্মের দিন ক্রম্বক আপন গাভীকে কদাচ বাহিরে অনাচ্ছাদিত
স্থানে রাখিবে না । ইহাতে ছগ্বদারিকা শক্তির বিশেষ হ্রাস ঘটিয়া থাকে ।
প্রবিশ্বর গোজাতির থাদ্যবিচাব অধ্যার যত্ন-সহকারে জুইব্য ।

আমাদের দেশে পরাশর প্রভৃতি ধবিগণ গো-নির্বাচন লবকে

যাহা বলিয়াছেন, তাহা পরে প্রদত্ত হইয়াছে। ডাঃ গ্রিয়ারসন্ সাহেব বাহাছর বলেন যে, গাভী থরিদ করিতে যাইলে, ছই দাতযুক্ত গাভী ধরিদ করিবে; ধুসর বা ধুসরের মত কোন রঙ্বিশিষ্ট গাভী প্রায়ই ভাল হইয়া থাকে । যে গাভীর পশ্চাৎ বা সন্মুখের পা অপেক্ষাক্তত वर्, शना मक, निड्मक, मानानमहे ७ वर्ष-शानाकात्रकाल वर्क-, পিছন ভারী, যে গাভীর দীর্ঘপুচ্ছ, স্কল্ম চক্চকে রেশমের মত রোমবিশিষ্ট, বাঁট মোটা ধারযুক্ত ও যাহার পালাম নরম ও ভারি, কিন্তু মাংসল নহে, সেই গাভী অধিক হগ্ধবতী বলিয়া জানিবে। যে গাভী অধিক বয়সে গভ বতী হয়, তাহার হগ্ধ বেশী হইয়া থাকে। গাভীর চকু হুইটা রক্ষা ও ইন্সূবের ন্যায় গঠন হুইলে এবং চকুর কোণ দৰ্মনা মলযুক্ত (পিচুটি) দেখাইলে তাহা অগুভস্চক লক্ষণ। যে সকল গাভীর নাদিকা বিস্তৃত, শৃঙ্গ প্রচলনশীল, বর্ণ থর-সদৃশ (গাধার ন্যায়) এবং দেহ করটতুল্য অর্থাৎ কাকলাদের মত, याशांत मखनःथा। ১०, १ कि 8 है। माज, मूख उ मूथ नवमान, পুষ্ঠ বিনত, গ্রীবা হ্রস্ব ও সূল, গতি মধ্যম এবং বিদারিত, সেই দকল গাভী অমঙ্গল উৎপাদন করে। সে দকল গাভীর জিহবার বৰ্ণ ক্লফ ও পীতমিপ্ৰিত, গুল্ফ অভিশন স্থা বা ছুল, ককুদু (খুঁটি) অপেকায়ত বৃহৎ, দেহ রুশ এবং কোন একটি অঙ্গহীন (মথা উন্পাজরে) বা অধিকাল, সেই সকল গাভী গৃহস্থের মঙ্গলক্র नद्ध ।

বে সকল গাভীর ওঠ তামবর্ণ, মৃত্ ও সংহত (মিলিত), জিহ্বা ও তালু তামবর্ণ, কর্ণ ছোট, হ্রস্থ ও উচ্চ, এবং পেট দেখিতে হন্দর অর্থাৎ 'ঝুড়িপেটা', যাহাদের খুর ঈবৎ তামবর্ণ, বক্ষঃস্থল বিভূত, গাত্রহক্ সিশ্ব, লোম মনোহর ও বড় বড়, যাহাদের লালুল ক্ষেদ্র ক্ষুদ্র বোমবিশিষ্ট এবং ভূতলম্পর্নী, চক্ষু স্বক্রাক্ত ও বাঁট গার্বক (জীক্ষ), এবং দস্তসংখ্যা ৯ বা ৬, সেই সকল গাড়ী ভভফলপ্ৰদ।
দস্ত সম্বন্ধে একটা প্ৰবাদ প্ৰচলিত আছে। সেই জন্য খনা বলিয়াছেন :—

"নথানা ছথানা ভাগ্যে পাই, সাতের কাছেতেও না যাই।"

বে বাঁড়ের চক্ বৈছ্যা (রুষ্ণ ও পীতবর্ণ বিশ্রিত) ও আবরণ স্থান, গাত্রের রঙ্ধেতবর্ণ, চক্ পিঙ্গাবর্ণ, শৃঙ্গ তামবর্ণ, উদর মেধের স্থার নীলবর্ণ, এবং গতি অবের স্থায় হয়, সেই বাঁড় শুভাগারক; আর বে বাঁড়ের উদর বেতবর্ণ কিন্তু অপর শরীরের রঙ্ক্ষসার মৃগের স্থায়, ওঠ, ভালু ও জিহ্বা কৃষ্ণবর্ণ, গওদেশ স্থানিবাব্যাপ্ত, ক্রোড়দেশে শিরাজালে আবৃত, মৃথ স্থা ও অতিশয় লঘা, শৃঙ্গ স্থা এবং সর্বাদা অত্যন্ত খাদ প্রবাহিত হয়, সেইরূপ বাঁড় গৃহস্থের অশুভাগারক বলিয়া জানিবে।

মোড় বা "escutcheon" দেখিয়া হ্গ্নবতী গাভী নির্বাচনের একপ্রকার বিধি আছে; তাহা পাশ্চাতা জগতে সর্বপ্রথমে অধ্যাপক গুইনন্ ছারা প্রকাশিত হয়। এ সম্বন্ধে "Guenon on Milch Cows" (McMillan and Co.) নামক প্রকটি পাঠ করিয়া কার্য্য করিলে বন্ধ হয় না।

এখন দেখা কর্ত্তব্য বে, পরিবর্দ্ধিত মাত্রার ডেয়ারি ফার্স্মিং
আমাদের দেশে প্রবর্ত্তন করিতে হইলে, কিরূপ গাভী ক্রয় করা কর্ত্তব্য।
অগদ্বিখ্যাত পাশ্চাত্য গোপালক ম্যাক্ডোনাল্ড সাহেব নির্মাণিতিরূপ
অ্থবতী গাভী ডেরারির জন্ত ক্রয় করিতে অনুরোধ করেন:—

Head: - Large, muzzle coarse, ears rather pendant and tinged yellow inside.

Neck:—Long, slender and tapering towards the head, with but little loose skin below.

Chest:—Deep, but narrow and strikingly deficient in the substance of girth, ribs flat and wide apart.

Back:—Narrow, joints wide and loose, bones prominent, hips narrow.

Belly :- Large and drooping.

Quarters; -- Muscle thin but very firm.

Legs: -Long, coarse and inclined to be sickle-ham med.

Tail: -Set on low, haunch drooping to the rump.

Udder:—Large, thin, and loose and the milk vien very prominent.

এ সম্বন্ধে রবার্ট স্কট্ বার্ণদ্ সাহেবের "Sytematic Small Farming" এবং আমেরিকার বিখ্যাত গোতৰজ্ঞ ও মিশৌরি বিশ্ববিদ্যালয়ের ডেরারির অধ্যাপক মি: সি, এইচ, ইক্লিশ্ সাহেবের "Dairy Cattle and Milk Production" নামক পুস্তকখানি যত্নে পঠনীয়।

গো-সেবা সম্বন্ধে এই পরিচ্ছেদের শেষে ছই এক কথা বলিয়া ইহা শেষ করিব। ছগ্ববতী গাভীর স্বাস্থ্য কিসে ভাল থাকে, তাহার প্রক্রিক্ত কর্মকর সদাই দৃষ্টি রাথা কর্জব্য। তাহার জক্ত সতর্ক ক্রমক বা গৃহস্থের নিম্নলিথিত বিষরগুলি সদাই দেখা কর্জব্য:—১। জাব বা আহার নিম্নমিত সময়ে আবশ্যকমত দেওগা চাই। ২। নিয়মিত সময়ে ছগ্মনে দোহন আবশ্যক। ৩। ছগ্মদোহন সম্পূর্ণরূপে করা উচিত বাহাতে বাঁটে ছগ্ম অবশিষ্ট না থাকিয়া যায়। প্রত্যেক গাভী দোহনের পর গোয়ালা হন্ত বেশ করিয়া প্রক্রালন করিবে। গাভীর বাঁটে বেন নথের আঁচড় বা দাগ না লাগে। দোহনের সময় গাভীকে মারিবে না বা ভয়্ম দেখাইবে না। এ বিষয়ে এই পৃস্তকের স্থানে স্থানে পূর্ব্বেও বিলয়াছি। ৪। গাভীর প্রতি সদ্ব্যবহার করিবে। ৫। দোহনের প্র্রের প্রত্যহ বাঁট ধুইয়া লইবে, এবং গাভী ও গোশালা প্রত্যহ নিয়মিত

সমরে থোত ও পরিষ্কৃত করিবে। ৬। গোশালার এবং গাভীকে নির্মান বাস্থাকর বায় প্রত্যহ সেবন করাইবে। ৭। গোশালার মশক তাড়াইবার জন্ম ধ্ম দিবে এবং যথেষ্ট তাপ (warmth) রক্ষণ করিবে, যাহাতে গাভীদের শীতের প্রকোপ ভোগ না করিতে হয়; কারণ তজ্জন্ম অধিক খাদ্যসাম্গ্রী ব্যয়িত হয়। এ বিষয়ে আলোচনা পূর্ব্বে করা হইয়াছে; তাহা পাঠ করিলে ভাল হয়।

পরিবর্দ্ধিত মাত্রায় গোচাষ বা গোপালন অথবা ছগ্ধ-ব্যবসায় আমাদের ভারতবর্ষ হেন দেশে প্রবর্ত্তন করিতে হইলে, কি কি আবশ্যক, তাহা দেখা কর্ত্তব্য। ২।৪ বৎসর পূর্ব্বে কলিকাতার মত স্থানেও প্রতি টাকায় বিশুদ্ধ /৮ সের গোতৃগ্ধ বিক্রয় হইত। এখন, টাকায় /৪ চারিসের বিশুদ্ধ পাওয়া ছদ্ধর হইয়া উঠিয়াছে! কাব্রেই ছগ্ধবতী গাভী পালনের আবশ্যকতা এখন বেশ বোধ করা যাইতেছে।

এই পুস্তকে সকল প্রকার দেশী এবং বিলাতী হ্রশ্বতী গাভীর গুণা-গুণের কথা লেখা আছে। তাহা দেখিয়া গাভী ক্রন্ন করিলে ক্লবককে অতাধিক কদাচ ক্ষতিগ্রস্ত হইতে হইবেনা।

এই পৃত্তকের পূর্বে এবং পরেও আমি বলিয়াছি যে পরিবর্দ্ধিত মাত্রার ডেরারি ফার্ম্মিং অত্রদেশে প্রবর্তিত করিতে হইলে, প্রকৃত মূল্য দিয়া গাভী ক্রেম্ব করা অত্যন্ত অর্থ ও ব্যরসাধ্য হইয়া উঠে। সেই জন্ত নিজ পালের গাভী ২০ বৎসরের মধ্যে উৎপাদন করিয়া লওয়াই সমীচীন। গোপালন করিতে হইলে গো-সেবায় বিশেষ অভিজ্ঞতা আবশ্যক। তাহা শিক্ষা করা প্রয়োজন। এই শিক্ষা আমেরিকায়, ডেনমার্কে, ফ্রান্সেও বিলাতে ভালরূপে হইতে পারে। কর্ণেল, আয়োয়া, নিউইয়র্ক, শিকাগোতে ডেরারি ফার্মিং ও অপরাপর কলাবিদ্যার শিক্ষা পুব ভালরূপই হইয়াধাকে। আমাদের দেশ এই সকলের জন্ত এক সমর্ম প্রসিদ্ধ ছিল। এখন আমাদের সবই গিয়াছে। এই সকল বিদ্যাশিক্ষার জন্ত আমাদের স্বাক্ষ

দেশে যাইতে হইতেছে। ইহা অপেক্ষা আর আক্রেপের বিষর কি আছে? আমাদিগের কলিকাতা ইউনিভার্সিটিতে এই বিদ্যাশিকার কোন-রূপ ব্যবস্থা নাই। স্যার্ আগুতোষ মুগোপাধ্যার মহাশর 'পালিত-কণ্ড' লইয়া দেশী বিষর উন্নতির জন্ত কোন স্ব্যবস্থা করিলে প্রকৃত দেশের হিতসাধিত হইবে। আমাদের খুবই বিশ্বাস আছে যে, তিনি এই পালিত-কণ্ড লইয়া দেশের যে ভবিষ্যৎ উন্নতির বীজ রোপণ করিয়া যাইতেছেন, তাহার ফলে পুনরার ভারতে শত শত বৈদেশিক বিদ্যার্থী ছাত্রবৃদ্দ প্রাচীন ভারতের স্বর্থুগের ভার শাস্ত্রবিজ্ঞান ও কলাবিদ্যা শিক্ষালাভ করিতে আসিবেন। স্যার্ মুথার্জিই আমাদের দেশের প্রকৃত স্থদেশী। তত্রাপি তাঁহার শতশত শক্র। আমাদের বাঙ্গালির পোড়া কপালই এইরূপ।

ছগ্ধবতী গাভীর সেবা যেমন করিতে হয়, সেইরূপ খেঁড়ে বা গর্ভিণী গাভীরও সেবা করিতে হয়। গর্ভাবস্থায় গাভীর দৈহিক গঠন ঢিলা বা শিথিল হইয়া থাকে, অবসাদ উপস্থিত হয়, কুধা কম হয়, কাজেই বিশেষ যত্ন এবং দেবার প্রয়োজন। নচেৎ গাভী গর্ভত্যাগ করে (aborts)। গৰ্ভাবস্থায় গাভীকে সহজ পাচ্য খাদ্য দেওৱা কৰ্ত্তব্য, এবং নিয়মিত গন্ধক এবং লবণ থাওয়াইতে হয়। নির্দ্মল পানীয় জল দেওয়া প্রয়োজন; তীত্র রোদ্রে বা শীতে কদাচ রাখা কর্ত্তব্য নহে। গর্ভিণী গাভীকে. খেঁছে इंहेरल७, थूव रेडलाक थामा मिरव ना এवे झ-चाम्हामिड श्रास्त तार्ख রাখিবে: নচেৎ গর্ত্ত নষ্ট হইবার সম্ভাবনা থাকে। প্রসবের ২।৩ সপ্তাহ পূর্ব্বে প্রচুর খাদ্য দিবে। অর্থাৎ জোরার ভূষা, কাপাস-বীজ, ধইল, শোরগাম (sorghum vulgaris) মকার ভালকাটা জাব, মিহি খড়, সিদ্ধ মটর ইত্যাদি ধাইতে দিবে। চুণী, খুদ, ভাল, গমের ভাটার চুর্ণ **छ्यो.** कुन्नम्यीक वा कमलाख्य-वीक मिला मन इस मा। এই मकन খালা প্রথমে /১৯০বা /২ সের হইতে প্রত্যহ আরম্ভ করিয়া প্রসবের ছুই নপ্তাহকাল পর্যান্ত /আ॰ বা /৪ সের পর্যান্ত বৃদ্ধি করিবে। ইহার ভাৎপর্য এই যে, ইহাতে কোর্চ পরিকার রাখিবে এবং প্রসবের পর হয়-নালী দিরা প্রচুর হগ্ন বঁটে নামিরা গির্গীট্ বা মেমাইটিশ্ রোগ হইবার সম্ভাবনা একেবারে দূর করিবে। প্রসবের এক সপ্তাহ বা হই সপ্তাহ পর্যন্ত পাদ্য খুব দেখিরা শুনিরা ও তর তর পর্যাবেক্ষণ করিয়া দিখে। কারণ, এই সমরে নবপ্রস্ত গাভীর নাড়ী কাঁচা থাকে বলিয়া খইল, কাপাস-বীজ, চুণী বা অধিক তৈলাক্ত খাদ্য দেওয়া নিষিদ্ধ। এই সমর খাদ্য (laxative) সারক এবং কোর্চ-পরিকারক হওয়া উচিত। প্রসবের অব্যবহিত পরে এবং 'কুল'' পড়িবার সাহায্যের করু গরম ভাতের পাতলা মাড়, চোকর এবং লবণমিশ্রিত করিয়া একটী গানীয় প্রস্তুত করিয়া খাওয়াইলে মন্দ হয় না।

গাভীর প্রসবের পরবর্তী সময়টি বড়ই সমস্যার কাল। এই সময়ে বছবিধ স্থতিকারোগ গভিণীর বা প্রস্থতির হইবার সন্তাবনা হয়। কালেই খুব সাবধান থাকা কর্ত্তব্য। অনেক সময়ে প্রসবের পর প্রস্থতির "ফুল" (after-birth বা placenta) পড়িতে বিলম্ব হয়। কোন কারণেই ফুলটি পর্ভাভান্তরে ২৪ ঘণ্টার অধিক কাল থাকা উচিত নহে। বদি ফুল নির্গত হইতে বিলম্ব হয়, তাহা হইলে ঔষধ হারা তাহা নিহাশিত ক্রিবে। প্রথমে বাশপাতা থাইতে দিবে। তাহাতে যদি ফল না পাওয়া হায় তাহা হইশে পুরাতন শুড় সহ নিয়লিখিত ঔষধগুলি মিশ্রিত করিয়া খাইতে দিবে:—

প্রাতন গুড়	•••	***	२ स्मन
ৰো য়ান	•••	***	২ ছটাক
ख है	•••	••*	٠ يو ۶

শ্বাই ঔবধগুলি জলে নিদ্ধ করিয়া ঠাগু। হইলে ঈবহুফ থাকিতে থাকিছে। াদিবে। প্রস্তাবে প্রস্তৃতিকে নারক আহার্যা দিবে, অর্থাৎ ভূমী, গম-ছূমী। প্রস্তুং মহারার পায়ন (mash) বা লাউ বেশ নিদ্ধ ক্রিয়া থাইতে দিবে। বদি গাভীর প্রসব হইতে বিলম্ব হয় এবং বছক্ষণ ধরিয়া প্রসব-বেদনা ভোগ করিতে থাকে, ভাহা হইলে নিম্নলিখিত দ্রাবণ্টি দিতে হইবে:—

কুল পড়িবার আগে ষখন জরায়ু এবং নাড়ী ও অদের (os)
ছিল্ল থলিটি পশ্চাদ্ভাগে ঝুলিতে থাকে, তথন এক চুমুক বেশ
ঠাণ্ডা জল দিবে। এমন ভাবে এবং এত পরিমাণ ঠাণ্ডা জল
দিবে না যাহাতে ঠাণ্ডা লাগে বা অপর রোগ উপস্থিত হইতে না
পারে; এবং এই সারক থান্য অর্থাৎ তিসি মিশ্রিত গরম চা,
ভূষির জাউ এবং ভেনী গুড় বা চিটে দিবে।

প্রদেব হইবার পূর্ব্বে গাভীর পশ্চাদ্ভাগ "পালান" ইত্যাদি উত্তর্করপে ধৌত করিয়া দিবে, এবং যে স্থানে প্রসব হইবে, সেই স্থানে উচ্চ ও বিভৃত করিয়া পরিষার "পল" বা বিচালি বিছাইরা রাবিবে। সে হানট যেন নির্জন হয় ও সেথানে বা তাহার চতুর্দিকে কোনরপ গোলমাল না থাকে; কিন্তু সর্বুদা একজন আড়ালে রহিরা চৌকী দিতে থাকিবে। প্রসব-কালে এই ব্যক্তি প্রসবের সাহায্য করিতে পারিবে, অর্থাৎ বাছুরের কিয়দংশ বোনিঘারের বাহিরে আসিলে, সন্মুণের ছই থানি পা ধরিয়া, খুব আন্তে আন্তে শাবকটিকে টানিয়া বাহির করিবে। মন্তক ও সন্মুণের পদহর অগ্রে বাহির হওয়াই স্থাভাবিক। ইহার ব্যতিক্রম দেখিলে আর হাত দেওয়া উচিত নহে। বত সত্তর সম্ভব ডাক্তার ডাকাইবে। প্রসব হইবা মাত্রই বংসটকে গালীর সন্মুণের রাধিয়া ভাহাকে চাটিতে দিবে ও অন্ধূলী সাহায্যে বাছুরের মুখাজ্যন্তরন্থ গালা বাহির করিয়া একটি লখা "পল", ঘোড়ার লাগাবের আন্ত্রিত্তে, নত্তক ও ঘাড়ের সংযোগ-স্থলে বাধিয়া দিবে।

এতবারা বাছুরের জিহবা ও চোরালের সঞ্চালন শক্তি শীন্ত শীন্ত বর্দ্ধিত হইতে থাকে। গাভীট যদি চাটতে অনিচ্ছা প্রকাশ করে, তাহা হইলে অর পরিমাণে থইলের জল বা গুড়ের জল বাছুরের গাত্রে ছিটাইরা দিবে। অনেক সমর দেখা যার যে প্রসবের পর বাছুরটি নির্জীব ও মৃতপ্রায় রহিরাছে। কিন্তু এ সময়ে গোলমরিচ চিবাইরা আত্তে আত্তে নাকে "ফুঁ" দিলে সত্তর সজীব হইতে দেখা যায়। ফুঁদিবার সময় সাবধান থাকিতে হইবে, যেন বাছুরের চক্ষে "ফুঁনা লাগে, কারণ তাহাতে চক্ষু নই হইবার সন্তাবনা।

প্রসবের অল্পন্ন পরেই প্রথম হগ্ধ গালিয়া ফেলিয়া দিবে, কারণ উহা পান করিলে বাছুরের পেটের পীড়া জন্ম।

যতক্ষণ না ফুল পড়িয়া যায়, ততক্ষণ খুব সতর্ক থাকিবে; যেন গার্ভী উহা থাইয়া না ফেলে। যদি ফুল সময়-মত না পড়ে, তবে প্রথমে একটি ভারী বস্তু বথা ছোট পাথর, চিল, ইত্যাদি ফুলের অগ্রভাগে বাঁধিয়া দিলে ভাহা আন্তে আন্তে ধসিয়া পড়িবে। ধান, বক্ত পূঁই প্রভৃতি থাইলেও • শীঘ্র ফুল পড়িয়া যায়। ইহাতেও যদি না পড়ে, তবে নিয়লিখিত ঔষধটি ব্যবহার করিবে:—

এইগুলি মিশ্রিত করিয়া একবারে সেবন করাই বিশেষ ফল পাওয়া ; গিরাছে।

গাভী কোনক্রমে যদি ফুল থাইয়া ফেলে, ভাহা হইলে ভাহাকে থইল প্রভৃতি উত্তেজক থাদ্য থাইতে দিবে না এবং ৪০।৫০টি পান থাওয়াইয়া দিবে ৷ ফুল পড়িয়া যাইলে পুনশ্চ গাভীর পশ্চাদ্ভাগ ঈষহ্য করে পূর্বের মত ধুইয়া দিবে এবং তাহার পর গাভীটিকে তাহার বংসের সহিত হানান্তরে লইয়া যাইবে। প্রসবের হানটি উত্তমরূপ পরিষ্কার করিয়া ফেনাইল দ্বারা ধুইয়া দিবে। কারণ বাছুরটী কোনও সময়ে ঐ অপরিষ্কৃত স্থানে ভইলে তাহার নাভিদেশ হইতে দোত্ল্যমান নাড়ী-সহযোগে নানারূপ বীক্ত শরীরাভ্যন্তরে প্রবেশ করিয়া, নানারূপ রোগের স্পষ্ট করিতে পারে।

প্রসবের পর হইতেই গাভীকে ক্রমে ক্রমে পৃষ্টিকর খাদ্য দিবে এবং আহারের মাত্রা অর অর করিয়া বাড়াইবে। ইহাতে গাভীর শরীর সবল হইরা হয়ের পরিমাণ বৃদ্ধি করিবে। কাঁচা ঘাদ, ভাত. থইল এবং তুলার বীজ (দিদ্ধ) খাওয়াইলে হয়ের মাত্রা বৃদ্ধি পার। দূর্ব্বাঘাদে শরীর বলবান হর বটে কিন্তু হয় কমিয়া যায়। যদি হয়-জ্বরের ভর খাকে, তাহা হইলে গর্ভিণী গাভীকে প্রসবের পূর্ব্ব-সপ্তাহে তিসির তৈল এবং এপ সাম লবণ দিয়া ২।০ দিন সারক বা রেচক পান দিবে। গাভীদের পাদ্য সময়ে সময়ে পরিবর্ত্তন করিয়া দিবে, নচেৎ বছকাল যাবৎ একরূপ খাদ্য থাইলে তাহাদের ভোজন-স্পৃহা হ্রাস হইয়া আইদে এবং লিভার বা বৃহ্নত খারাপ হইয়া অপর রোগ উৎপন্ন করিতে পারে। হয়-জ্বরে আক্র কাল বায়ুর সাহাব্যে চিকিৎসা খুবই ফলপ্রার হইয়াছে।

প্রতিশী ব্র ল ২৯ প ৪ — গাভী গভিনী হইলে বাহ্যিক কতকগুলি
লক্ষণ প্রকাশ পায়। তাহা নিমে প্রদত্ত হইতেছে। (১) গাভী বঁ ড়ে-গ্রহণে
বিমুখ থাকিবে অর্থাৎ আর ডাকিবে না বা গরম হইবে না ও বঁ ড়ে লইবে
না। (২) দক্ষিণ কৃষ্ণি বর্দ্ধিত হইবে। (৩) ছয় মাস গভিনী হইলে দক্ষিণ
কৃষ্ণিতে শাবকের অন্তিম্ব স্পর্শদার। বোধ করা যাইতে পারে। একজন
চাকর ৮ হইতে ১০ বা ১১ট গাভীর সেবা করিতে পারে।

প্রাক্তন কালে-নিপ্ত:—গাভীর প্রস্বকাল বতই নিকটবর্তী হয়, কতকগুলি বাহ্যিক লক্ষণ দেখা যায়। তাহার প্রতি ক্রকদাত্রেরই দৃষ্টি রাখা কর্তব্য। (১) এই সময়ে গভিণীর পালান হত্তে

পরিপূর্ণ হয় এবং বঁটে গুলি পরিবর্দ্ধিত হইয়া পৃথক্ পৃথক্ হইয়া য়য়।

(২) যোনিদার পরিবর্দ্ধিত এবং শিথিণভাব ধারণ করে। (৩) লেজ
যোনির উপর সোজা ইইয়া থাকে। (৪) বন্তির হাড় এবং শিরা ও
য়ায়্গুলি টিলা হইয়া থাকে। (৫) প্রসব-বেদনা উপস্থিত হইলে গাজী
আহির হয় এবং সদাই উঠিতে ও বসিতে এবং সদাই লেজ নাড়িতে থাকে।

(৬) প্রক্লত প্রসব-বেদনা উপস্থিত হইলে জলের থলি ফাটয়া য়য় এবং
সালা জলীয় পদার্থ যোনিদারে ও নালিতে ছড়াইয়া দারটিকে পিটিক্ল
করায় বৎস সহজেই ভূমিষ্ঠ হইতে পারে।

গাভীর প্রসবে অযথা বিলম্ব হইলে, ভেটারিনারি ভাজারের সাহায্য-হাহণের প্রেরাজন হয়। যদি তাহা আগু পাওয়া না যায়, বছকণ প্রসৰ-বেদনায় জর্জবিত হইয়া গাভী চর্বল হইয়া অকালে প্রাণ হারাইতে পারে। সেই ব্যন্ত গৃহস্ত যদি পারগ হয় তাহা হইলে স্বয়ং গাভীকে থালাস করাইতে অগ্রসর হইবে। তাহার জন্ম আঙ্গুলের নথগুলি ভাল করিয়া রুম্ভন করিবে ध्वरः हत्त्व ध्वरः ममश्र वाहर् जान कतिया कार्यमिक रेजन वा मातिरकन তৈল মাধাইয়া তবে যোনিয়ারে হস্ত প্রকেশ করাইয়া বৎসকে মৃত্যু মৃত্ টানিয়া আনিবে বাহা অপ্রশন্ত প্রসব-ছার ছি'ড়িয়া গিয়া কত না হয়। প্রসববেদনা উপস্থিত হইলেই গাভীকে বাতাসযুক্ত স্বাস্থ্যকর গছে লইরা গিয়া রাখিবে এবং বাহাতে হঠাৎ আঘাত না পার, বা ভীত না হয়, ভাহার প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখিবে। প্রস্বকালীন সন্মুখন্থ ছই পারের মধ্যে বংসের मछक शारक। इंश इटेराजरह चार्चाविक व्यवसा। देशीय वाजिक्रक হইলেই অস্বাভাবিক বলা হয়। তখন পিলীং প্রভৃতি থাওনামা গো-চিकिश्माकत रहापित প্রয়োজন হয়। এই পিলীং কোংর ঠিকানা ২২১৯ আর্চ্ খ্রীট, ফিলাডেল্ফিয়া, পেনশিলভেনীয়া, উত্তর আমেরিকা। আবে-तिकान् काचीन् "वा काण्टि क्लिकेन् गान्" পविका प्रविद्ध व विषय व्यत्नक व्यक्रमकान भाउम गाहरव।

গাভীর প্রসবের পূর্বে কতকগুলি দৈহিক পরিবর্ত্তন ঘটে। ঐ দমরে ভাহার বাঁটগুলি ছয়ে পরিপূর্ণ হয়, যোনি শিথিল আকার ধারণ করে. কুক্ষিদেশ ধসিয়া বার, পেটটি ঝুলিয়া পড়ে, তথানিরাগুলি খুব উত্তমক্সশে বিকাশ পার অর্থাৎ prominent হয়, এবং পালান খুব পরিবর্দ্ধিত হুইরা থাকে। এই সময় উপস্থিত হইলে আর তাহাকে মাঠে বা গোচারৰে চরিতে পাঠান উচিত নহে। গাভী প্রসব হইলেই তাহার অল্লক্ষণ পরে দুগ্ধ দোহন করিয়া সম্পূর্ণ পালামটিকে সিক্ত করিয়া দিলে এবং ফুল বা placenta নিৰ্গত হইলে পর ফেনাইল্-মিশ্রিত ঈষৎ গরম জলে তাহার পশ্চাংভাগ উত্তমরূপ ধৌত করিয়া দিয়া তাহা শুরু কাপডের ছারা মুছিরা গাভীটিকে গরম কাপড় বা কম্বল আচ্ছানন করিয়া রাখা উচিত: নচেৎ ঠাণ্ডা লাগিয়া হগ্ধ-জর বা অপর উৎকট পীড়া হইবার খব সম্ভাবনা থাকে: এবং হগ্মবতী গাভীকে এইকালে খুব ষত্ন ও সাবধানে রাখিবে: নচেৎ কুমকের নৈরাশ্য অবশান্তাবী। গাভীর প্রসন বেদনা উপস্থিত হইলে. তাহাকে স্থতিকাগ্যহে লইয়া যাইবে এবং তাহাকে কদাচ বিশ্বক্ত করিবে না, অথচ চথে চথে রাথিয়া রক্ষণাবেক্ষণ করিতে থাকিবে। প্রসবের অবাবছিত পরে একপোয়া ভেলী শুড়ের সহিত একপোয়া স্ট-চূর্ণ এবং লাড় করার মত আটা তাহার সহিত মিশাইয়া গোলী বা লাড়, প্রস্তুত করিয়া আর্থ-গুলি সেই সময় পাওয়াইলে কুল নিৰ্গত হইয়া যাইতে কণ্ট হইবে না এবং প্রস্বৰার বিশ্বতির জন্য যে বেদনাদি অমুভূত হইয়াছিল, তাহা প্রশমিত হইবে। বক্রী ঔষধ ছয়খন্টা পরে খাওয়াইবে; তাহার পর ঐ ঔষধ খাওরাইবে না। যেদিন প্রদেব হইবে, সেইদিন প্রস্থৃতিকে ঠাওাঞ্জ পান করিতে দিবে না। যদি বেদনা অস্তুভূত হয়, তাহা হইলে সামাঞ্চ পরিমাণ ঈবচ্ফ কল পান করিতে দিবে । এ সম্বন্ধে অধ্যাপক James The is doing well, the less you disturb her the better; but if her eyes become glassy and appear of a steel colour when the light is thrown on them and the hollows above them deepen, she is in pain, and about 4 hours after the birth she should have a hot branmash. rather sloppy, which will fill and warm her inside and quell the pain; this should be continued for the first two or three days as it assits the milk to come, keeps her inside warm, and opens the bowels." বছ গাভীদের রোগ ফিছু বেশী হইয়া থাকে। গ্রাসবের পরে কোন কোন বছ এবং চন্ধবতী গাভীর জ্বাম নির্গত হইয়া পছে। ইহাকে "slipping down of the womb" বলে। ইহার চিকিৎসা যত্ত্বে করা কর্তব্য। জরাঘটিকে উত্তমকপ ধৌত করিয়া, ডাক্ডার বা ক্রমক নিজেও নিজ হস্তবারা ধৌত করিয়া disinfect করিবে যাহাতে septic poison গাভীদেহে প্রবেশ না কবে। তাহার পর নির্গত জরাযুটি replace कतियां व । विशेष मिटव এवः धेयशामि ध्यायांश कतित्व । এই विषया এই পুস্তকে যথাস্থানে আলোচিত হইয়াছে।

প্রসবের পরে গাভী স্বস্থ হইলে তাহাকে দামান্ত থাদ্য দিবে। গরম এবং cooked food দেওয়াই শ্রেয়:। দামান্ত পরিমাণ কাঁচা ঘাসও দিতে পারা যায়, এবং নিমলিথিত মিক্শ্চার দিলেও মন্দ হয় না:— স্বরহর ডাল সিদ্ধ একদের, এক ছটাক লবণ, এবং এক ছ্টাক হরিদ্রা-চুর্ণ মিশাইয়া থাইতে দিবে।

গোদেবা সৰদ্ধে মি: জে, মোলিসন ১৮৯৫ সালের কবি-লেজারের ৬ঠ সংখ্যার সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। তাহা প্রত্যেক ক্লয়কের বন্ধসহকারে পাঠ করা কর্ত্তব্য। তাহা ছাড়া নিম্নলিখিত বইগুলি বিশেষ বন্ধ করিয়া পাঠ করিলে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করা যাইবে:— K. J. J. Mackenzie on the Science of Breeding (see Journal)

of Board of Agriculture, Vol xvii., P. 705.) Cattle breeding by Wm. Warfield (J. H. Saunder's Publishing Co., Chicago U, S. A.); "British Dairying" by J. P. Sheldon, R. S. Burn's "Cattle Sheep and Horses", "Dairy Pigs and Cattle" by the same author (Crosby Lockwood and Sons, London.); T. Shaw's "Management and Feeding of Cattle" (Orange Judd & Co.), H. L. Puxley's" How to Choose and Rear the Calf (Vinton & Co). H. L. Puxley's "Modern Dairy Farming (Upcott Gill), Chandra Shekhar's "Notes on the Management of Cattle in India and Ceylon" (Navalar Press, Jaffna, Ceylon). F. W. Card's Farm Management, C. W. Burketts "Soils. their properties, improvement and management." (Orange Judd & Co), T. L. Lyon's "Principles of Soil management," The Complete Farmer by P. Macconnell (Cassell), J. Maclennan's "Manuel of Practical Farming" (MacMillan & Co., N. Y.), J. P. Sheldon's The farm and the Dairy (G. Bell), G. F. Warren and K. C. Luiromse's "Exercises in Farm Management, (MacMillan & Co., N. Y.), F. T. Darton's "Cattle, Sheep & Pigs" (Jarrold & Sons, London).

গো-সেবা সন্থকে এইখানে আর একটি কথা বলা আবশাক।
আমাদের দেশ ক্ষবিপ্রধান দেশ; তাহা আমি বার বার এই প্রুকে
বলিতে ক্রটী করি নাই। আমাদের দেশে যাবতীয় ক্ষবিকার্য গো-শক্তির
সাহায়ে সম্পাদিত হইরা থাকে। নাল্যা বন্দকে আমরা বেরুণ শাতাই,

ভদমুরূপ থাদ্যও দিই না, সেবাও করি না। এই কারণে আমরা দিন দিন এত অধংপাতে বাইতেছি। ক্রবক প্রত্যহ সন্ধ্যা ও সকালে নিজ বলন-গুলিকে প্রায়প্রারপে পর্যাবেক্ষণ করিবেন। স্বন্ধ, ক্ষুর, নাড়ী ইত্যাদি আল-প্রত্যক্ষগুলি পরীক্ষা করিয়া তৎপরে কার্য্যে যোজনা করিবেন। যে সব বলদকে কাজে ব্যবহার করা হয়, তাহাদের দেহে বেশী চর্ব্বী জমা ভাল নর। চামড়া যদি বেশ নরম হয়, তাহা হইলে গাত্রে সহজে খা, দাদ ইত্যাদি হইতে পারে না। এসম্বন্ধে পূর্ববঙ্গের ক্রবি-বিভাগের পশু-চিকিৎসার স্থারিণ্টেগুণ্ট মি: ডব্লিউ হ্যারিদ্ এম্, আর, সি, ভি, এদ্, মহোদর কি বলেন, তাহা নিমে উদ্ধৃত হইল:—

"বস্তু গবাদি একত্বান হইতে স্থানান্তরে চরিয়া ইচ্ছানত থাদ্য সং**গ্রহ** ক্রিয়া স্মন্ত্রারে থাকিতে সক্ষম হয়: কিন্তু গ্রহণালিত পশুর অবস্থা পুৰক। তাহারা সর্বাদা আবদ্ধ থাকে এবং ইচ্ছামত আবশ্যকীয় থাদ্য সংগ্রহ করিতে পারে না : কাজেই তাহাদিগকে মন্থব্যের যত্নের উপর নির্ভর করিতে হয়। যে সব দেশে গবাদি পশুর বন্ধ করা হয়, সে সব দেশে গোচারণের স্থব্যবস্থার জন্ত প্রচুর জমি রাখা হয়, এবং এভঘাতীত খাস কাটিয়া তথাইয়া বড় বড় "পালা" দিয়া ঘিরিয়া রাথা হয়। বপুন আৰু বাস না পাওৱা বায়, তখন অঞাত জিনিবের সঙ্গে ইহাই কাটিয়া খাওয়ান হয়। এইক্রপে ঘাস রাখিলে বা সাইলোতে ঠাসিয়া সঞ্চয় করিয়া ৱাখিলে, কাঁচা ঘাদের অভাব হইলেও গবাদি পশু রুখ ও 🗯 হইছে পারে না। যাস ব্যতীত প্রভাহ ভুটা (Indian corn), কাফির শস্তু, कहे, कर, मान, मायकनाहे, ছোলা, क्यांग्रांत, तांगी, शिनिधान, मात्रधम, ছাউল ইন্ডাদি দেওয়া উচিত। এ সমুদ্য গ্ৰাদিন পকে বিশেষ উপযোগী। ক্ষেক্ত এক প্রকার শন্য অপেকা হুই তিন রক্ষশন্য মিশাইয়া জাব মেওর मर्कालालात लाग। देशांत मरक रेथम थून छेशकाती। कि शक्तिमांत श्रोमा मिल्ड रहेरव, छारा क्यक श्रद मिल गका कतिरावे सानिए श्रीसिव।

গোক হর্মল হইতেছে কি না, তাহার প্রতি ক্র্যকের সর্মনা লক্ষ্য রাখা দরকার। বদি পরিশ্রম খুব বেশী হয় এবং গোরুর দরীর ক্রমশঃ হর্বন হইতে থাকৈ, তাহা হইলে ব্রিতে হইবে যে, অতিরিক্ত পরিশ্রম হইতেছে অথবা পর্যাপ্ত এবং আবশ্যকমত পরিমাণে উপযুক্ত আহারের অভাব हरेएउह । वनामत्र पूर्वन रुप्तात नक्षण मर्वा वर्णा मानिएक नका করা উচিত, এবং অবিলম্বে পরিপ্রমের মাত্রা কমাইয়া দেওয়া অথবা আহারের পরিমাণ বাড়াইয়া দেওয়া কর্ত্তব্য। যথন কাজ না থাকে. তথ্য আহারের পরিমাণ ক্যাইয়া দিলৈ অথবা জাবের ২০১টি শ্স্য বাদ मिला वर्फ कठि नारे। किन्न याशास्त्र वनम प्रवर्ग व्यथना द्वांगा ना स्टेश পড়ে, তাহার দিকে রুষককে সর্বদা তীক্ষ দৃষ্টি রাখিতে হইবে। পথাদিকে কিন্নপ খাদ্য দেওৱা কর্ত্তব্য, তাহা ব্রিতে হইলে, প্রত্যেক খাদ্যদ্রব্যের রাসায়নিক উপাদান অবগত হওয়া প্রয়োজন: অর্থাৎ থাদ্যের কোন ভাগৰারা শরীরে বলের মাত্রা বৃদ্ধি পায়, কোন ভাগৰারা চর্ব্বী ও উত্তাপ জন্মে, তাহাও জানা প্রয়োজন। পশুর বখন পরিশ্রম করিতে হইবে, ভথন প্রথমশ্রেণীর থাদ্যের বেশী দরকার। ছগ্ধবতী গাভীর বেশী বলের আবশ্যকতা নাই: কিন্তু যাহাতে বেশী চৰ্বী ও উত্তাপ জন্মে এক্লপ भारमात्र वाक्झ कतिराज इहेरत। প্রত্যেক शारमाहे वन ও উত্তাপ বৃদ্ধি **ब्हेन्ना शांटक वर्के. किन्छ मम**ভाবে नहि । खहे. वृष्ठे. छान हेजानि शांसा ৰল বৃদ্ধি 🏟। ছগ্ধবতী গাভীর পক্ষে যেরপ থাদ্যের প্রয়োজন, বে সমস্ত পশুর পরিশ্রম করিতে হইবে, তাহাদের পক্ষে তাহা উপযোগী নছে। মকা, বব, তিসি ইত্যাদিতে যথেষ্ট উত্তাপ উৎপাদন করিয়া থাকে। গবাদি গুহপালিত পশুকে কতক পরিরাণে যাস ও খড় না দিলে পরিপাকের বাাঘাত হয় এবং স্তম্ভ অবস্থায় রাখা যায় না। সেইজন্ত এইগুলি সামাল পরিমাণে সর্ক্রণ জাবরূপে অপর থাল্যের সহিত बावशंत्र कत्रां कर्रे वा ।

প্রত্যন্থ সন্ধ্যাকালে বলদ লাক্ষণ বহিনা গৃহে আসিলে, তাহান স্কর্ম পরীক্ষা করিয়া দেখিবে যে, তথায়ু কোন ক্ষত হইন্নাছে কি না। এইরূপ ক্ষত দেখিতে পাইলে, তাহা শামুক-জলে ধুইনা দিবে। যদি তাহাতে আরোগ্য না হয়, তাহা হইলে নিম্নলিখিত ঔষধ দিবে:—

(১) নীল তুঁতে ২ তোলা, ॥০'০ ছটাক গরম জলের সহিত মিশ্রিত করিয়া ঠাণ্ডা হইলে ক্ষতে প্রেরোগ করিবে; অথবা (২) কপূর্র এক ভাগ, গন্ধবিরজা ১ ভাগ এবং মিঠা-তৈল ১২ ভাগ মিশাইয়া ক্ষতে লাগাইবে। যদি বলদ্ সকালে কিছু না খায় তবে ব্ঝিবে, তাহার শরীর অস্কুত্ব হইয়াছে। তাহাকে ঐ দিন মাঠে লইয়া যাইবে না। মদি নাকের অগ্রভাগ শুক্না দেখা যায় এবং কাণ ও পা একবার ঠাণ্ডা ও একবার গরম হয়, তাহা হইলে জ্বর হইয়াছে ব্রিতে হইবে। যদি কোর্চবদ্ধ হইয়া থাকে, তবে পূর্ণবিয়য়ক বলদ্কে ছয় ছটাক এপ্ য়ম্ লবণের বা রেচক-অধ্যায় হইতে কোন প্রকার রেচক দিবে। জ্বয়্র রেগ্রীকে আন্দাজ্বমত কম পরিমাণে দিবে। যদি জ্বয়ত্যাগ না হয়, তবে "এঁসো" বা সদ্দী-পর্যায় হইতে জ্ব-প্রতিবেধক ঔবধ জ্ববা নিয়্নলিখিত ঔবধ দিবে:—

কপূৰ

কপূৰ

সোৱা

সাৱক (মদ)

১ ছটাক

মদে কপূর মিশাইরা তাহাতে সোরা মিশাইবে এবং পাঁচ পোরা ঠাঙা জলের সহিত মিশাইরা অর্দ্ধেক সকালে ও বক্রী রাত্রিতে থাওরাইবে। পথ্য—ভাতের মাড় দিবে।

এদেশের গোজাতির উরতি সম্বন্ধে এই পৃত্তকে সবিশেষ আলোচনা করা হইয়াছে; কিন্তু যতক্ষণ সম্বংগরের থাল্যের ক্লোন বন্দোবত করা না বার এবং বংসের প্রতি অধিক বন্ধ না করা হয়, ততক্ষণ ক্লোকত রূপ স্থায়ী উন্নতির আশা করা যাইতে পারে না। যত্ন করিলে বর্তুমানু নিক্ষটজাতীয় বঙ্গীর ও বিহার প্রদেশের গোজাতিরও অনেক উন্নতি সাধন করা যাইতে পারে।

আমি পূর্বেই বলিয়াছি যে, গোজাতি হারা আমাদিগের আশেষবিধ উপকার এবং হিতসাধিত হইয়া থাকে। সেই জন্ম হিন্দুশান্তে গোজাতি ভগৰতায়রূপা বলিয়া কীর্ত্তিত। গোজাতি ভগবানের হারা স্ট না হইলে বোধ হয় জগৎসংসার এক মুহূর্ত্তও চলিত না। গো-দেহে গোরোচনা বলিয়া এক চলভ পদার্থ উৎপন্ন হইয়া থাকে। আয়ুর্বেদ-শান্তমতে তাহা অনেক মহৌবধে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। গোজাতির হায়া মহৎ উপকার সাধিত হয় বলিয়াই আর্য্য ধ্বিয়া গো-সেবার ব্যবহা নির্দেশ করিয়াছেন। বোধ হয় এই কারণেই রুলাবনবিহারী গোলোক-ভৃদ্ফকারী ভগবান বাস্থদেব রুফা, বাল্যকালে, য়মুনা-পুলিনে রাধানরতি করিয়া গোসেবকের আদর্শ-পুরুষ হইয়াছিলেন।

আনাদের দেশে এখন গো-দেবার পরিবর্ত্তে গো-হনন ও গো-ভক্ষণ বেশী দৃষ্ট হয়। ইহার পথ-প্রদর্শক আনাদের দেশের নিঃম্ব ক্লযক-সম্প্রদার এবং গোয়ালাগণ। আশা করি, এদিকে দেশের মান্ত গণ্য লোকদিগের আশু দৃষ্টি পড়িবে;—যেন তাঁহাদের যত্ন ও চেষ্টার অবাধ্ব গোহননের বিরুদ্ধে কোন প্রতিকার রাজ-দরবার হইতে প্রতিষ্ঠিত হয়। বিশাভ প্রভৃতি দেশের তাত্ম আনাদের দেশেও হননের জন্ত পৃথক্ পোজাতির চাব প্রবর্ত্তিত হওয়া উচিত; নচেং ক্লবির বিশেষ হানি সংখাটিত হইতেছে।

শ্বনেক সময় দেখা যায় যে, বক্নাগণ শীত্র গর্ভিণী হর না; বরং গামে মাংস কৃদ্ধি হইরা মোটা হইরা "মর্দাল" হইরা যায়। ইহার প্রতিকার-করে ক্লোন কোন পাশ্চাত্য পো-উৎপাদক ব্যবহা দিরা থাকেন, খাদ্যের পরিমাণ হ্রাস করিয়া পার্কত্য শ্বর্থাসমূক্ত চারণ- ভূমিতে প্রতাহ চরিতে দেওয়া উচিত। বিশুদ্ধ পানীয় জলের বাবস্থা করা ক্যকের আর একটা প্রধানতম কার্যা। জলের জন্ম গাভীদের বহুদুর যাওয়াও প্রয়োজন নহে, এবং নিকটেও অধিক জন থাকাও সমীচীন নছে বলিয়া আমার বোধ হয়। পাশ্চাত্য গো-উৎপাদকগণও এই মতের সম্পূর্ণ সমর্থন করেন। ছগ্মবতী গাভীর পক্ষে, বিশেষতঃ শীতকালে, খুব ঠাণ্ডা জল দেওয়া উপযুক্ত নহে। সেই জম্ভ তাহাদের পক্ষে ঐ কালের জল তাপমান-যন্তের ৫০ ডিগ্রি ফা: হইলেই ভাল হয়। ক্লবক তাহার প্রতি যেন বিশেষ দৃষ্টি রাখেন; কারণ এ সময়ে অধিক ঠাণো জল পান করিলে শরীরের উত্তাপরকার্থ অধিক পরিমাণ খাছ-সামগ্ৰী ব্যয়িত হইয়া ছগ্ৰদান শক্তি কমিয়া গিয়া থাকে। ' গো-সেবা সৰদ্ধে Mr. Alvord of the U.S. Dept. of Agriculture and Chief of the Dairy Division, Bureau of Animal Industry বলেন বে "A herd of good dairy cows deserves to have good care and this can only be insured by having the right kind of attendants. If the owner is unable to either attend the cows himself or give the matter personal supervision twice a day or more, it is to his interest and profit to be certain that his employees are trustworthy and fit to be cow-keepers, * Everyone should be quiet, even-tempered, gentle and regular and cleanly in his habits. A cow abominates an unclean man. Tobacco in all its forms is obnexious to every department of dairying. All the work about the herd should be done with the utmost system and regularity-stable, cleaning growing exercise, watering feeding, milking; a fixed time for everything and everything at any time."

ধেঁডে গাভীর খাদা যোগান এবং তাহাদের পালন করা ক্রুকের পকে আর একটি গুরুতর কার্যাভার। ইহারা dairy farmingএর সমস্ত লাভ খাইরা ফেলে ৷ সেইজন্ম ইহার বিষয় চিন্তা করা ক্লাকের একটি অভান্ত আবশাকীয় বিষয়। থেঁডে গাভীগণকে সাঠে চরিতে দিবে। ("The dry cow may be kept on pasture alone, not too luxuriant, or on a low stable diet, mainly of coarse forage, until about two weeks before calving.") এ সমূদ্ধে Mr. Alvord ব্ৰেন. "yet the ration, while comparatively "wide", should be nutritious, and it should include a share of succulent food-roots or silage. Then a slow but steady increase of feeding may proceed, of a nourishing, cool, and laxative kind, so as to become narrower in ratio. Wheat bran is a good material to use at this time but new-process linseed meal is better. A week before calving remove the cow to a roomy comfortable stall, preferably within hearing of the herd, if not in sight. Be sure the bowels are quite loose and moving freely for two days before calving. Watch for the event, but do not disturb the cow or interfere unless some thing goes wrong or assistance is manifestly necessary,"



विश्म शतिराष्ट्रम।

কিরূপ গো-বধে প্রায়শ্চিতার হইতে হয়।

হিন্দুশাস্ত্রাত্মসারে গো-হত্যা মহাপাপ স্থতরাং হিন্দু মাত্রেরই জানা প্রয়োজন যে, কোন কোন প্রকারে গো-বধ করিলে প্রায়শ্চিত্তার্ছ হইতে হয়। গ্রাদির চিকিৎসার্থ মাংস বা শিরাজেদ किया नारानि यक्षणा बाजा वा व्यवस्थि गर्ड-वित्माहन बाजा यक्ष করিয়াও যদি গাভীর প্রাণনাশ হয়. এবং প্রাণরক্ষার্থ প্রদন্ত আহারীয় দ্রব্য ও জলপান দ্বারা যদি গোর প্রাণবিনাশ হয়, তবে পাপ হইবে না। याशास्त्र वा िककार्थ विज्ञानिकत्रवा व्यवः क्लानिवाहत्न हम् निर्माहन হইলেও পাপ হইবে না। পালকের রক্ষা-চেষ্টা সন্ত্রেও শঙ্কা-রহিত স্থানে দৈবাৎ বন্ধন-রহিত গো যদি প্রজ্ঞলিত অগ্নি বা কুপাদিতে পতিত হয়, বা ব্যাঘ্রাদি কর্ত্তক ভক্ষিত হয়, বা গৃহ কিংবা বৃক্ষাদির পতন দ্বারা বিনষ্ট इत्र, তবে পাপ इटेरव ना। प्रशामित द्वाता मामाग्र जाचारक गाधियुक গো যদি মৃচ্ছিত হইয়া পড়ে, কিন্তু পরে উঠিয়া পাঁচ বা সাত পা গমন পূর্বক স্বরং প্রাস্গ্রহণ ও জল পান করিয়া মরে, তবে পূর্বব্যাধিবিনষ্ট বলিয়া উহাতেও পাপ নাই। (কিন্তু যদি এস্থলে গাভীর কোন ব্যাধি না থাকে তবে প্রায়শ্চিত্ত করিতে হটবে)। ধর্ম্মার্থ কুপ বা পরিথাদিতে পড়িয়া গো বিনষ্ট হইলে কুপকর্তার দোষ নাই। প্রতিদিন গো-গৃহে মশকাদি निवात्र नार्थ ध्र (माँ जान) श्रामा ना कतितन, भानक मिककाशूर्व নরকে পতিত হইয়া, মকিকাগণ ঘারা ভক্ষিত হইবেন: কিন্তু সেই অগ্নিতে পতিত হইয়া পালকের রক্ষণাকেকণ চেষ্টা সম্বেও যদি গোর মৃত্যু इत्र. करत मार नारे: किन्तु भागरकत्र व्यमित्रीत क्षेत्रभ मत्रा व्यभावन দোষ হইবে।

আমাদের দেশে গাভী যে চিরভক্তি ও পূজার সামগ্রী, তাহা প্রত্যেক :

হিন্দু অবগত আছেন। প্রচুর হগ্ধনাত্রী গাজীর অভাব প্রাকালে ছিল না। "দ্রোণছ্যা," "সোরভী," "কামধেমু," "নন্দিনী" প্রভৃতি বাক্যগুলি এই অর্থের পরিচায়ক নহে কি? প্রোমাতার পূজা এই কারণে আমাদের শাস্ত্রে বিধিবদ্ধ আছে। পাদ্য অর্থ ইত্যাদি সাজাইয়া "এতং পাদ্যং গবে নমং" এই মন্ত্রে গাভীমাতাকে ব্থাসাধ্য বোড়শোপচারে পূজা করিয়া, শৃঙ্গে তৈল ও হরিদ্রা এবং ললাটে সিন্দ্র লেপন করণান্তর পরে পরিষ্কার ঘাস, বংশপত্র, কলনী প্রভৃতি আহারীয় ক্রন্তা মন্তকে লইয়া—

' সৌরভেষ্য: দর্কহিতাঃ প্বিত্রাঃ প্রাাশয়ঃ। শুভিগুহুস্ক মে গ্রাসং গাবহৈলোক্যমাতরঃ॥"

এই মন্ত্র পাঠ করিতে করিতে উহা গোমাতাকে ভোজন করাইবে, এবং শেষে নিয়লিখিত মন্ত্রে গাভীমাতাকে সমাহিতচিত্তে প্রণাম করিবে:—

> "নমো গোভাঃ শ্রীমতীভাঃ সৌরভেষীচ এবচ। নমো ব্রহ্মস্থতাভাশ্চ পবিত্রাভ্যোনমো নমঃ॥"



धकविश्म भित्रेटिक्म।

ভারতীয় গোজাতির কি উপায়ে উন্নতি সাধিত হইতে পারে ?

ভারত কৃষিপ্রধান দেশ, তাহা বহুবার পূর্ব্বেই বলিয়াছি। বলদ্
বিনা এদেশের কৃষিকার্য আদৌ চলিতে পারে না। যে মাত্রার দেশে
গোহত্যা হইতেছে, রোগ বা মড়কে যে পরিমাণে জন্মদেশীর গোকুল
নির্বাংশ হইতেছে, তাহাতে গোজাতি যে ভবিষ্যপুরাণের উব্জির সভ্যতা
সম্পাদন করিয়া অনিকলাল ভারতভূমে বর্ত্তমান থাকিবে, এমন ত বোধ
হর না। সেইজন্য উপরোক্ত প্রশ্নটি স্বতেই সকল চিন্তালীল ভারতবাসীর ক্ষামে স্থান পাইয়াছে। গভর্গমেণ্টও এ বিষয়ে আর অধিকলাল
উদাসীন থাকিতে পারিবেন না। দেশের নেতা, রাজা, মহারাজ
ও জমীলারগণের এবিষয়ে আন্ত দৃষ্টিপাত করা কর্ত্তব্য। বলীয় মাহিষ্যসমিতি বঙ্গের কৃষক-সম্প্রদান্তের পক্ষ হইতে এ বিষয়ে রাজসদনে আবেদন
পাঠাইয়াছেন। বিলাতেও এইজন্য সমিতি স্থাপিত হইয়াছে। এখন
দেখা বাউক, দেশী গোজাতির উন্নতিসাধন করিতে হইলে কি করা
কর্ত্বব্য ? আমার বিবেচনা হর,যে, ইহা কার্য্যে পরিণত করিতে হইলে
নিম্নলিখিত কার্যাগুলি করা স্ক্রতোভাবে কর্ত্ব্য:—

- ১। রাজা, মহারাজ ও জমীদারগণ বা অবস্থাপর গৃহত্পণ স্থ স্থ জমীদারীর মধ্যে দাতব্য গো-চিকিৎসালয় স্থাপন করুন।
- ২। গো-চিকিৎসা সম্বন্ধে কৃত্ত কৃত্ত প্রিকো সমরে সমরে কেনী ক্রুক্তিগের মধ্যে বিতরণ-করণ।
- । বিলাতি "কার্দার," "ভেরারিওরান্ড্," "কার্দ্বইরার্ড,"
 "কান্ট্রিকেন্টেন্যান্" প্রভৃতি পত্রিকার মত সাপ্তাহিক বা নাসিক ।
 ক্রিকাব্দীর পত্রিকা বেশে বছল-প্রচারিত হওরা কর্তব্য।

৪। গোশালা-স্থাপন।

- ে স্থানে স্থানে গোরকিণী সভা স্থাপন। (তেজী ও বলিষ্ঠ গো কসাই-হত্তে দেশী গোরালাদিগের দারায় অলম্ল্যে অবারিত ভাবে বাহাতে বিক্রীত না হয় এবং ফুঁকা দেওয়া যাহাতে বন্ধ হয়, তৎপ্রতি এই সকল সভা দৃষ্টি রাধিবেন।)
- ৬। দেশী জমিদারগণের কর্ত্তব্য যে, তাঁহাদেব জনীদারীর মধ্যে প্রভ্যেক প্রায়ে বাঁ মৌজাতে কিছু জমী সাধারণ গোচারণ বলিরা ছাড়িরা রাধেন।

৭। জমিদারগণ ভাগাড়ের করগ্রহণে বিমুখ হন।

হিশ্বে সকল কার্য্যে ধর্মণান্ত্র মানিরা চলিতে হর। সেই কারণে গো-দোহন, গো-বাহনের কাল নিরূপিত আছে। তাহা মানিরা চলা কর্মবা। এই সকল কার্য্যে বর্মের দোহাই দেওরা হইরাছে; কিন্তু প্রকৃতই ইহা মানিরা না চলিলে যে গোজাতিব স্বাস্থ্যের হানি সংঘটিত হর, তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। সেই জন্ম আবাদ, কার্ত্তিক, মাঘ, ও বৈলাথ মাসের পূর্ণিমা, সংক্রান্তি, যুগালা, ব্যতীপাত, পুরা৷ চক্র ও স্ব্যগ্রহণ, মাঘী সপ্তমী, ভাত্রীর ক্লফাইনী, শিবচতুর্দলী, ৮মহাপূজার দিনত্রর, সোমবারী-অমাবস্যা, মঙ্গলী-চতুর্থী, বৃহস্পতিবাবের অপ্তমী, অরপূর্ণা ও বাসন্তী পূজার দিনে, রবিবারে, সপ্তমীতে, প্রাদ্ধনিন, জন্মদিনে, একাদলীতে, অর্দ্ধানর এবং বাঙ্গলীযোগের দিন কদাচ হলবাহন করিবে না। ক্লফ দেড়-প্রহর কাল মাত্র গো-বৃগলের হারা হলবাহন করাইবে; তাহার বেলী করিলে গোবধের পাতকী হইবে। গোপুঠে অধিক ভাত্মবাহন, গোচারণ, গো-বিক্রম কদাচ ব্রাহ্মণ বা অপর কোন বিজ্ঞাতি করিবে না। যে ইহার অক্সথা করিবে, দে গোবধের পাতকী হইবে।

এতদ্ভিন্ন পূর্ব্বে বে সকল নিমনাবলীর প্রতি দৃষ্টি রাধিরা গোপালন, গোজনন ইত্যাদি কার্য্য করিছে অনুবোধ করিয়ছি, ভাষা ক্ষরিলে যে ভারতের গোঞ্জাতির অচিরে উন্নতি সাধিত হুইবে, তাহাতে সন্দেহ নাই। ভারতবর্ষে যে সকল পশু-মেলা হইয়া থাকে, তাহাদের স্থানিরমে প্রথিত করিরা বাহাতে পারিতোবিক-দানের সুবাবস্থা হর. তাহার উপার উদ্ভাবন ও চেষ্টা সকল ভারতবাসীরই একান্ত কর্ম্ববা। ভারতবর্বের মধ্যে মাক্রাজ প্রদেশের পালাকুর, আদিতপাস্থ, রিবাক, পিউতাপন ও তিমারাজাপুরামে; বেলুচিন্তানদেশের কোয়েটায়; পঞ্চাবের नामानश्व, हिमान, जानानानाम, त्थात्ता, नित्रमा, निज्ञी, अज्ञ मार, नाम, क्टिश्वान, विनामभूत, नान-हेम्नाम ७ भार्क्जीभूत्त, ममहत्तात्र ममस् (बाक:फतनगत, (छत्राहेपाहेनथा, जनसत, जाहाजगत, बाँाप, গুরুলাসপুর ও অমৃতসহরে; কালীপূজার সময়ে পেশোয়ার, অমালা, কোহাট, খাগড়া, ধর্মগঞ্জ ও মুক্তসারে, বন্দদেশের স্থরী, চাতরা, দেওকুঁড়, বেতীয়া ও হাথুৱায়: দশহরার সমরে হমকা ও গরাম, চৈত্র ও কার্ত্তিক সংক্রান্তির সময়ে বিহ্টা, বছরমপুর, সম্বলপুর, বালুমাথ, হাজারিবাগ, রামপুর, পাঁকুড়, ডালটনগঞ্জ, চান্দোরা, আসাম, ত্রিবেণী, গোরাঘাট, ডেমডমী, কালিম্পন্ধ, অন্থোলে, গাইবান্ধার নিকট কামারপুরে, সিন্ধুদেশের মধ্যে শিকারপুরে, বোদায়, দেবারগুড়, নির্দ্মণ ও জামধণ্ডীতে, উত্তর-পশ্চিম এলেশের মধ্যে দাদরী, ভিলোপু, বাটেশ্বর, হরিপুর ও হাথোড়ার, পাঞ্চাবের অন্তর্গত এমিনাবাদে; বৈশাৰী পুর্ণিমায় মাজ্রাজের মধ্যে আখুড়, নাথাপট, করিসেনা ও বিরুদাপটিতে, আসামের অন্তর্গত শ্যামগঞ্জ ও বীরাত্তে এবং ভারতের অস্তান্ত অনেক স্থানে পশুমেলা হঁইরা থাকে। এই সকল মেলার তালিকা এবং কোন পথ হইস্কা বাইতে হয় তাহার সকল নিদর্শন ও তালিকা বন্ধীয় ভেলারিনারি বিভাগে আবেদন করিলে মুক্রিভ প্রতক ও ভালিকা পাইতে পারা বার। ,গতর্থ-মেণ্ট সকলনিকে আমাদের এত স্থবিধা করিয়া দিতেছেন; কিন্তু আৰক্ষা তাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করি না। কি কুন্তকর্ণের নিদ্রায় আমরা অভিভূত আছি, তাহা আর বলিতে পারি না !!! জাতীর অবসাদ কি দ্রীভূত হইবে না ? হে জমীদারমহোদরগণ, গো-জাতির রক্ষার জন্ত দেশের মধ্যে গোচাবণ মাঠ অন্ততঃ গ্রামপিছু ৫ বিঘা করিয়া ছাড়ুন; দেখিবেন, অচিরে গোজাতির হীনতা ক্রমশই দ্রীভূত হইবে। বাঁড় এবং গাভী পৃথক্ করিয়া নির্বাচন বিধির দ্বাবা গো-পালন ও উৎপাদন করুন; দেখিবেন, বাঙ্গালা ও বিহার প্রদেশের হীন শীর্ণকার কর্মল গাভীর জাতি অচিরে অন্তর্হিত হটবে। নবজাত শাবকদের আবশ্যক্ষত বথেষ্ট হুয় পান করিছে দেওয়া উচিত। ছুয়ের লোভে তাহাদিগকে মাতৃছুয়ে বঞ্চিত করা মহাপাতক। এই কারণেও গোজাতির ক্রমিক অবনতি ঘটয়া থাকে।

এখন এক কথা হইতেছে যে, ত্থাব্যবসায়ের জন্য বহুসংখ্যক পাজী রাখিতে হইলে, সেইগুলিকে অরব্যরে কিরুপে সংগ্রই করা যাইতে পারে। গোপালকদিগের পক্ষে ইহা একটি শুরুতর সমস্তা। বৃহৎজাতীয় ত্থাবতী গাজী অধিক মূল্য দিয়া সংগ্রহ করা অধিক ব্যরসাধ্য। তাহা আমাদিগের দেশের নিঃস্ব রুষকের পক্ষে আমাধ্য বলিলেই হয়। নিজ খোঁয়াড়ে থাজী নির্বাচন ঘারা সামান্ত গাজীকে কালে অধিক ত্থাবতী করা যাইতে পারে। এ বিষয়ে পূর্বেষ যে সকল বৈজ্ঞানিক নির্মাবলীর কথা বলিয়াছি, তাহার প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখা কর্ত্ব্য। মিঃ R. S. Finlow, Agricultural Journal of Indiaর দ্বিতীয় ভালুমের ৩১১ পৃষ্ঠায় এ সন্থক্ষে বলেন :—

"By selecting the good milkers and breeding from those, not only the yield but the quantity of the milk of a herd may be gradually improved"

অর্থাৎ হ্রবতী মারের বক্নার সহিত অপর পালের হ্রবতী মারের বাঁড় শাবকের সংবোগে শাবক উৎপাদন করিলে, অবশ্যই হ্রবতী হইবে। এই প্রক্রিয়া নির্মাচন সহকারে প্নরাবৃত্তি করিলে শাবক ক্রমশৃই স্বরকাল মধ্যে প্রভৃত হয়বতী বা "দ্রোণছ্যা" হটরা দাঁড়াইবে। বিলাতি জার্দি, গার্ণ্ দি (Guernesey), ডিভন্, ডেক্সিটার প্রভৃতি পরিবারের উত্তব এইরপেই হটরাছে। কোন্ গাভী কিরপ হয়বতী, তাহা নির্ণয় করিবার জন্ত "milk-test" প্রথা সপ্তাহে অন্ততঃ একবার করা উচিত। ছগ্নের test কিরপে করিতে হয়, তাহা শিক্ষা করা কর্ত্তবা। ছগ্মদায়িকা শক্তি প্রত্যেক গাভীর পরীক্ষা করিয়া সমর্থিক হগ্মদাত্তীগণকে গোরালে রাখা কর্ত্তবা। ইহাতে ক্রবকের আর্থিক লোকসান হইবার আদৌ সন্তাবনা থাকে না।

ভারতের সকল দেশাপেক্ষা বঙ্গদেশের গোজাতির দৈহিক ও শারীরিক অবনতি ঘটিবার বহু কারণ আছে। তন্মধ্যে দ্রী এবং প্রক্রম গো একসঙ্গে ধাকার অবনতির মাত্রা খুবই বেশী হইরা দাঁড়াইরাছে। তাহার উপর ধাদ্যাভাব ত আছেই; এবং ইহার উপর বিবিধ পশুরোগ সমরে সমরে সংক্রামকরণে দেশে বিজীর্ণ হইরা থাকে। তাহাতে এবং কসারের ছুরিকার রুপার শত শত গোর প্রাণ প্রত্যহ বিনপ্ত হইতেছে। বঙ্গীর গোজাতির উন্নতিসাধন করিতে হইলে, তাহাদের স্ত্রীপুরুষের পৃথক্ রাখার ব্যবদ্বা বিশেষ আবশ্যক। এ সম্বন্ধে অধ্যাপক Shearer "Agricultural Journal of India" নামক পত্রিকার ভৃতীর ভল্মের ৫৪৯ পৃষ্ঠার সবিশেষ আলোচনা করিরাছেন। প্রত্যেক ক্রবি-ছাত্রের তাহা পাঠ করা কর্ত্ব্য।

মি: J. P. Sheldon তাঁহার জগৰিথাত "British Dairying"
নামক প্তকের গাভীক্রর প্রসঙ্গে বলেন বে, হানীর গোজাতির
উরতিসাধন করিতে হইলে, হানীর বা অপরজাতীর অভ্যুৎক্রপ্ত রাজের
সহিত হানীর গাভীর সংযোগ করিরা হয়বতী পাবক উৎপাদন
করিতে হয়। এইরপ নির্বাচনের মারা বেক্প্রেল্, ডিশ্লী, নেনার্জ,

কলিং প্রভৃতি উৎপাদকগণ বর্তমান বিলাতি শর্ট্ হর্পরিবারের উৎকর্ষে উৎকৃত্তি গোজাতি উৎপাদন করিতে সমর্থ হইয়াছেন। এইরূপ স্থানীর গোজাতির স্কৃত্তি তাঁহারা অত্যুৎকৃত্তি ঘাঁড়ের ঘারাই করিতে সমর্থ হইরাছিলেন। আমাদেরও দেশে বিহার, পালামু, বাঁকুড়া বা বন্ধীয় দেশী গাভীর উরতি এইরূপে সাধিত হইতে পারে।

ভারতীয় গোন্ধাতির কি উপায়ে উরতি সাধিত হইতে পারে, তাহার দিকে আজকাল আমাদের দেশের লোকের দৃষ্টি পড়িয়াছে। বিষয়গুলি সহজ্ব হইলেও সাধারণের বন্ধ ও ইচ্ছার উপর নির্ভর করে। নিয়ে কয়েকটীর উল্লেখ করিলাম।

- >। গোশালার উন্নতিসাধন। স্বাস্থ্যকব গোশালার গবাদি পালিত পশুকে সর্বতোভাবে রক্ষা কবা কর্ত্ত্ব্য। পূর্বালিথিত গোশালা-অধ্যায়ে এ বিষয়ে সবিশেষ আলোচনা করিরাছি। গোয়াল সঁয়াতা না হর, তাহা হইলে রক্ষিত পশু দেহে ঠাণ্ডা লাগিয়া অশেষ প্রকার রোগ উৎপাদন করিয়া থাকে। এই জন্য আমাদের দেশের পল্লীগ্রামে, গোয়াল পরিষার করার নিমিত্ত অতি প্রাচীনকাল হইতে ছাই ছড়াইবার নিয়ম ছিল। একটি গোয়ালে বহুদংখ্যক পশু রাখা কল্যুচু উচিত নহে। গোশালার উদ্ধে 'ভেন্টিলেটার' বা বায়ুচলাচলের পথ রাখা কর্ত্ব্য। গৃহস্থ বিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন যে, গোশালার কার্ব ন ডি অক্সাইড্ গ্যাস উৎপন্ন হইয়া যেন রক্ষিত পশুদের স্বাস্থ্যজন্ম না করে। মল-মুত্রাদিকে গোশালার প্রচুর পরিমাণে ঐ গ্যাস জনিয়া থাকে।
- ২। পানীর জলের সর্বাদা স্থব্যবস্থা করা চাই। পরিষ্কৃত জলের সহিত আবশ্যক্ষত লবণ থাওরাইলেই ভাল হয়। আমরা এ বিষয়ে রড় দৃষ্টি রাখি না। আমি এ বিষয়ে পূর্কেও বলিরাছি।
- ৩। প্রবোজনমুত আহারের দকল দমরে সংস্থান করা কর্ত্তবা। আহার সক্ষে দেখা কর্ত্তব্য বে, কর্তীর জীবন-ধারণের জন্য বাস্থবিক

ষঙ্ঠা আহারের প্রয়োজন, তাহাকে ততটা যোগান হইতেছে কি না।
অপ্রচুর আহারে শরীর বলহীন এবং হর্মল হয়, এবং বলহীন হইলেই
নানারোগের বীজাণু শরীরে প্রবেশ করিয়া তাহাদের সামর্থ্য প্রকাশ
করিতে সক্ষম হয়। স্বল্প আহারের নাায় অত্যধিক আহারেও নানারূপ
অপকার সাধিত হয়। স্কতবাং গৃহপালিত পশুগণকে প্রয়োজনমত
আহার দেওয়াই ক্লযকের সর্মতোভাবে কর্ত্তবা। ত্ন পাঁচদিন বিশেষ দৃষ্টি
রাধিলেই পরিমাণ ঠিক কবিয়া লওয়া কঠিন বোধ হয় না।

গোৰুকে ভুধু বলকারী আহার দিলেই যথেষ্ট হয় না; যাহাতে তাহার উদর পূর্ণ হয়, এমন খাদ্যেরও বিশেষ প্রয়োজন। দানা দিয়া উদর পূর্ণ করিলে গরু তাহা পরিপাক করিতে সমর্থ হয় না; স্বতরাং উদরাময়, अकीर्य अङ्डि नानाक्रण शीफ़ाश्चल हहेबा शरफ । कून डि, जूनाव वीक, ভাত এবং থৈল গবাদির স্বাস্থ্যোরতির পক্ষে উত্তম থাদ্য এবং অল-ব্যরসাপেক। কুলতি ও ভুলার বীজ সিদ্ধ করিয়া খাইতে দিবে। গ্রাদির চরিবার জন্ত বিশ্বত শ্যামল চারণক্ষেত্রের ব্যবস্থা করাও বিশেষ প্রয়োজন। উড়িয়ার অনেক স্থলে গোচারণ মাঠ দেখিতে পাওয়া বায়: কিন্ত वाकामा (मर्ट्स क्टरे रेशा विषय हिन्दा करान ना। अमिरक জেলাবোর্ড করুণনৃষ্টিপাত করিলে অনেক হিতদাধিত হইতে পারে। **জেলাবোর্ড পশু-ডাক্তারের বেতন দিতেছেন, ঔষধ দিতেও কৃষ্টিত নহেন:** কিছু দর্মপ্রধান জিনিষ যে পশুর আহার, তাহার কোনও স্তবন্দোবস্ত করেন না। প্রত্যেক গ্রামবাসীর একন্ত জেলার ম্যাজিষ্ট্রেট বাহাছরের নিকট আবেদন করা কর্ত্ততা। সর্বাদা খোঁটার বাঁধিয়া রাখিলে গাভীর বন্ধারোগ হইবার বিশেষ সম্ভাবনা। সেইজন্ত বোধ হয় বড় বড় নগরের গাভীদের মধ্যে এই রোগের বিস্তার এত অধিক।

৪। উত্তম বাঁড় রাখা প্রত্যেক গ্রামে উচিত। ৢএ বিষয়ে "বাঁড়"-.
 প্র্যারে আমি সবিশেষ আলোচনা ক্ররিয়াছি। বলল দেখানর ক্রয়

গাজীটী ৰদি খুব ছোট হয় এবং বাঁড়টি খুব বড় হয়, তাহা হইলে, জরায়্স্থ শাবকটি অমুপাতামুসারে যথেষ্ট বৃহদাকার হয়; স্কুতরাং প্রান্ধের সময় বিশেষ বিপেদের সম্ভাবনা। এ বিষয়ে বিশেষ বিবেচনা ও সতর্কতার প্রয়োজন। এ বিষয়ে আমিও পূর্বে বলিয়াছি।

 চিকিৎসার অভাব। গবাদির পীড়া হইলে উপযুক্ত চিকিৎসা করান আবশ্যক। আমাদের নিজেদের সামান্য পীড়া হইলে তৎক্ষণাং ডাক্তার ডাকি; কিন্তু গৃহস্থ গো:-মহিষাদির উৎকট পীড়া হইলেও ডাক্তারের প্রয়োজন মনে করেন না। হানে যে কোনওরপ সংক্রামক ব্যাধির প্রকোপ দৃষ্ট হউক না কেন. প্রথমেই পুলিশে তাহার সংবাদ দিবে। এইজনা একরপ পোই-কার্ডেরও প্রচলন হইয়াছে। উহা প্রাদেশিক ভেটারিনারি ডিপার্ট মেন্টের স্থপারিণ্টেণ্ডেণ্টের নিকট চাহিলে প্রেসিডেণ্ট পঞ্চায়েৎ বা গ্রামের মাতব্বর ব্যক্তি পাইতে পারেন। সচরাচর মাঠে চরিবার সময় চামারের। গরুদিগকে বিষ প্রয়োগ করে। এবিষয়েও আমি এই পুস্তকে উল্লেখ করিয়াছি। চর্মব্যবসায়ীদিগকে চর্ম সরবরাহ করিবে বলিরা, চামারেরা তাহাদের নিকট হইতে টাকা দাদন লয়, কিন্তু আবশাক্ষত চামছা যোগাইতে না পারার বিষ প্রয়োগ আরম্ভ করে। এবিষয়ে গভর্ণমেন্টের তীক্ষ দৃষ্টি রাখা কর্ত্তব্য ; নচেৎ ষতই কেন অর্থ ব্যয় করুন না, গোজাতির ধ্বংদের পথ কিছুতেই রুদ্ধ হইবে না। অযথা গোহননের দিকেও গভর্ণনেন্টের দৃষ্টিপাত করা একান্ত প্রার্থনীর।

৬। সংক্রামক রোগে মৃতপণ্ডর শবদেহ বেথানে সেথানে কেলিরা রাখা কর্ত্ব্য নহে। পুঁতিবার পূর্ব্বে ছুরীয়ারা চামড়া এমন ভাবে কাটিয়া নষ্ট করিরা দিবে বে, তাহা চামার বা মৃচিরা ব্যবহার করিতে না পারে। সংক্রামক রোগে মৃতপণ্ডর শবদেহ মাটীর নীচে পুঁতিয়া তাহার উপর কর্মলা এবং চূব চাপা দিয়া তহ্পরে মাটী চাপা দিবে এবং গোশালা, জাবের টব, ইত্যানি উত্তমরূপ কেনাইল বা কার্বলিক্ দিয়া থোত করিয়া দিবে এবিষয় এই পুস্তকে বর্গাস্থানে উল্লিখিত হইয়াছে। সংক্রোমক রোগের প্রাত্তাব হইলে গোয়ালে গন্ধক, ধুনা ও আল্কাংরা দিবার ব্যবস্থ ক্লারের। ক্লুগাড়ীর মলমূত্রও গর্ভ করিয়া পুঁতিয়া কেলা উচিত।



षाविश्म পরিচ্ছেদ।

গোদোহন।

গোদোহন কার্যাট কম দারিত্বপূর্ণ নছে। ইহার প্রতিও গৃহছের ভীব্রদৃষ্টি রাখা কর্ত্তব্য। গোলোহনে সামান্য ভারতম্য হইলে গাভী চমকিয়া উঠে এবং তাহার পর ক্রমশ: হগ্ধ কমিরা বার। ইহার দারা গৃহস্থকে সমরে সমরে কম ক্তিগ্রন্ত হইতে হর না। সেইজন্য কার্য্যক্রম গোরালা निर्साচन गर्सार्थ कर्डवा। शाबानात काळ-एव एम कतिरा इस ना। বেমন সকল ব্যবসায়ে শিক্ষালাভ করিতে হয়, সেইরূপ গো-পালন, গো-সেবা, গো-পরিদর্শন ইত্যাদি সকলই শিক্ষা করিতে হয়। অনেক সময় উদ্ধত গোয়ালা গাভীকে মারে, তাড়না করে, ভয় দেখায়: ফলে গাভীর ছগ্ধ চমকিয়া গিয়া গৃহস্থকে নৈরাশাসাগরে নিক্ষেপ করে। সেইজন্য সর্বতো-ভাবে দেখিয়া শুনিয়া পছন্দ করিয়া গোরালা নিয়োগ করিবে। লোক চারি হইতে সাভটি গাভীর স্বচ্ছন্দে তত্বাবধারণ করিতে পারে: কিছু তাহাকে প্রথমে শিক্ষালাভ করিতে হইবে। গোরালারা বড়ই ছেঁটা এবং একগুঁরে! তাহারা কোন আদেশ গুনে না বা সহজে প্রতিপালন করিতে চাহে না। তাহারা মনে করে বে, ভগবান জীব্লফের সময় হইতে গোদেবা, গোপালন, গোরকা, ফল কথা, গোজাতি সম্বনীয় যাবতীয় কাজ বেন তাহাদেরই অধিকারভুক্ত বা birth-right; সেইজন্যই এবিষয়ে বেশী বিশুঝলা পরিদৃষ্ট হয়, এবং এই ভূল ধারণায় পড়িরা আমাদের গোজাতির ক্রমে এত অবনতি হইরাছে। যদি এই লেখার আমার উদাসীন দেশবাসীর দৃষ্টি পড়ে, তাহা হইলে আমার পবিপ্রমের সার্থকতা বনে করিব। আমি এবিবরের চর্চার প্রার ৩০ বংসর কাল ভারতের ভিত্ৰ ভিত্ৰ ভাবে ভাৰণ কবিয়াছি। মুসলমান অথবা রাজধ্যার

ষ্মথবা আহীর (রুজৌ বা ঘোষীন্) গোয়ালা চাকর হইলে বেশ কার চলে বলিয়া আমাব বোধ হয়।

গাভীগণকে নিয়নিত ধৌত বা মান কবান কঠবা এবং গোশালা ুপ্ৰতাহ সকালে পরিকার কৰা প্রয়োজন। গোময়, ও গো-মূত্র সর্বাদা প্রিফাব ও স্থানাম্ভবিত করা কর্ত্তবা, যেন তথায় কোনরূপে সংক্রামক রোগের আবিভাব না হয়। দোহনেব পূর্বে গাভাব বাট ও পালাম दिশ কবিয়া ধুইয়া দিবে। গাভাকে ভাঁদিয়া দোহন করা উচিত নহে। এই প্রথা যতই উৎসাহিত না হয় ততই ভাল। গোদোহন তুই প্রকার:--(১) বৃদ্ধা এবং ভর্জনীর সাহায্যে দোহন। ইহাকে ষ্ট্রিপ্লিং (Strippling) বলে। ইহাদাবা শেষ ফোঁটা ছগ্ধ প্র্যান্ত নির্গত ইইয়া আইদে। (২) মুষ্টি কবিয়া বাঁটটি বেষ্টন কবিয়া দোহন; ইছাকে নিভেলিং (Nivelling) বলে। ইহা বেশী ছগ্ধবতী গাভী-দোহনেৰ পক্ষে বিশেষ উপযোগী। ইহা অভ্যাস করিতে হয়, নচেৎ মৃষ্টি আড় উ হইয়া বন্ধ হইয়া যায়। লোহন-কাৰ্য্য, যত শীঘ্ৰ সম্ভব, সমাধা কৰা কৰ্ত্তব্য। ভূমের "ধাব" দেখিয়া ছগ্মবতী গাভীব গুণ নির্ণয় করা যাইতে পারে। বিলাভ প্রভৃতি দেশে শাবকের সাহায্য-বিনা গোদোহন সমাছিত হইয়া থাকে। তথায় শাবককে বাঁট টানিতে দেওয়া হয় না। বিলাভেব গোয়ালারা বলেন যে, যদি শাবক কোন কারণে নষ্ট হয়, তাহা হইলে সে বিরানের সমূদর হগ্ধই নষ্ট হয়। অধিকন্ত অনেক সময়ে শাৰক, ্বাটে দত্তের দারা কামড়াইয়া ক্ষত কবিদা থাকে। তাহাতে ছদ্ধের হাস হয়। সেইজন্ত আমেরিকা, বিলাত এবং ইউরোপের দেশসমূহে গোরালারা नवजां नावकरक शो-लाहरनव भन्न जिन्नभार्य इद्ध शहरक सन। এইরপ খাইতে তাঁহারা শিক্ষা দিয়া থাকেন। আমার বিবেচনার স্থানা দের দেশে শাবকের সাহায্যে ছোহন করাই স্মীচীক। পুত্রের উপর মারের ুম্বি ক্ষেত্ৰ না পভিল, গাভী যদি শাবককে না চাটিল, তাহা হইলে দেৱল ভাকাতের মত গোদোহন করিয়। ত্থপানের স্থখ নাই বলিয়াই আমাব
অম্মান হয়। আমাদের দেশে গোবৎসের মৃল্য এত অয় এবং এদেশে
হলন-জন্য গো উৎপাদিত হয় না বলিয়া গোলাবকের সাহায়ে গোদোইল
করাই সর্বতোভাবে প্রক্রন্ত বলিয়া আমার মনে হয়। মাতৃয়েহ বৎসের্ক
উপব পড়িলে মনের আহলাদে গাভীব তয় সমস্ত শিরায় প্রবাহিত হইয়া
থাকে এবং দোয়ুলের সামান্য চেপ্রায়্ন ব্রকালমধ্যেই দোহনপাত্র
ছয়ে পরিপূর্ণ হইয়া থাকে। কিন্তু ভগবানেব রাজত্বে বছবিধ
জীব আছে। ভিয় রুচিহি লোকাঃ। দোহন-পাত্রগুলি প্রত্যহ
ছই সদ্ধ্যা থোত করা কর্ত্তব্য যাহাতে রোগের বাজাণু তাহাতে
জায়িতে না পারে। গৃহস্থ খুব শ্বরণ রাখিবেন, যেন তাঁহাব দোহনপাত্রগুলি প্রত্যহ অত্যন্ত পরিজার করিয়া থোত করা হয়; নচেৎ তাঁহার
'লোভের ধন পিপীলিকায় শুষিবে।''

গোজাতি প্রাচীন হিন্দুসমাজে কত্দুর সম্মানেব চক্ষে অবলোকিত হুইত, তাহার কিছু কিছু পূর্ব্বে শাস্ত হুইতে উদ্ধৃত করিয়া দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছি। আমি উপবেট বলিয়াছি যে, বিলাতে লোহনকাশ্য প্রায়ই বাছুরের সাহায্য ব্যতিরেকে করা হুয়। কিন্তু আমাদের ভারতবর্ষে ইহা সচবাচর দেখা যার না। আমাদেব দেশে প্রথমে গাভী শাবককে হুগ্ধ পান কবাইলে, তাহার ছুগ্ধশিরাসমূহ উদ্ঘাটিত হুয় এবং তীব্রবেগে হুগ্ধনালি (milk duct), দিরা পালানে হুগ্ধ আসিয়া জমিতে থাকে। তথ্ন বাছুবকে, গাভীব সমক্ষে, পায়ে বা কোন খোঁটার বাধিয়া, মাতৃদেহ গেছন কবিতে দেওয়া হয় এবং এদিকে গোয়ালা দোহনকাশ্য শনৈ: শনৈ: শোব করিয়া থাকে। গোলোহন জন্য বিলাতে কলণ্ড প্রস্তাহে, কিন্তু তাহা আমাদের দীনদেশে তত স্থবিধাজনক নহে। হন্তের বারা লোহনই স্ক্তিভোভাবে সমীটান।

আৰকাৰ আমেরিকাতেও কলের খারা গোলোহন দম্পন্ন হইতেছে।

শিকাগো নগরের সার্গৃন্ সেপারেটার কোংর হ্রলোহন-কল প্রসিত্ত। ইহাদের একটা কলে চারিজন লোকের কাজ এক ঘণ্টার সম্পর করিছে। শারা যার। এই বিষয়ে সবিশেষ জানিবার প্রয়োজন হইলে আমার নিকট ডাকটিকিটসহ পত্র প্রেরণ করিতে হইবে।

ডেনমার্কের প্রসিদ্ধ অধ্যাপক ডাঃ হেলিগপ্ত এক প্রকার অভিনৰ গোদোহন প্রক্রিয়ার আবিষ্কার করেন। ইহার দারা গোপালানের সমুদ্র ছগ্ন নির্গত হইরা বায়। ইহার বিষয় অধ্যাপক Clarence H. Eckles of Missionary University তাঁহার Dairy Cattle and Milk Production (McMillan and Co.) প্রতকের ২২২ পৃষ্ঠায় সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। এ প্রক্রিয়া আমাদের দেশে নৃতন নছে। আমাদের দেশের অধিকাংশ গোরালা ইহা জানে।

দোহনকার্য্য নিয়মিতরূপে ও নির্দিষ্ট সময়ে সকালে ও বৈকালে, অথবা দিপ্রহরে ও রাত্রে, অথবা সকাল বা দ্বিপ্রহর এবং সন্মাকালে বা রাত্রে, এক সময়ে প্রতাহ সমাধা করা কর্ত্তবা। ইহার প্রতি প্রত্যেক গৃহত্তের তীব্রদৃষ্টি রাখা কর্ত্তবা। দোহনকার্য্য অতি সন্তর্পণে এবং পরিষ্কার পরিচ্ছর হইরা করা কর্ত্তব্য বাহাতে দূষিত বীজাণু হুঝে প্রবিষ্ট না হয়। এ সম্বন্ধে বিগত ১০১৯ সালের. "কুম্বক্" পত্রিকার প্রকাশিত "হুঝ এবং বীজাণু" শীর্ষক প্রবন্ধগুলি যত্ত্বসহকারে দ্রষ্টব্য। তাহা ছাড়া পরবর্ত্তী "হুঝ"-পর্যারে লিখিত পুস্তকশ্বলিও বিশেষরূপে পঠনীর।

বিলাত, আমেরিকা, প্রাভৃতি দেশে কলের সাহায্যে বৃহৎ গোশালার গোহ্য দোহন করা হইরা থাকে। তাহা আমি কলকারখানা-পর্যায়ে উল্লেখ করিরাছি। লগুনের "Jersey Creamery Co."র কৃত 'Self Acting Cow-Milker'টি এই ছানে উল্লেখ করা কর্মন্তা। বাটের ক্লিয়ে বদি খুব সক্ষ হয়, গোদোহনে যদি কট্ট হয় এবং বাট বদি খঞ্চ হয়, তৃাহা হইলে নিয়লিখিত মলন বাঁটে লাগাইয়া প্রথমে ছয়া দোহন করিব। প্রথমে বাঁটে ছত বা মাথম মাথাইরা নরম করিরা লইবে; পরে ২ ভাগ গুলার্জের এক্ট্রাক্ট্র (Goulard's Extract), একভাগ অলিভ্ বা বালানের তৈল, এবং একভাগ মিলিরীন্ মিলাইরা বাঁটে দিরা পরে লোহন করিবে। মিঃ হেন্রি ইকেন্ তাঁহার "Book of the Farm" নামক প্রকের প্রথম ভাগের ২১০ পৃষ্ঠার গোলালা, গোলোহন প্রভৃত্তি সম্বন্ধে সবিশেষ আলোচনা করিরাছেন। আমেরিকাতেও করেক প্রকার লোদোহন কল বাবুছত হইতেছে। "কলকারখানা" প্র্যারে তাহার সবিশেষ নিহর্লন আছে।



खरत्राविश्म शतिराष्ट्रम्।

তুগ্ধ-ব্যবসার (Dairy-farming.)

८५ शांत्रि कार्यिः आभारमत रमर्ग वाल्जनकत्राम ठिन्छ भारत कि ना, তাঁহা অতঃপর আলোচ্য। আমাদের দেশে হগ্ধ, দধি, ইত্যাদি গোজাত খাদ্যসামগ্রী এত সন্তা ছিল, যে, ছগ্ধ-ব্যবসায়ের কথা পুরাকালে কাহারও ৰনে আদে নাই। বর্ত্তমান সময়ে খাঁটী ঘৃত যেরপ ছপ্রাপ্য হইরাছে এবং গৃহস্থের খাদ্যসামগ্রী বেরূপ দিন দিন মহার্ঘ্য এবং চ্রম্প্রাপ্য হইয়া দাঁড়াইতেছে, তাহাতে হুগ্ধ, দধি, ঘুতাদির ব্যবসায় যে বেশ লাভজনক-রূপে চলিতে পারে, তাহার আর সন্দেহ নাই। কলিকাতার হগু সাহেবের বাজারের কিভেণ্টার সাহেবের ''আলিগড় ডেয়ারি ফারম্", ও মল্লিক কোম্পানীর ডেয়ারিফারমূ হইতে আনীত বিশুদ্ধ গাওয়া মৃত ইত্যাদির দোকান প্রসিদ্ধ। হাবড়া ও শিবাদহ ষ্টেশনে প্রত্যাহ শত শত কানেস্তারা, वाहित्ना, ও हाँ ही ताबार नानाशूत्वव (थाया, नधि, हाना ७ इस जामनानि ছইয়া থাকে। কলিকাতার সন্নিকটস্থ যুঘুডাঙ্গা ষ্টেশনের নিকটস্থ বাজার একটি ছানার প্রধান আড়ঙ। বহুবাজার, জোড়াসাঁকো, বাগবাজার, হাওড়া, শিবপুর, শিয়ালদহ এবং শ্যামবাজারে ছানার হাট আছে। বালিগঞ্জে গ্রেগারি সাহেবের এবং "হোম্ফারন," "এক্শেল্সিয়ার্ ডেয়ারি ফারম্" প্রভৃতির স্ববাধিকারী সাহেবের প্রসিদ্ধ ডেয়ারি কারম আছে। তিলজলা, কামারডাঙ্গা, থড়দহ প্রভৃতি স্থানেও ঐরূপ সাঁহেবদের ত্থ্য-ব্যবসায়ের আড়ঙ্ আছে। বড়বাজারে, চিৎপুরে, শিবপুরে, ভবানীপুরে এবং বৈদ্যবাটীতেও ছানা এবং ছণ্ডের হাট জাছে । নাড়োয়ারিরাও ঐরপ বড়বাজারে এবং সোদপুরের গোরক্ষণ-উদ্যানে ছথের ব্যবসায় খুলিয়া বিশেষ লাভবান হইয়াছেন; ভ্রতাশি আমরা কলিকাতার খাঁটী ছগ্ধ পাই না। অতএব দেখা বাইতেই বে, কলিকাজা বা তাহার স্থান্ত বড় নগরের প্রান্তদেশে ছগ্ধ-বাবসায় বেশ আয়বান হইরা থাকে, অর্থাৎ ছগ্ধের বাবসায় করিতে হইলে, বড় নগরের সমিকটন্থ বড়মাঠে গোশালা নির্দ্ধাণ করা বিধের, যাহাতে সকালে এবং বৈকালে ছগ্ধ সহজেই ছাটে বা বাজারে বা ক্রেতার দ্বারে নীত হইতে পারে। এই ব্যবসায়ের secret এই যে, ক্রেতা নিয়মিড সময়ে টাট্কা শাটি ছগ্ধ পাইলে, কলাচ অপর স্থানে যাইবে না। তাহা হইলেই দেখা যাইতেছে যে, সহরের নিকট, বড় সহর বা নগরের আসয়য়ানে বা রেল-টেশনের খুব কাছে ডেয়ারি-ফারম্ প্রতিষ্ঠিত করিবে।

ভাগাৰ দেখা প্রয়োজন বে, ডেয়ারি ফারমে কোন্ জাতীয় গোফ্
বাখা আবশ্যক। আমার মতে ছোট ছোট দেশী গাই না রাথিয়ৢ
বড়জাতীয় প্রচুর হয়বতী (profuse milkers) রাখা উচিত। দেশীয়বংশীয় ও হই পাঁচটী বা দশটী বিলাজী বা বিদেশীয় পয়িয়নী গাতী ও
সময় অসময়ের জয় রাখা দরকার। হিসাব, হাজী বা হায়য়ানা,
জয়রাটী, নাগৌরী, মথুরাপুরী, মৃণ্ট্গোমেরী, য়ঝা, এডেন, কিয়া
বিলাতী ডিভন্ বা সট্হর্ণ বা ঐ জাতীয় বিলাতীর সহিত উপরোজ্
দেশীর "ক্রশ্"-গাতী হয়্ম-বাবসায়ের নিদ্ধিত্ত সমীচীন। তবে য়য়কের
(dairy farmer) ইহা বিশেষ শ্রবণ রাখা প্রয়োজন যে, বড়জাতীয়
গাতী বেশী য়থী; তাহারা তার শীত বা তাপ সহ্য করিতে পারে না
এবং অধিক য়য়প্রবেশ। সামায়্র অমনোযোগিতায় ইহাদের ব্যাধ্প্রায়
হইবার বিশেষ সম্ভাবনা। এই নীতি সকল মনে রাখিয়া কার্য্য করিলেয়,
ভারতের য়ায় য়্যিপ্রধান দেশে গোপালন, গোচায়, হয়্ম-বাব্সায়
ইজ্যাদি কেন লাভজনক হইবে না, তাহা বলিতে পারি না।

হ্থ-ব্যবসারে গাভবান হইতে হইলে ক্যকের বিশেষ শারণ রাখা
কর্ত্ব্য যে, হ্পুপাত্তিলি সদাসর্বদাই বিশেষরূপে পরিষ্কার এবং পরিষ্ক্র

(scrutinizingly neat and clean) রাখা কর্ত্তবা। এই সকল বিষয়ে সবিশেব বিভ্ত আলোচনা পরে বথাছানে করা হইরাছে। ছগ্ধ কিরূপে রক্ষা করিতে হয়, কিরূপে বাজারে পাঠাইতে হয়, কি উপারে গাতীদের পালন, রক্ষণ ও ভোজন করাইতে হয়, তাহাও এই প্তকের মধ্যেই বথাছানে সরিবিট হইরাছে। এই সম্বন্ধে মি: উইক্ য়ত "Milk and its Products, কর্পেল ইউনিভার্নিটির নিউইয়র্ক টেট্ এপ্রিকাল্চুয়্যাল্ এক্স্পেরিমেণ্ট্যাল টেশন সমূহের বুলেটীন, বফ্লেলা ডেয়ারিম্যান্স্ এসোসিরেশনের রিপোর্ট ইজ্যাদি অনেক পুত্তক আছে, তাহা মনোবোগ-সহকারে পাঠ করিলে আমন্ধা আমাদিগের দেশের গোছথের ব্যবসারে বিশেব উরতি সাধন করিতে পারি। ইহা এই প্তকের বথাছানে আলোচিত হইবে।

এখন আমাদের দেখা কর্ত্ব্য বে, সাহ্যকর গোশালা অন্নব্যরে আমরা কিরুপে নির্দাণ করিতে পারি। এ বিষয়ে আমাদের অভিজ্ঞতা খুবই কর। তবে "কান্টি কেন্টেল্ম্যান্," 'অর্জিয়া এগ্রিকল্ চুরাল কোরাটার্লি," "ডেয়ারি ওয়াল'ড্" প্রভৃতি সাপ্তাহিক আমেরিকান্ সংবাদপত্র পাঠ করিলে এ বিষয়ে, ক্রবিসব্বরে, ডেয়াবি ফার্মিং, এপ্রোক্রমি প্রভৃতি সংলিষ্ট কলাবিদ্যা সম্বন্ধে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করিতে পারা বাইবে।

হথ-ব্যবসার গাভজনকরণে আমাদের দেশে প্রবর্তিত করিতে ইইলে
হথবতী গাভী রাখা কর্ত্তব্য । হথবতী গাভী বাহিরা গওরা বা চিনিরা
'লাওয়া সকলের পক্ষে ঘটে না। এসম্বন্ধে হই এক কথা এইখানে করা
আবন্যক। গৃহত্ব গাভীক্রেরে সমর নিম্নিন্তিত সক্ষেত্তলি মরণ
রাখিবেন:—১। হথবতীর পালাম বড়, প্রদন্ত ও কোমল হইবে; বঁইটভলি ধারাল বড় মর্তমান কলার মত স্থাডোল হইবে। হথের নিরাভনি
বিশ পরিবর্ধিত, পরিভূশানান (prominent) এবং স্কুম্পাই ও সম্মুক্ত

থাকিলন। সক্ষেত্র বঁটেগুলি গশ্চাদিকের বঁটি অপেকা বঁড় হইবে, এবং বঁটুগুলি বেশ পৃথক পৃথক সন্নিবিট থাকিবে। ২। গাভীর মেজাল নিম্র এবং ধীর হইবে; গাত্রের চর্ম মহন্দ এবং রঙ্ ছাপাযুক্ত বা একরজা হইলেও চুলগুলি পাত্লা এবং গাত্র চিলা হইবে, পেটটি রুড়ীর মত হইবে। ও। গশ্চাভাগটি সক্ষ্ম অপেকা ভারি হইবে, পশ্চাদিকের পা'গুলি সক্ষাপেকা ঈবং কৃত্র হইবে। চক্ জ্যোতিঃপূর্ণ হওরা কর্ত্তর। ক্রেটি সিধা—ক্ষেমিনার আবৃত্ত করিয়া, ভূমিশ্পর্শী হইরা পড়িয়া থাকিবে, এবং শেষভাগে থোবাযুক্ত চুলবিশিষ্ট হওরা উচিত। এ বিবরে পূর্বের্ণ ক্রিয় প্রথং বিলাভি-পর্যান্তেও সবিশেষ বলা হইরাছে।

🕟 এখন শেষ কথা হইভেছে বে, ছগ্ধ-ব্যবসায়ের মন্ত কিরূপে গাড়ী সংগ্রহ করা কর্তব্য। অধিক ছগ্ধবতী গাভী ক্রম করা বিশেষ ব্যয়সায্য এবং জোণছৰা গাভী এক-বিয়ানে প্ৰচুর ছগ্ধ দিয়া, পর-বিয়ানে ছগ্ধের মাত্রা হাস করিতে বছন্থলে দেখা গিরাছে। এজন্ত বছগুহন্তকে লোকসান সহ্য করিতেও দেখা গিরাছে। অধ্যাপক শেলভন্, শেপার্ড, এবং ম্যাক্-ভোনাল্ড্ এ সম্বন্ধে বলেন বে, প্রবির্দ্ধিত মাত্রায় গো-বাবসায় করিতে হইলে, তেজন্বর হুডোল শ্রীমান এবং বলিষ্ঠ ও স্থাচিদ্লযুক্ত শাবক বা বক্না অৱমৃল্যে কর করিরা উত্তম যাঁড়ের সাহাঁব্যে বৈজ্ঞানিক নির্বাচন-বিধির ৰাবার "ল্লোণ্ড্ৰা" গাভী স্বরকালমধ্যে উৎপাদন করিয়া লইবে। ইহা করিতে হইলে বক্নাগুলিকে জাবশাক্ষত প্রচুর থানা দিবে, এবং বদ্ধ সহকারে পালন করিবে। উত্তম স্থরকিত নির্মাণ বায়ু-চলাচল-বুক্ত গৃহে ইহাদিগকে রাজে রাখিবে। গোরাল-ঘরটি ন্যাতা না হইরা বাহাতে 🕬 আবং পরিষার ও পরিচ্ছর হয়, ভাহার প্রতি গৃহত্বের বিশেব দৃষ্টি রাখা কর্মবা। বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে গোশালা নির্দাণ করিয়া তাহাতে গাড়ী-श्राप्त कृतिक क्रिट्र । मध्य महरदत्र निक्षेवकी क्रिक्ट्र (Finchley) शाहीत्व अवस्थित मि: G. T. Barham, प्रक्रेमच व्यवस्थात अवस्थित

মান্গো নগরের সরিকটন্থ পোর্ট্ডন্তা (Port Dundas), মিঃ হার্কী, আমেরিকার অন্তর্গত নিউইয়র্কের " মিছ সারাই কোং"র, উইস্কুন্দিন্, মিসোরী, ও কর্ণেলের "টেট্ এক্স্পেরিমেন্ট্রাল্ ফার্লের" গোঁশাব্যভলি বৈজ্ঞানিক হিসাবে নির্শ্বিত বলিয়া, সকলেরই অর্থসাপেক হইকে
একবার দেখা কর্ত্বা।

আমি পূর্বেই বলিরাছি যে, ছগ্ধবতী গাভীগণকে সদাই শীত বা তাপ হইতে রক্ষা করিবে। সেইজন্ম ইহাদিগকে আবৃত গ্লোরালে রাখিবার প্রয়োজন দেখা যার। নচেং গাভীগণ যে খাদ্য খায়, তাহার অধিকাংশ দৈহিক তাপ-সংরক্ষণে ব্যমিত হইয়া থাকে, এবং সেই কারণে ননীর সংজ্ঞান হাস হইয়া যায়। কাজেই বেশী খাদ্য দিবার প্রয়োজন হয়। সেইজন্ম ইহার প্রতি গৃহস্থ বিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন। অধ্যাপক শেল্ভন্, বার্গ, ম্যাকেঞ্জি, ম্যাক্ডোনাল্ড, হস্ফল, মার্টিনিউ, গ্যাম্গী, ব্যাজ্ প্রভৃতি পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ তাঁহাদের প্রকে এই কথা পুনঃ পুনঃ বিলিয়াছেন; তাহা প্রত্যক গৃহস্থের শ্বরণ রাখা কর্তব্য।

এখন বিশেব বিবেচনার কথা এই বে, গোচার বা হগ্ধ-বাবসায় পরিবৃদ্ধিত মাত্রায় অম্বদেশে প্রবৃত্তিত করিতে হইলে, কোন্ জাতীয় সোনির্বাচন করা কর্ত্তব্য এবং কি উপায়েই বা তাহা সংগ্রহ করা যায়।
এক্ষেত্রে আমাদের কর্ত্তন্য যে, স্থানীয় গো-জাতির মধ্যে (local breed)
বেগুলি প্রচুর হ্রবতী, তাহাদের ক্রের ছারা সংগ্রহ করা কর্ত্তব্য; অথবা নিজ
গোলালার গাভী উৎপাদন করাই প্রেরম্বর। প্রথম, ক্রেরারা ভাল গাছী
মংগ্রহ করা বারসাপেক; কিন্তু ইহার ছারা আন পালের ভাল ভাল
গাজীগুলি ডেরারিতে অলকালমধ্যে সংগৃহীত হইরা খাকে।
বিত্তীর, উৎপাদন ছারা ভাল গাভীর ডেরারিতে বংগ্রহ হইতে পারে বটে,
কিন্তু ইহা লমবনাপেক। অন্যানের বেনে পাক্ষাত্যদেশের মত ক্রোর
ক্রিপ্রাত ক্রিনারি" কিন্তু পনীরের ক্রেগনা (Cheese factory)

বিশিয়া গো-স্থমারি (Cow census) রাথিবার নিরমন্ত নাই। আমেরিকার "হোড়ের ডেয়ারিম্যান্" নামক পত্রিকাটি এই অভাব বিশেবল্প দ্র:
করিয়াছে। ঐ পত্রিকায় গোরালাদের জাতব্য সকল বিষয় বিশদরূপে:
সামারণের জন্ম প্রকাশিত হইয়া থাকে। আমাদের দেশে এত গোরালার বাস, কিন্তু তাহাদের ব্যবসায়ের সাহায্যকারী একথানিও পত্রিকা নাই ।
ইহা অপেকা আমাদের জাতীয় অবনতি আর কি হইতে পারে । অথচ:
আমাদের প্রত্যেকু বাড়ীতে গোহ্য সকাল ও বৈকাল উভয় সন্ধ্যায়-

ক্রীত গাভীর সহিত পালে সংক্রামক রোগের অবলীলার **अत्यामत हात जेवक हरेया शास्त्र । जामात वित्यहनाय (गा-भागन अवरे** হয়ব্যবদায় ("Production of dairy products and dairy stock" should be made the foundation of the business.") application হুইলেই ভাল হয়। গো-পাল তৈয়ার করাই আমার মতে ক্রয় অপেকা ভাল। কারণ আমাদের ভারতবর্ষ পরিবের দেশ। তথ্যবতী গরুর পাল নিজ ইচ্ছামত ২া৪ বংসরের মধ্যে তৈরার করিরা লওরাই ভাল এবং সমীচীন। এই সকল অত্যাবশ্যক বিষয়গুলি সম্যক বিবেচনা না করিয়া আমাদের দেশের ২া৪ জন অনভিজ্ঞ মঁহাশয় কলিকাতার আসর এবং উপকণ্ঠ প্রদেশে গোচন্ম ব্যবসায় আরম্ভ করিয়া বিশেষ ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াছেন। মনের মত ভাল গোপাল প্রস্তুত করিতে হইলে. ছগ্ধবতী গাডীগণকে পাল হুটতে পরিহার এবং ভাল ঘাঁড়ের সাহায্যে চগ্ধবতী গাভী বা তাহাদের মন্ত্রীনগণের গর্ভে চথাবতী সন্তান উৎপাদন করাই সর্বশ্রেষ্ঠ বিধি। ক্রমবারা গাভীর পাল সংগ্রহের প্রণালীতে উপকার হইলেও তাহাতে এক বিষয় অন্তরার যে, টিউবারকিউলোসিন এবং গর্ভত্যাগ (abortion) রোগ হছ खेर: नीत्रात गृहभारन व्यानीं इहेबा व्यमतिष इहेवात्र महायना। त्महे बंब, সংক্রোরক রোগের প্রদার নিবারণের নিমিত বিশেব সাবধান হওয়া কর্তব্য

এবং tuberculin টেই ্ষারা নির্ণয় করিয়া পরে গাভী থরিদ করা উচিত। বিলাতি গাভীর মধ্যে আর্শারার, কেরী, শটহর্ণ, পোলড, নর্থ, স্ফোক্ আর্সি, আল্ডার্লি, কেরী, বৃট্নি, ফ্রিজ্লাডি, হোল্স্টীন্, ওল্ডেন্বার্গ, ডিভন্ প্রভৃতি জাভীর গাভীগণ ডেয়ারি গাভী বলিয়া বিব্যাত, তাহা পুন: পুন: আমি এই পুস্তকে বলিয়াছি। পরিবর্জিত মাত্রার হয় ব্যবনারীগণ ইহাদিগকে জলবায়ু মানাইয়া ও সহাইয়া অত্রদেশে পালে বাবিবার ব্যবহা করিলে ভাল হয়।

হথ রেজেরী রাখার ব্যবস্থা করা প্রত্যেক হথবাবদায়ীর কর্তব্য। তাহা হইলে বেশ জানা যাইতে পারিবে বে, কোন্ গাভী লাভদারিকা এবং কোন্টি লোকসান-বর্জক। এই সকল বিষয় আমরা দেখি না বলিয়া আমাদের দেশে গো-ব্যবসার, গো-চাব, হথ্ব-ব্যবসার প্রভৃতিতে লোকসান হইরা থাকে।

আধিকত হথা testing আমাদের দেশে প্রচলিত করা কর্তব্য। ইহার
ভারা ব্যবসারীগণের তঞ্চকতা গৃত হয়। অর্থাৎ গাঁটী হথা বলিরা মিপ্রিত
ভারাপ হথা বাজারে অবাধে বিক্রীত হইতে পারে না। বিলাতে Sale
of Durgs and Food Acts এর থারার মতে হীন বা জলমিপ্রিত হথা
ক্রাকাশ্য বাজারে গাঁটী বলিরা বিক্রের করিলে দণ্ডনীর হইতে হয়।
আমাদেব দেশে কর্ণোরেশন বা মিউনিসিপ্যাল অধিকারের ভিতর এইরপ
নিরম না থাকার অধিবাসীগণকে পরসা দিরা জল থাইতে হয়। ইহার
প্রতিকার আন্ত হওয়া কর্তব্য। আমাদের দেশে দ্বিত প্রক্রিণীর জল
খাল্যছথ্যে বিপ্রিত হওয়ার অনেক প্রকার করিন রোগের উৎপত্তির
কারণ হইরা থাকে ।' সেইকল্প কলিকাতা প্রভৃতি বৃহৎ নগরের অধিবাসীদিপ্রের মধ্যে ছরারোগ্য রোগের প্রান্তর্ভাব এত অধিক বিশেষতঃ
ভালস্ক্যর সংখ্যা ভাহাদের মধ্যে এত অধিক পরিদৃষ্ট হটুয়া থাকে।

গোশালাঙলি খুব পরিকার পরিকার রাশ্য কর্তব্য, তাহা আমি পুর্বেই

ৰলিয়াছি। গোশালার উত্তাপ ৫৬ হইজে ৬০ ডিগ্রী পর্যান্ত সদাই রক্ষিত্ত হওরা কর্ত্তব্য। তাহা হইলে গাভীদের স্বাস্থ্যের কোন হানি বা তারতম্য পরিদৃষ্ট হয় না।

আমাদের মূলধন নাই বলিয়া আমরা হগ্ধব্যবসায় লাভজনকরপে চালাইতে পারি না। অধিকন্ত আমাদের এ বিষয়ে শিক্ষার অভাব বড়ই षष्टे হয়। চগ্ধবাবসায় লাভজনকরপে চালাইতে হুইলে করেকটি বিবরের প্রতি আমাদের খুব তীব্রদৃষ্টি এবং মনোবোগ রাধা কর্তব্য। ১। গাড়ী-গুলির গোরাল-ঘর, ত্থাদোহন-পাত্র, গোখাদ্য ইত্যাদি সবই পরিষার পরিচ্ছন রাখিবে। এ বিষয়ে বোর্ড অব এগ্রিকালচারের প্রকাশিত পত্রিকার দ্বাদশ ভাগের ১৩৬ পূষ্ঠার আদেশগুলি বিশেষ বছসহকারে পরি-পাল্য। অপরিকার বায়তে বহুবিধ কীটাণু (bacilli) ঝুলিতে থাকে। ছগ্ধ দেই অপরিষ্কার বায়ুতে রাখিলে বাতাদের কীটাণু ছথ্গে প্রবেশনাভ করিয়া অলসময়মধ্যে পরিবদ্ধিত হইয়া টাটকা হথকে শীভ নষ্ট করিয়া থাকে। সেই জন্ত এই কীটাণুগুলির ধ্বংস সাধন করিলে এবং হগ্ন কম temperatureএ রাখিলে অধিককাল অবিক্লন্ত অবস্থায় থাকিবে, ইহা বৈজ্ঞানিক সিদ্ধান্ত। এ বিষয়ে ১২ ভাগ্ন Board of Agriculture পত্তিকার J. F. Blackshaw সাহেব সবিশেষ আলোচনা করিয়াছেন। এ স্থানে John Oliver সাহেবের "Milk, Cheese and Butter," Ecklesএর "Dairy Cattle and Milk-production," অধ্যাপক क्रिनमारनत "Book of the Dairy" अवः "Book of the Farm," R. S. Burnas "Dairy Pigs and Poultry", J. P. Sheldon এর "British Dairying" প্রভৃতি প্রকৃত্বি বিক্রে डेनरवाती बनिज्ञा द्वाथ रव ।



ठ्विंदिश शतिष्ट्रम।

ডেয়ারি ফার্মিংএ কলের প্রয়োজনীয়তা।

ডেয়ারি ফার্মিং লাভজনকরপে আমাদের দেশে চালাইতে ছইলে, কতকগুলি কলকারখানার প্রয়োজন খুবই হইরা থাকে। গোজাতির থাদা-বিচার অধ্যারের প্রারম্ভেই ২০০টার উল্লেখনাত্র করা, হইয়াছে। এই অধ্যারে তাহার সবিশেষ আলোচনা করিব।

গোরুর শিং-কাটা ছুরী সময়ে সময়ে পোলড্ য়াঁড় বা গাভী করিবার জানা প্রয়োজন হয়। সন্যঃজাত গো-শাবকের শুলোনগম বন্ধ করিয়া পোলড্ গাভী প্রস্তুতের উপায় পূর্বের্ব সকরগাভী উৎপাদন পর্যায়ের শেষ-ভাগে লিখিত হইয়াছে। এইরূপ ছুরী H. H. Brown, Manufacturing Co., Decatur, Illionois, U. S., Amricaর ঠিকানায় পাঠাইলে পাওয়া ষাইবে। শাস্য অর্কুর্ণ করার জাঁতাকল, গোধাদা ফুটান বয়লায়, গোলোহন-পাত্র, গোরু বাধিবার স্টান্চিয়ন, মাধনতোলা কল, গোকুলের ওষধ, ও প্রস্ব করাইবার যন্ত্রাদি বিজ্ঞোর ঠিকানা, আমাকে টিকিটসহ পত্র লিখিলে, জানা যাইতে পারিবে, অথবা নিয়লিখিত পরিছেদ পাঠ করিলে জানা যাইবে।

অধিকসংখ্যক গাভী রাবিলে, তাহাদের খাল্যসামগ্রী সংগ্রহ করা
কিছু কঠিন হইরা উঠে। সেই জন্য সাইলোতে ঘাস, লতাপাতা ও
অপরাপর গোথাল্য-সামগ্রী শুক করিয়া সংগ্রহ করিয়া রাথা কর্ত্তবা।
এইগুলি কলের সাহায্যে কার্টিয়া জাব প্রস্তুত করিতে হইলে অবশাই
কলের প্রয়োজন। এখন বিচক্ষণ মিত্রবারা রুবকেব দেখা কর্ত্তবা বে,
কোন কোন কলে কি কি কাজ অন্নবান্নে সাধিত হইতে পারে এবং জী
লকল কল কোথার পাওয়া বার। ক্র্যিকার্যোপযোঁগী যন্ত্রাদি প্রাক্তির

Simmons Hardware Co., N. York, U.S. A., Cutaway Harrow Co., 108 Main Street, Higganum, Connecticut, U. S. A.त निकं পত দিলে পাওঁয়া ঘাইবে। Spray pumps, Deep well pumps, Artisan well ইত্যাদির জন্য W. and B. Douglas of 206 William Street, Middletown, Conn U.S. A.त निक्छ निधित एक वा एक्का ज माम श्री ताथिवात यद्यामि, कुनात (cooler). refrigerator, milk-separator প্রভৃতি সন্তাদরে পাওয়া যাইবে। খালাসামগ্রী মিশাইয়া দিবার জনা Afton farm feed-mixer প্রভৃতি যাত্রের জন্ত Yardley Mufg Co., Box D 80, Yardley Pa. U. S. A.র নিকট বিখিবে সবিশেষ অনুসন্ধান পাওয়া যাইবে : গোধাত জাঁতায় তাঙ্গিবার কলের আবশুক হইলে The Orvile Simpson Co. of 1240 Knowlton Street, Cincinnate. Ohio, U. S. A.র নিকটে লিখিলে এবং ডাক্তারি যন্তের আবশ্রক ছইলে G. P. Pilling and Son Co., 2212 Arch Street অথব The Moore Bros. of Albany, N. Y., Philadelphia, Pa. U. S. A. পত্র দিলে সব অবগত হইতে পারা ঘাইবে।

পাঠক পাঠিকার অবগতির জন্ম জার ছই চারিট বিশাতি এবং স্থামেরিকান্ ফারমের ঠিকানা দিয়া এই পরিচ্ছেদ শেষ করিব।

গোহন্দ নৈনিক ওলনের কল লগুনের "The Dairy Supply Co" র কৃত Sandringham Milk-Reckoner" উক্ত কোশানীকে শত্র লিখিলে স্থবিধা-দরে পাওয়া যাইতে পারে। এইরপ অনেক ঠিকানা দেওরা বাইতে পারে। স্থানাভাবে তাহা দিতে অক্ষম হইলাম। যাহার আবশ্রক হর, তিনি আমাকে পোষ্টেজ সহ পত্র দিলে বা সাক্ষাৎ করিলে সব জানিতে পারিবেন। আমার ঠিকানা—১৮ নং, রসারোড করিলে সব জানিতে পারিবেন। আমার ঠিকানা—১৮ নং, রসারোড করি, কর্মনীপুর; বা. "উমেন্সক", শত্রাগঞ্জ, গরা।

গোজাতির থালাবিচার প্রসঙ্গে আমি পূর্বেই বলিরাছি বে চন্ধবতী গাভীকে এইরূপ ধানাসামগ্রী এইরূপ ভাবে দেওয়া কর্ত্তবা ৰাহাতে আও পরিপাক হর, গাভীর বল ও পৃষ্টিসাধন করে এবং সেই জন্য অধিক পরিমাণে চথদাত্রী হয়। তাহার জন্য জাব বা খড় ছোট ছোট করিয়া কাটিয়া দেওয়া প্রয়োজন। পরিবর্দ্ধিত মাত্রায় ছগ্ধ ৰাবদা করিতে হইলে অধিকসংখ্যক গাভী রাখা প্ররোজন এবং ভাহা-দিগের জনা থাদ্যের স্থব্যবস্থার জন্য কলের সাহায়্যে থক্কইত্যাদি কাটিবার প্রয়োজন হইরা থাকে। তব্দন্য Feed-Cookerএর প্রয়োজন হর। তাহার জন্য Lewis Manufacturing Co., Box O, Cortland N. Y: The Baur Bros Co., Box 428, Springfield, Ohio, U. S. A.; A. W. Straub Co., Depôt Y 3729, Filbert St. Phila, Pa: Batavia. Illionois, U. S. A. ঠিকানায় পত্ৰ লিখিলে সকল নিদর্শন পাওয়া বাইবে। ছগ্পাত্র এবং ছগ্প রাখিবার ও নাডিবার সকল মন্ত্র ও পাত্র সম্বন্ধে নিম্নলিখিত আমেরিকান ব্যবসায়ীগণকে পত্র নিথিতে সমস্তই জানা বাইবে :---

Davies Milk Manufacturing Co., North Chicago, Illionois, [] २३६-२२२ North Clinton Street, Chicago, Illionois, Empire Cream-Separator Co., Bloomfield N. J.; A. H. Reid, Creamery and Dairy Supply Co. 69th, St., and Haverford Ave, Phila. Pa; Moore Bros., Albany N. Y.; The Sharples Separator Co, West Chester, Pa; Dairymen's Supply Co., Lansdowne, Pa, U. S. A; Dairy Sopply Co. London.

হশ্বলোহনের কল নিরণিখিত ফারমে নিখিলে গ্রাওয়া বার :---P.
R. Fleming and Co., 16 Graham Square, Glasgow,

Scotland; Sharples, Separator Co's Mechanical Milker, West Chester, Pa, U. S. A.; B. L. K. Milkers D. H., Burrell & Co., 503 Albany Street, Little Fall, N. Y., S. U. A; ম্যাসপোর ফারমে Lawrence Kennedy (Universal Milking-machine) নামক কল পাওরা যায়। গোখাদ্য মিশাইবার জন্য বা ধইল ওঁড়াইবার জন্য নিম্নলিথিত 'masticator' নামক কল বিশেষ উপযোগী। তাহা কর্ক নগরের Mackenzie and Sons, Cork, Ireland,—এই ঠিকানায় পত্র লিথিলে পাওয়া যায়। বিলাতেও অনেক দোকান আছে। তাহাদের পৃথক নাম দেওয়া অসম্ভব; কাজেই বিরত হইলাম।



शक्षविश्य शतिरुष्ट्रम ।

ছুশ্ধবৰ্দ্ধক ঔষধ।

ছথের প্রাচুর্য্যেই কুষকের লাভ তাহা আর কাহাকেও পুথক করিয়া বলিয়া দিতে হইবে না। এই জন্মই গোঞাতির উন্নতিয়াধনের চেষ্টা ও আলোচনা বেদের কাল হইতে আজ পর্যান্ত সকল দেশেই বিশেষতঃ ভারতবর্ষে চলিয়া আসিতেছে। পরাশরঞ্চমি এই বিষয় সম্যক আলোচনা করিয়া গিয়াছেন। দ্বাপরযুগে গোকুলের বান্দাদি গোপরাজ্বগণ ইহার যথেষ্ট আলোচনা করিয়া পরাকার্চা সাধন করিয়া গিয়াছেন ৷ ভগবান কৃষ্ণ একজন প্রধান গোপালক ছিলেন। আমাদের যেমন চুগ্ধবতী গাভীর প্রয়োজন, তেমনি বলিষ্ঠ দৃঢ়পেশীযুক্ত গোশকট-বহন ও কুয়া হইতে মোটযোগে জ্বল-উত্তোলনক্ষম বলদের প্রয়োজন দেখা যায়। সেই জন্য কেহ কেহ বিলাতে বুহৎ ঘাঁড়ের যোগে সংকর (ক্রশ)বংস উৎপাদনের পক্ষপাতী। পরেশবাবু প্রভৃতি আমাদের দেশের গোতত্ত্বিদগণ ইহার বড় প্রতিপোষক নহেন। আমার মতের সহিত কিন্তু এ বিষয়ে অনৈক্য হইতেছে। হগ্নদায়িকাশক্তি পরিবর্দ্ধনার্থ বৈজিক ক্রিয়ার বিলাতি যাঁডের সাহায্য গ্রহণ আমার মতে সমীচীন বলিয়া বোধ হয়। যে সকল গাভী रेमनवकान, इटेर्ड जान थारेर्ड ना পारेब्राइ ଓ गाराबा अबवग्रस গভিণী হয়, যাহাদের বাঁট ছোট ও বাঁটের ছিত্র বা ধার সরু এবং যাহাদের মোড় বা পালাম অপেকাকৃত ছোট, তাহাদের প্রায় প্রচুর ্ৰহন্ধ হয় না। তবে ইহাৰ বাদ বা exceptionও আছে। কোন ঁকোন ছোট বা 'মৌ-পালামে' দেশী গাভীকে প্রচুর ছগ্ধ দিতে দেখা গিয়াছে। বিশেষ যত্ন করিলে ও রীতিমত খাওয়াইলে কোন কোন গাভীর বিতীয় বিয়ানে হগ্ধ বেশী হয়। গাভীর অধিক বয়নে গভিনী ্ছওরাই ভাল। যে গাভীর গাতের চর্ম আঁট এবং দেছ ক্সা, তাহার হব বড় বেশী হন্ত্র না। সেই জন্য ক্লষক চিলা-চর্ম্মবিশিষ্ট, স্থডৌল, বড় ইশ কুচান্-বিশিষ্ট, সুড়ৌপেটা গাভী মনোনীত করিবে। ইহাতে কদাচ ঠিকিতে হইবে না। 'মর্দানা'-গড়নবিশিষ্ট, দেখিতে যাঁড়ের মত, হাড় ও শিং মোটা, অধিক মাংসল গাভী কদাচ হগ্ধবতী হন্ত্র না। গলা সরু, পিছন ভারী, শিঙ্ সরু ও বাঁকা, পশ্চাং বা সন্মুথের পা অপেক্ষাক্তত বড় এবং মোটা, চাটিম কলার মত লম্বা ধারাল বাঁট বড় পালামযুক্ত, বক্ষপৃষ্ঠ, দীর্ঘ থোৱা বা লোমগুচ্ছ-পুক্তবিশিষ্ট এবং স্ক্ষলোমযুক্তা গাভীই প্রচুর হগ্ধবতী ইইনা থাকে।

গোয়ালার বাড়ীতে যে গাভী দিনে আট সের ছগ্ধ দেয়, সেই গাভী গৃহত্তের বাড়ীতে ৩৷৪ সেরের অধিক দেয় না ; ইহার কারণ কি p এরপ গরুকে গুধচোরা গাভী বলে। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে গাভীকে ত্বচোরা না বলিয়া গুহস্থকে গাভীর 'থোরাকী-চোরা' গুহস্থ বলা, উচিত। গোয়ালার স্থায় কোন গৃহস্থ তেমন ভাল করিয়া খাইতেও নেয় ना वा यक्क करत ना। य क्यमिन एथ मिट क्यमिनर व्यापना गरूक ষৎসামান্য যত্ন করি। তারপর ভাগাড়ে চরিতে দিই, শুদ্ধ থড়ের আটি मिनास्ड किनिया मिटे. वा व्यर्थत वर्ष व्यनाचेन इटेरन वर्धवा निस्क बा লোকলজ্জায় বা সমাজের অত্যাচারে তাহাু যদি স্বয়ং না পারি তবে অপরের নাম করিয়া কসাইকে অবাধে বেচিয়া ফেলি। এই ত গেল আমাদের কর্ত্তব্য এবং ধর্মজ্ঞান !!! যে জন্ম হইতে মৃত্যু পর্যান্ত জন্ম দিয়া আমাদের মাতুষ করিল, বিশাল সংসারে ছাড়িয়া দিল, এমন মাতৃত্বানীয়া গো-মাতাকে আমরা, অকুতজ্ঞ পাধণ্ডের মত বিশ্বাস্থাতকতা করিয়া কি मर्कानांग कतिनाम, मश्रमग्र हिन्सू शार्ठिक विरवहना कक्रन एमथि। এट्न পাপে ভারত অধঃপাতে কেন না/যাইবে বলুন দেখি ?

লোকে কথার বলে 'গোরুর বাঁটে হব নহে, গোরুর মুখে হধ'। প্রক্তে যত খাইতে দিবে ছত হব পাইবে। হব বেশী করিবার প্রধান উপায় গোরুকে অধিক করিয়া তাহার আবশ্যকমত থাইতে দিবে। এ বিষয়ে পূর্বে সবিশেষ বিবৃত হুইরাছে। আবশ্যকের উপর বেশী থাইতে দিলে অজ্ঞার্ণতা আনিয়া অনেক প্রকার রোগ পালে আনিতে দেখা গিয়াছে। সেই জন্য তাহা পরিহার্য্য। গাভীকে প্রচুর থাদ্য নিয়মিত দিবে; ইহার অর্থ ইহা নহে বে, আবশ্যকেরও উপর, নষ্ট করিবার জন্য—থাদ্য দিবে এবং তাহা হুইলেই বৃঝি কেঁড়েভরা ছগ্ধ পাইবে। ছগ্ধবতী গাভীকে তাহার স্বাস্থ্য দেখিয়া আবশ্যকমত প্রচুর ছগ্ধবর্জক থাদ্য দিবে। আমরা এই সকল মূলনিয়মগুলি (fundamental and rudimental rules and principles of management) অপরিপালন করি বলিয়া সকল কাজে লোকসান সহ্য করিয়া গাকি।

থাইতে দিলে যে গরুর হুধ অধিক হয়, ইহা সকলেই জানেন; কিন্তু কয়জন গৃহস্থ তাঁহার গোরুকে প্রাণ ভরিয়া থাইতে দেন ? গোরু কোন্ জিনিস থাইতে ভারবাসে, কোন্ কোন্ ক্রবা অধিক থাওয়াইলে গোরুর অধিক উপকার হয়, অধিক হুধ হয়, ইহাই বা কয় জান জানেন ? অধিক হুধ হইবে বলিয়া কেবল থইল আর থড়ই অধিক পরিমাণে অনেকে থাওয়াইয়া থাকেন; অথবা কেহ অধিক ডাইল-সিদ্ধ থাওয়ান। বাস্তবিক এরপ করিয়া অধিক থাওয়াইলে অধিক হুধ হয় না। পেট ভরিয়া গোরুকে যেমন থাইতে দিবে. তেমনি কিরুপ কি জিনিস খাইতে দিতে হুইবে, তাহাও বিবেচনা করা উচিত। গোরুর খাদ্য-পর্যায়ে এ বিবয় বিয়তরপে আলোচিত হইয়াছে। গোরুকে পাঁচসের ডাইল থাওয়াইলে তাহার যত হুয় দিবার শক্তি হইবে, আধ্সের সিদ্ধ মাষকলাই, আধ্সের ভাতের মাড়, একপোয়া ভেলীগুড় ও একতোলা পিঁপুলের ভাতা এবং এক ছটাক লবণ একত্রে মিশাইয়া প্রতিদিন সন্ধ্যার সময় দিন কডক

থাইতে দিলে গাভীর পেটের পীড়ার ও শরীরের রক্ত পরিষ্কার সম্বন্ধেও স্বিশেষ উপকার হইবে। পুনশ্চ, বিবেচক ক্লয়ক যদি আকের শিক্ত এক ছটাক বাঁটিয়া তাহার সহিত আধসের কাঁজী মিশাইয়া জাবের সহিত মুড়কীমাথা করিয়া থাইতে দেয়, তাহা হইলে গোকর ছগ্ধ প্রচুর বৃদ্ধি হয়। বাঁশপাতা-সিদ্ধ জল খাওয়াইলে বা তাহাতে জাব মাথাইয়া দিলেও চথ-দায়িকা শক্তি অত্যন্ত বৰ্দ্ধিত হয়। ঐ জল শুধু পান করাই ভাল, কিন্ত তাহার সহিত আধ্রুটাক জোরান এবং কিছু আকের গুড় মিশাইরা দিলে আরও ভাল হয়। রেডির কচি কচি ডগা ২।১০টা, জলে সিদ্ধ করিয়া, ঐ জন খাওয়াইলে, ছগ্ধ খুব বেশী হয়। কিম্বা সিদ্ধ পাতা ২।৪টা বা ঐ গাছের পাতা বি দিয়া আগুনে সেঁকিয়া পালানের উপর কাপড় দিয়া বাঁধিয়া রাখিলে, এবং কিছুক্ঞপরে থুলিয়া হগ্ধ ছহিতে আরম্ভ ক্রিলে, অধিক হগ্ধ পাণ্ডয়া যায়। পাতা অধিক গ্রম না থাকে এবং গাঙীর কট না হয়, সে দিকে বিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন। 🔏 সদ্ধ রেড়ির পাতা ন্ত্রীলোকের স্তনে বাঁধিলেও হগ্ধ অধিক হয়; গাভীকে পেঁপে বা লাউ-যিদ্ধ থাওয়াইলেও হ্র বেশী হয়। কাপাস তুলার বীজ থাওয়াইলে এবং দোহনের পূর্ব্বে ঐ ভিজান জলে পালান ধুইরা দিয়া দোহন করিলে প্রচুর হুত্ব পাওয়া যায়। প্রসবের ১২।১৪ দিন পর হইতে চাউল বা খুদ-সিজের সহিত লাউ কুচি করিয়া একত্রে সিদ্ধ করিয়া, কিশা খেদারির ডাইল ভিঙ্গাইয়া থাওয়াইলে গাভীর হুগ্ধ বেশী হয়। তেঁতুলের আটা এক আনা পরিষাণ কিবা পেঁপে-পাতা বা পেঁপেফল দিন কভক খাওয়াইলেও হগ্ধ বেশী হয়। পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পাওয়া গিয়াছে, প্রচুর কাঁচা খাস দিলেও ছগ্ধ বৃদ্ধি হয়। এই সকল পরীক্ষিত মৃষ্টিখোণের সকে দক্ষে নিয়মিত এবং আবশ্যক্ষত আহার এবং বিশুদ্ধ জল অধিক পরিমাণে পৃথকুপাত্রে নিয়মিত সময়ে থাওয়াইবে। अইল কিন্তা থড়ের সহিত জল মিশাইরা না দিরা সকালে ও বিকালে একটি পরিষ্ণার পারে

বা বাল্তীতে ৮।১০ দের বিশুদ্ধ জল লবণ সংযোগ করিয়া আপন ইচ্ছামত থাইতে দিবে। ছগ্ধ-দোহনের স্থানে অধিক লোক কি অপবিচিত লোক কিম্বা কুকুব অথবা বিড়াল কিম্বা ঘোড়া থাকিলে অধিক ছগ্ধ হয় না, তাহা গৃহস্থ অবণ রাখিবেন।

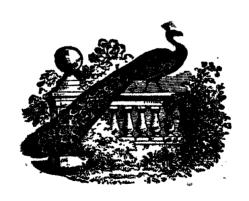
গো-হগ্ধ বৃদ্ধি করিবার উপায়—(১) মাষকলাই সিদ্ধ আধসের, ভেলি শুড় একপোয়া, পিপুলের শুঁড়া একতোলা ও লবণ প্রুক ছটাক, একত্র মিশ্রিত করতঃ প্রতি সন্ধায় কিয়দিন উপযুগিবি গাভীকে খাওয়াইলে, গাভীব হগ্নের পরিমাণ অত্যন্ত বৃদ্ধি পায়।

- ' (२) বাশপাতা জলে সিদ্ধ কবিয়া সেই জল থাওয়াইয়া দিলে গাভীর তথ বেশী হয়; সেই জলের সহিত জোয়ান আধ ছটাক ও কিছু ইক্ষ-গুড় মিশাইয়া দিলে অধিকতর স্কফল হয়।
- (৩) রেজির কচি পাতা জলে সিদ্ধ করিয়া সেই জল খাওয়াইলে ছধ বৃদ্ধি পায়। গাভীর স্তনে ছধ দোহন করিবার কিছুক্ষণ পূর্বের গরম বেজির পাতা চাপা দিয়া ও নেকড়া বাঁধিয়া বাথিয়া একটু পবে সেগুলি খুলিয়া ফেলিয়া ছগ্ধ দোহন করিলে ছগ্ধ পরিমাণে প্রায়ই অধিক হয়; অবশ্য পাতা যেন বেশী গরম না হয়।
- (৪) থেঁসারির ডাইল জলে ভিজাইয়া গাভীকে শাইতে দিলে তথ্য বৃদ্ধি সর। প্রত্যত এক আনা পবিমাণ ভেঁতুলের আটা থাওয়াইলেও উপরোক্ত ফল পাওয়া যার। ভেঁতুলের আটা ৮।১০ দিন খাওয়াইতে হয়।
- (৫) যোরান অর্দ্ধ ছটাক, ইকুণ্ডড় অর্দ্ধপোরা, বাঁশের পাতা জলে সিদ্ধ করিয়া তাহার সহিত উক্ত ছই দ্রব্য মিশাইরা প্রভাহ থাওয়াইলে, ত্রন্ধ পরিমাণে বেশী হয়।

বিলাত এবং আমেরিকার গোয়ালাগণ নিয়লিখিত হগ্ধবর্দ্ধক ঔবধ
ত্বপ্পবতী গাভীকে খাওয়াইয়া থাকেন এবং ইহার হারা বিশেষ গুভফলও
ভাঁহারা প্রাপ্ত ইইয়া থাকেন।

নাইটেট্ পোটাশিয়ম্	> 3	অংশ
कर्षिती (alum)	>	,,
Sublimed sulpher (গন্ধ)	>	,,
থড়ি (prepared chalk)	>	29
White bole	2	,,
Anise (মৌরী)	> 0	,,
কেনেৰ (Fennel)	>•	,,
লবণ	> 0	,,
লাল ক্লোভার (Red clover)	e	,,

মিঃ হেগার বলেন, এইগুলি চূর্ণ করিয়া মিশাইয়া সকালে এবং বৈকালে জাবের সহিত ২।১ মৃষ্টি দিলে, চুগ্নের মাত্রা ধুব বৃদ্ধি হইয়া থাকে।



ষড়বিংশ পরিচ্ছেদ।

छ्य ।

আমাদেব দেশে হ্র্য্ম হইতে অধিকাংশ থাদ্যসামগ্রী প্রন্থত হইয়া থাকে। হ্র্য্ম হইতে ক্ষীর, ছানা মাথম, ননী, রসগোলা, গেঁড়া ও ছানাবড়া, প্রভৃতি বছবিণ উপাদের পৃষ্টিকারক ও গুক্রবর্দ্ধক থাদ্যসামগ্রী প্রন্থত হইয়া থাকে। আরুর্বেদ-শাস্ত্রে ছয়ের বিস্তর গুণের বিষয় উল্লেখ আছে। দেবেন্দ্রবাব্র থাদ্যবিচার, ডাঃ ওলালেসের পৃত্তক; ম্যাক্ডোনান্ড, সাহেবের "কার্ম্ ম্যানেলমেন্ট," ডাঃ এলেনের এবং ক্ষট্ ভনক্যান্ সাহেবের পৃত্তকসমূহ পাঠ করিলে, এবিষয়ে সবিশেষ অভিক্রতা লাভ করা যাইতে পারিবে। মহুযোর প্রায় সকল রোগেই বলরক্ষার ক্রন্থ প্রধানপথ্যক্রপে প্রদন্ত হইরা থাকে। হয়ে শরীর-পো যণোপ্রমাসী দ্রব্য বে যথেই আছে, তাহা সকল দেশী এবং ইংরাজী চিকিৎসকগণই একবাক্যে স্বীকার করিয়াছেন। ইংরাজীমতে হ্র্য্ম বনকারক, দ্রিগ্ধকারক এবং পৃষ্টিকারক-গুলসংযুক্ত। ইহাতে কি কি উপাদান আছে, তাহা নিয়ে প্রদন্ত ইইল। একশত পাউণ্ড হথ্যে নিয়লিথিত উপাদানগুলি আছে:—

জল		, •••	৮৭'১৭ হইতে ৮৭'৭৫		
ननी		•••	৩৽২৫	,,	9.8 *
কেসিন	1	***	₹ * 0	"	a.8°
এল্বুমিন		***	*8¢	,	.9.
চিনি		•••	8'68	"	87.
লবণ	*	•••	.4>		.44

ইংরাজী-মতে পুরাতন অভিসার, হিটিরিয়া, বাত ইত্যাদি রোগে ক্রম—আহার ও ওবধ হরের কার্য্য করে। মধুমেহ রোগে হয় খুব

উপকারক। বছমূত্র কোণেও ছগ্ধ কম উপকারক নহে। ভাবপ্রকাশ, হুশ্রুতাদি গ্রন্থে গাভীর বর্ণভেদে ছগ্ধের গুণের ইতরবিশেষের উল্লেখ আছে। কুঞ্চবর্ণা গাভীর ছগ্ধ বায়ুনাশক, সেইজন্ত আমাদের দেশে কুঞ্চাগাভীর এত আদর; পীতবর্ণার ছগ্ধ বাতপিত্তনাশক; বেতবর্ণার ছগ্ধ গুরুপাক ও শ্লেমাকর, এবং রক্তবর্ণা গাভীর ছগ্ধ বায়ুনাশক।

এখন দেখা কর্ত্তব্য যে, আমাদের দেশে আমেরিকা ও বিলাতাদি দেশের মত বড় বড় সহরে হগ্নের খরচ ক্রমণঃ দিন দিন বাড়িতেছে। সেই কারণে কি বৈজ্ঞানিক উপারে কাঁচা হয় বেশি সময় ভাল অবস্থায় রাখা য়ায়, সে বিষয়ে শিক্ষা লাভ করা কর্ত্তব্য। তাহা ক্রমশঃ এই পর্যায়ে বিবৃত্ত হইবে। তাহার পর আমাদের দেখা কর্ত্তব্য যে, কি উপারে ভারতীর গোজাতির উন্নতি সাধন করা যাইতে পারে। এ বিষয়ও বথাসন্তব পুরুষ বিশদরূপে বিবৃত হইবে। গৃহস্ত দোহনপাত্র-পরিকার রামীর প্রতি সবিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন। পাত্রগুলি এনামেল্ বা দন্তার হইলেই ভাল হয়। তামার কলাচ হওয়া উচিত নহে। যদি ভাষার পাত্রে হয় রাখা বা দোহন করা যায়, তাহা হইলে সেইগুলি খুব ভালারপ কলাই করিয়া তাহার পর ব্যবহার ক্রয়া কর্ত্ব্য।

হৃত্ব জ্ঞমাইয়া টিনে করিয়া বাজারে বিক্রন্ন হইয়া থাকে। এইরূপ
অধিকাংশ হৃত্বকে "কন্ডেন্সড্ মির্ক" বলে। ইহা প্রারহ "ফুইশ" বা "নেশ্লির ছগ্ন"। আমাদের দেশে নদীয়া হইতে প্রস্তুত জ্ঞমা ছগ্ন 'দেখিয়াছি; কিন্তু তাহা অধিক দিন থাকে না, যেহেডু ইহা বৈজ্ঞানিক উপারে প্রস্তুত নহে। আমেরিকার ইলিওনইস্ প্রদেশে এল্গীন নগরে, নিউইরর্কে ব্রন্থার কোম্পানির, বিলাতে রেডিং নগরে "British Dairy Instituted," মিঃ টিশ্ভেলের "হলাও পার্ক ডেয়ারি"তে বিলাতের হলাও হাউশের নিকট, এবং ডেকার ষ্টাট, ওরেইমিন্তার, লওনক্ত্র এই বিদ্যা এই সকল স্থান হইতে শিখা যাইতে পারে। শেল্ডনের "Dairy Farming" নামক পৃস্তকের ৩০৪ পৃষ্ঠা যত্নে পাঠ করিলেও এই বিষয়ে সবিশেষ অভিক্রতা লাভ করা যাইতে পারে। হগ্ধ নিম্নলিখিতরূপ জমাইতে পারা যায়। ইহা শিক্ষা করিতে হইলে স্কুইট্জারলাগু প্রদেশস্থ জগ্ হুদের তীরস্থিত এঙ্গুলোস্ট্রশ্ কোম্পানির কারথানা পরিদর্শন করা একান্ত কর্ত্তব্য।

জমাট ছুশ্বের প্রস্তুত-প্রণালী।

- I. Add sugar, evaporate to one fourth and then solder in cans.
- (2) Add carbonate of soda and white sugar, evaporate to dryness: crush, powder and botter
- (3) Add sugar of alkali; evaporate to dryness; crush powder and bottle.
- (4) Evaporate to one half, beat up white of egg; simmer, skim, strain and boil.
- (5) Carbonate of soda one half drachm, water one fluid ounce, dissolve, add fresh milk one quart, sugar one pound; reduce to syrup in a steam and finish the evaporation on plates in an oven.

In many milk-condensing factories in England and America, the milk is cooled to 60° F., and then heated in a hot water bath for about half an hour, until it reaches 150° to 182°F. temprature, when it is powdered into large condensing pan directly above which are two

large fans that are kept in motion by machinery; the fans carry off the water from the milk, forcing it through ventilators out of the building as fast as it is formed into vapour. In this way 75 per cent. of the bulk of the milk is carried off in about seven hours. সেইজন্ম দেখা যাইতেছে যে, হুশ্বের জলীয় অংশটুকু অগ্নির উত্তাপে শুক্ক করিয়া ভীহাতে বীট্টিনি মিশ্রিত করিয়া টিনে বন্ধ করিয়া (air-tight pack) বাজারে পাঠাইলে হুদ্ধ অধিককাল স্থায়ী হয়। নেশ্লীয় হুদ্ধ এইরূপ প্রক্রিয়ায় প্রস্তত।

অতঃপর দেখা যাউক যে, বৈদিক শাস্ত্রমতে কিরূপ গাভীর ছগ্নের গুণাগুণ কিরূপ ৪

যৌবনপ্রাপ্ত নবগান্তীর হগ্ধ ত্রিদোষনাশক, ভৃপ্তিকর এবং ব বলকর। গান্তী ও বংস একবর্ণা হইলে, তাহার হগ্ধ বিশেষ গুণান্বিত হইয়া থাকে।

গাভীর আহারের তারতম্যাস্থসারে ছথ্বের গুণভেদ হয়; তদস্থারী অনানভোজী গোছগা গুরুপাক, কফবর্দক, বলকারক, পৃষ্টিকারক ও বাস্থাকারক গুণবৃক্ত; এবং বাহারা বহুবিধ তুণ, বীজ প্রভৃতি ভক্ষণ করে, তাহাদের ছগা গুণবৃক্ত ও হিতকর। ব্যায়ামহীন জন্তর ছগা তাদৃশ । বাস্থাকর নহে। অন গরম ছগা মহন করিয়া হাতের ভাগ তুলিয়া ফেলিলে, ঐ ছগা লঘুপাক, পৃষ্টিকারক, জার, এবং বায়ু, পিত্ত ও কফবোগনাশক হয়। ইহা আর ইত্যাদি দ্রব্যের সহিত্ত থাওয়া ভাগ। এই প্রকার ছগা জার্মানী দেশে বালকের আহারের জন্তা ব্যবহৃত হয়।

কাঁচা হ্য ভার ও বিশ্বগণাধিত এবং চকুরোগকারক। আল দেওরা হ্যাল্যাক। উহা গরম থাইলে, কফ ও বায়্নাকক, এবং ঠাঙা হইয়া গেলে লিভনাক হয়। টাট্কা ধারোক হয় অধিক, শুণকারী হয়। ব্য ছগ্ধ গুরুপাক। প্রাত:কালের হগ্ধ ভারী ও শীতল গুণযুক্ত হয় এবং অপরাফ্লের ছগ্ধ বাহুর ছৈর্য্যকর, প্রান্তিনাশক এবং চক্ষুর দীপ্তিকর গুণযুক্ত। রাত্রে হগ্ধ দেবনে চকুর হিত হয়।

বংসহীনা ও বালবংসা গাভীর ছগ্ধ অত্যন্ত অমুপকারী; এজন্ত হিন্দুশাল্রে নবপ্রস্তা গো, মহিব ও ছাগাদি পশুর দশদিন অশৌচ গণ্য করা
হইয়াছে। এঁবো-বসন্তাদি রোগগ্রন্তা গাভীর ছগ্ধপান নিবেধ। ছগ্গের
সঞ্চিত জল বা অন্ত কোন পদার্থ মিশ্রিত হইলে এবং দোহনপাত্র ও
জ্বালপাত্র অপরিদ্ধার থাকিলে এবং যখন ছগ্গে একরপ গদ্ধ হয় (যাহাকে
রন্তন-লাগা বলে) সে ছগ্ধ মন্দগুণযুক্ত হইয়া থাকে।

দধি।—মিশ্বক্র, বলকারক, অগ্নিকারক, পৃষ্টিকারক, রুচিকারক এবং বায়্নাশক। রাত্রে দধি ভোজন আবশুক হইলে ঘুত বা চিনি দিশ্রিত করিয়া থাওয়াই বিধি। কেহ কেহ লবণ ও জল নিশাইয়া ভোজন করেন; কিন্তু রাত্রে দধিভোজন শান্ত্রনিষিদ্ধ। শরৎ, গ্রীয় ও বসস্তকালে দধি প্রায়ই কুপথ্য। ষড়রাত্রের পর দধি অভ্যন্ত অপকারী হয়।

বোল। —বায়ুপিত্তনাশক প্রভৃতি গুণযুক্ত।

খ্যত।—গব্যস্থত পরিপাকে মধুর, বায়্পিত্তনাশক, দৃষ্টির হিতকর এবং অক্তান্ত সকল জাতীয় খ্যত অপেকা অধিক গুণকারী; মহিষ-ম্বত স্থিয় ও পৃষ্টিকর।

ছানা।—মলম্ত্ররোধক, বায়ুর্দ্ধিকর, রুক্ষ ও অতিশয় গুরুপাক; কিন্তু পুষ্টিকর ও মাংসপেশীর বলবর্দ্ধন।

ননী।—মধুর-ক্ষার, কিঞিং অস্ত্রাস্থাদ, শীতল, লঘু, অরিকর, পৃষ্টিকর, মলম্ত্ররোধক, বায়পিতনাশক, তেজন্বর, এবং ক্ষরকান, ইাপকাস, এশ ও অশ্বৈশগের শান্তিকর, কফ ও থেদের বর্জনকারক, কীর—ইহা গুরুপাক, বায়ুর শান্তিকর, পুরুষত্বর্দ্ধক এবং নিজাকারক।

নাথন।—অপক হগ্ধজাত নবনী স্নিগ্ধ, মধুর, শাতল, চক্ষুর দীপ্তিকর, মলরোধক, রক্তপিত্ত ও চক্ষুরোগের বিশেষ উপকারী।

এথের সর।—বায়ুনাশক, বলকর, তৃপ্তিকর, তেজস্কর, ও রক্তপিত্তের, শাস্তিকর।

ম্বতপক থাদ্য। কল্পাক, বলকারক, গুক্রবর্দ্ধক, বায়ুপিভরদ্ধক, বলকারক এবং দৃষ্টির হিতকর গুণযুক্ত।

ক্ষীরজাত থাদ্য।—বলকারক, পুষ্টিকারক, অগ্নিকারক, শুক্রবদ্ধক, পিত্তনাশক, অদাহী, ও মুথপ্রিয় প্রস্তৃতি গুণমুক্ত।

্ছানাবড়া।--ক্রচিকারক, বলকারক, পৃষ্টিকারক এবং শুক্রবন্ধক।

ভিন্ন ভিন্ন তুম্ব ও মৃতের গুণাগুণ নিম্নে দিলাম।

নবনী হৈয়পবীন, সরজ, মৃহ্খণ,
এক-পর্যায়ক শক, চলিত মাখন।
নবনীত—হিত, পুষ্টি, বর্ণ-প্রসাদক,
বল-অগ্নি-বিবর্দ্ধক, অপর ধারক।
বায়ু, রক্তপিত্ত, ক্ষয়, অর্থ ও অর্দ্ধিত,
বাতজাত কামরোগ হয় অন্তহিত।
নবনীত বাল্যুদ্ধ সকলেরই হিত,
বিশেষ শিশুর পক্ষে স্থধাসমন্বিত।

মাহিম-নব্নীর গুণ-

মাহিব-নবনী ওক, বাত-কদকর, নেদ-ভক্তকর, দাহ-পিক্ত-শ্রমহর।

দুক্ষোত্তব-নবনীর গুণ-

হুগ্ণোভূত ননী হয় নেত্রহিতকর, শুক্র-বলকর আর রক্ত-পিতত্তর। ধারক, মধুর-রস, স্নিগ্ধ অতিশয়, অপর শীতবীর্য্য জানিবে নিশ্চয়।

সদ্য-সমুভূত নবনীর গুণ–

সদ্যোভৃত নবনীত—মধুর, ধারক,
শীতবীর্ঘা, লঘু আর মেধা-প্রাদায়ক।
কিঞ্চিৎ তক্র-সংশ্রব ইহাতে থাকিবে,
তেঁই ক্যায়ায়রস ঈষৎ হইবে।

পুরাতন নবনীর গুণ-

বছকালোৎপন্ন ননী গুরু অতিশন্ন, ক্ষারযুক্ত, কটু, অমরস তাতে হয়। বলি, অর্শ, কুষ্ঠরোগ হয় সে কারণ, কফ, মেদ বৃদ্ধি এতে হয় বিশক্ষণ।

ঘূতের গুণ–

ম্বত, আজ্য, হবিঃ সর্পি একার্যজ্ঞাপন, কহিব তাহার গুণ করহ প্রবণ। ম্বত — রসারন আর নেত্রহিতকারী, আরেয়, মধুররস শেতনীর্যধারী। অল্প্র-অভিযানি, কাস্তি, ওজঃ-বিবর্দ্ধক, তেজঃ-বৃদ্ধি-ম্বর-ম্বৃতি-লাবণ্য-দামক। গুরু, রিশ্ব, মেধা-আয়ু-বল-কফকর, রক্ষ, বিশ্ব, পাপ, পিছ, উদাবর্ত্ত, জর। অপটী, উন্মাদ, বায়ু, শূল, ত্রণ, ক্ষয়, আনাহ, বিসর্প, রক্তপিত্ত হয় ক্ষয়।

প্রায়তের গুণ-

গবাদ্বত অতিবার নেত্র-প্রসাদক,
আগ্নেয়, মধুররস, শুক্র-বিবর্দ্ধক।
মধুরবিপাক, বাত-পিপ্ত-বিনাশক,
শীতবীর্ঘা, কফহর, লাবণ্যবর্দ্ধক।
মেধা-কান্তি-তেজস্কর, ওজঃ-সম্পাদক,
পাপ-রক্ষ:-বিনাশক, হুর্ভাগ্যনাশক।
গুরু, শুদ্ধ, বলকর, বয়ঃসংস্থাপক,
দার্ঘায়্, মঙ্গলকর, কচি-প্রদায়ক।
স্থগদ্ধি, মনোজ্ঞ, ইহা শ্রেষ্ঠ রসায়ন,
সর্বব্রত হ'তে করে প্রাধান্ত স্থাপন।

মাহিময়তের গুণ-

মধুর মাহিষদ্বত বায়-বিনাশক, রক্তপিত্ত-হর আর শুক্র-বিবর্দ্ধক ५ কফ-প্রদায়ক, শুক্র, শীতবীর্য্য হয়, বিপাকে মধুর ইহা জানিবে নিশ্চয়।

• ছাগা-স্থতের গুণ–

ছাগীজ কটু-বিপাক, অগ্নি-বলকর, কাস-খাস-যক্মা-নেত্ররোগে হিডকর। উট্টা-বি কটুবিপাক, অগ্নি-প্রদীপক, শোষ-কৃমি-বিধ-কফ-নায়-বিনাশক। কুষ্ঠ, গুলা, উদরাদি রোগ নাশ করে, মেযীদ্বত লঘুপাক, সর্বারোগ হরে। অস্থির্দ্ধি, নেত্রহিত, অগ্নি-উত্তেজক, অশ্বরী-শর্করা-বাতদোধ-বিনাশক।

নারীদুগ্ধজাত ছতের গুণ—

নারীত্বত স্থাসম নেত্রহিতকর, কফ-বায়ু যোনিরোগ-রক্তপিভহর।

ঘোটকী-ঘূতের গুণ–

অশ্বীদ্বত লঘু, অগ্নি-দেহ-বিবৰ্দ্ধক, নেত্ৰতৃপ্তি, দাহ-বিষদোধ-বিনাশক।

দুঝ-সন্থনোভূত হতের গুণ-

ছুধোন্তব শ্বান্ত শীতবীর্ব্য ও ধারক, পিত্ত-দাহ-রক্তদোষ বায়্-বিনাশক, নেত্ররোগ, মেদরোগ, মূর্চ্চা, শ্রম লাখে, বার্দি হগ্ধ ভব যত হৈয়ঙ্গবীন সে।

হৈয়জবীনের গুপ-

আগ্নের হৈরকবীন দেত্র-প্রসাদক, বলকর, শরীরের উপচয়-কারক। অতিশয় কঁচিকর, শুক্রবিবর্দ্ধক, শুরার্গু রোগীর অতি হিত-সম্পাদক।

পুরাতন হাতের ক্রপপ্রাতন হাত হর ত্রিদোধনাশক, মৃচ্চ-বিবদোধ-উন্ধান-মাতৃত্ব,

অপনার তিমিরাদি রোগ করে নাশ, কালাতীতে গুণাধিক্য হইবে প্রকাশ।

শুতৰ হতের গুণ—

নবম্বত বলকর ক্রোজন তর্পণে, ভ্রমে পাপু নেত্রবাগে কামলার্ড জনে। করিবেক ব্যবহার, নিষেধ অপর, রাজযন্মা, বিস্ফিকা, মদাত্যর, জর। কফল, আমল রোগ নিবন্ধ আবার, মন্দায়ি, বালক, রুদ্ধে লহে উপকার। (সন্মিলনী হইতে)

ছুত্ত টাটুকা রাখিতে হইলে সাড়ে তিনসের পারনিত ছুবে এক চাষ্ট মিশ্র সালকেট অফ সোডা মিশ্রিত করিয়া রাখিলে, উহা অনেক দিন পর্যান্ত সমভাবে থাকে: আত্মাদনের বা রঙের কোন ভারতম্য লক্ষিত হর না। ছথে কিঞ্চিৎ জল মিশ্রিভ করিরা ভূগ্নপাত্ত বর অভিতে রাখিলে, উহা শীঘ নই হয় না। কাঁচা ছবে ওটক্তক বিচালি রাখিলেও গুগ্ধ ভাল থাকে। আমাদিগের দেশের গোয়ালারা এই मकन डेशाव इद्ध क्रका करत। विठानिएड সোভার अश्म दिनी থাকার জন্ত কাঁচা হথের উপর তাহার রাসায়নিক ক্রিয়া বেশী e ওয়ার হয় অধিকৃষণ পর্যন্ত ভাল অবস্থার থাকে। 🖏 বি পূর্বেই ৰলিরাছি বে, আমাদের দেশে "ভেরারি ফার্কিং" খুব লাভক্ষক হইতে शारत । এ नवस्य भारमतिकात वरकरना एकत्रातिकारमत्र वर्सन, मिः উইল কুড "Milk and its products," মি: ই, মেথিউপের ডেরারি कार्जिः नवरद्ध 'Economics in Dairying,' क्वविशांक कर्जानू विक्क ্লোফেশার দ্বিশ্যানের "Book of the Dairy" অভৃতি প্তক পাঠ করা ভুঞকাত, কর্তব্য। এহঃবের মধ্যে বিলাতে বা ফ্রান্নে বা ক্ষাবেরিকার বেন্দ্রী কোন কলেজ বা লাইত্রেরীতে বছল প্রক

পাঞ্জা বার, আমাদের দেশে সেরপ কোন স্থবিধা নাই। দেশের লোক দাটক নভেল পড়িতেই ক্লান্ত; কাজেই এ-সব আবশ্যকীর বই কোন প্রকাগারে পাওয়া বায় না। আমাকে এসম্বন্ধে প্রকাভাবে এদেশে কম অস্ত্রবিধা ভোগ করিতে হয় নাই।

এখন দেখা যাউক, লোহনের অব্যবহিত পরে ছথ্মে কি কি পরিবর্তন পটে। ১%-দোহনের পবেই বিলাতি, জর্মাণ ও আমেবিকান পণ্ডিতগণের মুতে লেক্টিক এসিডের আধিকা হইলে, হ্রন্ন অগ্নির উপর বসাইবার তাত সহে না,—উহা সহজেই ছিঁ ড়িয়া যায়। সেই কাবণে যাহাতে গ্ৰন্ধ অধিক-ৰুণ স্বভিাবিক অবস্থায় অক্ষুত্র থাকে, তাহাব কোন উপায় উদ্ভাবন করিলে. ক্লাফাদের দেশে অধিক দূব হইতে বেলে হগ্ধ আনিয়া বাজাবে *বিক্রী*য় করা যাইতে পাবে। এ-বিষয়ে ডাঃ ফ্লিশ্মান তাঁছাব পুস্তকে সবিশেষ আলোচনা কবিয়াছেন। এই প্রবন্ধের শেষভাগে তংসম্বন্ধে **শ্ববিস্তার জালোচনা** করিব ৷ তবে এইস্থানে এ বিষয়ে হু'চাৰ কথা বলা অপ্রামন্ত্রিক ইটবেনা। বিলাতে ডেয়াবি ফাশ্মিং কিরূপে পবিচালিত হইরা থাকে, ভবিষরে অভিজ্ঞতার জন্ম McConnellএর "Dairy Management", J. Oliveran "Milk, Cheese and Butter", I. H. Menard's "Pasteurization and Milk Preservation" (McMillain & Co., N. Y.) প্রভৃতি পুত্তক বছসহকারে পাঠ করা কঠবা। গ্ৰহ্ম-দোহনেৰ পরে যতকণ ফেন থাকে, ততকণ উহা উষ্ণ থাকে। ইহা ছথেব দৈহিকু উত্তাপ। এই উষ্ণতা নিৰ্গত হইবার পর হইতেই হয়ে কীট্রাণু জন্মিতে থাকে, এবং হয়ে যে ল্যাকৃটিক এসিড থাকে, তাহার, বাসায়নিক বিলেষণ "হইতে থাকে। ইহা দাবা হয় ক্রমণ: টক্ হুইতে প্লাকে, স্নতরাং আলে চড়াইলেই ছিঁ ড়িয়া যায়। এই জিয়া নিবারণ, ক্ৰিত্ৰে পারিলেই হগ্ধ বাঞ্চাবিক অবস্থায় বহুকণ থাকিত্তে পারে। এই व्यक्तियात नाम " शान्तिविष्णभान्" (, इश्वन्दशा वे मकन भक्ष महाने

কীটাবু (bacilli of bacteria) আছে, তাহারা প্রারহী নির্দোষ। কিছা যে সকল কটিগু-প্রভাবে ছয়ে বিষবং "টোমেন" উংপন্ন হর, তাহা মছবা-দেহে প্রবেশ করিলে উংকট রোগের স্টে বা দেহ বিষাক্ত করিয়া থাকে। ছয়ের এই উংসেক-ক্রিয়াকে "Fermentation" বলে। Fermentation বন্ধ করিলেই ছন্ধ স্বাভাবিক অবস্থার অধিকক্ষণ রাখা ঘাইতে পারে। উংসেক-ক্রিয়া বন্ধ করিবার জন্ত কয়েকটি বৈজ্ঞানিক পাশ্চান্তা ক্রিয়ার পত্তী হইয়াছে। ছন্ধকে এই ক্রিয়ার অধীন করাকে (pasteurization) "পাইউরিজেশান" বলে। ছন্ধকে সহসা ১৬৭ ডিগ্রীকাঃ উত্তাপে, ১০ ইইতে ২০ মিনিট ক্রাথিয়া, সহসা ৪০ কিলা কি ডিগ্রীকাঃ উত্তাপে নামাইলে, যাবতীয় কীটাণু নই হইয়া, ছন্ধ ৩৬ ইইউই বিটাকাল পর্যান্ত উত্তম অবস্থার পাকিবে। হঠাং ঠাণ্ডা করার জালের ক্রেইটি বিটিকাল পর্যান্ত উত্তম অবস্থার পাকিবে। হঠাং ঠাণ্ডা করার জালের ক্রেইটিত পার না।

লোহনের পর টানের চোটে এবং জীবনেই হইতে দিন্য: নির্গত হওয়েই তথা কিছু উন্ধ থাকে। কাজেই বাজারে পাঠাইবার পূর্বৈ তাহা ঠাওই করিয়া পাঠান কর্ত্তবা। সেইজন্ত কোন কোন তথা-বিজ্ঞোন 'cooler দারা হয় ঠাওা করিয়া বরক হারা আরুত করিয়া বাজানে শাঠাইলা থাকেন, যাহাতে দনা টেপ্পারেচার ৪০ ডিঃ ফাঃ খাকে হু এই বিজ্ঞান প্রেকাক্ত পুত্রকভাল এবং উইলের "Milk and its Products" প্রেক্ত শিক্তাক পুত্রকভাল এবং উইলের "Series তাঃ Ostertag বলেন বে, ক্রুক্তে Pasteurize করা উচিত নহে"; ইহাতে হথের ভাল ক্রিকা

হথ-দেহিনের অলকণ পরে ছুখের গাললা মনিলে অর্থি হয় ঠাও। হইলে, উংল্পুট ননা আপনা হইতেই ছুখের উপর ভাগিরা উটে। এই সমরে হথ মথন করিলে বা চারে (churi) কৈলিয়া মথিলে বা কিয় (skim) করিলে, ধুর উংক্ট ক্ষাধ্য বা ননী পাওলা বাব্য হও হইছে ৭২ 'ডিগ্রি ফারণহাঁট্ উত্তাপে ছগ্ধ মহন করিলে, খুব ভাল মাধম পাওরা গিরা থাকে। ৫১ হইতে ৫৭ ডিগ্রি উত্তাপে ছগ্ধ মথিলে খুব বেলী পরিমাণে এবং ভাল মাধন পাওরা গিরা থাকে। আমানিগের দেশের উংসাহী যুবকদের বিলাত, আমেরিকা, ডেনমার্ক, ছইজারলাও প্রভৃতি দেশে গিরা ডেরারি-ফার্মিং শিক্ষা লাভ করিয়া আনিয়া আমাদের দেশে তাহা প্রবর্তিত করা একান্ত কর্ত্তবা। ছগ্ধ কিরূপে অবিক দিন ভাল অবস্থার সংরক্ষণ কবা যাইতে পারে, 'ডাবি-ফার্কটারি,' কিম্বা আল হ্রের জীবদেশে অবস্থিত গ্রেনা-স্থল্ কোম্পানির কারখানা, কিংবা বিলাতের লক্ষ্কোর্ড ফ্যাক্টারি হইতে অথবা আমেরিকা হইতে তহিবরে প্রকৃষ্ট শিক্ষালাভ করা যাইতে পারে। Condensed Milk কিরূপে প্রস্তুত্ত করিতে হর, তাহার প্রক্রিয়া হলগুদেশ হইতে শিক্ষালাভ করিয়া আলা কর্ত্ববা।

মধ্যাপক ক্ষেম্ ঠাহার "Cows in India" নামক পৃত্তকের ৪৭
পৃষ্ঠায় Howman সাহেবের বিপোর্টেব মর্ম্ম যে প্রকাশিত কবিয়াছেন,
ভাহাব আবশ্যকীর অংশটু কুর মর্ম নিয়ে দিলাম:—মন্থ্রের ব্যবহারোপযোগী যত প্রকাশ তথ্য পৃথিবীতে উৎপন্ন হয়, ভাহার মধ্যে ভাবভীয় মহিবের
ছগ্রে ননী বা butter fat সর্বাপেকা অধিক, এবং সেই কারণে অভ্যন্ত
rich; এবিষরে সিক্সপ্রেদেশের মহিবই সর্বাপেকা হয়্মবভী এবং স্পান্তস্বভাববিশিষ্ট। এই প্রদেশে গো-মহিব-জনন-পালনের বিবরে বিত্তীর্ম
গ্রেববণাপূর্ণ প্রবন্ধ পাঠক Agricultural Journal of Indiaর পঞ্চয়
ভল্মে দেখিতে-পাইবেন। মহিব-ছগ্রে শভকরা ৭৯ ভাগ ননী আছে।
অভ্যন্তম বিলাভী ছগ্রে আ॰ ইইতে র ভাগ পর্যন্ত ননীর বেশী থাকে
না। ভারতীর গোছ্র্য় বিলাভি সর্বোধ্রন্তই আদি জাভীর গোছ্র্য অপেকা
কোন ক্রমেই ননীতে হীন্দ নহে। ভাহা হইকেই দেখা যাইতেছে শ্লে,
বিলাভি গাভীর বধ্যে আদিই সর্বাপেকা অধিক ননী-উৎপাদিকা হুর্যকর

ভারতীয় গান্তী হইতে ঐ গুণে কোন ক্রমেই উৎকর্ষকী নছে। বিশেষ বৈজ্ঞানিক পরীক্ষাবারা ইহা প্রমাণীকৃত হইরাছে যে, ১ পাউও বটার (button) ৩০ পাউও বিলাতি ল্ব হইতে উৎপর হয়; কিন্ত ১০ ৪ পাউও ভারতীয় মহিব-ল্ব হইতে তাহা পাওরা গিরাছে।

এ সৰকে নিম্নিথিত পুত্তকগুলি পাঠ করা বিশেষ আবশ্যক:--R. S. Burn's "Dairy, Pigs and Poultry"; "Outlines of Farming" by R.S. Burn; "Butter-making on the Farm" by C. W. Walker-Tisdale and T. R. Robinson (London, Office of "Dairy World"); G. Mayall's Cows, Cowhouses and Milk (London, Bailliere Tindall and Cox); The Care of Milk (Ohio, Experimental Station Bulletin 1910, Columbus); J. S. Cameron's "Milk as Food"; H. W. Conn's "Practical Dairy Bacteriology (Orange Judd & Co.); L. L. Van Slyke's "Modern Method of Testing Milk and Milk Products" (Orange Judd & Co., N.Y.) : E. Driver's "Chester and its Cheese-makers (Casauban Derwent, Bradford); G. S. Thomson's "The Dairying Industry (Crosby Lockwood): C. W. W. Tisdale's Milk Testing" (Smithson, Northllerton); K. Winslow's "Production and Handling of Clean Milk" (W. R. Jenkins & Co., N.Y.); H. L. Puxley's "Modern Dairy Farming" (Upcott Gill): "Testing Milk and its Products" by E. H. Farrington and F. W. Woll (MacMillan & Co., N.Y.), on S. D. Beicher's "Clean Milk" (Orange Judd & Co., N.Y.)

এতহাতীত আর, এন বার্ণ্ দেব "Systematic Small Farming," প্রোকেনার Fleischmandর "Book of the Farm", Flintএব "Milch Cows and Dairy Farming", Stewartএন "Dairyman's Manuel" এবং Wingএব "Milk and its Products" নামক প্রক্তানিও বিশেষ বন্ধনহকারে পাঠ করা কর্ত্তবা। কলিকাতা প্রভৃতি বৃহৎ নগরে বিশুদ্ধ হগ্ম পাওয়া হরহ। বিশুদ্ধ হগ্ম পাইতে হইলে গাভীগুলির খাদ্য, স্বাস্থ্য, বাসস্থান, পালন, সেবা ও ক্লকণ প্রভৃতির দিকে ,বিশেষ দৃষ্টি রাখা কর্ত্তবা। দোহনের পূর্বো বাটগুলি খোত করিয়া শুদ্ধ কাপড়ে মৃছিয়া দেওয়া কর্ত্তবা। ফল কথা, বাট ও পালাম বিশেষ পৰিদ্ধাব অবস্থার বাখা কর্ত্তবা।

এখন দেখা কর্ত্তির বে, "পবিদাব পরিছয়তা" কাহাকে বলে ? এবিষয়ে অধিক আব কিছু বলিবার প্রয়োজন নাই। বিগত ১৯০০ সালে অষ্ট্রিয়া প্রদেশাস্তর্গত ব্ডাপেষ্ট্রনগবে গোয়ালাদের বে আন্তর্জাতিক কলে সহইয়াছিল, তাহাতে অধ্যাপক ডাঃ পল অপুলি (Dr Paul Schuppli in his lectures before the International Congress on Dairying at Buda Pesth in 1909) বক্তাকালীন বলেন:—"The 'udder and teats should be so' clean that no one would shrink from touching them with lips or tongue." অর্থাৎ পালাম ও বাটভালিকে এক্ষণ পরিকার রাখিবে বেন কেছ তাহা জিল্লা দিয়া চুযিতে বা স্পর্ণ করিতে মুণা বোধ করিবে না বা কৃষ্টিত হইবে না।

লোহন-পাত্র, হগ্ধ-সংরক্ষণ পাত্র, নিকটস্থ বাজারে পাঠাইবার পাত্র, ওজন-পাত্র প্রভৃতি হগ্ধসম্বনীর বাবতীর আধার-পাত্রগুলি খুব পরিকার পরিছের রাখা কর্তব্য। অমানের দেশের গোরালারা মাটীর দোহন-পাত্রে লো-দোহন করিয়া থাকেন। কথনও অধির উত্তাপে পোড়াইরা বিবাক বীজ্ঞাপু—ইচ্ছা হইল—ভ নষ্ট করিল, কথনও বা সামাক্ত ধুইরা ভাহাতে পুনশ্চ ছগ্ধ-লোহন করিল। ইহাতে ছগ্ধ কল্মিত হইরা বছবিধ রোগের কারণ হইরা থাকে। পাশ্চাত্য প্রদেশে ইহার বিপরীত-বিধি দৃষ্ট হয়। ইউবোপ এবং আমেবিকা প্রদেশে এনামেলের কলাই করা এবং কাচেব ছগ্ধপাত্র বছল ব্যবহৃত হইরা থাকে। কাচের পাত্র অধিক মূল্য এবং ভগ্পপাত্র বছল ব্যবহৃত হইরা থাকে। কাচের পাত্র অধিক মূল্য এবং ভগ্পপাত্র বলিরা বড় বেশী ব্যবহৃত হর না। কলাই করা টিনের বা দন্তাব ছগ্ধ-পাত্র, কোত্রন ইত্যাদি আজকাল সকল ভেয়ারিতেই প্রার্থ ব্যবহৃত হইরা থাকে। আমাদের দেশে মূগ্মরপাত্রই বেশী ব্যবহৃত হয় একিছ্ক এইগুলি উত্তমরূপ পরিষ্কৃত হয় না বলিরা আজকাল শিশু-বোগোৎপত্তির কারণ বলিরা ডাক্তারগণ উল্লেখ করিয়া থাকেন। দেইজক্ত ইহা পরিহার্যা। আমার বিবেচনার এল্মিনিয়ামের পাত্রই সর্ব্বাপেক্ষা ভাল।

আমাদের দেশের মত নিঃমদেশে মৃশ্বরপাত্র ধুব উপবোলী বৈটে, যদি গোরালাগণ তাহা প্রতাহ ধৌত করে এবং পরিজ্বলার প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখে। কিন্তু আমাদের দেশেব গোরালাগণের অনবধানতা বশতঃ তাহা কার্যতঃ দর্মদা ঘটিয়া উঠে না। মৃশ্বরশ্বাত্রগুলি প্রতাহ খৌত করিয়া অন্নিতে পোড়াইয়া লইলে মন্দ হয় না। পোড়ান বা ধুমদান এরূপ হওয়া উচিত বাহাতে দকল বীজাণু অরির উত্তাপে নই হইয়া যায়। চীনাবাদনও মন্দ্র নহে। হেডবানের বিশ্লেষণ-বিধি অনুযায়ী একসহলাংশ হত্তে নিয়্লিখিত উপক্রপগুলি আছে:—

Butter (वांबन) ... : ... २१—०१
Caesin (cheesy matter) (कनीन्) ... 8१—१०
Milk Sugar (চিনি) ... ७५—६०
क्याबाइफ चन- भ्याकानितम जनर
शासाम क्याबाइफ मार्थिक

লাইৰ কস্ফেটস্	***	•••	\$\$****>*
অভাভ লবণ	•••	•••	****
御町	•••		5480 b) C

উপরোক্ত অব্যাপক Hadlienএর বিশ্লেবণ-বিধি-অনুবারী ছথে নিয়-ক্ষিতরণ কঠিন পদার্থ (solid matter) আছে বলিয়া কানা 'বিবাছে:----

ৰস্কেট্ অৰ্ লাইম্	4	₹. @>
,, ম্যাগ্নেসিয়া	***	•***
পার-অক্সাইড অব আররণ	•••	•:29
ক্লোৱাইড অৰ পটাসিয়ন	•••	>.88
" " শোডিয়ন	***	•.58
ষ্মিশ্ৰ সোড়া	•••	•'83

খ্যাপক ভেল্কারের Vocicker) মতে শতভাগ হুখে নিয়লিখিত উপকরণ খাছে বনিরা প্রমাণিত হইরাছে:—

可	•••	M 6 e e.
यायन वा ननी	***	9.85 2.45 "
কেশীন্	•••	٠٠٠٠ (٩٠٠),
হয়লাত শৰ্করা	•••	8.84 8.+8 "
ৰাভৰ পদাৰ্থ	***	" age cb.»
क्रिके एक भगार्थ	***	>#>> ≯**** "

বিলাতে বাৰ্থন (Butter) কিন্নশে প্ৰস্তুত হয়, R. S. Burnsan Outlines of modern Farming প্ৰকেন্ত ৫০ গৃষ্ঠা দেখিলে ভবিষয়ে সন্ধিশেষ অভিন্ততা লাভ কয়। বাইজে পারিবে।

হথ-সম্বন্ধীর যাবতীর কল-কারখানার বিবর " কলের আবোজনীয়ক্তা" আসলে বেখ। হৰদধ্যে বে চিনি স্বাভাবিক অবস্থার থাকে, তাঁহা বহুকান থাকিবা বার বারা উক্চ হইলে, ঐ চিনি নাতিরা (by fermentation) গ্যাকৃটিক্ এনিডে পরিণত হর। হথের তাপ ১৫ ডিগ্রি সেটিগ্রেডে উপস্থিত হইলে, হথের মধ্যে এই রাসার্যনিক ফিরা আরম্ভ হইতে থাকে এবং ৫০ ডিগ্রি পর্যান্ত ব্ব পূর্ণনাত্রার থাকে। অতএব হুখকে অবিক কাল মন্থ্রের ব্যবহারোপবোগী এবং ভাল অবস্থার রাখিতে হইলে ১৫ ডিগ্রির নীচে বাখিতে হইবে অর্থাৎ ১০ ডিগ্রি সেটির নিম্নে রাখিলেই ভাল হর।

অতঃপর আমি ছগ্ধ সম্বন্ধে সবিশেষ আলোচনা করিব। ছগ্রের মধ্যে কি কি উপকরণ আছে, তাহা পূর্বেই বলিয়াছি। ছডের মধ্যে जनः या विद्यवनकाती वीकान् थारक। এই সমকে ज्यानक वार्गरकन् সবিশেব আলোচনা করিরাছেন। গুরু এবং ভদত্তর্গত বীজাণু স্বত্তে বাব অকুকৃণচন্দ্র স্বকার ১৩১৯ সালের কার্ত্তিক, অগ্রহারণ এবং পৌষ সংখ্যা "ক্তৰক" পত্ৰিকাৰ বে সারগর্ভ প্রবন্ধচর (" ছম্ব ও বীজাণু") লিধিরাছেন, তাহা প্রত্যেক গোচ্ম-ব্যবদারী এবং গৃহত্তের পাঠ করা কর্তবা। আমি চর্মিত-চর্মণ করিরা এই পুস্তকের কলেবর বৃদ্ধি করিতে ইচ্ছা করি না। এই স্বক্ষে আমার বাহা কিছ বক্তবা আছে, তাহা সংক্ষেপে পরে বিবৃত করিলাম। ভয়ের মধ্যে বড় এবং ছোট তৈল-গোলৰ (large and small fat globules) বছল পরিমাণে পাশাপালি ভাসিরা বেডাইতেছে। ইহাদের মধ্যে রাসার্নিক প্রভেদ পুৰই কম। বুজনাজ্যের প্রধান ছগুতদ্বিৎ R. H., Shaw, "Milk and its Products" लालका 'जवर निरमोदि विकामरहत Professor of Dairy Husbandry, Mr. C. H. Eckles बामाबनिक विद्वारन बाजा खाला नविद्यार त्यमानिक कतिवादका ! 'United States of same সামের ৪২ নং Farmer's Bulletin পরিকার Mr. R. A. Pearson M. S., Professor of Dairy Industry,

Gollege of Agriculture, Cornell University এবিষয়ে এক গ্ৰেষণাপূৰ্ণ পুত্ৰক লিখিয়াছেন। তাহা ছগ্ধ-বাবসায়ীমাত্ৰেরই যত্রসহকারে পাঠ করা কর্ত্বা।

ছথে কি কি উপাদান আছে, তাহা পূৰ্বে লিখিত তালিকা দেখিলেই ভগ্নমধ্যে চিনি এবং কেসিনের जानां वाहरंत। মাত্রা অপরাপর উপাদান হইতে অপেকাকত অধিক পরিমাণে বিদামান আছে, তাহা আমি পূর্বেই বলিয়াছি। ত্রের মধ্যস্থিত চিনির অংশট টক্ বা এসিড বা (ল্যাক্টিক্ এসিড্) সংযোগে যেরপ বিক্লত হইরা বীজাণুর পরিবর্দ্ধনের সহায়তা করে, এরপ আর কিছুতেই করে না। কেসিন এবং এল্বুমেন্ই হুম্মধান্থিত প্রধান ধবক্ষারধানজাত সামগ্রী (nitrogenous constituents)। ছগ্ধমধ্যস্থিত কেসিন্ উপাদানটি অন্নসংযোগে জমিরা যাইলে ছগ্ধকে নষ্ট করে; সেইরূপ্ উত্তাপদারা চগ্ধস্থিত এল বুমেন্ জমিয়া গিছা থাকে। হয়মধান্তিত কঠিন (solid) পদার্থগুলি ধাতব উপাদান. অথবা লবৰ বা ছাই বলিয়া কথিত হয়; ছগ্ধ অগ্নুভাপে গুকাইয়া যাইলৈ, এই পদার্থস্তলি ফশ্ফেট্, পটাশ্, চুণ এবং ষোডিক্লোরাইড রূপে পড়িয়া পাকে। ছথাভান্তরত্ব চিনিকে বতকণ ল্যাক্টিক এসিডে পরিণত হইতে না দেওরা যাইতে পারে, ততক্ষণ তথ্য অবিক্লতাবস্থায় থাকিবে। কিন্ত ছগ্ধ বেমন মনুব্যের হিতকর এবং উপাদের খাদ্যসামগ্রী, এমনটি আর कि हुरे नारे। चात्र रेश च ठाख गराकरे विकृत रहेवा थारक। स्टेक्स ইহা খুরু সাবধানে হস্তধারা নাড়াচাড়া বা ব্যবহার করা (handle) কর্তবা। 'বে হয় সামাঞ্চকণ পূর্বে অতার স্বাহ্যকর উপাদের খাদ্যসামগ্রী ছিল, মাছি বনিলে, খুলা পড়িলে, অস্বাস্থাকর উষ্ণগৃহে রাখিলে, বা গরবুক্ত স্থানে স্থাপন করিলে, ভাছা সহকেই বিক্লভাবছা আপ্ত হইয়া মহুয়ের बारतात्र जरून:वात्री हरेबा नाजात । जन, यज, रृष्टि. स्वाचान, विवादः बुक्ता (impurities) ७ উक्रडा नश्लार देशीरक बाजान करते। रनरेक्क বাহাতে এইগুলির কোনরূপ অস্বাস্থাকর প্রভাব নির্মান সদ্যংদাহিত চন্দ্রের উপর শক্তি বিস্তার করিতে না পারে, বৈজ্ঞানিক উপায়ে তাহা বারিত করিলে, চুগ্ধ অধিককাল অবিক্লৃতাবস্থায় থাকিতে পারে। সে উপায় বে কি. তাহা আমাদের জানা কর্ত্তবা। এসম্বন্ধে আমি পূর্বে মৎসামান্ত আলোচনা করিয়াছি। বীজাণু দারা হগ্ধ অকথনীয় প্রকারে দুবিত এবং বিষাক্ত হইতে পারে। এদছত্ত্বে অধ্যাপক পিয়াদান বলেন. "Any milk shewing a sediment is suspicious. Particles of dirt are a sign that germs are abundant. Thus dirty milk may be dangerous as well as disgusting. The dirt in milk consists mostly of particles of dust, dead skin, manure and hairs which fall into the pail from the body of the cow, during milking; but dust in the stall, dirt and dust in the vessel used for handling milk, and unclean attendants are also common sources of dirty sediment in milk. Milk from unhealthy or unthrifty cows or that which has been handled by sick persons is dangerous as it may contain infectious germs or foreign matters which might affect the health of the consumer. Typhoid, scarlet fever, diptheria, consumption or tuberculosis have been spread by milk. Feverish cows, those having just given birth to a calf, and sometimes cows that have been milked a long time, produce milk which should not be used. Any milk having an unnatural appearance should be discarded from being used as a human food.".

"Odours and peculiar flavours are due to bacterial action or to the volatile oils of some foods; onions, turnips, cabbage, distiller's refuse, garlic, wormwood and similar substances give characteristic odours and tastes to milk. When odours or flavours are most marked at the time milk is first drawn, they are generally due to food eaten by the cow; and when they are slight at first and gradually increase as the milk becomes older, they are generally due to the growth of bacteria."

আসাদের দেশের শঠ প্রবঞ্চক গোরালাগণ বেলী মৃল্য পাইবার

নাজ হয়ে কল বিশার; ননী তুলিরা লইরা তাহাতে কিঞিং পরিসাশ
বাঁটা হয় বিশাইরা ভাল বা অবিমিশ্রিত হয় বলিরা বাজারে বেলীমৃল্যে
বিক্রের করে। এসব শঠতা পাশ্চাতা দেশেও আছে; কিন্তু তথাকার
বিউনিসিপাল আইন বা কাউন্টি-কাউলিলের নিরমাহ্যারী এরূপ হয়
প্রকাশ্য বাজারে বিক্রর নিবিদ্ধ। ঐ সকল সভাদেশে ইহার বিরুদ্ধে
প্রতিবেধক আইন প্রচলিত আছে; বেতনভোগী কর্ম্মচারী আছেন,
বাহারা হয়ের বিশুক্ষতা পরীকা করেন; এবং দর্ক্ত্র 'টেষ্টিং ট্রেশন' আছে।
কিন্তু আমাদের ভারতের মত হানে এই সকলের সম্পূর্ণ অভাব দৃষ্ট হয়।
বে হই প্রচলন এই সব কাল দেখিবার জন্ম আছেন, তাঁহারাও ঐ সকল
স্বান্থাহিতকর বিবরের নিকে তেমন দৃষ্টিপাত করেন না।

সন্যালোহিত গোছর স্বাভাবিক উষ্ণ থাকে। সেইবস্ত ঐ ছবকে ঠাওা করিলে অথবা তাহাতে উত্তাপ প্ররোগ করিলে ছব ৩৬ হইতে এ৮ বটা পর্যন্ত অবিক্লভাবহার রাখা বাইতে পারে। যদি হব পার্ত্তমধ্যে স্থাধিরা ফারণহিট্ তাপনান বল্লের ৪০ ডিগ্রি উত্তাপে রাখা হব, ভাহা হইলে ছন্ত্ৰ বহক্ষণ অন্ততঃ ২৪ হইতে ৩৬ ৰণ্টা পৰ্যান্ত টক্ না হইয়া বা না ছিঁ ড়িয়া অবিক্লভাবস্থায় থাকিতে পারে। কিন্তু ৪০ অথবা ৪৫ ডিগ্রিডে সন্ধানা রাখিলেই ভাল হয়।

হ্মকে হই প্রকার বৈজ্ঞানিক উপারে নির্মাণ রাখা বাইতে পারে। ছম্বের উত্তাপ ৫০ ডিগ্রির উপর হইলে ছম্মন্থ চিনি ল্যাকৃটিক এসিডে পরিপত হইরা চুয়েব বলকাবক প্লার্থগুলিকে টক কবিরা নষ্ট করিয়া ফেলে। সেইজন্ত চন্দ্রের আভান্তরিক উত্তাপ কম রাখিবাব চুঠ প্রকার প্রণাগী আছে। প্রথমটিকে পাষ্টিউরিজেশান্ (pasteurization) বলে। ইহাতে ছন্ধকে ১৪০ হইতে ১৬০ ডিগ্রী কার্ণহীট উদ্ভাপে উঠাইরা সহসা so ডিগ্ৰী উত্তাপে নামাইলে ফুগ্নেব মধ্যন্থিত অনেক বী**জাণু নাই হয়**: কিছ এই ছয়ের উত্তাপ পুনশ্চ বর্দ্ধিত হইলে বীঞ্চাপুৰ স্থাষ্ট বা বৃদ্ধি অপ্র্যাপ্ত হয় এবং মহুবা তাহা ভোজন কবিলে স্বাস্থের পক্ষে অনিষ্টকর হটবা থাকে। সেইজন্ম কোন কোন পাশ্চাতা ডাক্তারগণ পাষ্টিউরাইজ ড इंग्रेशात्वत विलय विद्यारी; छाश आमि शृर्त्वरे विवर्गाइ। श्रमेक, ভুমকে ১৬০ ডিগ্রীর উপর গরম করিয়া উপরোক্ত প্রক্রিয়াভুক করিলে, ছারে অপরাপর যে সমুদর বীজাগু গ্লাকে, তাহা এককাদীন সমুদর नहे हरेबा यात्र। এই প্রণাণীকে টেরিলিজেশান (Sterilization) ৰলে। নেশ্লী প্ৰভৃতির ছথ এইরূপে তৈয়ারি হইরা আমাদের एमरन विकास क्या काममानि श्रेता थारक। अतरण टेज्याति क्या বহুকাল প্রাপ্ত অবিকৃতাবস্থার থাকিতে পারে। এইরূপ হয় রক্ষণ-কল আমাদের দেখে আদৌ নাই। দেশের লোকের এছিকে আও দৃষ্টি পদ্ধ भावनाक हरेत्र। में फारेग्राव्ह। खात्रराजत यक विनात व्यक्तरन धानक , বৃহৎ বৃহৎ নগ্নরের উপকর্ষে কলকারথানা প্রতিষ্ঠিত হওয়া কর্তব্য। व्यासारम्य स्मर्त दुरुष मनवसम्बद्ध विश्वष्ठ एवं व्यास्त्री शाक्षत्र सात्र ना क्षावर कामीय कर्क्शकीयगृत विद्यात एकान छेलान तियानक सहयस

না; সম্ভবতঃ করিতেও পারেন না। কারণ, দেশের লোকের এদিকে আদে দৃষ্টি নাই। আমরা নিজেরাই যদি চকু মুক্তিত করিয়া থাকি, তাহা হইলে রাজপুরুবেরা, আমাদের অতাব ও আবশ্যক না বুঝিনে, স্বতঃ-প্রশোদিত হইরা আমাদের কি উপকাব করিতে পারেন ? যাহা আমরা চাই না, তাহা কি তাঁহারা জোর করিয়া, সাধ্য-সাধনা করিয়া দিতে পারেন ? এবিষয়ে আমাদেব খ্যাতনামা ডাক্তার জহরলাল বাবু "সাধারণ স্বাস্থ্যরক্ষা" নামক আঁহার পুতকে যাহা বিলয়ছেন, তাহা সকলেরই জানা বিশেষ প্রয়োজন। আমি এ বিষয়ে বেশী বলিয়া এই কৃত্র পৃতকের কলেবর বৃদ্ধি করিতে বাসনা করি না। তবে যাহার ঐ বিষয় জানার প্রয়োজন হইবে, তিনি ডাক্তার জহরলাল বাবর পৃত্তক পাঠ করিতে পারেন।

কনি হাতা, এনাহাবাদ, গরা, পাটনা, বোষাই, দিলা, লাহোর, ম্নতান, মান্সাজ, ওবাজান, শোনাপুর, প্রা, জব্বনপুর, ঢাকা, কাশী, প্রী প্রভৃতি ছানে অনেক গোশানা আহে বটে; কিন্তু ইহানের বাহিক আইছা অভ্যন্ত অবাহাকর। অবাহাকর গোশালার রক্ষিত গোর্ক্দ ইইতে অবাহাকর ছব উংপন ইইবাবই ক্যা। অবাহাকর ছব পানে মহ্রাসমাজে উংকট বাাধির বাজ রক্ষি পাটরা সনরে সমরে জাবন ও প্রাণ্সাকর ইইরা দাঁড়ার; তাহা আনি পূর্বেই বলিরাছি। সেইকল্প এই বিষয়ে কর্ত্বনক্ষীয়গণের তার দৃষ্টিপাত ক্রা কর্ত্রা। স্বাহাক্তর বৈজ্ঞানিক প্রণানীতে নির্মিত গোশানার আলোক এবং বার্ অবাধে প্রবেশ লাভ করিয়া রক্ষিত গোর্কের স্বাহা রক্ষা করে, এবং সনাই পরিকার পরিক্ষর থাকার ভাহানের ছন্ত্র বিশ্বন্ধ হয়। গোজাতিকে দ্যার চক্ষে দেখিলে, এবং বিশুদ্ধ ও পৃষ্টকর থালা নিলে অধিকত্য বিশুদ্ধ ও সাহাকর ছন্ত্র পাত্রা গিয়া থাকে, তাহা গৃহত্ব মাত্রেরই স্বরণ রাধা কর্ত্রা। ছন্ত্রপাত্র বিশ্বির করিবার কিন্তা হেরিলাইক্ (ক্রিনাইছে) করিবার বা সেইস্কলি

আন্নিদম্ম করিবার বিশেষ ব্যবস্থা থাকা চাই। এই সকলের দৃষ্টি রাখিলে গৃহস্থের বিশুদ্ধ সুশ্ধ পাইবার পক্ষে কোন অন্তরায় ঘটে না।

আমাদের কলিকাভা নগরে যেমন ঘাটাল, মেদিনীপুর, উলুবেড়ে, বজবল্প, বড়দহ, বিরাটী, বারাসত, ব্যারাকপুর, দোদপুর, লেলুয়া, হাবড়া, ব্যাটরা, নঙ্গীবাঙ্গলা, আক্ডা, মেটেবুকজ, বালিগঞ্জ, ঢাকুরিয়া, সোনারপুর, রাজপুর, মগরা, ডায়মগুহারবার, মেমারি, ছগলী, শিয়াথালা, আমতা প্রভৃতি স্থান হইতে,প্রতাহ হল, দধি, ছানা, মাখম, ননা, খোলা প্রভৃতি গোজাত থান্যসামগ্রীর সরবরাহ হইয়া থাকে. সেইরূপ শুগুন নগরের প্রাত্যহিক দুগ্নের খরচ কয়েকটি কোম্পানির দ্বারা নগরের উপকণ্ঠস্থ গওগ্রামসমূহ হইতে বা দূরই কাউটিসমূহ হইতে বৈজ্ঞানিক উপায়ে সংরক্ষিত হইরা রেলযোগে আনীত হয়। ফিঞ্লির কলেজ ফার্ম্বের সন্থাধিকারী Express Dairy Co., Ld.র নাম এ সম্বন্ধে উল্লেখ করা অপ্রাসন্ধিক নহে। মাদ্গো নগরেও এক্রপ বহু ছগ্ধ আনীত হইয়া থাকে। পোর্ট ডাপ্তাদের মি: হার্ভীর গোশালার কথা এখানে না বলিলে অক্সায় হয়। প্যারী, কোপেন্হেগেন, আমষ্টারড্যাম্ প্রভৃতি নগরেও ঐশা ব্যবস্থা আছে। অরেল, ডাচেদ্, সালিভান, ডেলাওয়ার (Delaware) প্রভৃতি অঞ্ল হইতে সম্ভতঃ এককোটী কোয়াট্ ছগ্ধ প্রত্যহ নিউইয়র্ক নগরে আনীত হইমা বিক্রাত হয়: চেষ্টার কাউটি হইতে ফিলা-ডেল্ফিয়া, বোষ্টনের উত্তর-পশ্চিম এবং উত্তর-পশ্চিমছিত প্রদেশ হইতে, শিকাগো নগরের উত্তর, দক্ষিণ এবং পশ্চিম প্রদেশ হইতে বছল পরিমাণে হগ্ধ আসিয়া ঐ সকল নগরের হত্তের যোগান দিয়া থাকে। ঐ সকল দেশে অভ্যুত্তম গোশালা এবং দেশিছ্লা গোলাতি আছে। <u>পোছগ্ধ দূরের বাজারে পাঠাইতে হইলে ঠাণ্ডা করিয়া পাঠাইলেই ভাল</u> এই ৰয় refriegeratorএর এত বহল ব্যবহার পাশ্চাভ্য द्धारात अञ्चित्र रहेबारह। जीका व्यामात्मक त्मरने थाञ्चित्र रहेबार

কর্তবা। আমাদের দেশের যুবকর্নের এইদিকে আগুদৃষ্টিগাত কল্প কর্তবা।

বাঁটি অমিপ্রিড হয় কিরপ হয়, তাহা দেখা কর্তব্য। হয় বাঁটী হইতে শেলে ভাছাতে বিশেষ পরিমাণ নবী এবং বিশেষ ওজনমত কঠিন পদার্থ (solids) থাকা চাই। আমাদের দেশের লোক তাহা দেখে না। কিছ পাকাতাদেশে বিশেষতঃ আমেরিকার যুক্তরাজ্যে ছথের বিশুদ্ধতাদ উপর তথাকার অধিবাদীর বিশেষ দৃষ্টি আছে। গাঁটী মুখ্য ঈবৎ হরিদ্রাছ (yellowish) পাইতে মিষ্ট ও স্থাত এবং নামান্য ননগৰবুক হব। ইহাৰ এমনই বিলেষণকারী গুণ আছে যে, খানিকক্ষণ ঠাগু স্থানে রাথিয়া দিৰে ননী আপনা হইতেই উপরে ভাসিয়া উঠে। খাঁটী হয়, কাচের ম্যানে চালিলে সামান্যরূপে পাত্তের গায়ে লাগিয়া যায় এবং বচ্ছ জলের ৰভ সমস্ত ব্যৱহা পড়িয়া যায় না। হুখে "ল্যাক্টোক্রোন্" নামক পদার্থ থাকার ভাতা সাদা দেবার। রসারনবিৎ পণ্ডিভগণ বিশ্লেষণভারা ঠিক कतिबाहिन एवं, विश्वक इंद्यत मरशा अनीन्, बेशाबीन्, वृत्नुन् व्यकृष्ठि অত্যাবশ্যকীয় তৈলাক্ত পদার্থগুলি বিদ্যমান আছে। হথমধ্যন্থিত কেসীন্ তন্মধ্যস্থিত ক্যাল্দিরম লবণাক্ত পদার্থের সহিত্ত ভাসিতে থাকে। ইহা অণুবীক্ষণ বন্ধের হারাও দৃষ্টির বহিভূতি। ছথের মধ্যন্থিত চিমি ল্যাক্টিক এদিভে পরিণত হুইলে, জাহা এই ক্যাল্দিয়ন লবণের সহিজ মিলিত ছট্যা যায় এবং কেদীন স্থানিয়া দধি (curd) রূপে পঞ্চিয়া थारक।

কলিকাতার বাজাছে, প্রাক্তাহ ৪৬ হাজার গ্যাণন হয় সহরের উপকর্চন বজী হানসমূহ হইতে আনীত হইরা থাকে। এইথানে বাহা বিশুদ্ধ ছয় বলিরা বিজীত হয়, তাহার মধ্যে অধিকাংশই জল এবং মহিবছয় নিজিজ ছইলা:থাকে। ছয়ের পৃষ্টিকর এবং অত্যধিক ননী-বারকত্ব তব বাজ্যের উপর নির্ভিত্ব করে। ছয়ের মধ্যে কার্জোহাইড্রেট্ট্ টিনিরপে বিশানাক

খাকে; এবং এই চিনি ল্যাক্টিক এসিডে পরিণত হইরা ছগ্ধকে **জুমা**ইয়া ছি ডিয়া ফেলে। আমাদেব দেশের কুটিল এবং তঞ্চকতাপুণ শঠ গোরালাগণ সাধারণকে ঠকাইবাব জন্ত বিশুদ্ধ হয় হইতে ননী তুলিয়া শুটুয়া জল, বাতাদা, ষ্টাৰ্চ , মুখুলা বা এবাক্কট মিশাইয়া, মহিষ ও গো-ছুগ্ধ উভয় নিশাইয়া, বা ননীতোলা সন্ধ্যাব হগ্ধ সকালেব হগ্গেব সহিত মিশাইয়া, है। हिका विनया विक्रये कविशा थोदक। आमारित पर्मा (य छक्ष ज्ञान निश्र) ব্যবহাৰ করিবাৰ প্রথা বছণুগযুগান্তৰ হইতে প্রচলিত আছে, তাহা খুৰ সমীচীন : যেহেতু ইহার ্কাবা তথকে একপ্রকাব ভেবিলাইজ কবা হয়: এবং তদভাম্বত বীজাণগুলিকে ইহাছাবা নষ্ট কব। ২য়। আযর্কেদ भारत हेडाव निम्मन পाएया याग। जना एक वामिश मधरक अक्षांभक Kitasato বলেন:-" This is fermented milk largely used in this country. The one is sugared and the other nonsugared. The 03 percentage of lactic acid in the milk kills common comma-bacillus in 5 hours, and an addition of sugar previous to curdling does not affect the amount of lactic acid, but makes the acidity and makes it palatable. Butter milk or Ghole is also extensively used as food by the people of India. This is milk left after butter is taken away by churning. দ্বি চইতে মাথম বা ননী তুলিয়া লইলে যে জলীয় পদার্থটি থাকে তাহাই ঘোল; ইহা ভারতুর্যিট্রীর দাবা বহল পরিমাণে थाना करले वावकार करा। देवात श्रेणाञ्चल मचर्क शूर्व्स वना क्रेमारक। ছালার জলকে whey বলে এবং ছালাকে ইংবাজীতে curd of milk मात्म अधिहित कता रहेशा शास्त । हानात वावरात वक्रास्ट मुद्रे हव । श्चानाम १९.०% (अधिक, २.४ देखन अन् १.) नवगाक श्रनार्थ विनामान

चाटा। प्रथि वा ननी महन कतित्वरे माथब छैरशह हत। कनिकाराह वाखादत व होता. शहा. मानाशृत, व्यामिश्य, मिनासशृत, मार्किमिः छताहें. আনেদাবাদ, বোধাই, কামতি, পাটনা, কান্দী, জবলপুর প্রভৃতি স্থান হইতে প্রচুর ভূঁইদা মাধন আমদানী হইরা থাকে। যশোর, ঢাকা এবং মেদিনীপুরই কলিকাতার বাজারে কেবল গাওয়া মাথন পাঠাইয়া থাকে। শাখন জাল দিলেই খি হয়। খি আনাদের একটি প্রধান থাদ্য। আঞ্চকাল মিশ্রিত অবিশুদ্ধ ভেজাল ঘত কলিকাতায় বিক্রীত হইয়া সাধাবণের স্বাস্থ্যের হানি ও অপকার ঘটাইতেছে। ছতের বিশুদ্ধতা পরীকা করিতে হইলে. সম-পরিমাণ মত এবং গ্লেশিয়াল এশেটিক এসিড টেষ্ট-টিউবে লইয়া গরন জলে রাখিরা মধ্যে মধ্যে নাড়িবে. এবং তাহার মধ্যে একটি তাপমান-বন্ধ দিয়া দেখিবে বে, কি পরিমাণ উত্তাপে তাহা গলিয়া যায়। বদি ২৯ হইতে ৩৯ ডিগ্রি শেটিমিটারে তাহা দ্রব হয়, তবে বিগুদ্ধ বলিয়া জামিবে; কিন্ত যদি তদপেকা উচ্চ উত্তাপে দ্ৰব হয়, ভাহা হইলে বুঝিবে বে. তাহাতে পগুর চৰবী, সাপের চৰবী, তৈল, প্রভৃতি অহিতকর সাম্গ্রী মিল্লিত আছে। টাটুকা হয় হইতে মাথন'তোলা আমাদিগেব দেশের সর্বস্থানের গোরালাদের এবং গোপালনকারী জাতিগণের এক প্রধান ব্যবসায় ছিল এবং অদ্যাবধিও আছে। আমাদের দেশে কাঁচাচ্ হইতে ননী তোলাব প্রথা সর্বত নাই; কিছ পাশ্চাতাদেশে ইহার বছবাপ্রচার দেখা বায়। পাশ্চাতাদেশের অমুকরণে আজকাল আমাদেব দেশেও কাচাত্রগ্ধ হইতে নদী ভোলার প্রথা প্রচলিত হইতেছে। আমাদের দেশে দধি হইতে মাথন ভোলা প্রথা প্রার সর্বাত্ত দেখা যায়। ুশীশুকালে দধি হইতে অধিক পরিমাণে মাখন উঠে! আমাদের দেশ গ্রীম্বপ্রধান বলিরা গ্রীম্বের সময়ে বায়ুর উত্তাপের ইতর-বিশেষে কম পরিষাণে মাথন উঠিয়া থাকে: মন্থনকালে ভাগুত্ব शंखन छेखान क्रमनाहे वृद्धि आश हम धवर महे मना क्म नित्रमाल नमी वा अनुवान छेन्त्रीर्थ इटेबा थाएक। अञ्जताः इत्यान वा व्याप्तित छेडाण वादेशक

াডিগ্রী ফার্ণ হাটের অধিক না হয়, সেদিকে বিশেবরূপ দৃষ্টি রাখা কর্ময়য়াদের দেশের গোরালাগণ এই সব বৈজ্ঞানিক উপার না জানিলেও অভ্যাসগুণে পাশ্চাত্য প্রণালীর ফল প্রাপ্ত হইয়া থাকে। মছনকালে প্রথম ১০০০ মিনিট মছনদণ্ড মূহভাবে ঘুরাইবে; তাহা হইলে মাখন শীঘই ভেলা বাঁথিয়া উপরে উথিত হইবে। তাহার পরে খুব ক্রতভাবে অর্থাৎ মিনিটে এ০া৫০ বাব মছনদণ্ড ঘুরাইলে, তংপর মাখন উপরে উঠিয়া থাকে। এ সম্বন্ধে পরে আরও বিবৃত হইয়াছে।

ছানার জলকে হোরে (whey), ননীতোলা দ্বন্ধকে skimmed milk, খোলকে separated or butter milk নামে পাশ্চান্তা পাততগণ অভিহিত করিয়া থাকেন। এই সকল গুলিই মহুযা-খাদ্যক্ষণে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। এখন এই গুলিতে কি কি উপদান আছে, তাহা দেখা কপ্তব্য; বেহেতু তাহার দ্বারা, মনুষ্যদেহের মধ্যে ঐ খাদ্য-দাহাব্যে কিন্ত্রপ পৃষ্টি দাধিত হয়, তাহা জানা যাইতে পারিবে। বিশুদ্ধ চার্মে নিম্নলিখিত উপাদানগুলি আছে:—

জল	•••	শতক্ৰা	৭ ৬ ° •
চিনি	•••	93. 4	6.0
ननी		"	8.9
কেসীন্	• • •	"	5.0
এলবুমেন্	•••	13	•4
ছাই	***	,,	,
			*

ননীতোলা তথ্যে আছে:--

জন	***	শতক্ৰা	96.ev
टेडन	•••	,,	۰, ۲۰
চিনি ¯		99	8.24
কেসিন্	•••	,,	2.2€
এল্বুমেন	•••	,,	. १४
ছাই	••	"	٠٩৮
			>400

বোলে বিচ্মতেৰ মতে—

क न		শতক্ৰ	20 25
তৈল ়	•••	,,	၁ န်
চিনি	•••	••	১.৫৯
গ্ৰোটড ্	(কেদিন্ও এল্বমেন্	,	១
ছাই	•••	**	د ط.
			> 0 0 0

উপাদান গুলি আছে।

বিখ্যাত পাশ্চাতা অধ্যাপক ভান্ সুটেকেব ' Van Slyke) মতে ছানার জলে শতক্বা নিয়লিখিত পদাধ্তলি আছে :—

ভল	•••	≥008
হৈত্ৰ (Fat)	•	*৮৪
চিনি এবং লবণ		৫ ৭ ৮
		> 0 0 0

এইস্থানে আর একটি কথা বলিয়া এই পরিছেদে শেষ করিব। **ইলিকাভার** সন্নিকটম্ব উত্তবপাড়াব খাতুনামা ভূষামী পূ**লনীর**

শ্রীযুক্ত বাবু মনোহরচক্র মুখোপাধ্যায় গোপালন স্বব্ধে খুব উদ্যোগী।
তিনি স্বীয় অধ্যবসায় এবং প্রতিভাবলে একটি স্বভন্দ্যের মহন-কল প্রস্তুত করিয়াছেন। ইহা খুব সস্তা, স্বতরাং দরিদ্র লোকেরও অধিগমা।
বিলাতী কলগুণি এত অধিক ম্ল্যবান যে, সামান্ত ক্রমক বা গোয়ালা ভাহা রাখিতে পারে না। মনোহরবার আমাদের দেশের গোয়ালা সম্প্রদায়ের সে অভাব দূর করিয়াছেন।



সপ্তবিংশ পরিচ্ছেদ।

গোপালন লাভন্তনক হইতে পারে কি না ?

এই প্রাট স্বত:ই অনেকের মনে উদিত হইরা থাকে। ভারত ক্ষবিপ্রধান দেশ, ক্ষবিতেই আমাদের প্রাধান্ত। তবে এই কার্য্য লাভক্ষনক হুইবে না কেন, তাহা বলা যায় না। গোপালন (dairy-farming) আমাদের দেশে অতি প্রাচীনকাল হইতেই প্রচলিত আছে। মহাভারতে মংস্তরাজের দক্ষিণ ও উত্তর গোগৃহের কথা যাহা গুনা যায়, তাহা পরিবর্দ্ধিত মাত্রায় ডেয়ারি ফার্ম্মিং বই আর কিছুই নহে। খোষের গোয়াল" কথাট এইরূপ কাজের পরিচায়ক নহে কি ? বর্তমান-কালে আলিগড়ের কিভেণ্টার সাহেব দ্বাপরের নলঘোষ নহেন কি ? ব্রজের গাই, হিসার-হরিয়ানা-গুজরাট্-জাতীয় গাভীর অপেকা ভারতে কোন ক্রমেই ন্যুন প্রসিদ্ধি লাভ করে নাই। আমাদের দেশে গোপালন বহুপুরাকাল হইতে প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছিল। মুসলমান-শাসনকালে আকবর বাদসাহের, টিপু ও হায়দার আলির, ভরতপুরের মহারাজের, মহারাজ কৃষ্ণচন্দ্রের, টীকারীর মহারাজের, বাজীরাও: পেশবার, পাতিয়ালা-রাজের এবং বর্দ্ধমান এবং দারবঙ্গ-রাজের গোরাল বছকাল হইতে প্রসিদ্ধ। ভারতবর্ষের দেশ, কাল, জল এবং বায়ুর অফুকুল্যে গোশালা বিশেষ লাভজনক হইতে পারে, তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। তবে এই ব্যবসায়টী লাভজনক করিতে গেলে. করেকটি অত্যাবশুক বিষয় প্রত্যেক গোপালকের মূরণ রাথা বিশেষ প্রয়োজন। ১। গ্রন্ধ বিক্রয়ের স্থান। গোয়ালটি কোন বড় সহরের নিকট বা রেল-**টেশনের নিকট স্থাপন করা দরকার. যাহাতে হগ্ধ, দোহনের অব্যবহিত** প্রারেই, সকালে এবং বৈকালে, সহরের বাজারে নীত হইতে পারে। ২। চন্দ্র জোহন করিয়া যত শীল্প সম্ভব বাজারে নীত হইবার উপায় ছিরা

করা প্রয়োজন; যেহেতু, আমাদের দেশ গ্রীমপ্রধান দেশ; ছয় দোহন করিয়া অধিকক্ষণ রাখিলে খারাপ হট্যা যাইবার অধিক ভর। সেই-জন্ম আমাদের দেশের লোকের বিশেষরূপ শিক্ষা করা কর্ম্ববা বে ষ্টেরিলাইজ ড মিল্ক কিরুপে পাশ্চাত্যদেশে প্রস্তুত হয়। फिनमार्क, खान्न, सुरेकवन्छ वदः आमित्रका श्रामन रहेर्ड वामनाव যুবকগণ তাহা শিক্ষালাভ করিয়া আইদেন, ইহা বর্ত্তমান সময়ে একান্ত वाक्ष्मीय। जाजकान २।> जन উत्गांशी युवक जात्मतिका इटेटंड এहे বিদ্যা শিক্ষা করিয়া আদিতেছেন বটে, কিন্তু তাঁহাদের প্রক্লুত (practical) অভিজ্ঞতা খুবই কম; কাজেই বই-পড়া বিদ্যায় সেইরূপ দক্ষতার সহিত তাঁহারা কাজ চালাইতে পারেন না। অধিকত তাঁহাদের সে অধ্যবসায়ও নাই এবং আবশুকীয় অর্থও নাই। কাজেই গোপালন সমধ্যে থাহারা পাশ্চাত্যদেশ হইতে শিক্ষা লাভ করিয়া আসিয়াছেন. দেশে ফিরিয়া আদিয়া সহাত্ত্তি ও অর্থাভাবে তাঁহার কিছুই করিয়া উঠিতে পারিতেছেন না। ৩। পরিষ্কার পরিচ্ছন্নতার অভাবে এবং ছ্মপাত্র সমূহ অত্যন্ত পরিষ্ঠার না করায় বা সময়ে ধৌত না করায় অনেক গোরালের হগ্ধ নষ্ট হইয়া থাকে। লাভেছু গোরালার ইহা খুব ভাল করিয়া শারণ রাথা কর্ত্তব্য যে, গোপালনের অর্দ্ধেক লাভ—যত্ন, সাবধানতা, এবং পরিষ্কার-পরিচ্ছরতার উপর নির্ভর করে। ৪। কোন জাতীয় গাভী রাথা দরকার, তাহা ক্রয়কের থুব চিন্তা করিয়া দেখা কর্তব্য चामात विरवहनात्र चामारतत रात्म dairy farming नाज्यनकक्ररण চালাইতে হইলে, বড় জাতির গাভীই রাখা উচিত; কারণ, বড় এবং ছোট গাভীর খাদ্যদম্বন্ধে সামান্ত প্রভেদ থাকিলেও, ত্রন্ধদারিকা শক্তি ছাড়া যত্ন এবং অন্তান্ত আবগুকীয় ব্যয়সমূহে ইতর্বিশেষ দেখা যায় না। দে কারণ diary farming সম্বন্ধে क्ष्मताछ, हित्रशाना वा हिनात, मण्डे शास्त्रती, क्रका वा कार्डितीन



জাতীৰ গাতী বাধাই সৰ্বতোভাবে কওঁবা। ছোটজাতিৰ মধ্যে বঙ্গীয়, এডেন, ভাওয়ালপুৰী এবং মথুবাজাতীয় গাভীকেই আমি পছন্দ কবি। যদি কেহ বিলাতী রাখিতে চাহেন, তাহা হইলে জামি-াবেন্সী, হোল্টান্, শট্হর্, ডেভন্, লালফ্রিজলাগু, ব্রিটেনা এবং গ্যালওয়ে ভাতিই আমি বিশেষ পচ্ছল কৰি। তবে এই সকল বিলাতীজাতীয় গাভী আমাদিগেব দেশে লাভজনকরপে পালন কবা ১রহ বলিয়া আমাৰ বিবেচনাৰ ভাৰতীয় বডজাতীয় গাভীৰ সৃহিত বিলাতী ভাল ষাঁডেৰ কলম চাৰা বা c.০১১ কৰিলে যে বিশেষ লাভজনক ১ইবে. তাহাতে অথমাত সন্দেহ নাই। কিন্তু স্বল চন্ত্ৰবতী শাৰক উংপাদন কবিতে হইলে ব্রিডিং সম্বন্ধে বৈজ্ঞানিক অভিজ্ঞতা স্বিশেষ আবশ্যক ৷ এসম্বন্ধে আমি পূবের যে যংকিঞ্ছিৎ আলোচনা কবিয়াছি, ভাচা সাবশেষ মনোযোগ ও বত্নসহকাবে পাঠ কবা আবশুক। কুক্দ নাহেবের Crook's) ক্লত ' Things Indian," ডাৰউহনেৰ "Animals and Plants under Domestication,' বেলডনেৰ "ডেয়াবা ফাৰ্মি"." লাতেবেৰ "Principles of Heredity," Dr Wallace এবং Sheldonএৰ প্ৰস্তুক গুলি এবং Sir Richard Owenএৰ 'Anatomy of Vertebrates' প্রভৃতি পুত্তক প্রত্যেক কুষ্টের অতি যত্ন সহকারে পঠি করা কর্ত্তবা। ৫। গোচারণ নির্বাচন কিম্বা প্রস্তুতকরণ সম্বর্দ্ধী ক্সমাদিগের অভিজ্ঞতা একেবারেই নাই। প্রচ্ব পুষ্টিকর ঘাদ বথাদময়ে গো, মেষ ছাগলাদি গৃহপালিত পশুনা পাইয়া হীনবল হহলে, কৃষককে লাভেৰ পরিবর্ত্তে অত্যন্ত কতিগ্রন্ত কবিরা থাকে। গোজাতিব আহার मःत्रक्रम **७ मःश्वाभा**त्नव विषय आमात्मव त्मात्मव क्रयत्कव विरुगय विष्ठनीय । গ্রীত্মের সময় দেশেব সমস্ত ঘাস দৃর্বা মবিয়া যাওয় য় বাকৃশক্তিহীন শোলাতির ভোজনের জন্য যে কি কট্ট হইয়া থাকে, তাহা চিন্তানীল পাঠক একবার তাৰিয়া দেখিবেন কি ? আমরা গাভীব ননীটুকু খাইতে পারি:

কিছু গাভীকে সেবা করা, যত্ন করা বা জাব দেওয়ার সময় উপস্থিত চইলেই চকু ছানাবড়া! থেঁড়ে ছইলেই কসাই-হস্তে সামান্য মূল্য বিনিময়ে বিক্রয় করিতে অগ্রসর!! ইহাতে ক্রমিপ্রধান ভাবতের গোকুল অচিরে নিমুল ছইবে না ত কি পাশ্চাত্য বৈজ্ঞানিক-শিক্ষাপ্রাপ্ত ইংলগু আমেরিকার গোকুল ধ্বংস হইবে? বিলাতে ভারতীয় গোজাতিব সংরক্ষণের কন্য একটি সমিতি স্থাপিত হইয়াছে: প্রত্যেক ভাবতবাসীরই ভাহাব সবিশেব তথা, অবগত হওয়া কর্ত্তব্য। আমেরিকা প্রভৃতি দেশের লোকে, গোচারণের অভাব হইলে, রুত্রিম উপায়ে গোচারণ প্রস্তুত্ত করিয়া গাকেন। এবিষয়ে আমার অধিক বলিবার আব কোন প্রয়োজন নাই; সমদয় পাঠক, এবিষয়ে Sutton ক্বত "Permanent and Temporary Pastures" নামক পুস্তক বত্রসহকাবে পাঠ করিবেন। প্রত্যেক ক্রমকের নন্দেরাথা উচিত যে, গ্রেবে ননী-উৎপাদিকাশক্তি গাভীব জাতি, বয়য়, ৻ভাজন এবং অত্ব উপবেই নির্ভব করে। Babcockএর test ছারা ইহা দৃঢ়য়পে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

৬। রুবক নিজেব বাঁড় নিজে বাখিবেন এবং উংপাদন করিবেন।
এ সম্বন্ধে পূর্ব্বেও স্থানে স্থানে লিখিক স্ইয়াছে। পুনরুক্তি-দোবভরে তাহা এখানে উদ্ধৃত কবিলাম না। এই সকল বিষয়ে সবিশেষ
নিকেনা পূর্বক অভিজ্ঞতা লাভ কবিয়া অল্ল-পরিমাণে কার্যক্তেরে
অবতীর্ণ স্ইলে, অক্সদেশে "ডেবাবী ফাবমিং" কেন লাভজনক স্ইবে না,
ভাহা বলিতে পাকি না। বোষাই, মহীশ্র, আলিগড় প্রভৃত্তিভূমানের
গোয়ালাগণ এতহারা বিশেষ অর্থবান হইয়াছেন।

চেষ্টা এবং বছেব অভাবে দেশীয় গোজাতির ক্রমিক অবনতি ক্রইরাছে এবং হইতেছে। গোজাতির উন্নতিনাধন প্রত্যেক ক্রিক্রই কর্ত্বা। Industral বা শিল্প-সংক্রান্ত উন্নতি বারা বেনন বর্তবান ক্রেশ-হিকেরীরা ভারতোদার করিতে বসিরাছেন, সেইক্রপ

গৌধনের উরতিসাধনের হারা Industrial regenationerএর সার্থকতা সম্পাদন করিতে অগ্রসর হউন,—ইহা আমাদের দেশের লোকের নিকটি আমার একান্ত আন্তরিক প্রার্থনা। আপনারা নিজেদের কান্ত নিজেরা করুন। "British Association for the Protection of Indian Cattle" এর হত্তে সব ছাড়িয়া দিবেন না। বিদেশ হইতে তাঁহারা কতদ্র কি করিবেন? নিজেরা চেটা করুন, পরে অপরের সাহায়া ভিকা করুন। প্রথমে এই বিষয় ভারতীয় গভর্গমেন্টের সমূথে উপস্থিত করুন; তাহার পর সমাটের কাছে যাইবার সংকল্প করিবেন। শেল্ডনেক "Dairy Farming" সকলের পাঠ কবা কর্ত্রয়।

পূর্বালিখিত "ত্থ-ব্যবসায়" পর্যায়ে এবিষয়ে আর যাহা কিছু বক্তব্য ছিল, তাহার প্রতি স্বিশেষরূপে পাঠকের মনযোগ আকর্ষণ করিয়া বলা ছইয়াছে।

গোপালন (Cattle-breeding) আমাদেব দেশে লাভজনকুণ রূপে প্রবর্ত্তন কবিতে হইলে কয়েকটি বিশেষ আবশুকীয় বিষয় শ্মবণ রাথা কর্ত্তবা। ১। দেশে গুভিক্ষপাতাদি হয় কি না এবং গোধাদোর অভাব বৎসরের মধ্যে (ডেয়ারি ফারম্ যে দেশে অবস্থিত তথায়) হয় কি না ? ১। গোচারণ বৈজ্ঞানিক উপায়ে করা যাইতে পায়ে কি না ? ৩। স্থানীয় গোজাতিব কি উপায়ে উয়তি সাধিত শহুইতে পায়ে ? ৪। সংক্রামক রোগ হইবার সন্তাবনা আছে কি না, এবং কি উপায়ে তাহার প্রসাব বন্ধ করা যাইতেও পায়ে ? গো-চাম বা "ডেয়ারি ফার্মিং" সম্বন্ধে মেজর মিঘায় এবং মেজর ভাউমান্ এক উৎকৃষ্ট পৃস্তক লিধিয়াছেন। তাহা আমাদের দেশের জন্ত বিশেষ উপযোক্ষী বলিলেও অত্যুক্তি হয় না। পরিবন্ধিতনাতায় অত্রেমেণ কো-চাম বা 'ডেয়ারি ফার্মিং' করিতে হইলে, কল-কারথানার বিশেষ প্রশ্রেক্তন হইরা থাকে। তাহা "কল-কারথানা" পর্যায়ে কেন্ধ ৯

নিম্নলিখিত বিষয়গুলিও এবিবরে হাতে কলমে বিশেষ উপবাসী; প্রত্যেক পাঠকের ইহা সরণ রাখা কর্ত্তব্য। হ্থ-ব্যবসায় পরিবর্দ্ধিত মাত্রায় আমাদের দেশে করিতে হইলে কল-কারখানার বিশেষ প্রয়োজন হয়। তাহার সবিশেষ আলোচনা পূর্ববর্তী পরিছেদে করা হইয়াছে। এইরূপ ব্যবসায় করিতে হইলে নিম্নলিখিত উপক্রণগুলি ফার্মে থাকা একান্ত কর্ত্তব্য:—

- 1 Chaff cutter.
- 21 Corn crasher or Pulp-smasher.
- Oil-cake crusher.
 - 8 1 Larimore Boiler.
 - TI One 12 H. P. Engine.
 - 1 One Pulping machine.
 - "I Stancheons and Hock Ties.
 - Feed Boiler.
 - > | Feed Mixer.
 - > 1 Refrigerator.

পরিবর্দ্ধিতনাত্রার গব্য-বাবসার (daily farming) আমাদিগের দেশে লাভজনকরণে প্রবর্ত্তিত করিতে হইলে, করেকটা বিশেষ আবশুকীর কথা রুষকের স্মরণ রাথা প্রয়োজন। এই গুলির প্রতি লক্ষ্য না রাথার আমাদিগের দেশের গোরালাগণ এবং শিক্ষিত বাবুরা ছম্ম-বাবসার্ক্ষ করিতে যাইরা সম্প্রতি হানিগ্রন্ত হইরাছেন। প্রথমতঃ ক্রক্ষের খুব বীর এবং নম্রপ্রকৃতির লোক হওয়া চাই, যেহেতু তাঁহাকে পাঁচ পাগল লইরা সংসার চালাইতে হইবে; গোজাতির প্রতি তাঁহার ভালবাদা খাকা চাই এবং তিনি গোবংসল হওয়া কর্তব্য। বিতীয়তঃ, যে গাভীগুলি রামিবেন, তাহা সেই বংশীর বা পরিবারের গোজাতির মধ্যে অভ্যুৎরুই হুলো চাই; না হুইলেও, তাহাদৈর ক্রমশঃ নির্বাচন-বিধির বারা হার

বংসরে নিজের মনোমত এবং সেই জাতির মধ্যে অত্যুৎক্লষ্ট করিয়া লইতে হুইবে। তৃতীয়তঃ, গোশালাটি উচ্চ ও স্বাস্থ্যকর স্থানে এবং সর্বাঙ্গস্থানর ও বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে নিশ্মিত হওয়া কর্ত্তকা। চতুর্যতঃ—হগ্ধশালা-জাত (dairy) যাবতীয় প্ৰাসামগ্ৰী যাহাতে শান্তই অৰ্থাৎ অৱকাল মধ্যে বাজারে নীত হটতে পারে অথবা চুগ্ধজাত সামগ্রী যাহাতে সহজেই নিক্টস্থ বাজারে অবিকৃতাবস্থায় নীত হইতে পারে, তাহারও ব্যবস্থা করা চাই। অধিকম্ভ যদি বাজার দুরে অবস্থিতৰ থাকে, তাহা হুইলে গোজাত থাদ্যদামগ্রী ক্রিপে অধিকক্ষণ অধিকতাবস্থায় রাখিতে পারা ষায়, তাহার প্রণালী অবগত হইয়া. সেই প্রণালী-মত খাদ্যদামগ্রী মিকটস্থ বাজারে বথাসময়ে প্রেরণ করা কর্ত্তব্য, বাহাতে সহজেই ও সত্তর সকল পণাদ্রব্য বিক্রীত হইয়া যাইতে পারে। বৈজ্ঞানিক উর্লাভর সহিত চগ্ধ-ব্যবসায় (dairy farming) অনেকগুলি ক্ষুদ্র কুদ্র ব্যবসায়ে প্রিণত হইয়াছে; বেমন (১) চগ্ধ-ব্যবসায়, (২) নাখন-ব্যবসায়, (৩) ত্বত-ব্যবসায়, (৪) পনীর বা cheese-ব্যবসায় (৫), ছানা-ব্যবসায়। কৃষক কোনটি গ্রহণ করিবেন, তাহা তাঁহাকে প্রথমে মনোনাত করিয়া, সেই অমুষায়ী ঐ ব্যবসার আমুষঙ্গিক সকল অবস্থা বিবেচনা করিতে হইবে, অর্থাৎ জন বা মজুর, জল এবং বরফ, গোশালার স্থান নির্বাচন, বাজার এবং লাভালাভের সম্ভাবনা আদির প্রতি ক্রবকের মনোযোগ দেওয়া শ্বর্তবা; এবং সর্বশেষে কোন প্রকারের ব্যবসায় (dairy) গ্রহণ করিবেন, তাহা ঠিক করিয়া, তদমুখায়ী কার্যাক্ষেত্রে ক্রমশঃ অগ্রসর হওয়া কর্তব্য। - তাছার পর দেখা কর্ত্তবা—ক্রুষক বা গোরালা কোনজাতীর গাড়ী

তাছার পর দেখা কর্ত্তব্য—ক্লয়ক বা গোরালা কোন্জাতীর গাড়ী চথ্য-ক্লয়ারের জন্ম মনোনীত করিবেন। এ বিষয়টিও ক্লম জটিল এবং লায়িভপূর্ণ নহে।

পাশ্চাত্য দেশে বা আমেরিকার যদি গাড়ী পেঁড়ে (dry) হইন, কিলা কোন সভট হরাবোগ্য বোগগুড় হইন, তবে তাহাকে নোটা ('fatten') করিয়া কদাই-হত্তে বিক্রীত করা হয়। কিন্তু আমাদের হিন্দুপ্রধান দেশে এরপ ধর্মবিরুদ্ধ কর্মে কেছ প্রকাশ্যে রাজী হইবেন না। মুদলমানগণ এরপ ব্যবদারে রাজী হইতে পারেন; কিন্তু হত্যার জন্ত গো-জনন ত আমাদের দেশে নাই। মুদলমানগণ চামড়ার জন্ত লালায়িত হইলেও এদিকে তাঁহাদের দৃষ্টিপাত অব্দৌ নাই। আমরা উৎপাদক নহি, বরং অধিকাংশই ধ্বংলকারী।

দেইজন্ম আমার বিবেচনা হয় যে, চগ্ধ-ব্যবসায় চালাইতে হইলে, রুষক ত্মবঁতী গাভীর বংশ হুইতে স্বীয় পাল তৈয়ার করিয়া লুইবেন। কোন গো-বংশ অধিক দিন হুগ্ধ দেয়: কেহ বা ব্রুদিন পর্যান্ত সমানভাবে ত্ম দেয়; কোন জাতি অল পায়; কেত বা বেশী থায়; কেত্বা অল খাইয়া বেশী জগ্প দেয়: কেত বা বেশী খাইয়া অল্ল জগ্প দেয়। এই সকল দেপিয়া সমাক বিবেচনা করিয়া রুষক নিজ আবশাক ও লাভালাভ বিবেচনাপ্রবৃক্ত গো নির্বাচন করিবেন। তাহার পর খেঁডে গাভী-গুলির খাদ্য কিরুপে দেওয়া কর্ত্বা, তাহার অমুধাবন প্রয়োজন ৷ কারণ, এদেশে দেগুলিকে কসাই-হস্তে বিক্রীত করা যাইবে না, অথচ তাহাদের পরবর্তী বিয়ান পর্যান্ত খাইতে দিতে হইবে। সেইজভা কিরূপ খাদা কিরূপে এবং ক'ত অল্লবায়ে সরবরাহ হঁইতে পারে, তাহার প্রতি দৃষ্টি ক্রক্মাতেরই রাখা কর্ত্ত্র। এ বিষয়ে Mr. Henry E. Alford, C. E., Chief of Dairy Division, Bureau of Animal Industry in the United States, Department of Agriculture ব্ৰেন: - "No matter how strong one's convictions, discretion must be exercised. Pronounced opinions and direct advice as to the several recognized dairy breeds are here unnecessary. Evidence abounds on every side. and every dailyman or prospective dairyman can

satisfy himself as to the cattle he should adopt if he will but make a proper study of the subject. He need not go far in any country to find the best kind or breed of a cows for milk supply, the best for butter making or the best for the butter trade. There is no special cheeses making cow; the best butter cow is also the best for cheese; this fact has been demonstrated beyond dispute." এবিষয়ে আমি "গো-সেবা" পর্যায়েও আলোচনা করিয়াছি। ভাল এবং চ্য়্মদাত্রী গো ক্রম্ম করা অপেকা প্রস্তুত করিয়া লওয়াই ভাল। দৌরাশ বা cross বা graded গাভী লইয়াই সর্বপ্রথমে অবতীর্ণ হওয়া মন্দ হয় না। দ্রোণগুঘা বা "কেড়ে-ভরা" অত্যুৎকৃষ্ট ছ্থালাক্রী গাভীপাল গ্রন্থ-ব্যবসায়ী ক্রবক সংগ্রহ করিবেন। এসম্বন্ধে মি: আলভোর্ড (Alvord) ব্ৰেন.—"It is also economy, having chosen the right breed, to purchase good representatives of that breed, rather than be content with only average or even ordinary animals. Successful dairying has proved that the greater profit comes from the best cows, whatever their kind. It is better to pay three hundred dollars for three excellent cows than to pay the same sum for four good cows or five which are only fair. A really superior dairy cow of a superior family, with pedigree which gives assurance of calves equal to the dam, if not better is always worth a large price. Such an animal adds much to the average value of any dairy herd."

় এই প্রকারে ষণন পাল (herd) সংগ্রহটি শেষ হইয়া বাইবে, ভঞ্জ :

প্রত্যেক গাভীর হ্থাদারিকা শক্তির পরীক্ষাক্ত পাশ্চাত্য দেশের মত "milk record" রাখিতে হইবে, এবং Babcock tester দারা হথের ননী পরীক্ষা করিয়া বিচার করিবে বে, কোন্ গাভীট "খাই-খরচ" বাদে শাভ্যবতী (profitably kept) হইতেছে। ঐ গুলিকে রাখিরা, মলাভবতী গুলিকে অপসারিত করিবে, এবং তাহাদের স্থান অপর লাভজনক গাভীর দারা পূরণ করিবে। গাভীকে নিজ ওজনের দশ্মাংশ পরিমাণ খাইতে দিবে এবং বিংশাংশ পরিমাণ হগ্ধ আশা করিবে। এ সম্বন্ধে দ্বিতীয় ভাগেওঁ আলোচনা আছে।

অতঃপর দেখা কন্তব্য যে, কোন্ জাতীয় হগ্নবতী গাভী নির্মাচন করা লাভজনক হইতে পারে। এ বিষয়ে ইতিপূর্ব্ধে আমি কিছু কিছু আলোচনা করিয়াছি। অবিমিশ্রিত-শোণিত-জাত গাভী অপেক্ষা "দেশারাশ" or Graded cowsই যে ভাল, সে সম্বন্ধে গো-উৎপাদকগণের 'দির্মবাদীসম্মত" মত। দেশীর মধ্যে আমি পূর্ব্বেই বলিয়াছি যে হালি, নেলোর, রুফা, গুজরাট, গীর, বগৌধা, মন্ট্গোমেরী, হিসার্ প্রভৃতি গাভী হগ্ন-বাবসায়ীর পক্ষে সর্মতোভাবে উপযোগী। বিলাতি পরিবারের মধ্যেও কয়েক জ্বতীয় প্রচুর হগ্নবতী গোজাতি আছে। ভাহা 'ক্ষারতীর গোজাতির বর্গ-বিভাস' অধ্যায়ের "বিলাতি"-পর্যায়টি কাইতে রুষক বাছিয়া লইর্মা কার্যক্ষেত্রে অগ্রসর হইতে পারেম। এবিষয়ে অধিক বলা নিশুয়োজন। আমাদিগের দেশীর গাভীর মধ্যে হালি বা ক্রিয়ানা, নেলোর, কাভেরা, গুজরাট, মন্ট্গোমেরী, বগৌধা, কালগান্ প্রভৃতিই প্রচুর হগ্নবতী বলিয়া প্রসিদ্ধ। আমি গো-বিভাগ পর্যায়ে ইহার স্থিকের আলোচনা করিয়াছি। তাহা দেখিয়া রুষক নিজু অভীইমন্ত গাভী ক্ষায়েন করিয়া ভাইকেন।

অফবিংশ পরিচ্ছেদ।

দুর্গ-পরীকা:

পাশ্চাত্য দেশে গ্রন্থ-পরীকা ব্যাপারটি তথ্য-ব্যবসায়ের একটি প্রধান **অন্ন। ইউরোপ, বিলাত এবং** জানেরিকা খণ্ডের বাজারে বিশুদ্ধ এবং নির্দিষ্ট পরিমাণ ননীযুক্ত হল্প বিভায় না কলিলে বিজেতাগণকে আইনের শাসনে দণ্ডিত হইতে হয়। তাই বলি, পাশ্চাতা স্থমতা জাতিগণ বাহা করেন, তাহাই বৈজ্ঞানিক এবং প্রন্তর। আমাদের ভারতে একণে একেইত ত্ত্ব পাওয়া বার না : হিতীয়তঃ বাহা পাওয়া বার, জাহাও বিশুদ্ধ নহে। কাজেই এইরূপ মিশ্রিত, কীট-বীজাণুপূর্ণ এরে মন্তুষ্যের রোগ্যাধিকা দুই হয় ও শত শত বালক-বালিকা এইরূপ অস্বাস্থ্যকর তথ্য পান করিয়া অকালে কালগ্রাসে পতিত হইয়। থাকে। ইহার প্রতিকার আমাদের দেশে নাই। যাহাও সামাত আছে, তাহাও সমরে সমরে নিউমিসিপাল ভাকারগণের কুপার স্নাক্ভাবে রক্ষিত হয় ন।। ছাই ব্যবসায় সম্বন্ধে যে যে পুত্তক গুলির আমি পূমা পূর্ব্ব অন্যায়ে উল্লেখ করিয়াছি, তাহা পাঠ করা প্রত্যেক ছগ্ধ-বাবসাগ্রীর সর্বতোভাকে কওঁবা। তাহা ছাড়া ফুক্ত-রাজ্যের প্রাসিদ্ধ চন্ধত ত্রিং Farrington এবং Woll কৃত "Testing Milk and its Products" নামক পুত্তকখানি সকলের বিশেষ যত্নহকারে পাঠ করা কর্ত্তব্য। ল্যাদ্গাড , ওভেন্বার্গ, রালিন্ হলগু, বিভন, ইয়র্ক , প্রাস্থোন, বোষ্টন্, কিলাডেণ্ফিয়া, ডিট্রয়, শিকাণো, ল্যান্সিং, वरफला श्विष्ठिगान, निউदेवर्क, शासा, किक ल, मान्द्रहोत्र, अधिन्वरत्रा, সারে, প্রভৃতি নগরে চুগ্ধ-পরীক্ষাক্ষেত্র বিশ্বদান আছে। এখন এই সম্বন্ধে ত্র'চার কথা বলা আবশাক। ছয়ে কত পরিমাণ ন্নী, এবং মন্তর্যের रेमहिक मक्टि-डेप्शानक डेशानात विश्वमान बाह्न, इध-शतीकात्करक ৰয়েৰ ছাৰা তুল্লেৰ নমুনা হইতে তাহা নিৰ্ণীত হইয়া থাকে।

খাঁটিহগ্ধ, ঘোল ও ননীভোলা হথে কি কি উপাদান আছে, তাহা ইতিপুর্বে আমি উল্লেখ করিয়াছি। আমাদের দেশে কাঁচা ছক্ষ হইতে ননীতোলা হয় এবং. দবি মন্থন করিয়াও মাথন তোলা হয়। দবি হইতে ে যে নাখন মন্থন-ক্ৰিয়াদারা লব্ধ হয়, তাহা অতীব স্বস্থাহ এবং বিচিত্র আণবিশিষ্ট। তাই তাহা বাজারে অধিক মূল্যে বিক্রীত হইয়া থাকে। পাশ্চাত্য দেশে মাথন তুলিয়া তাহা অধিক কাল অবিকৃতাবস্থায় রাখিবার জন্ম তাহার সহিতুলবণ নিশ্রিত করা হয়। কিন্তু আনাদের দেশে কানপুর, এলাহাবাদ, পাটনা, ডেরাছন, শিমলা, কলিকাতা, দানাপুর, পুনা, মান্ত্রাজ, বোম্বাই, স্থরাট্, করাচী, ঢাকা, প্রভৃতি বড় বড় নগর ভিন্ন অপ্র স্থানে লবণাক্ত মাথন প্রায় পরিদৃষ্ট হয় না। ঢাকা এবং ব্যাতেল আমাদের বঙ্গদেশের মধ্যে অত্যুৎকৃষ্ট পনীরের (cheese) জভ্ বছুকুলাবধি প্রসিদ্ধ। পনীয় রেনেট (rennet) সংযোগে প্রস্তুত হয় বলিয়া তাহা অম্মদেশীয় হিন্দুগণ আদৌ ব্যবহার করেন না। গভ্য-ম্বত, মাথন, ননী, দধি, ঘোল, ক্ষীর, ছানা ও অপর বছবিধ গব্যসামগ্রী: হিন্দুর পক্ষে উপাদের প্রাণীজ খাদ্য (animal food) বলিয়া প্রাসদ্ধ । এইগুলি যেমন বল ও পৃষ্টিকারক, তেমনি সাহিক ভোজন বলিরা হিন্দুর ধর্মশাস্ত্রে প্রিনিছ। কোরাণ বা অপর মহম্মদীর ধর্মশাস্ত্রে উট্টের ত্থ্ব যেমন পুষ্টিক্র খাদ্য বলিয়া প্রসিদ্ধ, তেমনি গোছ্থ এবং গ্রাজাত খাদ্যসামগ্রীকে হাদীস্ এবং স্বরাইয়াতে উচ্চাসন প্রদান করা হইয়াছে। হগ্নজাত চিনি কার্বোহাইছে ডের অন্তর্গত, তাহী আমি পূর্ব্বেই বলিয়াছি। এই চিনির অংশ $(C_{1/2}H_{2/2}O_{1/2}H_{2/2}O)$ টক বা অমে পরিণত হইলেই হয় ছিঁড়িয়া গিয়া ল্যাক্টিক্ এদিডে (4C_sH_sO_s) পরিণত ইয়। কাজেই এই অবস্থায় ছথা টক্ হওয়ায় পশুদিগের কুধাবৃদ্ধিকারক এবং কেইজভ পাশ্চাত্য দেশে সমধিক মাতার শৃকরের খান্যরূপে বছল বাবছত হইয়া থাকে; কিন্তু মন্তব্যের

পক্ষে ইহা উপযোগী খাদ্য বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে মা। টাট্কা গো-হান্ধে শতকরা ৫ (5%) চিনি থাকে, কিন্তু টক্ (sour) হুল্পে ইহা ৪ (4%) বই আর পাওয়া যায় না।

ছয়ের অন্তর্গত ধাত্তব পদার্থের মধ্যে নিম্নলিথিত উপাদানগুলি বৰ্তমান আছে:-Potassium Oxide, Sodium. Oxide, Lime, Magnesia, Iron Oxide, Phosphoric Anhydride এবং Chlorin); अशांशक बााव कक्, ও मन्छ नात्र हैश विदल्लवन सात्रा প্রমাণিত কবিতে সমর্থ হইয়াছেন। উইসকননিনের পরীক্ষাক্ষৈত্তে व्यशालक काविक्रेंग्न वाविक्रक व्यवः अन विस्तर राष्ट्रमहकात्र विश्लयन দ্বারা দেখাইরাছেন যে, এক সহস্র পাউও সাধাবণ গোছমে ৮৫০ পাউও যোল বা ননীতোলা হগ্ধ এবং ১৪৫ পাউও ননী পাওয়া যায়। মছন-দণ্ড ও কলে ৫ পাউও ক্ষতি বাদ দিয়া ১৪৫ পাউও ননী ছইতে ৪২ পাউও মাথম এবং একশত পাউও ঘোল (butter milk) পাওয়া গিয়া থাকে: তন্মধ্যে কলে ছিটকান, শুদ্ধ হওয়া প্রভৃতিতে ক্ষতি তিন, পাউও বাদ দেওয়া হইল। জমা দুয়ে (condensed milk) সচবাচর শতকরা ২৫ ভাগ চিনি সংযোগ কবা হয়। ইহার ছারা ঐ চথা অধিক কাল অবিক্ষতাবস্থার স্থায়ী হয়। নেশ লীর জমা ছুয়ের কাবথানা জগংবিথাত। কিন্তু ভারতে এরপ কারখানা একটিও 'ৰ্নাই। টাটুকা অথবা ননীতোলা হগ্ধ (Skim milk) হ**ন্ধতে অ**মা ছথ প্রবাত হয়। ছথাজাত ভিন্ন ভিন্ন থাদাসান্তীতে বিভিন্ন উপাদান चारह, ठारा कनिश (Konig), क्रिन्यान, जानमारेक, इनक (Holland), ষ্টাচ্ মণ্ড প্রভৃতি 'বিখ্যাত পাশ্চাতা অধ্যাপকপণ বিশ্লেষণ ৰারা ছিন্ন করিনাছেন। নিয়লিখিত তালিকা 'দ্বেখিলে গোছুৱে ও গোহৰ দাত থান্য-শামগ্রীতে কি কি উপানান আছে, তাহা দানা सहितः--

```
ক্ষণ তৈল বা কেণীন্ও ছগ্ধ ছাই পণ্ডিতের নাম।
ননী এলবু চিনি
```

প্রোহ্ম ৮৭:১৭... ৩:৬৯... ৩:৫৫... ৪:৮৮... :৭১...কনিগ্

, ৮৭:৭৫... ৩ ৪০... ৩:৫০... ৪:৬০... :৭৫...ক্লিম্মান্

, ৮৭:১০... ৩:৯০... ৩:২০... ৫:১০... :৭০...ভনপ্লাইক

৮৬:৪৮... ৪:২০... ৩:৫১... •০০. :৭১...হলগু

নবহুম্ব.

(কোনোট্রন ৭৪'৫৭''' ৩'৫৯''') ৭'৬৪'' ২'৬৭-৮১''হ৬'' কনিগ্রননী (cream) ৬৮'৮২'''২২'৬৬'' ৩'৭৬''' ৪'২৩''' ৫৩ ,,

ধ্বাল (butter-

শিশ্রিত) ২৫'৬১...১০'৩৫...১১'০৯...৫০'০৬'''২১৯ জনাহত্ত

(বিনা চিনি) ৫৮'৯৯'" ২'৪২'" ১১'৯৯'' ১৪ ৪৯ - ২'১৮

অধ্যাপক গ্রোটেনথেল্ড ও ড্রীয়াবের মতে অমিশ্রিত গোর্থ হইছে, চিনিসংবাগে এবং ননীতোলা হ্য হইতেও চিনি-সংবোগে জমা হ্য প্রস্তুত করিলে তাহাতে নিম্লিখিত উপাদান থাকে:—

ক্ষা তৈল ছথাই চিনি বা শুর্করা বা প্রোচীড় ছাই

ক্ষাক্টোল্ cane sugar

২৫ ... ১১ ... ১৪ ... ৪৭ ... ১১ ... ২

্তাহা হইলেই দেখা যাইতেছে যে, ছগ্মজাত ভিন্ন ভিন্ন সামগ্রীতে কি कि উপामान विमामान आছে। ছথে कि পরিমাণ চবরী বা ভৈল অথবা মনী আছে এবং কি পরিমাণ মাগন বা পনীর আছে, তাহা ব্যাব কক-টেষ্ট যন্ত্রের দারা নির্ণীত হইয়া থাকে। ইহার পরিচালন-প্রণালী শিক্ষা করা প্রত্যেক হগ্ন-বাবসায়ীর বা ডেয়ারি ফার্মারের প্রয়োজন ম ইহা হাতে কলমে কতকটা শিক্ষা করা দরকার; এবং ফ্লীশ্ম্যান্, ভান্স্লাইক, कार्तिक्रेंचन् ७ ७न्, दिन् हात्र, भृन्मान्, तरमन्, त्थारिवन्-কেন্ট্ ও ওল, প্রভৃতি অধ্যাপকগণ-রচিত পুক্তক পাঠ করিয়া এই পরীকা-বিধি সম্বন্ধে বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করা যাইতে পারে। এই সকল বিষয় না জানাতেই আমাদের দেশে ডেয়ারি ফার্ম্মিং লোকসান-জনক ইইয়া থাকে। তাই বলি, পাশ্চাত্য দেশের অধিবাসীগণ যাহা কয়েন, ভাহা হাতে কলমে এবং অতীব হৃদর !!! অধ্যাপক ব্যাব্কক্রত পরীক্ষাযন্তের সাহায্যে আজকাল আমেরিকার সক্ষেত্রই চগ্ধ, মাথম ও পনীর পরীক্ষিত হইয়া থাকে। মাথমে কি পরিমাণে জল আছে, ননীতে-কত মাত্রায় তৈলাক্ত পদার্থ বিদ্যামান, গ্রন্ধ বিশুদ্ধ কি না, তাহা নির্ণয় করিবার জন্য ভিন্ন ভিন্ন ষম্র পাশ্চাত্য পণ্ডিতগণ গোয়ালাদের স্ববিধার জন্য আবিষার করিয়া সভাসমাজে প্রচারিত করিয়াছেন। ওব্লার, ক্ষণীয় গ্রে, লাভা প্রভৃতি পণ্ডিতগণের ভিন্ন ভিন্ন প্রণালী প্রচলিত থাকিলেও ইহাদের মূলের নিয়মটি (principle) এক্ট রূপ; তাহা ফ্যারিক্টন ও ওলের প্তক পাঠে জানা যায়। মাথন তুলিবার কছবিধ বিলাভি কল আছে। অধিক বায়সাধ্য বলিয়া জামাদের দেশের পোয়ালা বা সামাক্ত গৃহস্থ তাহা রাখিতে পারে না। আমাদের দেশে সম্রতি মাথন-মঙ্যা সন্তা কল প্রস্তুত হইতেছে; টিকিটসহ আমাক নিকট পত্র দিলে তৎসম্বন্ধে সবিশেষ জানা ঘাইবে।

ঊনত্রিৎশ পরিচ্ছেদ।

সাধারণ নিয়মাবলী।

গোজাতি সম্বন্ধে সাধারণ তৃই চারি কথা বলিতে বাকী থাকিয়া ণিয়াছে, তাহা এই পরিচ্ছেদে বলা অত্যক্তি হইবে না ৷ গৃহ**ছের** কোন কন্তা বা পরিবারস্থ স্ত্রীলোক গো-দোহন শিথিলে খুবই ভাল হয়. কারণ তাহা হইলে নিজপালে সংক্রামক রোগের প্রসার 😮 প্রাহর্ভাবের কোন ভয় থাকে না। মলিন বসন পরিধান করিয়া দোহনকার্য্য করা উচিত নহে। সাধারণ গোয়ালা যে ব**হুগাভী** দোহন করিয়া থাকে. তাহার দোহনে সময়ে সময়ে বিশাক্ত বীজাণু গাভীর পালানে লাগিয়া দৃষ্ক ড়ী হইতে দেখা যায়। সেই জন্ত দোহনের পূর্পে ভাল করিয়া হাত ধুইয়া দোহনে প্রবৃত্ত হওয়া কর্তব্য। এই বিষয়ে ইতিপূর্বে আমি আলোচনা করিয়াছি। গো-দোহন দিনে ছই বারের পরিবর্ত্তে ক্রমশঃ তিন বা চারি বাবে বাড়াইলে ছগ্নের পরিমাণ বৃদ্ধি পাইতে দেখা গিয়াছে। দোহনের পর অস্ততঃ অদ্ধ বা এক ঘণ্টা বাছুরকে মাতার সহিত থাকিতে দিহব; তাহার পর বাধিবে। বাছুরকে এমন স্থানে বাধিবে, যেখান হইতে তাহার মাতা অনায়াদে বাছুরকে দেখিতে পায়। সামান্ত ২৩ মুঠা যবের ছাতু, কিঞ্চিং বোল, মাং বা চিটেগুড় এবং অর্দ্ধদের ছোলার ডাইল মধ্যে মধ্যে গাভীকে থাইতে দিলে হগ্নের আস্বাদন ও নিষ্ঠতা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। ছোলার ডাইল क्यावडी शाजीत्क (मध्या निमोतीन ना श्रेताध मत्या कत्मध्या মাইতে পারে। ডাঃ বরাটু ইহার পক্ষপাতী; কিন্তু আমার মতে লাঙ্গল 😵 अक्टोनि-वहरनाभरगानी भक्षक छाहेन तिष्ठमाहे विषि। তবে इसवकी প্রতিকে মধ্যে মধ্যে অনেক দিন অন্তর দিলে মন্দ হয় না। গাভীকে প্রত্যহ অন্ততঃ ভাপ ৰণ্টা মাঠে চুরিফুতে দিবে। ইহাতে ভাহার স্বাদ্য ভাল খাকে; ঘাদ থাইলে কোষ্ঠবদ্ধতা দূর হয়। ঘাদ কাটিয়া খাওয়ানাকে "সরেণিং" (Soiling) বলে। ইহাও মন্দ প্রথা নহে। গাভীকে যক্ত বেশী জন থাওয়াইবে ততই বেশী হৃদ্ধ পাইবে। সেই জন্ম ভিন্ন ভিন্ন ঔষধের ব্যবস্থা আছে। ইহা দিবার তাৎপর্য্য এই যে, ঐ ঔষধগুলির ব্যবহারে গাভী বেশী জল টানিতে পারে। প্রতিবার আড়াই সের আন্দাব্দ 😘 ঘাদের সঙ্গে দশ সের জল থাওয়াইতে হইবে। থোঁটায় বীধা ভাগীকে চারিবার জাব দিতে হইবে; অর্থাৎ দশদের শুদ্ধ ঘাদ এবং এক মণ জল খাওরান চাই। প্রত্যেক জাবে ভূষি > পোয়া, গুড় ১ পোয়া, থইল অন্ততঃ অন্ধিনের, লবণ ১ ছটাক ও ১০ সের জল মিশাইয়া দিবে। সচরাচর তিন বার জাব দে ওয়াই বিধি। যে গাভী কুদ থায়, তাহাকে তিন বারই জাব দেওয়া কর্তব্য। কুদ-সিদ্ধ বৈকালে মাঠ ছইতে আসিলেই থাইতে দেওয়া উচিত। কুদ ১ সের, থৈল ১ সের, লবণ ১ ছটাক এবং ৫। ৭ সের জল মিশাইয়া থাইতে দেওয়া কর্ত্ত্বা। আর্ক্ন পরিমাণ কুদ থাইলে তবে ঐ পরিমাণ জল মিশান কর্ত্তব্য। কুদের 🕳 সহিত থইল না দিলে ছগ্ধ কিছু কম হয়।

প্রসবের পূর্বে গাভীর পেট ঝুলিয়া পড়ে, যোনিহার ঢিলা হয়।
চলিত ভাষায় ইহাকে "পেট ভালিয়া পড়া" বলে। প্রসবের ২।৪ দিন
পূর্বে হইতে প্রতাহ আধদের যব-দিদ্ধ ও এক পোয়া গুড় এবং এক
চুটাক সরিষার তৈল একত্রে মিশাইয়া থাওয়াইবে। কিঞ্চিৎ লবণ
ইহার সহিত সংযোগ করিলে গাভী আগ্রহ-সহকারে তাহা ভোজন
করিবে। এইরূপ ভাবে জাব ধাইতে দিলে, প্রসবাস্তে হুগ্নের পরিমাণ
বৃদ্ধি হইয়া থাকে। প্রসবের পর ৪।৫ দিন গাভীকে কোনও জলীয়
পদার্থ থাইতে দেওয়া উচিত নহে। এই কয় দিন কেবল থড়ের কুটী,
গ্রের ভূবি, গুড় এবং সামাস্ত পরিমাণ থইল দেওয়া উচিত। গুইল না
দিলা আর্দ্ধ পোয়া সর্বপ-তৈল দিলে খুব ভাল হয়। পাঁচ দিন পরে অর্থাৎ

ষষ্ঠ দিনে জাবের সঙ্গে অর্দ্ধছটাক মেথী, এক ছটাক রুক্ষ জিরা, এবং সামান্ত কোৎরা গুড় খাইতে দেওয়া উচিত। সপ্তম দিবদে হইতে দাদশ দিন পর্যান্ত একটি নারিকেল-কোরা শহা, কিছু গুড়, রুকজিরা, ও আধছটাক আদা মিশাইয়া জাবের সহিত দিবে। তাহার পর প্রত্যহ আধ্দের কলাই-সিদ্ধ, একদের কুদ-সিদ্ধ, কিছু গুড়, এবং সামান্ত লবণ মিশাইয়া থাইতে দিবে। ২১ দিন পর্যান্ত নবপ্রস্থা গাভীর ছগ্ধ सञ्चरवात भान कता উচিত नरह। े এकूम मिरनत भन शहेर ममस्य সময়ে হগ্ধবৰ্দ্ধক ঔষধ বা মশালা খাওয়ান উচিত : কারণ এই সময় হইতেই গাভীর ছগ্ধ "নামিতে" অর্থাৎ বাড়িতে থাকে। এই সময় গাভীকে স্থানান্তরে নাড়া বা দোহক পরিবর্ত্তন করা উচিত নহে। পাশ্চাত্য দেশের অপ্নিৰাসীগণ গোবংদের সাহায্যবিনা গো-দোহন অভ্যাস করিয়া থাকেন। আমাদের দেশে কিন্তু ইহার বিপরীত রীতি দৃষ্ট হয়। অমাদের দেশের প্রাচীন প্রথামুষায়ী প্রসবের এক সপ্তাহ পরে বৎসকে প্রস্তি হইতে পৃথক্ রাধিবার ব্যবস্থা করা কর্ত্তব্য। কেবল ২।৪ বার বংসকে হগ্নপানের জন্ম তাহার মাতার নিকট ছাড়িয়া দেওয়া কর্তব্য। বাছুরকে থোলা নির্ম্মল বায়ু চলাচলোপযোগী জায়গায় ছাড়িয়া রাথা উচিত। একুশ দিন পরে সামান্ত লবণসংযোগে ভাতের ফেন থাওয়াইবার অভ্যাস করান প্রায়েজিন। এইসময় ঘোলের সহিত সামান্ত মসিনার খইল সংযোগ করিয়া থাওয়াইতে শিখান দরকার; **जारा रहेर**न ताडूत थून निर्म रहेशा शास्त्र। न्दम क्र मारान रहेरन কচি ঘাদ খাইতে শিথিলেও উপরোক্ত পথ্য অন্ততঃ দিনে ছইবাঁর ক্রিয়া দিতে হইবে। তিন মাসের বৎসকে খোল, বিশ্লেলী, ভূষি ও ফেন দিরা "জাবের" ব্যবস্থা করা উচিত। ছয় মাসের হইলে ৰ্ৎসকে মাঠে চরিতে দিবে এবং এক বা হই বার জাব সকাল-সক্ষার "দিবে। তিন বৎসর গত হইলে প্রারই বক্না গর্ভধারণক্ষ হয়

অর্থাৎ তাহার গর্ভগ্রহণ কাল উপ^{ক্}ত হয়। চারি বৎসরের "বক্না" যদি গভিণী না হয়, তাহা হইলে তাহার আহার কমাইয়া দিতে হইবে, এবং যে গাভী ভাল থাইতে পায় না. তাহাকে পেট ভরিয়া তেজস্কর খাদা খাওয়ান উচিত। দশ কিমা ১২ দিন ৩ফ খইল খাইতে দিলে. গাভী শীঘ্র গর্ভবতী হয়। গন্ধতৃণ, লুশার্ণ, মালকাঁকড়া ঘাদ থাওয়াইলে গাভী শীঘ গৰ্ভবতী হইয়া থাকে ৷ ইহাতেও যদি বাঁড় না লয়, তাহা হইলে ফাল্পন ও চৈত্রমাসে গাভীকে বুষের সহিত মাঠে চরিতে দিবে। ইহাতে গাভীর ব্যায়াম হয় এবং হাহালাভ করিয়া তেজহুর হইলে সহজেই বলদ গ্রহণ করে। যাঁড় সম্বন্ধে যাহা বক্তব্য, তাহা ''ষাঁড়''-পর্যায়ে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছি। যে দিন গাভীকে ষাঁড় দেখান হইবে, সেদিন তাহাকে শয়ন করিতে দিবে না। শে দিন ভাল করিয়া স্নান করান প্রয়োজন এবং ble দিন আহারের মাত্রা কমাইয়া দেওয়া দরকার। এসম্বন্ধে আমি পূর্ব্বে সবিশেষ আলোচনা করিয়াছি। এই সময় বেশী জল বা থইল কদাচ থাইতে দেওয়া উচিত নহে, বরং বাবলার বীজ এবং তালের থোসা ও বালদোর জাব দেওয়া খুবই ভাল। মৃতবৎসা গাভীকে ২া০ বার গর্ভ হইবার সময় অতিক্রম করিয়া বলদ দেখাইলে গভিণী হইতে দেখা গিয়াছে। গাভীকে (বিশেষতঃ যাহারা "দোয়াল গাভী) একই প্রকার আহার করিতে দেওয়া উচিত। সহসা আহারের পরিবর্তন করিলে হগ্ধ কমিয়া ৰ্যায় এবং অনেক সময়ে অনভান্ত ভোজনে পেট ফাঁপে, অজীৰ্ণতা হয় এবং শেষ্ট্র সাংঘাতিক রোগ পর্যান্তও হইতে দেখা গিয়াছে। यদি নিতান্ত আবশাক হয়, ধীরে ধীরে আহারের পরিবর্তন করা কর্তবা। কেবল থইল ও বিচালী ভোজী গাভীকে ঘাস খাওয়া অভ্যাস করাইতে হুইলে খুইল ও বিচালার সহিত ঘাসের কুটা কাটিয়া জাব দিয়া জনশঃ अञ्चान क्रिट हरेटा। विज्ञानी ज्युकारक र्छा प्राप्त था धराहरण

ভাহার উনরাময় হইতে পারে। গাভীর পক্ষে তিসি, তিল ও চীনাবাদাম র্ত্রবং নারিকেলের ধোল বিশেষ উপকারী। বাঁড়ের পক্ষে দর্বপের খইল বিশেষ উপকারী। ৫০ বর্গফিট্ পরিসর জমিতে আমাদের নেশের ছোট গাভীকে রাখা চলে; স্বতরাং সেই অমুযায়ী গোয়াল নির্মাণ করা কর্ত্তব্য। আমাদের দেশের পল্লীগ্রামসমূহের মধ্যে অনেক জমি এমন আছে, যাহাতে ধান্ত কিম্বা অপর কোনরূপ ফদল জন্মে না। দেশে বেমন চারণ-ক্ষেত্রের টানাটানি হইয়াছে এবং এ সম্বন্ধে বেমন আমাদের চিন্তাশীল দেশবাসীগণের মনোযোগ আকর্ষণ করিয়াছে, তাহাতে আমার বিবেচনায় এই সকল পতিত জমিতে কল্মা, লোণা, আক্ষাল, ব্রেউরী, ঢোলা, রায়ণা, লুসার্ণ, টিমোদী, গিনিবাস, মালকাকড়া, শ্যামা প্রভৃতির বীজ ছড়াইলে বেশ চারণ-ক্ষেত্র অল্লকালমধ্যে প্রস্তুত হইতে পারে। এই গুলির মধ্যে প্রথম, ষষ্ঠ এবং নবম ও দশম জাতীয় বাস-গাছ দেশা; একটু চেষ্টা করিলে ইহাদের প্রচুর বীজ পল্লীগ্রাম হুইতে সংগৃহীত হুইতে পারে। ইহারা জলসেচন বড় অপেক্ষা করে না এবং জলাভাবে সহসা মরিয়াও যায় না। সেইজগুই খাসভোজী -গাভীর চগ্ধ স্থতার এবং নিষ্ট হইয়া থাকে।

বর্ষাকালে ঘাস কাটিয়া আঁটি বাধিয়া শুদ্ধ করিয়া, শুদ্ধ স্থানে স্তরে কছু লবণ ছড়াইয়া গাদা করিয়া রাথিয়া দিনে, গ্রীপ্নের সময় বিশেষ কাজে লাগে। বিহার, ছোটনাগপুর, রাঁচি ও পালামুর গোয়ালা ও ক্রমকর্গণ গাভীকে মহুয়া ফল থাওয়ায়। ইহা স্থলভ এবং পৃষ্টিকর গোনখাদা। আমাদের বাঙ্গলা দেশে ইহার প্রচলন করিলে মন্দ হয় না। কিছু ইহাতে হয় গন্ধযুক্ত হয়। একসের মহুয়া ফল এককুড়ি খড়ের আটির সমান পৃষ্টিকর। গোশালা পরিকার-পরিছেয়, শুদ্ধ, শুট্ডটে এবং বায়ু-সঞ্চারশীল হওয়া কর্ভব্য; তাহা পূর্কেই বলিয়াছি। সাক্রেল বাছুরগুলি যাহাতে আয়াজে দামড়ায় পরিণত না হইতে পারে,

তাহার প্রতি দৃষ্টি রাখা কর্ত্বা। গাভী ও বাঁড়কে একস্থানে রাখা কর্ত্বা নহে। বরং গাভী এবং মহিষী এক গৃহে রাখার জনেক উপকার আছে। যে গাভী অনু হয় দের, অধিক হয়বতী গাভীর সহবাসে তাহার অধিক হয় প্রদানের প্রবৃত্তি জন্মে।

গোজাতির উন্নতি করিতে ইইলে ভাল বংস উৎপাদন করা প্রয়োজন।

এসদরে পূর্বে সবিশেষ আলোচনা করিয়ছি। বিহার, উত্তর-পশ্চিম,

দিল্লী, অমৃতসহর, পাঞ্জাব, শুজরাট্ প্রভৃতি দেশে নবপ্রস্ত গাভীর

ছয়কে অল পরিমাণে থাওয়াইয়া, অধিকংশট্কু প্রস্তিকে—বেশী ছয়ঃ

দিবার আশায়—গোরালাগণ থাওয়াইয়া থাকে। প্রথম ২০০ সপ্তাহ

এই প্রণালীতি মন্দ হয় না; কারণ ২১৷২২ দিন প্র্যান্ত নবপ্রস্ত গাভীর

ছয় অন্মদেশে মন্থ্যের থাদ্যরূপে ব্যবহৃত হয় না। বিহারে কিন্তু
গোরালাগণ ইহা বংসকে পর্যান্ত না দিল্লা নিজেরা থাদ্যরূপে ব্যবহার

করিয়া থাকে। এই ছয়্ম বড়ই পৃষ্টিকর; সেই জন্ম বৎসকে তাহা ক্রম
পরিমাণে দেওয়া কর্ত্ব্য; নচেৎ পেটের অস্থ করিয়া জীবনসংশক্ষ্প

পর্যান্ত করিয়া থাকে।

সাধারণ চিকিৎসা।

গাড়ী টানা বা হল-বহনের জন্ম সময়ে সময়ে গবাদি পশুর কাঁধ ফুলিরা থাকে। সরিঘা-তৈল, তার্পিন-তৈল এবং কপুর সম-অংশে মিশাইয়। কাঁধে মালিশ করিলে, এই রোগের উপশম হয় এবং গ্রম জলের সেঁক দিলেও উপকার পাওয়া গিয়া থাকে।

গ্রীদি পশুকে প্রত্যহই পর্যাবেক্ষণ করা কর্ত্তব্য; তাহা আনি পূর্ব্বেই বলিয়াছি। তাহা করিতে হইলে গাভীর গাঁট, চর্ম, চক্ষুর বর্ণ, অন্থি-সংযোগাদি বিশেষ নিরীক্ষণ করিয়া দেখিবে,—কোন শ্বানে ক্লোনরূপ বিপর্যায় বা অনিয়ম ইইয়াছে কি না। যদি কোনরূপ অনিয়ম বা আফ্লভির পরিবর্ত্তন বা পার্খদেশ ফোলা দৃষ্ট হয়, ভাহা হইলে ব্ঝিবে যে পশুকে কোন রোগ আক্রমণ করিয়াছে এবং ভাহার প্রস্তিকার করিবার ব্যবস্থা করিবে। চর্ম্ম হরিদ্রাবর্গ এবং চক্ষ্ অধিক সাদা বা ফাঁটাকাশে হইলে ব্ঝিবে যে যক্তের বিকৃতি ইইয়াছে। বৎসদিগের কখন কখন ব্র্ "(blueness) হইতে দেখা যায়। ভাহা হইলে ব্ঝিবে যে শরীরের পরিষ্কার এবং অপরিষ্কার ব্রক্ত মিশ্রিত ইইয়া রোগ জন্মাইয়াছে। এই সম্বন্ধে ডাঃ ফ্রান্ট নিন্দেন্ড বার্টনের "Cattle, Sheep and Pigs" (Jarrold and Sons, Warwick Lane, London E. C.) পাঠ করিলে বিশেষ অভিজ্ঞতা জাভ করা যাইতে পারে।

তাপমান যন্ত্র বা "ফ্রিনিকাল্ থার্ন্মোমিটার" গোয়ালা মাত্রকেই
রাথা কর্ত্তর। ইহার মূল্যও সামান্ত এবং বড়ই আবশুকীয়। শুরু
বা যোনী ছারে ৩।৪ মিনিট প্রবেশ করাইয়া ভাহা পৰীক্ষা করিলে
গাভীর দৈহিক অবস্থা জানা মায়। নিমলিখিত তালিকা দেখিলে গাভীর
শরীরের অবস্থা তাপমান যন্ত্রের পারার উর্দ্ধ এবং নিম্নগামী গতি হইতে
বুঝা যায়:—

সাধারণ ভাল অবস্থা	,***	20020	২ ফা:
সামাক্ত জর	t	>०२	99
পূর্ণজর	•••	>00	,,
সামান্ত জর	•••	3 • 8	99
বেশী জর (High fever)	,	> ¢	,,
অতিউচ্চ জ্বর (Extreme f	ever)	১০৬ বা তদূ	ُ رو 🖣
কোলাপ্স্	•••	১০০ নিম্ন	72

নিম্ন চোয়ালের নিম্ন দেশে বা কানের নিকট হস্তার্পণ করিলে গাভীর মাড়ী অনুভব করা যাইতে পারে। তাপমান যন্ত্রের সাহায্যে সংক্রোমক রোগের অবাধ প্রসার ধরা যার এবং সময়ে সাবুধান হইরা

বিচক্ষণ গোয়ালা তাহার পালে প্রসার বোধ অনায়াদেই করিতে পারে। এঁদো, প্রোনিউমোনিয় প্রভৃতি বোগে ভাপমান যন্ত্র ১০০ হইতে ১০৭ ডিগ্রি পদান্ত উঠিয়া থাকে। গো-চিকিৎসকের মামুযের ডাক্তারের মত পূর্ণ নাড়ী জ্ঞান থাকা চাই। নাড়া সম, ছিল বা তর্মল এবং দৃঢ় কি না তাহার জ্ঞান লাভ করা চিকিৎদকের সর্বাণ্ডো প্রয়োজন। ' সাধারণত: স্বাস্থকর গভিতে ৪৫ হইতে ৫৫ বাব মিনিটে নাড়ীর গতি দৃষ্ট হর। বংসে ৯> হইতে ১০২ বার নাড়িব আখাত ন্থির হইয়াছে। গাভী ভর পাইলেই এই সাধাবণ গতিব ব্যতিক্রন হইয়া থাকে। প্রসব-কালীন, প্লবোনিট বা আপোপ্লেক্দি বা অপব বোগে নাড়ার গতি ক্রত হইয়া থাকে এবং নিনিটে ৮০ হইতে ১২০ বার পড়িয়া থাকে। তাহার পর শ্বাদ প্রকাকর্ত্বা। স্থাবস্থায় গাভীব শ্বাদ মিনিটে ১২ হইতে ১৫ বার সাধাবণতঃ পড়িয়া থাকে। জাগব কাটাব সময় ইহার মাত্রা বৃদ্ধিত হয়। নাড়ী চাবিবার পড়িলে দেই সময়মধ্যে একমাত্রা স্বাদ পড়িবে। রুগ্নাবস্থায় স্বাদ-প্রস্থাদ-ক্রিয়াব বিশেষ পরিবর্তন ঘটে। একবার শাসগ্রহণ এব অবিশুদ্ধ বায়ু পবিত্যাগকে একনাত্র। খাসক্রিয়া বলা যায়। স্কুত্ব গাভার ১২ হইতে ১৫ বাব মিনিটে এইরূপ স্বাসক্রিয়া হইয়া থাকে।

গাভার শিঙ্, জিহ্বা, চক্ষ্, পেট, মুথ, পালাম, বাঁট, বুক, জননেজিয় এক এক করিয়া সব পবীক্ষা করিলে বোগ ধবা যায়। বহুন্ত রোগে (Diabetes) মূত্র পাপুবর্ণ (pale) হয়; গুর্দারোগে (Disease of the kidneys) মূত্রকৃচ্ছ হয়; নেবায় সব্জ-পাণ্ডু (greenish yellow) হয়; রক্তম্ত্রে প্রথমে রক্তবর্ণ পরে ক্ষণবর্ণের হয়; জ্বরে প্রথমে মূত্র কম হয় এবং পরে খুব লাল ও কসা হয়। প্রস্রাব করিতে কই বোধ হইলে বুঝিবে যে মূত্রাশয়ে পাথর আটকাইয়া হার ক্ষ করিয়াছে। মিদি মূত্রেণ খেতসার (albumen) হয়, ভ্রাহা হইলে তাঁহা ধরিতে হইলে

একটি কাচের মলে সামান্ত নাইট্রিক্ এসিড ্২।৩ ফেঁটো দিরা গরম করিলে ২।৩ মিনিট পরে সাদা পদার্থ ভাসিতে দেখা যাইবে।

চিকিৎসার পূর্ব্ধে রোগনির্ণয় করাই বিশেব প্রয়োজন। পশুদিগের রোগ নির্ণয় কবিতে ইইলে মহুষ্যের রোগের লক্ষণ মত তাহাদের যত বাছিক ও আত্যন্তরিক লক্ষণগুলি দেখা আ্বাইচ্চক; যথা পশুর নাড়ীর গতি চেনিতে পাওয়া বায় এবং ইহা পশু-চিক্তিৎসক ডাক্তারের নিকট দেখিয়া লওয়া কর্ত্ব্য।) বাহে ও প্রস্রাব কিরূপ, মুখের ভিতর গরম কি ঠাগুা, মুখ দিয়া লালা পড়ে কি না, কাশি আছে কি না, খাস-প্রশাস কিরূপ এবং মিনিটে কত বার পড়ে, শরীরের কোন স্থানে টিপিলে বেদনা অহুভব করে কি না, ইত্যাদি, যতদূর পাধা যায়, বাছিক লক্ষণগুলি দেখা দরকার, এবং তাপমান যন্ত্র হায়া জর পরীক্ষা করা নিশেষ প্রয়োজন। তাপমান যন্ত্র বাতীত পশুর গাতে হাত দিয়া জর অয়ুভব করা সহজ নহে এবং তাহা করা যাইতে পাবে না।

গৃহপালিত প্রাদির স্বাভাবিক নাড়ীর গতি ও শারীরিক তাপ নিমন্ত্রপ[®]হইয়া থাকে।

পশু '	মিনিতে	শাড়ীর গতি	স্বাভাবিক তাপ ফাৰ্ণহীট্
হোড়া	৩৬	৪০ বার	300
গোরু	8 t	¢۰ ,,	, 202-205
মেষ ও ছাগ	ल १०	ъ.	8 • 6 4.0 • 6
কুকুর	30	٠, ٥٠	た○○く──り. たな

যে সকল পশু খোলা জায়গায় থাকে, তাহাদের শারীরিক তাপ ঘরে আবদ্ধ থাকা পশুদিগের অপেক্ষা প্রায় ৯০ ফাঃ ডিগ্রী কম হইয়া থাকে।

গাভী ও মহিমের বহুস নিশ্য :—গাভী বা মহিমের মোট দাঁত ৩২টি; ক্লুমধ্যে নীচের চোয়ালে দুর্থের দাঁত

(Incisors) ৮টা, উপর ও নীচের প্রত্যেক চোয়ালে মাটার দাত ' (molar) ওটা করিয়া নীচে ১২টি ও উপরে মোট ২৪টা। উহাদের সমুধে উপরের চোয়ালে কোন দাঁত থাকে না: কিন্তু তাহা স্বভাবত: খুব দৃঢ় এবং শক। বাছুরের জন্মাবস্থায় সন্মুখে ২টী ছুধে দাঁত (milk teeth) থাকে। ছই সপ্তাহ পরে আর ২টা এবং একমাস পরে মোট ৮টী হথে দাঁত উলাত হয়। ত'বা ৪ মালৈ সমূখে ৮টী ও মালীতে ১২টী ছথে-দাত, মোট ২০টী ছথে-দাত ক্টঠে। ৬ হইতে ৯ মালে সন্মুখে ৮টা হুখে এবং মাঢ়ীতে ১২টা ও ৪টা স্থায়ী ট্রাভ উঠে। কেছ ়ৰুৎসর বয়সে সম্বর্থে ৬টা হগ্ধ-দম্ভ ও ২টা স্থায়ী এবং মাঢ়ীতে ১২টা গ্রধে ও ৮টী স্থায়ী অর্থাৎ মোট ২৮টি দাঁত উঠে। আড়াই বংসর বয়সে সমূবে ৪টা হবে ও ৪টা স্থায়ী ও মাঢ়ীতে ৪টা হবে ও ১০টা স্থায়ী অর্থাৎ মোট ৩২টী দাঁত উঠে। সাড়ে তিন বংসর ব্যাসে সম্মুথে ২টী ছাধে ও ৬টী স্থায়ী এবং মাট্টার ২৪টা দাঁতই স্থায়ী হয়। পাঁচ বংসর বয়সে মহিষী বা গাভী পূর্ণবৌধন প্রাপ্ত হয়। গবাদি পভর শিঙের গোড়ায়, বে আংটীৰ মত গোলাকাৰ চিহ্ন দেখিতে পাওয়া যায়, তাহা কৈথিয়া গোতত্ববিদ্গণ তাহাদের বয়স নির্ণয় কবিয়া থাকেন। ইহার সহজ সংক্ষেত্ত এই যে, যে কর্মী অঙ্গুরীয়-চিহু থাকে, তাহাতে ২ বোগ করিলেই তত বংসর গাভীর বয়স বলিয়া জানিবে।

প্রথম ভাগ সমাপ্ত।